आसान हिन्दी तर्जुमा

हाफ़िज़ नज़र अहमद

Hindi transliteration is done by
a team of
www.understandquran.com

UNDERSTAND QUR'AN ACADEMY
Tel: 0091-6456-4829 / 0091-9908787858
Hyderabad, India

आसान तर्जुमा कुरआ़ने मजीद

तस्वीद व तरतीब ः हाफ़िज़ नज़र अहमद

प्रिन्सिपल तालीमुल कुरआ़न ख़त व किताबत स्कूल, लाहौर-5

नज़र सानी

★ मौलाना अज़ीज़ जुबैदी

मुदीर मुजल्ला "अहले हदीस", लाहौर

★ मौलाना प्रोफेसर मुज़म्मिल अहसन शेख, एम॰ ए॰

(अरबी - इसलामियात - तारीख़)

★ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हुसैन नईमी

मुहतमिम जामिआ़ नईमिया, लाहौर

★ मौलाना मुहम्मद सरफ़राज़ नईमी अल-अज़हरी, एम॰ ए॰

फ़ाज़िल दरस-ए-निज़ामी, (अरबी - इसलामियात)

★ मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मलिक

ख़तीब जामअ़ आस्ट्रेलिया, लाहौर

★ मौलाना सईदुर्रहमान अ़लवी

ख़तीब जामअ़ मस्जिदुश शिफ़ा, शाह जमाल, लाहौर

अल्हम्दुलिल्लाह

"आसान तर्जुमा कुरआ़न मजीद" कई एतिबार से मुन्फ़रिद हैः

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्साँ है।
- यह तर्जुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअ़त, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

इंशा अल्लाह

अ़रबी से ना वाक़िफ़ भी चन्द पारे पढ़ कर इस की मदद से पूरे कलामुल्लाह का तर्जुमा बखूबी समझ सकेंगे।

ऐ अललाह करीम! इस ख़िदमत को बा बरकत और बाइस-ए-ख़ैर बनादे। ख़ुसुसन तलबह के लिए कुरआ़न फ़हमी और अ़मल बिल कुरआ़न का ज़रिया और बन्दा के लिऐ फ़लाह-ए-दारैन का वसीला बनादे (आमीन).

हाफ़िज़ नज़र अहमद

10 रबी उस्सानी 1408 हिज्री

3 दिसमबर 1987

बैतुल्लाह अलहराम, मक्का मुकर्रमह

www.understandquran.com

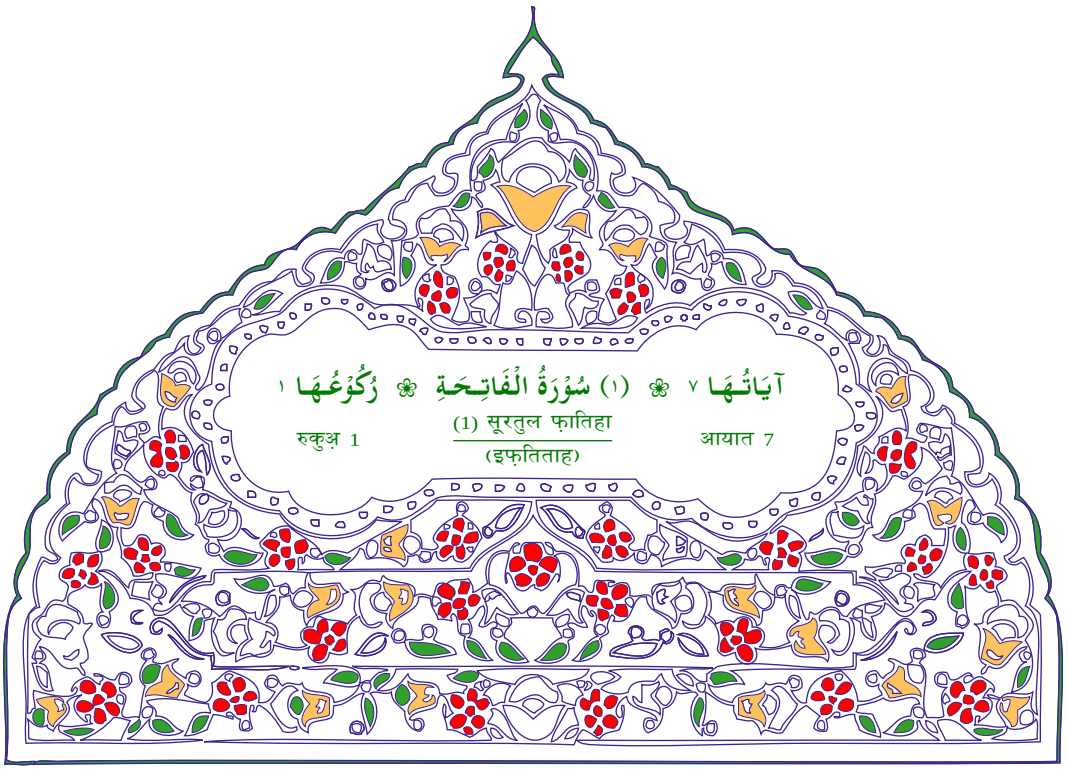

المنزل ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ١

1	रह्म करने वाला	बहुत मेह्रबान	अल्लाह	नाम से

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ٢ الرَّحْمٰنِ

बहुत मेह्रबान	2	तमाम जहान	रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें

الرَّحِيْمِ ۙ٣ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ٤ اِيَّاكَ نَعْبُدُ

इबादत करते हैं हम	सिर्फ़ तेरी ही	4	बदला	दिन	मालिक	3	रह्म करने वाला

وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ٥ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ

रास्ता	हमें हिदायत दे	5	हम मदद चाहते हैं	और सिर्फ़ तुझ ही से

الْمُسْتَقِيْمَ ۙ٦ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ

उन पर	तू ने इन्आ़म किया	उन लोगों का	रास्ता	6	सीधा

ع ١ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ع ۧ٧

7	जो गुमराह हुए	और न	उन पर	ग़ज़ब किया गया	न

अल्लाह के नाम से
जो बहुत मेह्रबान,
रह्म करने वाला है। (1)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है, (2)

बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला। (3)

बदले के दिन का मालिक। (4)

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मदद चाहते हैं। (5)

हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे, (6)

उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्आ़म किया न उन का जिन पर ग़ज़ब किया गया, और न उन का जो गुमराह हुए। (7)

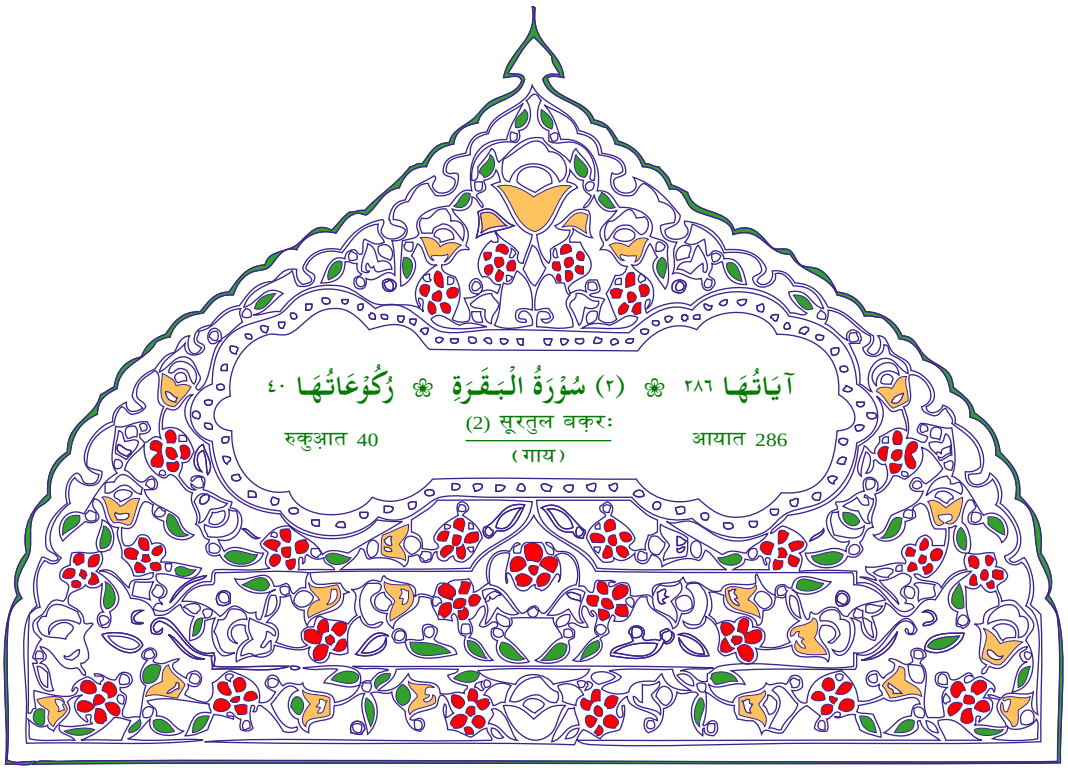

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

रहम करने वाला	बहुत मेहरबान	अल्लाह	नाम से

الٓمّٓ ﴿١﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَارَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى

हिदायत	इस में	नहीं शक	किताब	यह	1	अलिफ़-लाम-मीम

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ

ग़ैब पर	ईमान लाते हैं	जो लोग	2	परहेज़गारों के लिए

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾

3	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया	और उस से जो	नमाज़	और क़ाइम करते हैं

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ

और जो	आप की तरफ़	नाज़िल किया गया	उस पर जो	ईमान रखते हैं	और जो लोग

اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

4	यक़ीन रखते हैं	वह	और आख़िरत पर	आप से पहले	से	नाज़िल किया गया

अल्लाह के नाम से
जो बहुत मेहरबान,
रहम करने वाला है।

अलिफ़-लाम-मीम। (1)

यह किताब है इस में कोई शक नहीं, परहेज़गारों के लिए हिदायत, (2)

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, और क़ाइम करते हैं नमाज़, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं, (3)

और जो लोग उस पर ईमान रखते हैं जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (4)

वही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं, और वही लोग कामयाब हैं। (5)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन पर बराबर है आप (स) उन्हें डराएं या न डराएं वह ईमान नहीं लाएंगे। (6)

अल्लाह ने उन के दिलों पर और उन के कानों पर मुह्‌र लगा दी। और उन की आँखों पर पर्दा है। और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (7)

और कुछ लोग हैं जो कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और वह ईमान वाले नहीं। (8)

वह धोका देते हैं अल्लाह को और ईमान वालों को, हालांकि वह नहीं धोका देते मगर अपने आप को, और वह नहीं समझते। (9)

उन के दिलों में बीमारी है, सो अल्लाह ने उन की बीमारी बढ़ा दी, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। क्योंकि वह झूट बोलते हैं। (10)

और जब उन्हें कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न फैलाओ तो कहते हैं कि हम सिर्फ़ इस्लाह करने वाले हैं। (11)

सुन रखो बेशक वही लोग फ़साद करने वाले हैं और लेकिन नहीं समझते। (12)

और जब उन्हें कहा जाता है तुम ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए तो वह कहते हैं क्या हम ईमान लाएं जैसे बेवक़ूफ़ ईमान लाए? सुन रखो ख़ुद वही बेवक़ूफ़ हैं लेकिन वह जानते नहीं (13)

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो महज़ मज़ाक़ करते हैं। (14)

अल्लाह उन से मज़ाक़ करता है और उन को उन की सरकशी में बढ़ाता है, वह अन्धे हो रहे हैं। (15)

أُولٰٓـئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَأُولٰٓـئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

5	कामयाब	वह	और वही लोग	अपना रब	से	हिदायत	पर	वही लोग

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ

डराएं उन्हें	न	या	ख़ाह आप उन्हें डराएं	उन पर	बराबर	कुफ़्र किया	जिन लोगों ने	बेशक

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ۗ وَعَلٰٓى

और पर	उन के कान	और पर	उन के दिल	पर	मुह्‌र लगा दी अल्लाह ने	6	ईमान लाएंगे	नहीं

اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٧﴾ ع وَمِنَ النَّاسِ

ع ١

लोग	और से	7	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए	पर्दा	उन की आँखें

مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

وقف لازم

8	ईमान वाले	वह	और नहीं	आख़िरत	और दिन पर	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	जो

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ

अपने आप	मगर	धोका देते	और नहीं	ईमान लाए	और जो लोग	अल्लाह	वह धोका देते हैं

وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ

बीमारी	सो अल्लाह ने बढ़ा दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में	9	समझते हैं	और नहीं

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ ۙ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ

कहा जाता है	और जब	10	वह झूट बोलते हैं	क्योंकि	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए

لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ﴿١١﴾

11	इस्लाह करने वाले	हम	सिर्फ़	वह कहते हैं	ज़मीन में	न फ़साद फैलाओ	उन्हें

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢﴾ وَاِذَا

और जब	12	नही समझते	और लेकिन	फ़साद करने वाले	वही	बेशक वह	सुन रखो

قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ

ईमान लाए	जैसे	क्या हम ईमान लाएं	वह कहते हैं	लोग	ईमान लाए	जैसे	तुम ईमान लाओ	उन्हें	कहा जाता है

السُّفَهَآءُ ۭ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

13	वह जानते	नहीं	और लेकिन	बेवक़ूफ़	वही	ख़ुद वह	सुन रखो	बेवक़ूफ़

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى

पास	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए	कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	और जब मिलते हैं

شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾

14	मज़ाक़ करते हैं	हम	महज़	तुम्हारे साथ	हम	कहते हैं	अपने शैतान

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾

15	अन्धे हो रहे हैं	उन की सरकशी में	और बढ़ाता है उन को	उन से	मज़ाक़ करता है	अल्लाह

أُولٰٓـئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ

उन की तिजारत	तो न फ़ाइदा दिया	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्हों ने	यही लोग

وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا

आग	भड़काई	वह जिस ने	जैसे मिसाल	उन की मिसाल	16	वह हिदायत पाने वाले	और न थे

فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ

में	और उन्हें छोड़ दिया	उन की रौशनी	छीन ली अल्लाह ने	उस का इर्द गिर्द	रौशन कर दिया	फिर जब

ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾

18	नहीं लौटेंगे	सो वह	अन्धे	गूँगे	बहरे	17	वह नहीं देखते	अन्धेरे

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ يَجْعَلُوْنَ

वह ठोंस लेते हैं	और बिजली की चमक	और गरज	अन्धेरे	उस में	आस्मान	से	जैसे बारिश	या

اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ

घेरे हुए	और अल्लाह	मौत	डर	कड़क (बिजली)	सबब	अपने कान	में	अपनी उनगलियां

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ

उन पर	वह चमकी	जब भी	उन की निगाहें	उचक ले	बिजली	क़रीब है	19	काफ़िरों को

مَّشَوْا فِيْهِ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ

छीन लेता	चाहता अल्लाह	और अगर	वह खड़े हुए	उन पर	अन्धेरा हुआ	और जब	उस में	चल पड़े

ع ١٣ ٢ ٢ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾

20	क़ादिर	हर चीज़	पर	बेशक अल्लाह	और उन की आँखें	उन की शुनवाई

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	से	और वह लोग जो	तुम्हें पैदा किया	जिस ने	अपना रब	तुम इबादत करो	लोगो	ऐ

لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً

छत	और आस्मान	फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	जिस ने	21	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ

तुम्हारे लिए	रिज़्क़	फल (जमा)	से	उस के ज़रीए	फिर निकाला	पानी	आस्मान	से	और उतारा

فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ

शक	में	तुम हो	और अगर	22	जानते हो	और तुम	कोई शरीक	अल्लाह के लिए	ठहराओ	सो न

مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا

और बुला लो	इस जैसी	से	एक सूरत	तो ले आओ	अपना बन्दा	पर	हम ने उतारा	से जो

شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾

23	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह	सिवा	से	अपने मददगार

यही लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, तो उन की तिजारत ने कोई फ़ाइदा न दिया, और न वह हिदायत पाने वाले थे। (16)

उन की मिसाल उस शख़्स जैसी है जिस ने आग भड़काई, फिर आग ने उस का इर्द गिर्द रौशन कर दिया तो अल्लाह ने छीन ली उन की रौशनी और उन्हें अन्धेरों में छोड़ दिया वह नहीं देखते। (17)

वह बहरे गूँगे और अन्धे हैं सो वह नहीं लौटेंगे। (18)

या जैसे आस्मान से बारिश हो, उस में अन्धेरे हों और गरज और बिजली की चमक, वह अपने कानों में अपनी उनगलियां ठोंस लेते हैं कड़क के सबब मौत के डर से, और अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुए है। (19)

क़रीब है कि बिजली उन की निगाहें उचक ले, जब भी वह उन पर चमकी वह उस में चल पड़े और जब उन पर अन्धेरा हुआ वह खड़े हो गए और अगर अल्लाह चाहता तो छीन लेता उन की शुनवाई और उन की आँखें, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (20)

ऐ लोगो! तुम अपने रब की इबादत करो जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को जो तुम से पहले हुए ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (21)

जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और आस्मान को छत, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए फल निकाले तुम्हारे लिए रिज़्क़, सो अल्लाह के लिए कोई शरीक न ठहराओ और तुम जानते हो। (22)

और अगर तुम्हें इस (कलाम) में शक हो जो हम ने अपने बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत ले आओ, और बुला लो अपने मददगार अल्लाह के सिवा अगर तुम सच्चे हो। (23)

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْ وَقُوْدُهَا

उस का इंधन	जिस का	आग	तो डरो	और हरगिज़ न कर सकोगे	तुम न कर सको	फिर अगर

النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	और ख़ुशख़बरी दो	24	काफ़िरों के लिए	तैयार की गई	और पत्थर	इन्सान

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا

जब भी	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं	बाग़ात	उन के लिए	कि	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ

पहले	से	हमें खाने को दिया गया	वह जो कि	यह	वह कहेंगे	रिज़्क़	कोई फल	से	उस से	खाने को दिया जाएगा

وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا

उस में	और वह	पाकीज़ा	बीवियां	उस में	और उन के लिए	मिलता जुलता	उस से	हालांकि उन्हें दिया गया

خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْىٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا

ख़्वाह जो	मच्छर	जो	कोई मिसाल	वह बयान करे	कि	नहीं शर्माता	बेशक अल्लाह	25	हमेशा रहेंगे

فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

उन का रब	से	हक़	कि वह	वह जानते हैं	ईमान लाए	सो जो लोग	उस से ऊपर

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ وقف لازم

वह गुमराह करता है	मिसाल	इस से	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	वह कहते हैं	कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने

بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِىْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ۙ

26	नाफ़रमान	मगर	इस से	और नहीं गुमराह करता	बहुत लोग	इस से	और हिदायत देता है	बहुत लोग	इस से

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَيَقْطَعُوْنَ

और काटते हैं	पुख़्ता इक़रार	से बाद	अल्लाह से किया गया अ़हद	तोड़ते हैं	जो लोग

مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ

वही लोग	ज़मीन	में	और वह फ़साद फैलाते हैं	वह जोड़े रखें	कि	उस से	जिस का हुक्म दिया अल्लाह ने

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا

बेजान	और तुम थे	अल्लाह का	तुम कुफ़्र करते हो	किस तरह	27	नुक़्सान उठाने वाले	वह

فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	तुम लौटाए जाओगे	उस की तरफ़	फिर	तुम्हें जिलाएगा	फिर	तुम्हें मारेगा	फिर	तो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى

तरफ़	क़स्द किया	फिर	सब	ज़मीन	में	जो	तुम्हारे लिए	पैदा किया	जिस ने	वह

السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾ ع ٣ ٩ ٣

29	जानने वाला	चीज़	हर	और वह	आस्मान	सात	फिर उन को ठीक बना दिया	आस्मान

फिर अगर तुम न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिस का इंधन इन्सान और पत्थर हैं, काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (24)

और उन लोगों को ख़ुशख़बरी दो जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जब भी उन्हें उस से कोई फल खाने को दिया जाएगा वह कहेंगे यह वही है जो हमें इस से पहले खाने को दिया गया हालांकि उन्हें उस से मिलता जुलता दिया गया, और उन के लिए उस में बीवियां हैं पाकीज़ा, और वह उस में हमेशा रहेंगे। (25)

बेशक अल्लाह नहीं शर्माता कि कोई मिसाल बयान करे जो मच्छर जैसी हो ख़्वाह उस के ऊपर (बढ़ कर) सो जो लोग ईमान लाए वह तो जानते हैं कि वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह कहते हैं अल्लाह ने इस मिसाल से क्या इरादा किया, वह इस से बहुत लोगों को गुमराह करता है और इस से बहुत लोगों को हिदायत देता है, और इस से नाफ़रमानों के सिवा किसी को गुमराह नहीं करता, (26)

जो लोग अल्लाह का अ़हद तोड़ते हैं उस से पुख़्ता इक़रार करने के बाद, और उस को काटते हैं जिस का अल्लाह ने हुक्म दिया था कि वह उसे जोड़े रखें और वह ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। (27)

तुम किस तरह अल्लाह का कुफ़्र करते हो, और तुम बेजान थे सो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी, फिर वह तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा फिर उस की तरफ़ लौटाए जाओगे। (28)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा किया जो ज़मीन में है सब का सब, फिर उस ने आस्मान की तरफ़ क़स्द किया, फिर उन को ठीक बना दिया सात आस्मान, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (29)

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا

उन्हों ने कहा	एक नाइब	ज़मीन	में	बनाने वाला	कि मैं	फ़रिश्तों से	तुम्हारा रब	कहा	और जब

اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ

बे ऐब कहते हैं	और हम	ख़ून	और बहाएगा	उस में	फ़साद करेगा	जो	उस में	क्या तू बनाएगा

بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَعَلَّمَ

और सिखाए	30	तुम नहीं जानते	जो	जानता हूँ	बेशक मैं	उस ने कहा	तेरी	और पाकीज़गी बयान करते हैं	तेरी तारीफ़ के साथ

اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِىْ

मुझ को बतलाओ	फिर कहा	फ़रिश्ते	पर	उन्हें सामने किया	फिर	सब चीज़ें	नाम	आदम (अ)

بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ

हमें	इल्म नहीं	तू पाक है	उन्हों ने कहा	31	सच्चे	तुम हो	अगर	इन	नाम

اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٢﴾ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ

उन्हें बता दे	ऐ आदम	उस ने फ़रमाया	32	हिक्मत वाला	जानने वाला	तू	बेशक तू	तू ने हमें सिखाया	जो	मगर

بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ

जानता हूँ	कि मैं	तुम्हें	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने फ़रमाया	उन के नाम	उस ने उन्हें बतलाए	सो जब	उन के नाम

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٣٣﴾

33	छुपाते हो	तुम	और जो	तुम ज़ाहिर करते हो	जो	और मैं जानता हूँ	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	छुपी हुई बातें

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ

इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिज्दा किया	आदम को	तुम सिज्दा करो	फ़रिश्तों को	हम ने कहा	और जब

اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ

तुम	तुम रहो	ऐ आदम	और हम ने कहा	34	काफ़िर	से	और हो गया	उस ने इन्कार किया और तकब्बुर किया

وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا

क़रीब जाना	और न	तुम चाहो	जहां	इत्मिनान से	उस से	और तुम दोनों खाओ	जन्नत	और तुम्हारी बीवी

هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٥﴾ فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ

शैतान	फिर उन दोनों को फुसलाया	35	ज़ालिम (जमा)	से	फिर तुम हो जाओगे	दरख़्त	इस

عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

तुम्हारे बाज़	तुम उतर जाओ	और हम ने कहा	उस में	वह थे	से जो	फिर उन्हें निकलवा दिया	उस से

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقّٰٓى

फिर हासिल कर लिए	36	वक़्त	तक	और सामान	ठिकाना	ज़मीन	में	और तुम्हारे लिए	दुश्मन	बाज़ के

اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾

37	रहम करने वाला	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	बेशक वह	उस की	फिर उस ने तौबा क़ुबूल की	कुछ कलिमात	अपना रब	से	आदम

और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नाइब बनाने वाला हूँ, उन्हों ने कहा क्या तू उस में बनाएगा जो उस में फ़साद करेगा और ख़ून बहाएगा? और हम तेरी तारीफ़ के साथ तुझ को बे ऐब कहते हैं और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, उस ने कहा बेशक मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (30)

और उस ने आदम (अ) को सब चीज़ों के नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने किया, फिर कहा मुझ को उन के नाम बतलाओ अगर तुम सच्चे हो। (31)

उन्हों ने कहा, तू पाक है, हमें कोई इल्म नहीं मगर (सिर्फ़ वह) जो तू ने हमें सिखा दिया, बेशक तू ही जानने वाला हिक्मत वाला है। (32)

उस ने फ़रमाया ऐ आदम! उन्हें उन के नाम बतला दे, सो जब उस ने उन के नाम बतलाए उस ने फ़रमाया क्या मैं ने नहीं कहा था कि मैं जानता हूँ छुपी हुई बातें आस्मानों और ज़मीन की और मैं जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (33)

और जब हम ने फ़रिश्तों को कहा तुम आदम को सिज्दा करो तो इब्लीस के सिवाए उन्हों ने सिज्दा किया, उस ने इन्कार किया और तकब्बुर किया और वह काफ़िरों में से हो गया। (34)

और हम ने कहा ऐ आदम! तुम रहो और तुम्हारी बीवी जन्नत में, और तुम दोनों उस में से खाओ जहां से चाहो इत्मिनान से, और न क़रीब जाना उस दरख़्त के (वरना) तुम हो जाओगे ज़ालिमों में से। (35)

फिर शैतान ने उन दोनों को फुसलाया उस से। फिर उन्हें निकलवा दिया उस हालत से जिस में वह थे, और हम ने कहा तुम उतर जाओ, तुम्हारे बाज़, बाज़ के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है और एक वक़्त तक सामाने (ज़िन्दगी) है। (36)

फिर आदम (अ) ने हासिल कर लिए अपने रब से कुछ कलिमात, फिर उस ने उस (आदम) की तौबा क़ुबूल की, बेशक वह तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (37)

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ

चला	सो जो	कोई हिदायत	मेरी तरफ़ से	तुम्हें पहुँचे	पस जब	सब	यहां से	तुम उतर जाओ	हम ने कहा

هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने	38	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	तो न	मेरी हिदायत

وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾

39	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	वही	हमारी आयात	और झुटलाया

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا

और पूरा करो	तुम्हें	मैं ने बख़्शी	जो	मेरी नेमत	तुम याद करो	याकूब	ऐ औलाद

بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾ وَاٰمِنُوْا بِمَآ

उस पर जो	और तुम ईमान लाओ	40	डरो	और मुझ ही से	तुम्हारे साथ किया गया अ़हद	मैं पूरा करूँगा	मेरे साथ किया गया अ़हद

اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍ بِهٖ ۠ وَلَا تَشْتَرُوْا

इवज़ लो	और न	उस के	काफ़िर	पहले	हो जाओ	और न	तुम्हारे पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	मैं ने नाज़िल किया

بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ

बातिल से	हक़	मिलाओ	और न	41	डरो	और मुझ ही से	थोड़ी	क़ीमत	मेरी आयात

وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और क़ाइम करो	42	जानते हो	जब कि तुम	हक़	और न छुपाओ

وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ

और तुम भूल जाते हो	नेकी का	लोग	क्या तुम हुक्म देते हो	43	रुकूअ़ करने वाले	साथ	और रुकूअ़ करो

اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ

सब्र से	और तुम मदद हासिल करो	44	तुम समझते	क्या फिर नहीं	किताब	पढ़ते हो	हालांकि तुम	अपने आप

وَالصَّلٰوةِ ۭ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿٤٥﴾ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ

समझते हैं	वह जो	45	आ़जिज़ी करने वाले	पर	मगर	बड़ी (दुशवार)	और वह	और नमाज़

اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿٤٦﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

याकूब	ऐ औलादे	46	लौटने वाले	उस की तरफ़	और यह कि वह	अपना रब	रूबरू होने वाले	कि वह

اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

47	ज़माने वाले	पर	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	और यह कि मैं ने	तुम पर	मैं ने बख़्शी	जो	मेरी नेमत	तुम याद करो

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ

क़ुबूल की जाएगी	और न	कुछ	किसी	से	कोई शख़्स	न बदला बनेगा	उस दिन	और डरो

مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	मदद की जाएगी	उन	और न	कोई मुआ़वज़ा	उस से	लिया जाएगा	और न	कोई सिफ़ारिश	उस से

हम ने कहा तुम सब यहां से उतर जाओ, पस जब तुम्हें मेरी तरफ़ से कोई हिदायत पहुँचे, सो जो चला मेरी हिदायत पर, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा न वह ग़मगीन होंगे। (38)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और झुटलाया हमारी आयतों को, वही दोज़ख़ वाले हैं, वह हमेशा उस में रहेंगे। (39)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़्शी और पूरा करो मेरे साथ किया गया अ़हद, मैं तुम्हारे साथ किया गया अ़हद पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरो। (40)

और उस पर ईमान लाओ जो मैं ने नाज़िल किया, उस की तस्दीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है, और सब से पहले उस के काफ़िर न हो जाओ और मेरी आयात के इवज़ थोड़ी क़ीमत न लो, और मुझ ही से डरो। (41)

और न मिलाओ हक़ को बातिल से, और हक़ को न छुपाओ जब कि तुम जानते हो। (42)

और तुम क़ाइम करो नमाज़ और अदा करो ज़कात और रुकूअ़ करो रुकूअ़ करने वालों के साथ। (43)

क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो? हालांकि तुम पढ़ते हो किताब, क्या फिर तुम समझते नहीं? (44)

और तुम मदद हासिल करो सब्र और नमाज़ से, और वह बड़ी (दुशवार) है मगर आ़जिज़ी करने वालों पर (नहीं) (45)

वह जो समझते हैं कि वह अपने रब के रूबरू होने वाले हैं और यह कि वह उस की तरफ़ लौटने वाले हैं। (46)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! तुम मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़्शी और यह कि मैं ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी ज़माने वालों पर। (47)

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख़्स किसी का कुछ बदला न बनेगा, और न उस से कोई सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी, और न उस से कोई मुआ़वज़ा लिया जाएगा, और न उन की मदद की जाएगी। (48)

وَاِذۡ نَجَّيۡنٰكُمۡ مِّنۡ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ يَسُوۡمُوۡنَكُمۡ سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ

अज़ाब	बुरा	वह तुम्हें दुख देते थे	आले फ़िरऔन	से	हम नें तुम्हें रिहाई दी	और जब

يُذَبِّحُوۡنَ اَبۡنَآءَكُمۡ وَيَسۡتَحۡيُوۡنَ نِسَآءَكُمۡ ؕ وَفِىۡ ذٰلِكُمۡ بَلَآءٌ مِّنۡ

से	आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ देते थे	तुम्हारे बेटे	वह ज़ुबह करते थे

رَّبِّكُمۡ عَظِيۡمٌ ﴿٤٩﴾ وَاِذۡ فَرَقۡنَا بِكُمُ الۡبَحۡرَ فَاَنۡجَيۡنٰكُمۡ وَاَغۡرَقۡنَآ

और हम ने डुबो दिया	फिर तुम्हें बचा लिया	दर्या	तुम्हारे लिए	हम ने फाड़ दिया	और जब	49	बड़ी	तुम्हारा रब

اٰلَ فِرۡعَوۡنَ وَاَنۡتُمۡ تَنۡظُرُوۡنَ ﴿٥٠﴾ وَاِذۡ وٰعَدۡنَا مُوۡسٰٓى اَرۡبَعِيۡنَ لَيۡلَةً

रात	चालीस	मूसा (अ)	हम ने वादा किया	और जब	50	देख रहे थे	और तुम	आले फ़िरऔन

ثُمَّ اتَّخَذۡتُمُ الۡعِجۡلَ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ وَاَنۡتُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوۡنَا

हम ने माफ़ कर दिया	फिर	51	ज़ालिम (जमा)	और तुम	उन के बाद	बछड़ा	तुम ने बना लिया	फिर

عَنۡكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى

मूसा (अ)	हम ने दी	और जब	52	एहसान मानो	ताकि तुम	यह	उस के बाद	तुम से

الۡكِتٰبَ وَالۡفُرۡقَانَ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ﴿٥٣﴾ وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهٖ

अपनी क़ौम से	मूसा	कहा	और जब	53	हिदायत पा लो	ताकि तुम	और कसौटी	किताब

يٰقَوۡمِ اِنَّكُمۡ ظَلَمۡتُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ بِاتِّخَاذِكُمُ الۡعِجۡلَ فَتُوۡبُوۡٓا

सो तुम रुजूअ़ करो	बछड़ा	तुम ने बना लिया	अपने ऊपर	तुम ने ज़ुल्म किया	बेशक तुम	ऐ क़ौम

اِلٰى بَارِئِكُمۡ فَاقۡتُلُوۡٓا اَنۡفُسَكُمۡ ؕ ذٰلِكُمۡ خَيۡرٌ لَّكُمۡ عِنۡدَ

नज़दीक	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह	अपनी जानें	सो तुम हलाक करो	पैदा करने वाला	तरफ़

بَارِئِكُمۡ ؕ فَتَابَ عَلَيۡكُمۡ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿٥٤﴾ وَاِذۡ

और जब	54	रहम करने वाला	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	बेशक	तुम्हारी	उस ने तौबा क़ुबूल की	तुम्हारा पैदा करने वाला

قُلۡتُمۡ يٰمُوۡسٰى لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهۡرَةً فَاَخَذَتۡكُمُ

फिर तुम्हें आ लिया	खुल्लम खुल्ला	हम देख लें अल्लाह को	जब तक	तुझे	हम हरगिज़ न मानेंगे	ऐ मूसा	तुम ने कहा

الصّٰعِقَةُ وَاَنۡتُمۡ تَنۡظُرُوۡنَ ﴿٥٥﴾ ثُمَّ بَعَثۡنٰكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَوۡتِكُمۡ

तुम्हारी मौत	बाद	से	हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया	फिर	55	तुम देख रहे थे	और तुम	बिजली की कड़क

لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿٥٦﴾ وَظَلَّلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡغَمَامَ وَاَنۡزَلۡنَا

और हम ने उतारा	बादल	तुम पर	और हम ने साया किया	56	एहसान मानो	ताकि तुम

عَلَيۡكُمُ الۡمَنَّ وَالسَّلۡوٰى ؕ كُلُوۡا مِنۡ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ ؕ

हम ने तुम्हें दीं	जो	पाक चीज़ें	से	तुम खाओ	और सलवा	मन्न	तुम पर

وَمَا ظَلَمُوۡنَا وَلٰكِنۡ كَانُوۡٓا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿٥٧﴾

57	वह ज़ुल्म करते थे	अपनी जानें	थे	और लेकिन	उन्हों ने ज़ुल्म किया हम पर	और नहीं

और जब हम नें तुम्हें आले फ़िरऔन से रिहाई दी, वह तुम्हें दुख देते थे बुरा अ़ज़ाब। और वह तुम्हारे बेटों को ज़ुबह करते थे और तुम्हारी औ़रतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (49)

और जब हम नें तुम्हारे लिए फाड़ दिया दर्या, फिर हम ने तुम्हें बचा लिया और आले फ़िरऔन को डुबो दिया, और तुम देख रहे थे। (50)

और जब हम ने मूसा (अ) से चालीस रातों का वादा किया, फिर तुम ने बछड़े को उन के बाद (माबूद) बना लिया, और तुम ज़ालिम हुए। (51)

फिर हम ने तुम्हें उस के बाद माफ़ कर दिया ताकि तुम एहसान मानो। (52)

और जब हम ने मूसा को किताब दी और कसौटी (हक़ और बातिल के दरमियान फ़रक़ करने वाला) ताकि तुम हिदायत पा लो। (53)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ क़ौम! बेशक तुम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया बछड़े को (माबूद) बना कर, सो तुम अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजूअ़ करो, अपनों को हलाक करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक, सो उस ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल कर ली, बेशक वह तौबा क़ुबूल करने वाला रह्म करने वाला है। (54)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम तुझे हरगिज़ न मानेंगे जब तक अल्लाह को हम खुल्लम खुल्ला न देख लें, फिर तुम्हें बिजली की कड़क ने आ लिया, और तुम देख रहे थे। (55)

फिर हम ने तुम्हें तुम्हारी मौत के बाद ज़िन्दा किया ताकि तुम एहसान मानो। (56)

और हम ने तुम पर बादल का साया किया और हम ने तुम पर मन्न और सलवा उतारा, वह पाक चीज़ें खाओ जो हम ने तुम्हें दीं। और उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया और लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (57)

وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ

तुम चाहो	जहां	उस से	फिर खाओ	बस्ती	उस	तुम दाख़िल हो	हम ने कहा	और जब

رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ

तुम्हें	हम बख़्श देंगे	बख़्शदे	और कहो	सिज्दा करते हुए	दरवाज़ा	और तुम दाख़िल हो	बाफ़राग़त

خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا

बात	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	फिर बदल डाला	58	नेकी करने वाले	और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं

غَيْرَ الَّذِىْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا

अ़ज़ाब	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	पर	फिर हम ने उतारा	उन्हें	कही गई	वह जो कि	दूसरी

مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ

ع ٦ ١٣ ٦

अपनी क़ौम के लिए	मूसा (अ)	पानी मांगा	और जब	59	वह नाफ़रमानी करते थे	क्योंकि	आस्मान	से

فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ

चश्मे	बारह	उस से	तो फूट पड़े	पत्थर	अपना अ़सा	मारो	फिर हम ने कहा

قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ

अल्लाह के दिये हुए रिज़्क़ से	और पियो	तुम खाओ	अपना घाट	हर क़ौम	जान लिया

وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى

ऐ मूसा	तुम ने कहा	और जब	60	फ़साद मचाते	ज़मीन	में	और न फिरो

لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا

उस से जो	निकाले हमारे लिए	अपना रब	हमारे लिए	दुआ करें	एक	खाना	पर	हरगिज़ न सब्र करेंगे

تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا

और मसूर	और गन्दुम	और ककड़ी	तरकारी	से (कुछ)	ज़मीन	उगाती है

وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ

बेहतर	वह	उस से जो	वह अदना	जो कि	क्या तुम बदलना चाहते हो	उस ने कहा	और प्याज़

اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ

ज़िल्लत	उन पर	और डालदी गई	जो तुम मांगते हो	तुम्हारे लिए	पस बेशक	शहर	तुम उतरो

وَالْمَسْكَنَةُ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

इस लिए कि वह	यह	अल्लाह	से	ग़ज़ब के साथ	और वह लौटे	और मोहताजी

كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

नबियों को	और क़त्ल करते थे	अल्लाह की आयतों का	वह इन्कार करते	वह थे

بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ ع

ع ٧ ٢ ٧

61	हद से बढ़ते	और थे	उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस लिए कि	यह	नाहक़

और जब हम ने कहा तुम दाख़िल हो जाओ उस बस्ती में, फिर उस में जहां से चाहो बाफ़राग़त खाओ और दरवाज़े से दाख़िल हो सिज्दा करते हुए, और कहो बख़्श दे, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे नेकी करने वालों को। (58)

फिर ज़ालिमों ने दूसरी बात से उस बात को बदल डाला जो कही गई थी उन्हें, फिर हम ने ज़ालिमों पर आस्मान से अ़ज़ाब उतारा, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (59)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा, फिर हम ने कहा अपना अ़सा पत्थर पर मारो, तो फूट पड़े उस से बारह चश्मे, हर क़बीले ने अपना घाट जान लिया, तुम खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क़ से, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते। (60)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम एक खाने पर हरगिज़ सब्र न करेंगे, आप हमारे लिए अपने रब से दुआ करें कि हमारे लिए निकाले जो ज़मीन उगाती है, कुछ तरकारी और ककड़ी और गन्दुम और मसूर और प्याज़। उस ने कहा क्या तुम बदलना चाहते हो? वह जो अदना है उस से जो बेहतर है, तुम शहर में उतरो बेशक तुम्हारे लिए होगा जो तुम मांगते हो, और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी डाल दी गई, और वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ, यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते थे, यह इस लिए हुआ कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (61)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ

और साबी	और नसारा	यहूदी हुए	और जो लोग	ईमान लाए	बेशक जो लोग

مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

उन का अजर	तो उन के लिए	नेक	और अ़मल करे	और रोज़े आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا

हम ने लिया	और जब	62	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उन का रब	पास

مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ

मज़बूती से	जो हम ने तुम्हें दिया	पकड़ो	कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने उठाया	तुम से इक़रार

وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ

उस	बाद	तुम फिर गए	फिर	63	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम	उस में	जो	और याद रखो

فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾

64	नुक़्सान उठाने वाले	से	तो तुम थे	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	पस अगर न

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِى السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ

उन से	तब हम ने कहा	हफ़्ते के दिन में	तुम से	ज़ियादती की	जिन्हों ने	तुम ने जान लिया	और अलबत्ता

كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿٦٥﴾ ۚ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا

सामने वालों के लिए	इब्रत	फिर हम ने उसे बनाया	65	ज़लील	बन्दर	तुम हो जाओ

وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ

अपनी क़ौम से	मूसा (अ)	कहा	और जब	66	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	उस के पीछे	और जो

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ

मज़ाक़	क्या तुम करते हो हम से	वह कहने लगे	एक गाय	तुम ज़ुबह करो	कि	तुम्हें हुक्म देता है	बेशक अल्लाह

قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا

हमारे लिए	दुआ़ करें	उन्हों ने कहा	67	जाहिलों से	कि हो जाऊँ	अल्लाह की	मैं पनाह लेता हूँ	उस ने कहा

رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِىَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

गाय	कि वह	फ़रमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	कैसी है वह	हमें	बतलाए	अपना रब

لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	जो तुम्हें हुक्म दिया जाता है	पस करो	उस	दरमियान	जवान	छोटी उम्र	और न	न बूढ़ी

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ

फ़रमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	कैसा उस का रंग	हमें	वह बतलादे	अपना रब	हमारे लिए	दुआ़ करें	उन्हों ने कहा

اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾

69	देखने वाले	अच्छी लगती	उस का रंग	गहरा	ज़र्द रंग	एक गाय	कि वह

बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और नसरानी और साबी, जो ईमान लाए अल्लाह पर और रोज़े आख़िरत पर और नेक अ़मल करे तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अजर है, और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जब हम ने तुम से इक़रार लिया, और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर उठाया, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो, और जो उस में है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (63)

फिर उस के बाद तुम फिर गए, पस अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तुम पर और उस की रहमत तो तुम नुक़्सान उठाने वालों में से थे। (64)

और अलबत्ता तुम ने (उन लोगों को) जान लिया जिन्हों ने तुम में से हफ़्ते के दिन में ज़ियादती की, तब हम ने उन से कहा तुम ज़लील बन्दर हो जाओ। (65)

फिर हम ने उसे सामने वालों के लिए और पीछे आने वालों के लिए इब्रत बनाया और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (66)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़ुबह करो, वह कहने लगे क्या तुम हम से मज़ाक़ करते हो? उस ने कहा मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ (इस से) कि मैं जाहिलों से हो जाऊँ। (67)

उन्हों ने कहा अपने रब से हमारे लिए दुआ़ करें कि वह हमें बतलाए वह कैसी है? उस ने कहा बेशक वह फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी है और न छोटी उम्र की, उस के दरमियान जवान है, पस तुम्हें जो हुक्म दिया जाता है करो। (68)

उन्हों ने कहा हमारे लिए दुआ़ करें अपने रब से कि वह हमें बतला दे उस का रंग कैसा है? उस ने कहा बेशक वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है ज़र्द रंग की, उस का रंग ख़ूब गहरा है, देखने वालों को अच्छी लगती है। (69)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ

उन्हों ने कहा	दुआ करें	हमारे लिए	अपना रब	वह बतला दे	हमें	वह कैसी	क्योंकि	गाय	इश्तिबाह हो गया	हम पर

وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

और बेशक हम	अगर	अल्लाह ने चाहा	ज़रूर हिदायत पा लेंगे	70	उस ने कहा	बेशक वह	फ़रमाता है	कि वह	एक गाय

لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ

न सधी हुई	जोतती	ज़मीन	और न	पानी देती	खेती	बे ऐब	नहीं	कोई दाग़	उस में

قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾ ع ١٠ ٨

वह बोले	अब	तुम लाए	ठीक बात	फिर उन्हों ने ज़ुबह किया उस को	और वह लगते न थे	वह करें	71

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ

और जब	तुम ने क़त्ल किया	एक आदमी	फिर तुम झगड़ने लगे	उस में	और अल्लाह	ज़ाहिर करने वाला	जो तुम थे

تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾ فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى

छुपाते	72	फिर हम ने कहा	उसे मारो	उस का टुकड़ा	इस तरह	ज़िन्दा करेगा अल्लाह	मुर्दे

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ

और तुम्हें दिखाता है	अपने निशान	ताकि तुम	ग़ौर करो	73	फिर	सख़्त हो गए	तुम्हारे दिल	बाद

ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ

उस	सो वह	पत्थर जैसे	या	उस से ज़ियादा	सख़्त	और बेशक	से	पत्थर

لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ

अलबत्ता	फूट निकलती हैं	उस से	नहरें	और बेशक	उस से (बाज़)	अलबत्ता जो	फट जाते हैं	तो निकलता है	उस से

الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

पानी	और बेशक	उस से	अलबत्ता गिरता है	से	अल्लाह का डर	और नहीं अल्लाह	बेख़बर

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ

से जो	तुम करते हो	74	क्या फिर तुम तवक़्क़ो रखते हो	कि	मान लेंगे	तुम्हारे लिए	और था

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْ بَعْدِ

एक फ़रीक़	उन से	वह सुनते हैं	अल्लाह का कलाम	फिर	वह बदल डालते हैं उस को	बाद

مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْآ

जो उन्हों ने समझ लिया	और वह	जानते हैं	75	और जब	वह मिलते हैं	जो लोग	ईमान लाए	वह कहते हैं

اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْآ اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا

हम ईमान लाए	और जब	अकेले होते हैं	उन के बाज़	पास	बाज़	कहते हैं	क्या बतलाते हो उन्हें	जो

فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾

ज़ाहिर किया अल्लाह ने	तुम पर	ताकि वह हुज्जत लाएं तुम पर	उस के ज़रीए	सामने	तुम्हारा रब	तो क्या तुम नहीं समझते	76

उन्हों ने कहा हमारे लिए अपने रब से दुआ करें वह हमें बतला दे वह कैसी है? क्योंकि गाय में हम पर इश्तिबाह हो गया, और अगर अल्लाह ने चाहा तो बेशक हम ज़रूर हिदायत पा लेंगे। (70)

उस ने कहा बेशक वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है न सधी हो, न ज़मीन जोतती न खेती को पानी देती, बे ऐब है, उस में कोई दाग़ नहीं, वह बोले अब तुम ठीक बात लाए, फिर उन्हों ने उसे ज़ुबह किया, और वह लगते न थे कि वह (ज़ुबह) करें। (71)

और जब तुम ने एक आदमी को क़त्ल किया फिर तुम उस में झगड़ने लगे और अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था जो तुम छुपाते थे। (72)

फिर हम ने कहा तुम उस (मक़्तूल) को गाय का एक टुकड़ा मारो, इस तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, वह तुम्हें दिखाता है अपनी निशानियां ताकि तुम ग़ौर करो। (73)

फिर उस के बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, सो वह पत्थर जैसे हो गए या उस से ज़ियादा सख़्त, और बेशक बाज़ पत्थरों से नहरें फूट निकलती हैं, और बेशक उन में से बाज़ फट जाते हैं तो निकलता है उन से पानी, और उन में से बाज़ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

फिर क्या तुम तवक़्क़ो रखते हो? कि वह मान लेंगे तुम्हारी ख़ातिर, और उन में से एक फ़रीक़ अल्लाह का कलाम सुनता है फिर वह उस को बदल डालते हैं उस को समझ लेने के बाद, और वह जानते हैं। (75)

और जब वह उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब उन के बाज़ दूसरों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं क्या तुम उन्हें वह बतलाते हो जो अल्लाह ने तुम पर ज़ाहिर किया ताकि वह उस के ज़रीए तुम्हारे रब के सामने हुज्जत लाएं तुम पर, तो क्या तुम नहीं समझते? (76)

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٧﴾

77	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो वह छुपाते हैं	जानता है	कि अल्लाह	वह जानते	क्या नहीं

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا

मगर	वह	और नहीं	आर्ज़ूएं	सिवाए	किताब	वह नहीं जानते	अनपढ़	और उन में

النصف يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ

फिर	अपने हाथों से	किताब	लिखते हैं	उन के लिए जो	सो ख़राबी	78	गुमान से काम लेते हैं

يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَوَيْلٌ

सो ख़राबी	थोड़ी	क़ीमत	उस से	ताकि वह हासिल करें	अल्लाह के पास	से	यह	वह कहते हैं

لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوا

और उन्हों ने कहा	79	वह कमाते हैं	उस से जो	उन के लिए	और ख़राबी	उन के हाथ	लिखा	उस से जो	उन के लिए

لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۚ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِندَ اللَّهِ

अल्लाह के पास	क्या तुम ने लिया	कह दो	चन्द	दिन	सिवाए	आग	हरगिज़ नहीं छुएगी

عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا

जो नहीं	अल्लाह पर	तुम कहते हो	या	अपना वादा	ख़िलाफ़ करेगा अल्लाह	कि हरगिज़ न	कोई वादा

تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾ بَلَىٰ مَن كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ

उस की ख़ताएं	उस को	और घेर लिया	कोई बुराई	कमाई	जिस ने	क्यों नहीं	80	तुम जानते

فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِينَ

और जो लोग	81	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	आग वाले (दोज़ख़ी)	पस यही लोग

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ

वह	जन्नत वाले	यही लोग	अच्छे अ़मल	और उन्हों ने किए	ईमान लाए

ع ٩ ١١ ٩ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ

बनी इस्राईल	पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब	82	हमेशा रहेंगे	उस में

لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ

और क़रावतदार	हुस्ने सुलूक	और माँ बाप से	सिवाए अल्लाह	तुम इबादत न करना

وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا

अच्छी बात	लोगों से	और तुम कहना	और मिस्कीन (जमा)	और यतीम (जमा)

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۚ ثُمَّ

फिर	ज़कात	और देना	नमाज़	और तुम क़ाइम करना

تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنكُمْ وَأَنتُم مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾

83	फिर जाने वाले	और तुम	तुम में से	चन्द एक	सिवाए	तुम फिर गए

क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (77)

और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब नहीं जानते सिवाए चन्द आर्ज़ूओं के, और वह सिर्फ़ गुमान से काम लेते हैं। (78)

सो उन के लिए ख़राबी है जो वह किताब लिखते हैं अपने हाथों से, फिर कहते हैं यह अल्लाह के पास से है ताकि उस के ज़रीए हासिल कर लें थोड़ी सी क़ीमत, सो उन के लिए ख़राबी है उस से जो उन के हाथों ने लिखा, और उन के लिए ख़राबी है उस से जो वह कमाते हैं। (79)

और उन्हों ने कहा कि हमें आग हरगिज़ न छुएगी सिवाए गिनती के चन्द दिन, कह दो, क्या तुम ने अल्लाह के पास से कोई वादा लिया है कि अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करेगा या तुम अल्लाह पर वह कहते हो जो तुम नहीं जानते? (80)

क्यों नहीं! जिस ने कमाई कोई बुराई और उस को उस की ख़ताओं ने घेर लिया पस यही लोग दोज़ख़ी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (81)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (82)

और जब हम ने लिया बनी इस्राईल से पुख़्ता अ़हद कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करना, और क़रावतदारों, यतीमों और मिस्कीनों से। और तुम कहना लोगों से अच्छी बात, और नमाज़ क़ाइम करना और ज़कात देना, फिर तुम फिर गए तुम में से चन्द एक के सिवा, और तुम फिर जाने वाले हो। (83)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ

तुम निकालोगे	और न	अपनों के ख़ून	न तुम बहाओगे	तुम से पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब

اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾

84	गवाह हो	और तुम	तुम ने इक़रार किया	फिर	अपनी बस्तियां	से	अपनों

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ

अपने से	एक फ़रीक़	और तुम निकालते हो	अपनों को	क़त्ल करते हो	वह लोग	तुम	फिर

مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ

और अगर	और सरकशी	गुनाह से	उन पर	तुम चढ़ाई करते हो	उन के वतन	से

يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ

निकालना उन का	तुम पर	हराम किया गया	हालांकि वह	तुम बदला दे कर छुड़ाते हो उन्हें	क़ैदी	वह आएं तुम्हारे पास

اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ

सज़ा	सो क्या	बाज़ हिस्से	और इन्कार करते हो	किताब	बाज़ हिस्से	तो क्या तुम ईमान लाते हो

مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुसवाई	सिवाए	तुम में से	यह	करे	जो

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	सख़्त अ़ज़ाब	तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	और क़ियामत के दिन

تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۪

आख़िरत के बदले	दुनिया	ज़िन्दगी	ख़रीद ली	वह जिन्हों ने	यही लोग	85	तम करते हो

ع ١٠ ٤ ١٠

فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾

86	मदद किए जाएंगे	वह	और न	अ़ज़ाब	उन से	सो हलका न किया जाएगा

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۪

रसूल	उस के बाद	और हम ने पै दर पै भेजे	किताब	मूसा	और अलबत्ता हम ने दी

وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ

जिब्राईल (अ) के ज़रीए	और उस की मदद की	खुली निशानियां	मरयम का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी

اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ

तुम ने तकब्बुर किया	तुम्हारे नफ़्स	न चाहते	उस के साथ जो	कोई रसूल	आया तुम्हारे पास	क्या फिर जब

فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۬ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ

पर्दे में	हमारे दिल	और उन्हों ने कहा	87	तुम क़त्ल करने लगे	और एक गिरोह	तुम ने झुटलाया	सो एक गिरोह

بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	जो ईमान लाते हैं	सो थोड़े	उन के कुफ़्र के सबब	उन पर लानत अल्लाह की	बल्कि

और फिर जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया कि तुम अपनों के ख़ून न बहाओगे और न तुम अपनों को अपनी बस्तियों से निकालोगे, फिर तुम ने इक़रार किया और तुम गवाह हो। (84)

फिर तुम वह लोग हो जो क़त्ल करते हो अपनों को, और अपने एक फ़रीक़ को उन के वतन से निकालते हो, तुम चढ़ाई करते हो उन पर गुनाह और सरकशी से, और अगर वह तुम्हारे पास क़ैदी आएं तो बदला दे कर उन्हें छुड़ाते हो, हालांकि उन का निकालना तुम पर हराम किया गया था, तो क्या तुम किताब के बाज़ हिस्से पर ईमान लाते हो और बाज़ हिस्से का इन्कार करते हो? सो तुम में जो ऐसा करे उस की क्या सज़ा है? सिवाए इस के कि दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई और वह क़ियामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बेख़बर नहीं। (85)

यही लोग हैं जिन्हों ने ख़रीद ली आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी, सो उन से अ़ज़ाब हलका न किया जाएगा, और न वह मदद किए जाएंगे। (86)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और हम ने उस के बाद पै दर पै भेजे रसूल, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दीं और उस की मदद की जिब्राईल (अ) के ज़रीए, क्या फिर जब तुम्हारे पास कोई रसूल उस के साथ आया जो तुम्हारे नफ़्स न चाहते थे तो तुम ने तकब्बुर किया, सो एक गिरोह को तुम ने झुटलाया और एक गिरोह को तुम क़त्ल करने लगे। (87)

और उन्हों ने कहा हमारे दिल पर्दे में हैं, बल्कि उन पर उन के कुफ़्र के सबब अल्लाह की लानत है, सो थोड़े हैं जो ईमान लाते हैं। (88)

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ

उन के पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाली	अल्लाह के पास	से	किताब	उन के पास आई	और जब

وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا

सो जब	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पर	फ़त्ह मांगते	इस से पहले	और वह थे

جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۚ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

89	काफ़िर (जमा)	पर	सो लानत अल्लाह की	उस के मुन्किर हो गए	वह पहचानते थे	जो	आया उन के पास

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا

ज़िद	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस से जो	वह मुन्किर हुए	कि	अपने आप	उस के बदले	बेच डाला उन्हों ने	बुरा है जो

اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ

अपने बन्दे	से	जो वह चाहता है	पर	अपना फ़ज़्ल	से	नाज़िल करता है अल्लाह	कि

فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ

अज़ाब	और काफ़िरों के लिए	ग़ज़ब	पर	ग़ज़ब	सो वह कमा लाए

مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا

वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस पर जो	तुम ईमान लाओ	उन्हें	और जब कहा जाता है	90	रुसवा करने वाला

نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۭ وَهُوَ الْحَقُّ

हक़	हालांकि वह	उस के अलावा	उस से जो	और इन्कार करते हैं	हम पर	नाज़िल किया गया	उस पर जो	हम ईमान लाते हैं

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۭ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ

अल्लाह के नबी (जमा)	तुम क़त्ल करते रहे	सो क्यों	कह दें	उन के पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला

مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ

तुम्हारे पास आए	और अलबत्ता	91	मोमिन (जमा)	तुम हो	अगर	इस से पहले

مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ

और तुम	उस के बाद	बछड़ा	तुम ने बना लिया	फिर	खुली निशानियों के साथ	मूसा

ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۭ

कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	तुम से पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब	92	ज़ालिम (जमा)

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ۭ قَالُوْا سَمِعْنَا

हम ने सुना	वह बोले	और सुनो	मज़बूती से	जो हम ने दिया तुम्हें	पकड़ो

وَعَصَيْنَا ۡ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۭ

बसबब उन के कुफ़्र	बछड़ा	उन के दिल	में	और रचा दिया गया	और नाफ़रमानी की

قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

93	मोमिन	अगर तुम हो	ईमान तुम्हारा	उस का	तुम्हें हुक्म देता है	क्या ही बुरा जो	कह दें

और जब उन के पास अल्लाह की तरफ़ से किताब आई, उस की तस्दीक़ करने वाली जो उन के पास है और वह इस से पहले काफ़िरों पर फ़त्ह मांगते थे, सो जब उन के पास वह आया जो वह पहचानते थे वह उस के मुन्किर हो गए, सो काफ़िरों पर अल्लाह की लानत। (89)

बुरा है जिस के बदले उन्हों ने अपने आप को बेच डालो कि वह उस के मुन्किर हो गए जो अल्लाह ने नाज़िल किया इस ज़िद से कि अल्लाह नाज़िल करता है अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर वह चाहता है, सो कमा लाए ग़ज़ब पर ग़ज़ब, और काफ़िरों के लिए रुसवा करने वाला अ़ज़ाब है। (90)

और जब उन से कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो कहते हैं हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर नाज़िल किया गया और इन्कार करते हैं उस का जो उस के अ़लावा है, हालांकि वह हक़ है, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उन के पास है, आप कह दें सो क्यों तुम अल्लाह के नबियों को इस से पहले क़त्ल करते रहे हो? अगर तुम मोमिन हो। (91)

और अलबत्ता मूसा (अ) तुम्हारे पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर तुम ने उस के बाद बछड़े को (माबूद) बना लिया और तुम ज़ालिम हो। (92)

और जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया और तुम्हारे ऊपर कोहे तूर बुलन्द किया (और कहा) जो हम ने तुम्हें दिया है मज़बूती से पकड़ो और सुनो, तो वह बोले हम ने सुना और नाफ़रमानी की, और उन के दिलों में बछड़ा रचा दिया गया उन के कुफ़्र के सबब, कह दें क्या ही बुरा है जिस का तुम्हें हुक्म देता है तुम्हारा ईमान, अगर तुम मोमिन हो। (93)

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً

ख़ास तौर पर	अल्लाह के पास	आख़िरत का घर	तुम्हारे लिए	अगर है	कह दें

مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾

94	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	तो तुम आर्ज़ू करो	लोग	सिवाए

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًا ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

जानने वाला	और अल्लाह	उन के हाथ	बसबब जो आगे भेजा	कभी	और वह हरगिज़ उस की आर्ज़ू न करेंगे

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۛ

ज़िन्दगी पर	लोग	ज़ियादा हरीस	और अलबत्ता तुम पाओगे उन्हें	95	ज़ालिमों को

وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۛ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ

साल	हज़ार	काश वह उम्र पाए	उन का हर एक	चाहता है	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और से

وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

जो	देखने वाला	और अल्लाह	कि वह उम्र दिया जाए	अज़ाब	से	उसे दूर करने वाला	और वह नहीं

يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ ع قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ

यह नाज़िल किया	तो बेशक उस ने	जिब्रील का	दुश्मन	हो	जो	कह दें	96	वह करते हैं

عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى

और हिदायत	इस से पहले	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	अल्लाह के हुक्म से	तेरे दिल पर

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

और उस के फ़रिश्ते	अल्लाह का	दुश्मन	हो	जो	97	ईमान वालों के लिए	और ख़ुशख़बरी

وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾

98	काफ़िरों का	दुश्मन	तो बेशक अल्लाह	और मिकाईल	और जिब्रील	और उस के रसूल

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ

उस का	और नहीं इन्कार करते	निशानियां वाज़ेह	आप की तरफ़	हम ने उतारी	और अलबत्ता

اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَ كُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ

उन में से	एक फ़रीक़	तोड़ दिया उस को	कोई अहद	उन्हों ने अहद किया	क्या जब भी	99	नाफ़रमान	मगर

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ़ से	एक रसूल	आया उन के पास	और जब	100	ईमान नहीं रखते	अक्सर उन के	बल्कि

مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ

किताब दी गई (अहले किताब)	जिन्हें	से	एक फ़रीक़	फेंक दिया	उन के पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला

كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾

101	जानते नहीं	गोया कि वह	अपनी पीठ	पीछे	अल्लाह की किताब

कह दें अगर तुम्हारे लिए है आख़िरत का घर अल्लाह के पास ख़ास तौर पर दूसरे लोगों के सिवा, तो तुम मौत की आर्ज़ू करो अगर तुम सच्चे हो। (94)

और वह हरगिज़ कभी मौत की आर्ज़ू न करेंगे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (95)

और अलबत्ता तुम उन्हें दूसरे लोगों से ज़ियादा ज़िन्दगी पर हरीस पाओगे, और मुश्रिकों से (भी ज़ियादा), उन में से हर एक चाहता है काश वह हज़ार साल की उम्र पाए, और इतनी उम्र दिया जाना उसे अज़ाब से दूर करने वाला नहीं, और अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (96)

कह दें जो जिब्रील (अ) का दुश्मन हो तो बेशक उस ने यह आप के दिल पर नाज़िल किया है अल्लाह के हुक्म से, उस की तस्दीक़ करने वाला जो इस से पहले है, और हिदायत और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए। (97)

जो दुश्मन हो अल्लाह का और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों का और जिब्रील और मिकाईल का, तो बेशक अल्लाह काफ़िरों का दुश्मन है। (98)

और अलबत्ता हम ने आप (स) की तरफ़ वाज़ेह निशानियां उतारीं और उन का इन्कार सिर्फ़ नाफ़रमान करते हैं। (99)

क्या (ऐसा नहीं) जब भी उन्हों ने कोई अहद किया तो उस को तोड़ दिया उन में से एक फ़रीक़ ने, बल्कि उन के अक्सर ईमान नहीं रखते। (100)

और जब उन के पास एक रसूल आया अल्लाह की तरफ़ से, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उन के पास है, तो फेंक दिया एक फ़रीक़ ने अहले किताब के, अल्लाह की किताब को अपनी पीठ पीछे, गोया कि वह जानते ही नहीं। (101)

معانقة ٢ عند المتأخرين

ع ١١ ١٠ ١١

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ

और कुफ़्र न किया	सुलेमान (अ)	बादशाहत	में	शैतान	पढ़ते थे	जो	और उन्हों ने पैरवी की

سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ

जादू	लोग	वह सिखाते	कुफ़्र किया	शैतान (जमा)	लेकिन	सुलेमान (अ)

وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۭ

और मारूत	हारूत	बाबिल में	दो फ़रिश्ते	पर	और जो नाज़िल किया गया

وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۭ

पस तू कुफ़्र न कर	आज़माइश	हम	सिर्फ़	वह कह देते	यहां तक	किसी को	और वह न सिखाते

فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۭ

और उस की बीवी	ख़ाविन्द	दरमियान	उस से	जिस से जुदाई डालते	उन दोनों से	सो वह सीखते

وَمَا هُمْ بِضَاۗرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह	हुक्म से	मगर	किसी को	उस से	नुक़्सान पहुँचाने वाले	और वह नहीं

وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّھُمْ وَلَا يَنْفَعُھُمْ ۭ وَلَقَدْ عَلِمُوْا

और वह जान चुके	उन्हें नफ़ा दे	और न	जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाए	और वह सीखते हैं

لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ڐ وَلَبِئْسَ

और अलबत्ता बुरा	कोई हिस्सा	आख़िरत में	नहीं उस के लिए	यह ख़रीदा	जिस ने

مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَھُمْ ۭ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ١٠٢ وَلَوْ اَنَّھُمْ

वह	और अगर	102	वह जानते होते	काश	अपने आप को	उस से	जो उन्हों ने बेच दिया

اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۭ

बेहतर	अल्लाह के पास	से	तो ठिकाना पाते	और परहेज़गार बन जाते	वह ईमान लाते

ع ١٢ ١٢

لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ١٠٣ ۧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا

राइना	न कहो	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	103	काश वह जानते होते

وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ١٠٤

104	दर्दनाक	अज़ाब	और काफ़िरों के लिए	और सुनो	उनज़ुरना	और कहो

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ

मुश्रिक (जमा)	और न	अहले किताब	से	कुफ़्र किया	जिन लोगों ने	नहीं चाहते

اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ

ख़ास कर लेता है	और अल्लाह	तुम्हारा रब	से	भलाई	से	तुम पर	नाज़िल की जाए	कि

بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ١٠٥

105	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	जिसे चाहता है	अपनी रहमत से

और उन्हों ने उस की पैरवी की जो शैतान सुलेमान (अ) की बादशाहत में पढ़ते थे। और कुफ़्र नहीं किया सुलेमान (अ) ने लेकिन शैतानों ने कुफ़्र किया, वह लोगों को जादू सिखाते, और जो बाबिल में हारूत और मारूत दो फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया, और वह न सिखाते किसी को यहां तक कि कह देते हम तो सिर्फ़ आज़माइश हैं पस तू कुफ़्र न कर, सो वह सीखते उन दोनों से वह कुछ जिस से ख़ाविन्द और उस की बीवी के दरमियान जुदाई डालते, और वह नुक़्सान पहुँचाने वाले नहीं उस से किसी को मगर अल्लाह के हुक्म से, और वह सीखते जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाए और उन्हें नफ़ा न दे, और अलबत्ता वह जान चुके थे कि जिस ने यह ख़रीदा उस के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं, और अलबत्ता बुरा है जिस के बदले उन्हों ने अपने आप को बेच दिया। काश वह जानते होते। **(102)**

और अगर वह ईमान ले आते और परहेज़गार बन जाते तो अल्लाह के पास अच्छा बदला पाते, काश वह जानते होते। **(103)**

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनों)! राइना न कहो और उनज़ुरना (हमारी तरफ़ तवज्जह फ़रमाइए) कहो और सुनो, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। **(104)**

अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह नहीं चाहते और न मुश्रिक कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई नाज़िल की जाए और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत से ख़ास कर लेता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। **(105)**

कोई आयत जिसे हम मनसूख़ करते हैं या उसे हम भुला देते हैं उस से बेहतर या उस जैसी ले आते हैं, क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (106)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और तुम्हारे लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हामी और न मददगार। (107)

क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवाल करो जैसे सवाल किए गए इस से पहले मूसा (अ) से, और जो ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार कर ले सो वह भटक गया सीधे रास्ते से। (108)

बहुत से अहले किताब ने चाहा कि वह काश तुम्हें लौटा दें तुम्हारे ईमान के बाद कुफ़्र में, अपने दिल के हसद की वजह से, उस के बाद जब कि उन पर हक़ वाज़ेह हो गया, पस तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (109)

और नमाज़ क़ाइम करो और देते रहो ज़कात, और अपने लिए जो भलाई आगे भेजोगे तुम उसे पा लोगे अल्लाह के पास, बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (110)

और उन्हों ने कहा हरगिज़ दाख़िल न होगा जन्नत में सिवाए उस के जो यहूदी हो या नसरानी, यह उन की झूटी आर्ज़ूएं हैं, कह दीजिए तुम लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (111)

क्यों नहीं? जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार हो तो उस के लिए उस का अजर उस के रब के पास है, और उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (112)

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ

या उस जैसा	उस से	बेहतर	ले आते हैं	या उसे भुला देते हैं	कोई आयत	जो हम मनसूख़ करते हैं

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿١٠٦﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू नहीं जानता	106	क़ादिर	हर शै	पर	कि अल्लाह	तू जानता	क्या नहीं

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

कोई	अल्लाह के सिवा	से	तुम्हारे लिए	और नहीं	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत

وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ﴿١٠٧﴾ اَمْ تُرِیْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا

जैसे	अपना रसूल	सवाल करो	कि	क्या तुम चाहते हो	107	और न मददगार	हामी

سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ یَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِیْمَانِ

ईमान के बदले	कुफ़्र	इख़्तियार कर ले	और जो	इस से पहले	मूसा	सवाल किए गए

فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِیْلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِیْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

अहले किताब	से	बहुत	चाहा	108	रास्ता	सीधा	सो वह भटक गया

لَوْ یَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِیْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۖۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ

वजह से	हसद	कुफ़्र में	तुम्हारे ईमान	बाद	से	काश तुम्हें लौटा दें

اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَیَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا

पस तुम माफ़ कर दो	हक़	उन पर	वाज़ेह हो गया	जब कि	बाद	अपने दिल

وَاصْفَحُوْا حَتّٰى یَاْتِیَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

चीज़	हर	पर	बेशक अल्लाह	अपना हुक्म	लाए अल्लाह	यहां तक	और दरगुज़र करो

قَدِیْرٌ ﴿١٠٩﴾ وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا الثلثة

आगे भेजोगे	और जो	ज़कात	और देते रहो	नमाज़	और तुम क़ाइम करो	109	क़ादिर

لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَیْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

जो कुछ तुम करते हो	बेशक अल्लाह	अल्लाह के पास	तुम पा लोगे उसे	भलाई	अपने लिए

بَصِیْرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوْا لَنْ یَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا

यहूदी	हो	जो	सिवाए	जन्नत	हरगिज़ दाख़िल न होगा	और उन्हों ने कहा	110	देखने वाला

اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ اَمَانِیُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	अपनी दलील	तुम लाओ	कह दीजिए	झूटी आर्ज़ूएं	यह	या नसरानी

صٰدِقِیْنَ ﴿١١١﴾ بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ

तो उस के लिए	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए	अपना चेहरा	झुका दिया	जिस	क्यों नहीं	111	सच्चे

اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع ١٣ ٩ ١٣

112	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उस का रब	पास	उस का अजर

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ۖ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى

नसारा	और कहा	किसी चीज़	पर	नसारा	नहीं	यहूद	और कहा

لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ

जो लोग	कहा	इसी तरह	किताब	पढ़ते हैं	हालांकि वह	किसी चीज़ पर	यहूद	नहीं

لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

क़ियामत के दिन	फ़ैसला करेगा उन के दरमियान	सो अल्लाह	उन की बात	जैसी	इल्म नहीं रखते

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ

रोका	से-जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	113	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	जिस में

مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ

उस की वीरानी	में	और कोशिश की	उस का नाम	उस में	ज़िक्र किया जाए	कि	अल्लाह की मस्जिदें

اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا

दुनिया में	उन के लिए	डरते हुए	मगर	वहां दाख़िल होते	कि	उन के लिए	न था	यह लोग

خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾ وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ

और मग़्रिब	और अल्लाह के लिए मश्रिक़	114	बड़ा	अ़ज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए	रुसवाई

فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

115	जानने वाला है	वुस्अ़त वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह का सामना	तो उस तरफ़	तुम मुँह करो	सो जिस तरफ़

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों मे	जो	बल्कि उस के लिए	वह पाक है	बेटा	बना लिया अल्लाह ने	और उन्हों ने कहा

وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	116	ज़ेरे फ़रमान	उस के लिए	सब	और ज़मीन

وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ

जो लोग	और कहा	117	तो वह हो जाता है	"हो जा"	उसे	कहता है	तो यही	कोई काम	वह फ़ैसला करता है	और जब

لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ

इसी तरह	कोई निशानी	हमारे पास आती	या	हम से कलाम करता अल्लाह	क्यों नहीं	इल्म नहीं रखते

قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ

उन के दिल	एक जैसे हो गए	इन की बात	जैसी	इन से पहले	जो लोग	कहा

قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	आप को भेजा	बेशक हम	118	यक़ीन रखते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	हम ने वाज़ेह कर दी

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾

119	दोज़ख़ वाले	से	और न आप से पूछा जाएगा	और डराने वाला	ख़ुशख़बरी देने वाला

और यहूद ने कहा नसारा किसी चीज़ पर नहीं, और नसारा ने कहा यहूदी किसी चीज़ पर नहीं हालांकि वह पढ़ते हैं किताब। इसी तरह उन लोगों ने उन जैसी बात कही जो इल्म नहीं रखते, सो अल्लाह उन के दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (113)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह की मस्जिदों से रोका कि उन में अल्लाह का नाम लिया जाए, और उस की वीरानी की कोशिश की, उन लोगों के लिए (हक़) न था कि वहां दाख़िल होते मगर डरते हुए, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है। (114)

और अल्लाह के लिए है मश्रिक़ और मग़्रिब, सो जिस तरफ़ तुम मुँह करो उसी तरफ़ अल्लाह का सामना है, बेशक अल्लाह वुस्अ़त वाला, जानने वाला है। (115)

और उन्हों ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है, वह पाक है, बल्कि उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के ज़ेरे फ़रमान हैं। (116)

वह पैदा करने वाला है आस्मानों का और ज़मीन का, और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे यही कहता है "हो जा" तो वह हो जाता है। (117)

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्हों ने कहा अल्लाह हम से कलाम क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी तरह इन से पहले लोगों ने इन जैसी बात कही, इन (अगले पिछले गुमराहों) के दिल एक जैसे हैं। हम ने यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए निशानियां वाज़ेह कर दी हैं। (118)

बेशक हम ने आप को भेजा हक़ के साथ, ख़ुशख़बरी देने वाला, डराने वाला, और आप से न पूछा जाएगा दोज़ख़ वालों के बारे में। (119)

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ

उन का दीन	आप पैरवी (न) करें	जब तक	नसारा	और न	यहूदी	आप से	और हरगिज़ राज़ी न होंगे

قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ

वह जो कि (जबकि)	बाद	उन की ख़ाहिशात	आप ने पैरवी की	और अगर	हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	बेशक	कह दें

جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢٠﴾ وقف منزل

120	मददगार	और न	हिमायत करने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं आप के लिए	इल्म	से	आप के पास आगया

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ

ईमान रखते हैं उस पर	वही लोग	उस की तिलावत	हक़	उस की तिलावत करते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें	जिन्हें

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا ع ١٤ ٩ ١٤

तुम याद करो	ऐ बनी इस्राईल	121	ख़सारह पाने वाले	वह	वही	इन्कार करें उस का	और जो

نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

122	ज़माने वाले	पर	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	और यह कि मैं ने	तुम पर	मैं ने इन्आम की	जो कि	मेरी नेमत

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا

उस से	और न क़ुबूल किया जाएगा	कुछ	किसी शख़्स से	कोई शख़्स	बदला न होगा	वह दिन	और डरो

عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى

आज़माया	और जब	123	मदद की जाएगी	उन	और न	कोई सिफ़ारिश	उसे नफ़ा देगी	और न	कोई सुआवज़ा

اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ

उस ने कहा	इमाम	लोगों का	तुम्हें बनाने वाला हूँ	बेशक मैं	उस ने फ़रमाया	तो वह पूरी कर दीं	चन्द बातों से	उन का रब	इब्राहीम (अ)

وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ

ख़ाने कअ़बा	बनाया हम ने	और जब	124	ज़ालिम (जमा)	मेरा अ़हद	नही पहुँचता	उस ने फ़रमाया	मेरी औलाद	और से

مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ

और हम ने हुक्म दिया	नमाज़ की जगह	“मुक़ामे इब्राहीम”	से	और तुम बनाओ	और अम्न की जगह	लोगों के लिए	इज्तिमाअ़ की जगह

اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ

और रुकूअ़ करने वाले	और एतिकाफ़ करने वाले	तवाफ़ करने वालों के लिए	मेरा घर	पाक रखें	कि वह	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ) को

السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ

और रोज़ी दे	अम्न वाला	यह शहर	बना	ऐ मेरे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	125	सिज्दा करने वाले

اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ

और जो	उस ने फ़रमाया	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	उन से	ईमान लाए	जो	फल (जमा)	से	इस के रहने वाले

كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾

126	लौटने की जगह	और बुरी	दोज़ख़ का अ़ज़ाब	तरफ़	मजबूर करूँगा उस को	फिर	थोड़ा	उसे नफ़ा दूँगा	उस ने कुफ़्र किया

और आप से हरगिज़ राज़ी न होंगे यहूदी और न नसारा जब तक आप उन के दीन की पैरवी न करें, कह दें! बेशक अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है, और अगर आप ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आ गया, आप के लिए अल्लाह से कोई हिमायत करने वाला नहीं और न मददगार। (120)

हम ने जिन्हें किताब दी वह उस की तिलावत करते हैं जैसे तिलावत का हक़ है, वह उस पर ईमान रखते हैं, और जो उस का इन्कार करें वही ख़सारह पाने वाले हैं। (121)

ऐ बनी इस्राईल! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम पर की और यह कि मैं ने तुम्हें ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी। (122)

और उस दिन से डरो (जिस दिन) कोई शख़्स बदला न हो सकेगा किसी शख़्स का कुछ भी, और न उस से कोई सुआवज़ा क़ुबूल किया जाएगा, और न उसे कोई सिफ़ारिश नफ़ा देगी, और न उन की मदद की जाएगी। (123)

और जब इब्राहीम (अ) को उन के रब ने चन्द बातों से आज़माया तो उन्हों नें वह पूरी कर दीं, उस ने फ़रमाया बेशक मैं तुम्हें लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ, उस ने कहा और मेरी औलाद को (भी)? उस ने फ़रमाया मेरा अ़हद ज़ालिमों को नहीं पहुँचता। (124)

और जब हम नें ख़ाने कअ़बा को बनाया लोगों के लिए (बार बार) लौटने (इज्तिमाअ़) की जगह और अम्न की जगह, और “मुक़ामे इब्राहीम” को नमाज़ की जगह बनाओ, और हम ने हुक्म दिया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) को कि वह मेरा घर पाक रखें तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों के लिए, और रुकूअ़ सिज्दा करने वालों के लिए। (125)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! इस शहर को बना अम्न वाला, और इस के रहने वालों को फलों की रोज़ी दे जो उन में से ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, उस ने फ़रमाया जिस ने कुफ़्र किया उस को थोड़ा सा नफ़ा दूँगा फिर उस को मजबूर करूँगा दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़, और वह लौटने की बुरी जगह है। (126)

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ

कुबूल फ़रमा ले हम से	ऐ हमारे रब	और इस्माईल (अ)	ख़ाने कअ़बा	से	बुन्यादें	इब्राहीम (अ)	उठाते थे	और जब

اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ

अपना	फ़रमांबरदार	और हमें बना ले	ऐ हमारे रब	127	जानने वाला	सुनने वाला	तू	बेशक तू

وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ

और हमारी तौबा कुबूल फ़रमा	हज के तरीक़े	और हमें दिखा	अपनी	फ़रमांबरदार	उम्मत	हमारी औलाद	और से

اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

एक रसूल	उन में	और भेज	ऐ हमारे रब	128	रहम करने वाला	तौबा कुबूल करने वाला	तू	बेशक

مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

और हिक्मत (दानाई)	“किताब”	और उन्हें तालीम दे	तेरी आयतें	उन पर	वह पढ़े	उन से

١٥ ع ٨ ١٥ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ ع وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ

दीन	से	मुँह मोड़े	और कौन	129	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	बेशक	और उन्हें पाक करे

اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا ۚ

दुनिया में	हम ने उसे चुन लिया	और बेशक	अपने आप	बेवकूफ़ बनाया	जिस ने	सिवाए	इब्राहीम (अ)

وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ

सर झुका दे	उस का रब	उस को	जब कहा	130	नेकोकार (जमा)	से	आख़िरत में	और बेशक वह

قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ

अपने बेटे	इब्राहीम (अ)	उस की	और वसीयत की	131	तमाम जहान	रब के लिए	मैं ने सर झुका दिया	उस ने कहा

وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا

मगर	पस तुम हरगिज़ न मरना	दीन	तुम्हारे लिए	चुन लिया	बेशक अल्लाह	मेरे बेटो	और याक़ूब (अ)

وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ

मौत	याक़ूब (अ)	आई	जब	मौजूद	क्या तुम थे	132	मुसलमान (जमा)	और तुम

اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِىْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ

हम इबादत करेंगे	उन्हों ने कहा	मेरे बाद	किस की तुम इबादत करोगे?	अपने बेटों को	जब उस ने कहा

اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ

वाहिद	माबूद	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तेरे बाप दादा	और माबूद	तेरा माबूद

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

जो उस ने कमाया	उस के लिए	गुज़र गई	एक उम्मत	यह	133	फ़रमांबरदार	उसी के	और हम

وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

134	जो वह करते थे	उस के बारे में	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए

और जब उठाते थे इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) ख़ाने कअ़बा की बुन्यादें (यह दुआ़ करते थे) ऐ हमारे परवरदिगार! हम से कुबूल फ़रमा ले, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (127)

ऐ हमारे रब! और हमें अपना फ़रमांबरदार बना ले और हमारी औलाद में से एक अपनी फ़रमांबरदार उम्मत बना और हमें हज के तरीक़े दिखा और हमारी तौबा कुबूल फ़रमा, बेशक तू ही तौबा कुबूल करने वाला, रहम करने वाला है। (128)

ऐ हमारे रब! और उन में एक रसूल भेज उन में से, वह उन पर तेरी आयतें पढ़े और उन्हें “किताब” और “हिक्मत” (दानाई) की तालीम दे, और उन्हें पाक करे, बेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (129)

और कौन है जो मुँह मोड़े इब्राहीम (अ) के दीन से? सिवाए उस के जिस ने अपने आप को बेवकूफ़ बनाया, और बेशक हम ने उसे दुनिया में चुन लिया। और बेशक वह आख़िरत में नेकोकारों में से है। (130)

जब उस को उस के रब ने कहा तू सर झुका दे, उस ने कहा मैं ने तमाम जहानों के रब के लिए सर झुका दिया। (131)

और इब्राहीम (अ) ने अपने बेटों को और याक़ूब (अ) ने (भी) उसी की वसीयत की, ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने बेशक चुन लिया है तुम्हारे लिए दीन, पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान। (132)

क्या तुम थे मौजूद जब याक़ूब (अ) को मौत आई, जब उस ने अपने बेटों को कहाः मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे? उन्हों ने कहा हम इबादत करेंगे तेरे माबूद की, और तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इस्हाक़ (अ) के माबूदे वाहिद की, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (133)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र गई, उस के लिए जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (134)

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ

इब्राहीम (अ)	बल्कि दीन	कह दीजिए	तुम हिदायत पा लोगे	नसरानी	या	यहूदी	हो जाओ	और उन्हों ने कहा

حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ

नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दो	135	मुश्रिकीन	से	और न थे	एक अल्लाह के हो जाने वाले

اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

और याकूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ़

وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِىَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

उन के रब से	नबियों	दिया गया	और जो	और ईसा (अ)	मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलादे याकूब (अ)

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۗ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ فَاِنْ

पस अगर	136	फ़रमांबरदार	उसी के	और हम	उन से	किसी एक	दरमियान	हम फ़र्क़ नहीं करते

اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

तो बेशक वही	उन्हों ने मुँह फेरा	और अगर	तो वह हिदायत पा गए	उस पर	तुम ईमान लाए	जैसे	वह ईमान लाएं

هُمْ فِىْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾

137	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	अल्लाह	पस अ़नक़रीब आप के लिए उन के मुक़ाबिले में काफ़ी होगा	ज़िद	में	वह

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۗ وَّنَحْنُ لَهٗ

उसी की	और हम	रंग	अल्लाह	से	अच्छा	और किस	रंग अल्लाह का

عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ

और हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब	हालांकि वही	अल्लाह के बारे में	क्या तुम हम से झगड़ा करते हो?	कह दीजिए	138	इबादत करने वाले

اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ

तुम कहते हो	क्या	139	ख़ालिस	उसी के	और हम	तुम्हारे अ़मल	और तुम्हारे लिए	हमारे अ़मल

اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا

थे	और औलादे याकूब (अ)	और याकूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	कि

هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ

बड़ा ज़ालिम	और कौन	या अल्लाह	ज़ियादा जानने वाले	क्या तुम	कह दीजिए	या नसरानी	यहूदी

مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

बेख़बर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह से	उस के पास	गवाही	छुपाई	से-जिस

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

उस ने कमाया	जो	उस के लिए	गुज़र चुकी	एक उम्मत	यह	140	तुम करते हो	उस से जो

وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾ ع ١٦ ١٢ ١٦

141	वह करते थे	उस से जो	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए

और उन्हों ने कहा तुम यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा लोगे, कह दीजिए बल्कि (हम पैरवी करते हैं) एक अल्लाह के हो जाने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की और वह मुश्रिकों में से न थे। (135)

कह दो हम ईमान लाए अल्लाह पर और जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इस्हाक़ (अ) और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ़, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) को और जो दिया गया नबियों को उन के रब की तरफ़ से, हम उन में से किसी एक के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (136)

पस अगर वह ईमान ले आएं जैसे तुम उस पर ईमान लाए हो तो वह हिदायत पा गए, और अगर उन्हों ने मुँह फेरा तो बेशक वही ज़िद में हैं, पस अ़नक़रीब उन के मुक़ाबिले में आप के लिए अल्लाह काफ़ी होगा, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (137)

(हम ने लिया) रंग अल्लाह का, और किस का अच्छा है रंग अल्लाह से? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। (138)

कह दीजिए, क्या तुम हम से झगड़ते हो अल्लाह के बारे में हालांकि वही है हमारा रब और तुम्हारा रब, और हमारे लिए हमारे अ़मल और तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, और हम ख़ालिस उसी के हैं। (139)

क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ), और इस्हाक़ (अ), और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) यहूदी थे या नसरानी। कह दीजिए क्या तुम ज़ियादा जानने वाले हो या अल्लाह? और कौन है बड़ा ज़ालिम उस से जिस ने वह गवाही छुपाई जो अल्लाह की तरफ़ से उस के पास थी, और अल्लाह बेख़बर नहीं उस से जो तुम करते हो। (140)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उस के लिऐ है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (141)

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ

उन का क़िबला	से	उन्हें (मुसलमानों को) फेर दिया	किस	लोग	से	बेवकूफ़	अब कहेंगे

الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ۭ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۭ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ

जिस को चाहता है	वह हिदायत देता है	और मग़रिब	मशरिक़	अल्लाह के लिए	आप कह दें	उस पर	वह थे	वह जिस

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ١٤٢ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَاۗءَ

गवाह	ताकि तुम हो	मोअ़तदिल	उम्मत	हम ने तुम्हें बनाया	और उसी तरह	142	सीधा	रास्ता	तरफ़

عَلَي النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ۭ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ

वह जिस	क़िबला	और नहीं मुक़र्रर किया हम ने	गवाह	तुम पर	रसूल	और हो	लोग	पर

كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰي عَقِبَيْهِ ۭ

अपनी एड़ियां	पर	फिर जाता है	उस से जो	रसूल (स)	पैरवी करता है	ताकि हम मालूम कर लें कौन	मगर	उस पर	आप (स) थे

وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَي الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

अल्लाह	और नहीं	अल्लाह	हिदायत दी	जिन्हें	पर	मगर	भारी बात	यह थी	और बेशक

لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ١٤٣ قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ

बार बार फिरना	हम देखते हैं	143	रहम करने वाला	बड़ा शफ़ीक़	लोगों के साथ	बेशक अल्लाह	तुम्हारा ईमान	कि वह ज़ाया करे

وَجْهِكَ فِي السَّمَاۗءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىھَا ۠ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ

तरफ़	अपना मुंह	पस आप फेर लें	उसे आप (स) पसन्द करते हैं	क़िबला	तो ज़रूर हम फेर देंगे आप को	आस्मान	में (तरफ़)	आप (स) का मुंह

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْھَكُمْ شَطْرَهٗ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

जिन्हें	और बेशक	उस की तरफ़	अपने मुंह	सो फेर लिया करो	तुम हो	और जहां कहीं	मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा)

اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	उन का रब	से	हक़	कि यह	वह ज़रूर जानते हैं	दी गई किताब (अहले किताब)

يَعْمَلُوْنَ ١٤٤ وَلَىِٕنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا

वह पैरवी न करेंगे	निशानियां	तमाम	दी गई किताब (अहले किताब)	जिन्हें	आप (स) लाएं	और अगर	144	वह करते हैं

قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۭ

किसी	क़िबला	पैरवी करने वाला	उन से कोई	और नहीं	उन का क़िबला	पैरवी करने वाले	आप (स)	और न	आप (स) का क़िबला

وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَھْوَاۗءَھُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ

बेशक आप(स)	इल्म	कि आ चुका आप के पास	उस के बाद	उन की ख़ाहिशात	आप ने पैरवी की	और अगर

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ١٤٥ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰھُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ

वह पहचानते हैं	जैसे	वह उसे पहचानते हैं	किताब	हम ने दी	और जिन्हें	145	बे इन्साफ़	से	अब

اَبْنَاۗءَھُمْ ۭ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَھُمْ يَعْلَمُوْنَ ١٤٦

146	वह जानते हैं	हालांकि वह	हक़	वह छुपाते हैं	उन से	एक गिरोह	और बेशक	अपने बेटे

وقف لازم

وقف منزل

अब बेवकूफ़ कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज़ ने उस क़िबले से फेर दिया जिस पर वह थे? आप कह दें कि मशरिक़ और मग़रिब अल्लाह (ही) का है, वह जिस को चाहता है हिदायत देता है सीधे रास्ते की तरफ़। (142)

और उसी तरह हम ने तुम्हें मोअ़तदिल उम्मत बनाया ताकि तुम हो लोगों पर गवाह, और रसूल (स) तुम पर गवाह हों, और हम ने मुक़र्रर नहीं किया था वह क़िबला जिस पर आप (स) थे मगर (इस लिए) कि हम मालूम कर लें कौन रसूल (स) की पैरवी करता है और कौन फिर जाता है अपनी एड़ियों पर (उलटे पावँ), और बेशक यह भारी बात थी मगर उन पर (नहीं) जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाया कर दे, बेशक अल्लाह लोगों के साथ बड़ा शफ़ीक़, रहम करने वाला है। (143)

हम देखते हैं बार बार आप (स) का मुँह आस्मान की तरफ़ फिरना, तो ज़रूर हम आप को उस क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसे आप (स) पसन्द करते हैं, पस आप (स) अपना मुँह मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) की तरफ़ फेर लें, और जहां कहीं तुम हो फेर लिया करो अपने मुँह उस की तरफ़, और बेशक अहले किताब ज़रूर जानते हैं कि यह हक़ है उन के रब की तरफ़ से, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (144)

और अगर आप (स) लाएं अहले किताब के पास तमाम निशानियां वह (फिर भी) आप (स) के क़िबले की पैरवी न करेंगे, और न आप (स) उन के क़िबले की पैरवी करने वाले हैं, और उन में से कोई किसी (दूसरे) के क़िबले की पैरवी करने वाला नहीं, और अगर आप ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद कि आप के पास इल्म आ चुका तो अब बेशक आप बे इन्साफ़ों में से होंगे। (145)

और जिन्हें हम ने किताब दी वह उसे पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं, और बेशक उन में से एक गिरोह हक़ को छुपाता है हालांकि वह जानते हैं। (146)

ع ١٧ / ١

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ

वह	एक सिम्त	और हर एक के लिए	147	शक करने वाले	से	पस आप न हो जाएं	आप का रब	से	हक़

مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ

इकट्ठा	अल्लाह	ले आएगा तुम्हें	तुम होगे	जहां कहीं	नेकियां	पस तुम सबक़त ले जाओ	उस तरफ़ रुख़ करता है

وقف النبی ﷺ

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

अपना रुख़	पस कर लें	आप (स) निकलें	जहां	और से	148	क़ुदरत रखने वाला	चीज़	हर	पर	बेशक अल्लाह

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	आप (स) के रब से	हक़	और बेशक यही	मस्जिदे हराम	तरफ़

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ

मस्जिदे हराम	तरफ़	अपना रुख़	पस कर लें	आप निकलें	और जहां से	149	तुम करते हो

وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ

तुम पर	लोगों के लिए	रहे	ताकि न	उस की तरफ़	अपने रुख़	सो कर लो	तुम हो	और जहां कहीं

حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۗ وَلِاُتِمَّ

ताकि मैं पूरी कर दूँ	और डरो मुझ से	सो तुम न डरो उन से	उन से	बे इनसाफ़	वह जो कि	सिवाए	कोई हुज्जत

نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ

तुम में से	एक रसूल	तुम में	हम ने भेजा	जैसा कि	150	हिदायत पाओ	और ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत

يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا

जो	और सिखाते हैं तुम्हें	और हिक्मत	किताब	और सिखाते हैं तुम को	और पाक करते हैं तुम्हें	हमारे हुक्म	तुम पर	वह पढ़ते हैं

ع ١٨ / ٥ / ٢ — معانقة ٣ — عند المتأخرين ١٢

لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾ فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾

152	नाशुक्री करो मेरी	और न	और तुम शुक्र करो मेरा	मैं याद रखूँगा तुम्हें	सो याद करो मुझे	151	जानते	तुम न थे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

153	सब्र करने वाले	साथ	बेशक अल्लाह	और नमाज़	सब्र से	तुम मदद मांगो	ईमान लाए	जो कि	ऐ

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ

और लेकिन	ज़िन्दा	बल्कि	मुर्दा	अल्लाह	रास्ता	में	मारे जाएं	उसे जो	कहो	और न

لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ

और नुक़सान	और भूक	ख़ौफ़	से	कुछ	और ज़रूर हम आज़माएंगे तुम्हें	154	तुम शऊर नहीं रखते

مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِيْنَ اِذَآ

जब	वह जो	155	सब्र करने वाले	और ख़ुशख़बरी दें	और फल (जमा)	और जान (जमा)	माल (जमा)	से

اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾ؕ

156	लौटने वाले	उस की तरफ़	और हम	हम अल्लाह के लिए	वह कहें	कोई मुसीबत	पहुँचे उन्हें

(यह) हक़ है आप के रब की तरफ़ से, पस आप न हो जाएं शक करने वालों में से। (147)

और हर एक के लिए एक सिम्त है जिस तरफ़ वह रुख़ करता है, पस तुम नेकियों में सबक़त ले जाओ, जहां कहीं तुम होगे अल्लाह तुम्हें इकटठा कर लेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (148)

और जहां से आप (स) निकलें, पस अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लें, और बेशक आप के रब (की तरफ़) से यही हक़ है और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (149)

और जहां कहीं से आप निकलें, अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लें, और तुम जहां कहीं हो सो कर लो अपने रुख़ उस की तरफ़, ताकि लोगों के लिए तुम पर कोई हुज्जत न रहे, सिवाए उन के जो उन में से बे इनसाफ़ हैं, सो तुम उन से न डरो, और मुझ से डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दूँ, और ताकि तुम हिदायत पाओ। (150)

जैसा कि हम ने तुम में एक रसूल तुम में से भेजा, वह तुम पर हमारी आयतें पढ़ते हैं और वह तुम्हें पाक करते हैं, और तुम्हें किताब ओ हिक्मत (दानाई) सिखाते हैं, और तुम्हें वह सिखाते हैं जो तुम न थे जानते। (151)

सो मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद रखूँगा, और तुम मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री न करो। (152)

ऐ ईमान वालो! तुम सब्र और नमाज़ से मदद मांगो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (153)

और जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (उस का) शऊर नहीं रखते। (154)

और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएंगे कुछ ख़ौफ़ से, और भूक से, और माल ओ जान और फलों के नुक़सान से, और आप (स) ख़ुशख़बरी दें सब्र करने वालों को। (155)

वह जिन्हें जब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। (156)

أُولٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوٰتٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٌ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُهۡتَدُوۡنَ ﴿١٥٧﴾

यही लोग	उन पर	इनायतें	से	उन का रब	और रहमत	और यही लोग	वह	हिदायत याफ़्ता	157

اِنَّ الصَّفَا وَالۡمَرۡوَةَ مِنۡ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنۡ حَجَّ الۡبَيۡتَ اَوِ اعۡتَمَرَ

बेशक	सफ़ा	और मरवा	से	निशानात	अल्लाह	पस जो	हज करे	ख़ाने कअ्बा	या	उमरा करे

فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِ اَنۡ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَمَنۡ تَطَوَّعَ خَيۡرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो नहीं कोई हर्ज	उस पर	कि	वह तवाफ़ करे	उन दोनों	और जो	ख़ुशी से करे	कोई नेकी	तो बेशक अल्लाह

شَاكِرٌ عَلِيۡمٌ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَكۡتُمُوۡنَ مَآ اَنۡزَلۡنَا مِنَ الۡبَيِّنٰتِ وَالۡهُدٰى

क़द्रदान	जानने वाला	158	बेशक	जो लोग	छुपाते हैं	जो नाज़िल किया हम ने	से	खुली निशानियां	और हिदायत

مِنۡۢ بَعۡدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الۡكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلۡعَنُهُمُ اللّٰهُ

उस के बाद	हम ने वाज़ेह कर दिया	लोगों के लिए	किताब में	यही लोग	लानत करता है उन पर अल्लाह

وَيَلۡعَنُهُمُ اللّٰعِنُوۡنَ ﴿١٥٩﴾ ۙ اِلَّا الَّذِيۡنَ تَابُوۡا وَاَصۡلَحُوۡا وَبَيَّنُوۡا

और लानत करते हैं उन पर	लानत करने वाले	159	सिवाए	वह लोग जो	उन्हों ने तौबा की	और इस्लाह की	और वाज़ेह किया

فَاُولٰٓئِكَ اَتُوۡبُ عَلَيۡهِمۡ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿١٦٠﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ

पस यही लोग हैं	मैं माफ़ करता हूँ	उन्हें	और मैं	माफ़ करने वाला	रहम करने वाला	160	बेशक	जो लोग

كَفَرُوۡا وَمَاتُوۡا وَهُمۡ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ لَعۡنَةُ اللّٰهِ وَالۡمَلٰٓئِكَةِ

काफ़िर हुए	और वह मर गए	और वह	काफ़िर	यही लोग	उन पर	लानत	अल्लाह	और फ़रिश्ते

وَالنَّاسِ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿١٦١﴾ ۙ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ الۡعَذَابُ

और लोग	तमाम	161	हमेशा रहेंगे	उस में	न हलका होगा	उन से	अ़ज़ाब

وَلَا هُمۡ يُنۡظَرُوۡنَ ﴿١٦٢﴾ وَاِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحۡمٰنُ

और न उन्हें	मोहलत दी जाएगी	162	और माबूद तुम्हारा	माबूद	(एक) यकता	नहीं इबादत के लाइक़	सिवाए उस के	निहायत मेहरबान

ع ١٩ ١١ ٣

الرَّحِيۡمُ ﴿١٦٣﴾ اِنَّ فِىۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّيۡلِ

रहम करने वाला	163	बेशक	में	पैदाइश	आस्मानों	और ज़मीन	और बदलते रहना	रात

وَالنَّهَارِ وَالۡفُلۡكِ الَّتِىۡ تَجۡرِىۡ فِى الۡبَحۡرِ بِمَا يَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَآ

और दिन	और कश्ती	जो कि	बहती है	में	समन्दर	साथ जो	नफ़ा देती है	लोग	और जो कि

اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا

उतारा	अल्लाह	आस्मानों से	से	पानी	फिर ज़िन्दा किया	उस से	ज़मीन	उस के मरने के बाद

وَبَثَّ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ ۖ وَّتَصۡرِيۡفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ

और फैलाए	उस में	से	हर (क़िस्म) के जानवर	और बदलना	हवाएं	और बादल

الۡمُسَخَّرِ بَيۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿١٦٤﴾

ताबे	दरमियान	आस्मान	और ज़मीन	निशानियां	लोगों के लिए	अ़क़्ल वाले	164

यही लोग हैं जिन पर उन के रब की तरफ़ से इनायतें हैं और रहमत है, और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं। (157)

बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह के निशानात में से हैं, पस जो कोई ख़ाने कअ्बा का हज करे या उमरा तो उस पर कोई हर्ज नहीं कि उन दोनों का तवाफ़ करे, और जो ख़ुशी से कोई नेकी करे तो बेशक अल्लाह क़द्रदान, जानने वाला है। (158)

बेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने खुली निशानियां और हिदायत नाज़िल की, उस के बाद कि हम ने उसे किताब में लोगों के लिए वाज़ेह कर दिया, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है, और उन पर लानत करते हैं लानत करने वाले। (159)

सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने तौबा की और इस्लाह की और वाज़ेह कर दिया, पस यही लोग हैं जिन्हें मैं माफ़ करता हूँ, और मैं माफ़ करने वाला, रहम करने वाला हूँ। (160)

बेशक जो लोग काफ़िर हुए और वह (काफ़िर) ही मर गए, यही लोग हैं जिन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। (161)

वह उस में हमेशा रहेंगे, उन से अ़ज़ाब हलका न होगा, और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (162)

और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, निहायत मेहरबान, रहम करने वाला। (163)

बेशक ज़मीन और आस्मानों की पैदाइश में, और रात और दिन के बदलते रहने में, और कश्ती में जो समन्दर में बहती है (उन चीज़ों के) साथ जो लोगों को नफ़ा देती हैं, और जो अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को ज़िन्दा किया उस के मरने के बाद, और उस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए, और हवाओं के बदलने में, और आस्मान ओ ज़मीन के दरमियान ताबे बादलों में निशानियां हैं (उन) लोगों के लिए (जो) अ़क़्ल वाले हैं। (164)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ

मुहब्बत करते हैं उन से	शरीक	अल्लाह	सिवाए	से	अपनाते हैं	जो	लोग	और से

كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا

ज़ुल्म किया	वह जिन्हों ने	देख लें	और अगर	अल्लाह के लिए	मुहब्बत	सब से ज़ियादा	ईमान लाए	और जो लोग	अल्लाह	जैसे मुहब्बत

اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾

165	अज़ाब	सख़्त	अल्लाह	और यह कि	तमाम	अल्लाह के लिए	कुव्वत	कि	अज़ाब	जब देखेंगे

اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ

अज़ाब	और वह देखेंगे	पैरवी की	जिन्हों ने	से	पैरवी की गई	वह लोग जो	जब बेज़ार हो जाएंगे

وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً

दोबारा	हमारे लिए	काश कि	पैरवी की	वह जिन्हों ने	और कहेंगे	166	वसाइल	उन से	और कट जाएंगे

فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ

उन के अ़मल	अल्लाह	उन्हें दिखाएगा	उसी तरह	हम से	उन्हों ने बेज़ारी की	जैसे	उन से	तो हम बेज़ारी करते

حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا ع ٢٠ ٤

तुम खाओ	लोग	ऐ	167	आग से	निकलने वाले	और नहीं वह	उन पर	हसरतें

مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ

शैतान	क़दमों	पैरवी करो	और न	पाक	हलाल	ज़मीन में	उस से जो

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ

और यह कि	और बेहयाई	बुराई	तुम्हें हुक्म देता है	सिर्फ़	168	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह

تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا

पैरवी करो	उन्हें	कहा जाता है	और जब	169	तुम जानते	जो नहीं	अल्लाह पर	तुम कहो

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ

हों	भला अगरचे	अपने बाप दादा	उस पर	जो हम ने पाया	बल्कि हम पैरवी करेंगे	वह कहते हैं	अल्लाह	जो उतारा

اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और मिसाल	170	और न हिदायत याफ़्ता हों	कुछ	न समझते हों	उन के बाप दादा

كَمَثَلِ الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ

गूँगे	बहरे	और आवाज़	पुकारना	सिवाए	नहीं सुनता	उस को जो	पुकारता है	वह जो	मानिंद हालत

عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

पाक	से	तुम खाओ	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	171	नहीं समझते	पस वह	अंधे

مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾

172	बन्दगी करते हो	सिर्फ़ उस की	अगर तुम हो	अल्लाह का	और शुक्र करो	जो हम ने तुम्हें दिया

और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीक अपनाते हैं वह उन से मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से मुहब्बत, और जो लोग ईमान लाए (उन्हें) अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़ियादा है, और अगर देख लें जिन्हों ने ज़ुल्म किया (उस वक़्त को) जब यह अ़ज़ाब देखेंगे कि तमाम क़ुव्वत अल्लाह के लिए है और यह कि अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। (165)

जब बेज़ार हो जाएंगे वह जिन की पैरवी की गई उन से जिन्हों ने पैरवी की थी और वह अ़ज़ाब देख लेंगे, और उन से तमाम वसाइल कट जाएंगे। (166)

और वह कहेंगे जिन्हों ने पैरवी की थी काश हमारे लिए दोबारा (दुन्या में लौट जाना होता) तो हम उन से बेज़ारी करते जैसे उन्हों ने हम से बेज़ारी की, उसी तरह अल्लाह उन के अ़मल उन्हें हसरतें बना कर दिखाएगा, और वह आग से निकलने वाले नहीं। (167)

ऐ लोगो! खाओ उस में से जो ज़मीन में है हलाल और पाक, और पैरवी न करो शैतान के क़दमों की, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (168)

वह तुम्हें हुक्म देता है सिर्फ़ बुराई और बेहयाई का और यह कि तुम अल्लाह (के बारे में) कहो जो तुम नहीं जानते। (169)

और जब उन्हें कहा जाता है उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने पाया अपने बाप दादा को, भला अगरचे उन के बाप दादा कुछ न समझते हों और हिदायत याफ़्ता न हों। (170)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन की मिसाल उस शख़्स की हालत के मानिंद है जो उस को पुकारता है जो नहीं सुनता सिवाए पुकारने और चिल्लाने (की आवाज़ के), वह बहरे, गूँगे, अंधे हैं, पस वह नहीं समझते। (171)

ऐ वह लोग जो ईमान लाए हो, तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं और तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ़ उस की बन्दगी करते हो। (172)

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ

उस पर	पुकारा गया	और जो	सुव्वर	और गोश्त	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम किया	दर हक़ीक़त

لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	उस पर	गुनाह	तो नहीं	हद से बढ़ने वाला	और न	न सरकशी करने वाला	लाचार हो जाए	पस जो	अल्लाह के सिवा

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۷۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ

किताब	से	अल्लाह	जो उतारा	छुपाते हैं	जो लोग	बेशक	173	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ

अपने पेटों	में	नहीं खाते	यही लोग	थोड़ी	क़ीमत	उस से	और वसूल करते हैं

اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۖۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

अ़ज़ाब	और उन के लिए	पाक करेगा उन्हें	और न	क़ियामत के दिन	अल्लाह	बात करेगा	और न	आग	मगर (सिर्फ़)

اَلِيْمٌ ﴿۱۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ

और अ़ज़ाब	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्हों ने	यही लोग	174	दर्दनाक

بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿۱۷۵﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ

नाज़िल की	अल्लाह	इस लिए कि	यह	175	आग	पर	बहुत सब्र करने वाले वह	सो किस क़द्र	मग़फ़िरत के बदले

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِيْ

में	किताब	में	इख़्तिलाफ़ किया	जो लोग	और बेशक	हक़ के साथ	किताब

ع ٢١ ٩ ٥ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿۱۷۶﴾ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

मश्रिक़	तरफ़	अपने मुँह	तुम कर लो	कि	नेकी	नहीं	176	दूर	ज़िद

وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ

और फ़रिश्ते	आख़िरत	और दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो	नेकी	और लेकिन	और मग़रिब

وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى

रिश्तेदार	उस की मुहब्बत पर	माल	और दे	और नबियों	और किताब

وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ

और गर्दनों में	और सवाल करने वाले	और मुसाफ़िर	और मिस्कीन (जमा)	और यतीम (जमा)

وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ

अपने अ़हद	और पूरा करने वाले	ज़कात	और अदा करे	नमाज़	और क़ाइम करे

اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ

जंग	और वक़्त	और तकलीफ़	सख़्ती	में	और सब्र करने वाले	वह अ़हद करें	जब

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

177	परहेज़गार	वह	और यही लोग	उन्हों ने सच कहा	वह जो कि	यही लोग

दर हक़ीक़त (हम ने) तुम पर हराम किया है मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम) पुकारा गया, पस जो लाचार हो जाए मगर न सरकशी करने वाला हो न हद से बढ़ने वाला तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (173)

बेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने (बसूरत) किताब नाज़िल किया और उस से वसूल करते हैं थोड़ी क़ीमत, यही लोग हैं जो अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं और उन से बात नहीं करेगा अल्लाह क़ियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (174)

यही लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, और मग़फ़िरत के बदले अ़ज़ाब, सो किस क़द्र ज़यादा वह आग पर सब्र करने वाले हैं। (175)

यह इस लिए कि अल्लाह ने हक़ के साथ किताब नाज़िल की, और बेशक जिन लोगों ने किताब में इख़्तिलाफ़ किया वह ज़िद में दूर (जा पड़े हैं)। (176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुँह मश्रिक़ या मग़रिब की तरफ़ कर लो, मगर नेकी यह है जो ईमान लाए अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर और फ़रिश्तों और किताबों पर और नबियों पर, और उस (अल्लाह) की मुहब्बत पर माल दे रिश्तेदारों को और यतीमों और मिस्कीनों को और मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के आज़ाद कराने में, और नमाज़ क़ाइम करे और ज़कात अदा करे, और जब वह अ़हद करें तो उसे पूरा करें, और सब्र करने वाले सख़्ती में और तकलीफ़ में और जंग के वक़्त, यही लोग सच्चे हैं, और यही लोग परहेज़गार हैं। (177)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ط

मक़्तूलों में	क़िसास	फ़र्ज़ किया गया तुम पर	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ

اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ط فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ

उस का भाई	से	उस के लिए	माफ़ किया जाए	पस जिसे	औरत के बदले	और औरत	गुलाम के बदले	और गुलाम	आज़ाद के बदले	आज़ाद

شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ط ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ

आसानी	यह	अच्छा तरीक़ा	उसे	और अदा करना	मुताबिक़ दस्तूर	तो पैरवी करना	कुछ

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ط فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾ ع

178	दर्दनाक	अज़ाब	तो उस के लिए	उस	बाद	ज़ियादती की	पस जो	और रहमत	तुम्हारा रब	से

وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾

179	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम	ऐ अक़्ल वालो	ज़िन्दगी	क़िसास	में	और तुम्हारे लिए

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۨ الْوَصِيَّةُ

वसीयत	माल	छोड़ा	अगर	मौत	तुम्हारा कोई	आए	जब	फ़र्ज़ किया गया तुम पर

لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ج حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾

180	परहेज़गार	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	और रिश्तेदारों	माँ बाप के लिए

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ط

उसे बदला	जो लोग	पर	उस का गुनाह	तो सिर्फ़	उस को सुना	बाद जो	बदल दे उसे	फिर जो

اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا

या गुनाह	तरफ़दारी	वसीयत करने वाला	से	ख़ौफ़ करे	पस जो	181	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह

فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ط اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨٢﴾ ع ٢٢ ٦ ٦

182	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उस पर	तो नहीं गुनाह	उन के दरमियान	फिर सुलह करा दे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ

जो लोग	पर	फ़र्ज़ किए गए	जैसे	रोज़े	तुम पर	फ़र्ज़ किए गए	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ

مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ط فَمَنْ كَانَ

हो	पस जो	गिनती के	चन्द दिन	183	परहेज़गार बन जाओ	ताकि तुम	तुम से पहले

مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ط وَعَلَى الَّذِيْنَ

जो लोग	और पर	दूसरे (बाद) के दिन	से	तो गिनती	सफ़र	पर	या	बीमार	तुम में से

يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ط فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا

कोई नेकी	ख़ुशी से करे	पस जो	नादार	खाना	बदला	ताक़त रखते हैं

فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ط وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٤﴾

184	जानते हो	तुम हो	अगर	बेहतर तुम्हारे लिए	तुम रोज़ा रखो	और अगर	बेहतर उस के लिए	तो वह

ऐ ईमान वालो! तुम पर फ़र्ज़ किया गया क़िसास मक़्तूलों (के बारे) में, आज़ाद के बदले आज़ाद, और गुलाम के बदले गुलाम, और औरत के बदले औरत, पस जिसे उस के भाई की तरफ़ से कुछ माफ़ किया जाए तो दस्तूर के मुताबिक़ पैरवी करे, और उसे अच्छे तरीक़े से अदा करे, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आसानी और रहमत है, पस जिस ने उस के बाद ज़ियादती की तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (178)

और तुम्हारे लिए क़िसास में ज़िन्दगी है, ऐ अक़्ल वालो! ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (179)

तुम पर फ़र्ज़ किया गया है कि जब तुम में से किसी को मौत आए, अगर वह माल छोड़े तो वसीयत करे माँ बाप के लिए और रिश्तेदारों के लिए दस्तूर के मुताबिक़, यह लाज़िम है परहेज़गारों पर। (180)

फिर जो कोई उसे बदल दे उस के बाद कि उस ने उस को सुना तो उस का गुनाह सिर्फ़ उन लोगों पर है जिन्हों ने उसे बदला, बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (181)

पस जो कोई वसीयत करने वाले से तरफ़दारी या गुनाह का ख़ौफ़ करे फिर सुलह करा दे उन के दरमियान तो उस में कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (182)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (183)

गिनती के चन्द दिन हैं, पस तुम में से जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो गिनती पूरी करे बाद के दिनों में, और उन पर है जो ताक़त रखते हैं एक नादार को खाना खिलाना, पस जो ख़ुशी से कोई नेकी करे वह उस के लिए बेहतर है, और अगर तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (184)

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ

लोगों के लिए	हिदायत	क़ुरआन	उस में	नाज़िल किया गया	जिस	रमज़ान	महीना

وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ

महीना	तुम में से	पाए	पस जो	और फ़ुरक़ान	हिदायत	से	और रौशन दलीलें

فَلْيَصُمْهُ ۭ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰي سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ

बाद के दिन	से	तो गिनती पूरी करले	सफ़र	पर	या	बीमार	हो	और जो	चाहिए कि रोज़े रखे

يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۡ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ

गिनती	और ताकि तुम पूरी करो	दुश्वारी	तुम्हारे लिए	और नहीं चाहता	आसानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह	चाहता है

وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰي مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٥﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ

आप से पूछें	और जब	185	शुक्र अदा करो	और ताकि तुम	जो तुम्हें हिदायत दी	पर	अल्लाह	और ताकि तुम बड़ाई करो

عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ۭ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ

मुझ से मांगे	जब	पुकारने वाला	दुआ	मैं क़ुबूल करता हूँ	क़रीब	तो मैं	मेरे बारे में	मेरे बन्दे

فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٦﴾

186	वह हिदायत पाएं	ताकि वह	मुझ पर	और ईमान लाएं	मेरा	पस चाहिए हुक्म मानें

اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَاۗىِٕكُمْ ۭ هُنَّ

वह	अपनी औरतें	तरफ़ (से)	बेपर्दा होना	रोज़ा	रात	तुम्हारे लिए	जाइज़ कर दिया गया

لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۭ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ

तुम थे	कि तुम	जान लिया अल्लाह	उन के लिए	लिबास	और तुम	तुम्हारे लिए	लिबास

تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ

पस अब	तुम से	और दरगुज़र की	तुम को	सो माफ़ कर दिया	अपने तईं	ख़ियानत करते

بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى

यहां तक कि	और पियो	और खाओ	तुम्हारे लिए	लिख दिया अल्लाह	जो	और तलब करो	उन से मिलो

يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۡ

फ़ज्र	से	सियाह	धारी	से	सफ़ेद	धारी	तुम्हारे लिए	वाज़ेह हो जाए

ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ

जबकि तुम	उन से मिलो	और न	रात	तक	रोज़ा	तुम पूरा करो	फिर

عٰكِفُوْنَ فِي الْمَسٰجِدِ ۭ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ۭ

उन के क़रीब जाओ	पस न	अल्लाह	हदें	यह	मस्जिदों में	एतिकाफ़ करने वाले

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾

187	परहेज़गार हो जाएं	ताकि वह	लोगों के लिए	अपने हुक्म	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

रमज़ान का महीना है जिस में क़ुरआन नाज़िल किया गया, क़ुरआन लोगों के लिए हिदायत है, और हिदायत की रौशन दलीलें, और फ़ुरक़ान (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला), पस जो तुम में से यह महीना पाए उसे चाहिए कि रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र पर हो वह बाद के दिनों मे गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और दुश्वारी नहीं चाहता, और ताकि तुम गिनती पूरी करो और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो उस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत दी, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। (185)

और जब मेरे बन्दे आप (स) से मेरे मुतअ़ल्लिक़ पूछें तो मैं क़रीब हूँ, मैं क़ुबूल करता हूँ पुकारने वाले की दुआ़ जब वह मुझ से मांगे, पस चाहिए कि वह मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं। (186)

तुम्हारे लिए जाइज़ कर दिया गया रोज़े की रात में अपनी औरतों से बेपर्दा होना, वह तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उन के लिए लिबास हो, अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने तईं ख़ियानत करते थे सो उस ने तुम को माफ़ कर दिया और तुम से दरगुज़र की, पस अब उन से मिलो और जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है तलब करो, और खाओ और पियो यहां तक कि वाज़ेह हो जाए तुम्हारे लिए फ़ज्र की सफ़ेद धारी सियाह धारी से, फिर तुम रात तक रोज़ा पूरा करो, और उन से न मिलो जब तुम मोतकिफ़ हो मस्जिदों में (हालते एतिकाफ़ में), यह अल्लाह की हदें हैं, पस उन के क़रीब न जाओ, इसी तरह वाज़ेह करता है अल्लाह लोगों के लिए अपने हुक्म ताकि वह परहेज़गार हो जाएं। (187)

और अपने माल आपस में न खाओ नाहक़, और उस से हाकिमों तक (रिश्वत) न पहुँचाओ ताकि तुम लोगों के माल से कोई हिस्सा खाओ गुनाह से (नाजाइज़ तौर पर) और तुम जानते हो। **(188)**

और आप (स) से नए चाँद के बारे में पूछते हैं? आप कह दें यह (पैमाना-ए-) औक़ात लोगों और हज के लिए हैं, और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ उन की पुश्त से, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गारी करे, और घरों में उन के दरवाज़ों से आओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाबी हासिल करो। **(189)**

और तुम अल्लाह के रास्ते में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और ज़ियादती न करो, बेशक अल्लाह ज़ियादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता! **(190)**

और उन्हें मार डालो जहां उन्हें पाओ और उन्हें निकाल दो जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला, और फ़ित्ना क़त्ल से ज़ियादा संगीन है, और उन से मस्जिदे हराम (ख़ानाए कअ़बा) के पास न लड़ो यहां तक कि वह यहां तुम से लड़ें, पस अगर वह तुम से लड़ें तो तुम उन से लड़ो, इसी तरह सज़ा है काफ़िरों की! **(191)**

फिर अगर वह बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रह्म करने वाला है। **(192)**

और तुम उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, पस अगर वह बाज़ आ जाएं तो नहीं (किसी पर) ज़ियादती सिवाए ज़ालिमों के। **(193)**

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ

उस से	और (न) पहुँचाओ	नाहक़	आपस में	अपने माल	खाओ	और न

اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ

लोग	माल	से	कोई हिस्सा	ताकि तुम खाओ	हाकिमों तक

بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ ع ٢٣ ٧

नए चाँद	से	वह आप से पूछते हैं	188	जानते हो	और तुम	गुनाह से

قُلْ هِىَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ

यह कि	नेकी	और नहीं	और हज	लोगों के लिए	औक़ात	यह	आप कह दें

تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ

परहेज़गारी करे	जो	नेकी	और लेकिन	उन की पुश्त	से	घर (जमा)	तुम आओ

وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	अल्लाह	और तुम डरो	दरवाज़े	से	घर (जमा)	और तुम आओ

تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ

वह जो कि	अल्लाह	रास्ता	में	और तुम लड़ो	189	कामयाबी हासिल करो

يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾

190	ज़ियादती करने वाले	नहीं पसन्द करता	बेशक अल्लाह	और ज़ियादती न करो	तुम से लड़ते हैं

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ

से	और उन्हें निकाल दो	तुम उन्हें पाओ	जहां	और उन्हें मार डालो

حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ

क़त्ल	से	ज़ियादा संगीन	और फ़ित्ना	उन्हों ने तुम्हें निकाला	जहां

وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ

वह तुम से लड़ें	यहां तक कि	मस्जिदे हराम (ख़ानाए कअ़बा)	पास	उन से लड़ो	और न

فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ

बदला	इसी तरह	तो तुम उन से लड़ो	वह तुम से लड़ें	पस अगर	उस में

الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾

192	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	अल्लाह	तो बेशक	वह बाज़ आ जाएं	फिर अगर	191	काफ़िर (जमा)

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ

दीन	और हो जाए	कोई फ़ित्ना	न रहे	यहां तक कि	और तुम उन से लड़ो

لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾

193	ज़ालिम (जमा)	पर	सिवाए	ज़ियादती	तो नहीं	वह बाज़ आ जाएं	पस अगर	अल्लाह के लिए

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى

ज़ियादती की	पस जिस	बदला	और हुर्मतें	बदला हुर्मत वाला महीना	हुर्मत वाला महीना

عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪

तुम पर	उस ने ज़ियादती की	जो	जैसी	उस पर	तो तुम ज़ियादती करो	तुम पर

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ وَاَنْفِقُوْا فِيْ

में	और तुम ख़र्च करो	194	परहेज़गारों	साथ	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो

ع ١ عند المتقدمين ١٢

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَاَحْسِنُوْا ۛۚ

और नेकी करो	हलाकत	तरफ़	अपने हाथ	डालो	और न	अल्लाह	रास्ता

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾ وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ

अल्लाह के लिए	और उमरा	हज	और पूरा करो	195	नेकी करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह

فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى

यहां तक	अपने सर	मुंडवाओ	और न	कुरबानी	से	मयस्सर आए	तो जो	तुम रोक दिए जाओ	फिर अगर

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى

तक्लीफ़	उस के	या	बीमार	तुम में से	हो	पस जो	अपनी जगह	कुरबानी	पहुँच जाए

مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۥ قف

तुम अम्न में हो	फिर जब	कुरबानी	या	सदक़ा	या	रोज़ा	से	तो बदला	उस का सर	से

فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ

कुरबानी से	मयस्सर आए	तो जो	हज	तक	उमरे का	फ़ाइदा उठाए	तो जो

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ

जब तुम वापस आजाओ	और सात	हज में	दिन	तीन	तो रोज़ा रखे	न पाए	फिर जो

تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي

मौजूद	उस के घर वाले	न हों	लिए-जो	यह	पूरे	दस	यह

ع ٢٤ ٨ ٨

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾

196	अ़ज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	मस्जिदे हराम

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ

और न गाली दे	बेपर्दा हो	तो न	हज	उन में	लाज़िम कर लिया	पस जिस ने	मालूम (मुक़र्रर)	महीने	हज

وقف النبي ﷺ

وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا

और तुम ज़ादेराह ले लिया करो	अल्लाह	उसे जानता है	नेकी से	तुम करोगे	और जो	हज में	और न झगड़ा

فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾

197	ऐ अ़क़्ल वालो	और मुझ से डरो	तक़वा	ज़ादे राह	बेहतर	पस बेशक

हुर्मत वाला महीना बदला है हुर्मत वाले महीने का, और हुर्मतों का बदला है, पस जिस ने तुम पर ज़ियादती की तो तुम उस पर ज़ियादती करो जैसी उस ने तुम पर ज़ियादती की, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह साथ है परहेज़गारों के। (194)

और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और (अपने आप को) अपने हाथों न डालो हलाकत में, और नेकी करो, बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (195)

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए, फिर अगर तुम रोक दिए जाओ तो जो कुरबानी मयस्सर आए (पेश करो) और अपने सर न मुंडवाओ यहां तक कि कुरबानी अपनी जगह पहुँच जाए, फिर जो कोई तुम में से बीमार हो या उस के सर में तक्लीफ़ हो तो वह बदला दे रोज़े से या सदक़े से या कुरबानी से, फिर जब तुम अम्न में हो तो जो फ़ाइदा उठाए हज के साथ उमरा (मिला कर) तो उसे जो कुरबानी मयस्सर आए (देदे), फिर जो न पाए तो वह रोज़े रख ले तीन दिन हज के अय्याम में और सात जब तुम वापस आजाओ, यह दस पूरे हुए, यह उस के लिए है जिस के घर वाले मस्जिदे हराम में मौजूद न हों (न रहते हों) और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (196)

हज के महीने मुक़र्रर हैं, पस जिस ने उन में हज लाज़िम कर लिया तो वह न बेपर्दा हो, न गाली दे, न झगड़ा करे हज में, और तुम जो नेकी करोगे अल्लाह उसे जानता है, और तुम ज़ादेराह ले लिया करो, पस बेशक बेहतर ज़ादे राह तक़वा है, और ऐ अ़क़्ल वालो! मुझ से डरते रहो। (197)

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो (तिजारत करो), फिर जब तुम अ़रफ़ात से लौटो तो अल्लाह को याद करो मशअ़रे हराम के नज़दीक (मुज़दलिफ़ा में), और अल्लाह को याद करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत दी और बेशक उस से पहले तुम नावाक़िफ़ों में से थे। **(198)**

फिर तुम लौटो जहां से लोग लौटें, और अल्लाह से मग़्फ़िरत चाहो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है **(199)**

फिर जब तुम हज के मरासिम अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसा कि तुम अपने बाप दादा को याद करते थे या उस से भी ज़ियादा याद करो, पस कोई आदमी कहता है ऐ हमारे रब! हमें दुन्या में (भलाई) दे और उस के लिए नहीं है आख़िरत में कुछ हिस्सा। **(200)**

और उन में से कोई कहता है ऐ हमारे रब! हमें दे दुन्या में भलाई और आख़िरत में भलाई, और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले। **(201)**

यही लोग हैं उन के लिए हिस्सा है उस में से जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह हिसाब लेने में तेज़ है। **(202)**

और तुम अल्लाह को याद करो गिनती के चन्द (मुक़र्रर) दिनों में, पस जो दो दिन में जल्दी चला गया तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिस ने ताख़ीर की उस पर कोई गुनाह नहीं (यह उस के लिए है) जो डरता रहा, और तुम अल्लाह से डरो, और जान लो कि तुम उस की तरफ़ जमा किए जाओगे। **(203)**

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

अपना रब	से	फ़ज़्ल	तलाश करो	अगर तुम	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं

فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ

नज़दीक	अल्लाह	तो याद करो	अ़रफ़ात	से	तुम लौटो	फिर जब

الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ

तुम थे	और बेशक	उस ने तुम्हें हिदायत दी	जैसे	और उसे याद करो	मशअ़रे हराम

مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ

से - जहां	तुम लौटो	फिर	198	नावाक़िफ़	ज़रूर-से	उस से पहले

اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह	बेशक	अल्लाह	और मग़्फ़िरत चाहो	लोग	लौटें

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ

हज के मरासिम	तुम अदा कर चुको	फिर जब	199	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ

याद	ज़ियादा	या	अपने बाप दादा	जैसी तुम्हारी याद	अल्लाह	तो याद करो

فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا

दुन्या	में	हमें दे	ऐ हमारे रब	कहता है	जो	पस-से-आदमी

وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ

कहता है	जो	और उन से	200	कुछ हिस्सा	आख़िरत	में	उस के लिए	और नहीं

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

भलाई	और आख़िरत में	भलाई	दुन्या में	हमें दे	ऐ हमारे रब

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ

उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	उन के लिए	यही लोग	201	आग (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	और हमें बचा

وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۲۰۲﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ النصف

में	अल्लाह	और तुम याद करो	202	हिसाब लेने वाला	तेज़	और अल्लाह

اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ

गुनाह	तो नहीं	दो दिन	में	जल्द चला गया	पस जो	दिन गिनती के

عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ

डरता रहा	लिए - जो	उस पर	गुनाह	तो नहीं	ताख़ीर की	और जिस	उस पर

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

203	जमा किए जाओगे	उस की तरफ़	कि तुम	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ

और वह गवाह बनाता है अल्लाह को	दुनया	ज़िन्दगी	में	उस की बात	तुम्हे भली मालूम होती है	जो	लोग	और से

عَلٰى مَا فِىْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى

दौड़ता फिरे	वह लौटे	और जब	204	झगड़ालू	सख़्त	हालांकि वह	उस के दिल में	जो	पर

فِى الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ

और नस्ल	खेती	और तबाह करे	उस में	ताकि फ़साद करे	ज़मीन	में

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ

अल्लाह	डर	उस को	कहा जाए	और जब	205	फ़साद	न पसन्द करता है	और अल्लाह

اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

206	ठिकाना	और अलबत्ता बुरा	जहन्नम	तो काफ़ी है उस को	गुनाह पर	इज़्ज़त (ग़ुरूर)	उसे आमादा करे

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की रज़ा	हासिल करना	अपनी जान	बेच डालता है	जो	लोग	और से

وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا

तुम दाख़िल हो जाओ	जो लोग ईमान लाए	ऐ	207	बन्दों पर	मेहरबान	और अल्लाह

فِى السِّلْمِ كَآفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ

शैतान	क़दम	पैरवी करो	और न	पूरे पूरे	इस्लाम	में

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٨﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	तुम डगमगा गए	फिर अगर	208	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह

مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٠٩﴾

209	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह	कि	तो जान लो	वाज़ेह अहकाम	तुम्हारे पास आए	जो

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِىْ ظُلَلٍ

सायबानों में	अल्लाह	आए उन के पास	कि	सिवाए (यही)	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या

مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِىَ الْاَمْرُ ؕ

मामला	और चुका दिया जाए	और फ़रिश्ते	बादल	से

٢٥ ع ١٢ ٩ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ

बनी इस्राईल	पूछो	210	तमाम मामलात	लौटेंगे	अल्लाह	और तरफ़

كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ

अल्लाह	नेमत	बदल डाले	और जो	खुली	निशानियां	से	हम ने उन्हें दीं	किस क़द्र

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

211	अज़ाब	सख़्त	अल्लाह	तो बेशक	आई उस के पास	जो	उस के बाद

और लोगों में (कोई ऐसा भी है) कि उस की बात तुम्हें भली मालूम होती है दुनयवी ज़िन्दगी (के उमूर) में और वह अल्लाह को गवाह बनाता है अपने दिल की बात पर, हालांकि वह सख़्त झगड़ालू है। (204)

और जब वह लौटे तो ज़मीन (मुल्क) में दौड़ता फिरे ताकि उस में फ़साद करे, और तबाह करे खेती और नस्ल, और अल्लाह फ़साद को नापसंद करता है। (205)

और जब उस को कहा जाए कि अल्लाह से डर, तो उस को इज़्ज़त (ग़ुरूर) गुनाह पर आमादा करे, तो उस के लिए जहन्नम काफ़ी है, और अलबत्ता वह बुरा ठिकाना है। (206)

और लोगों में (एक वह है) जो अपनी जान बेच डालता है अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है। (207)

ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208)

फिर अगर तुम उस के बाद डगमगा गए जबकि तुम्हारे पास वाज़ेह अहकाम आ गए तो जान लो कि अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (209)

क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि अल्लाह उन के पास आए सायबानों में बादल के, और फ़रिश्ते, और मामला चुका दिया जाए, और तमाम मामलात अल्लाह की तरफ़ लौटेंगे। (210)

पूछो बनी इस्राईल से हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियां दीं? और जो अल्लाह की नेमत बदल डाले उस के बाद कि वह उस के पास आ गई तो बेशक अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (211)

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ

जो लोग	से	और वह हँसते हैं	दुन्या	ज़िन्दगी	वह लोग जो कुफ़्र किया	आरास्ता की गई

اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ

रिज़्क़ देता है	और अल्लाह	क़ियामत के दिन	उन से बालातर	परहेज़गार हुए	और जो लोग	ईमान लाए

وقف لازم

مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ٢١٢ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۣ

एक	उम्मत	लोग	थे	212	हिसाब	बग़ैर	वह चाहता है	जिसे

فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۠ وَاَنْزَلَ

और नाज़िल की	और डराने वाले	खुशख़बरी देने वाले	नबी	अल्लाह	फिर भेजे

مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا

उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	जिस में	लोग	दरमियान	ताकि फ़ैसला करे	बरहक़	किताब	उन के साथ

فِيْهِ ۭ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	दी गई	जिन्हें	मगर	उस में	इख़्तिलाफ़ किया	और नहीं	उस में

مَا جَاۗءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	अल्लाह	पस हिदायत दी	उन के दरमियान (आपस की)	ज़िद	वाज़ेह अहकाम	आए उन के पास	जो - जब

لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ۭ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ

वह चाहता है	जिसे	हिदायत देता है	और अल्लाह	अपने इज़्न से	सच	से (पर)	उस में	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	लिए - जो

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ٢١٣ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ

जन्नत	तुम दाख़िल हो जाओगे	कि	तुम ख़याल करते हो	क्या	213	सीधा	रास्ता	तरफ़

وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ۭ

तुम से पहले	से	गुज़रे	जो	जैसे	आई तुम पर	और जब कि नहीं

مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَاۗءُ وَالضَّرَّاۗءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ

रसूल	कहने लगे	यहां तक	और वह हिला दिए गए	और तक्लीफ़	सख़्ती	पहुँची उन्हें

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ۭ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ

अल्लाह	मदद	बेशक	आगाह रहो	अल्लाह की मदद	कब	उन के साथ	ईमान लाए	और वह जो

قَرِيْبٌ ٢١٤ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۭ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ

से	तुम ख़र्च करो	जो	आप कह दें	ख़र्च करें	क्या कुछ	वह आप से पूछते हैं	214	क़रीब

خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

और मोहताज (जमा)	और यतीम (जमा)	और क़राबतदार (जमा)	सो माँ बाप के लिए	माल

وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ٢١٥

215	जानने वाला	उसे	अल्लाह	तो बेशक	कोई नेकी	तुम करोगे	और जो	और मुसाफ़िर

आरास्ता की गई काफ़िरों के लिए दुन्या की ज़िन्दगी, और वह हँसते हैं उन पर जो ईमान लाए, और जो परहेज़गार हुए वह क़यामत के दिन उन से बालातर होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है बेशुमार। (212)

लोग एक उम्मत थे, फिर अल्लाह ने नबी भेजे खुशख़बरी देने वाले और डराने वाले, और उन के साथ बरहक़ किताब नाज़िल की ताकि फ़ैसला करे लोगों के दरमियान जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और जिन्हें (किताब) दी गई थी उन्हों ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास वाज़ेह अहकाम आ गए आपस की ज़िद की वजह से, पस अल्लाह ने उन लोगों को हिदायत दी अपने इज़्न से जो ईमान लाए उस सच्ची बात पर जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया था, और अल्लाह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़। (213)

क्या तुम ख़याल करते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और जबकि (अभी) तुम पर (ऐसी हालत) नहीं आई जैसे तुम से पहले लोगों पर गुज़री, उन्हें पहुँची सख़्ती और तक्लीफ़, और वह हिला दिए गए यहां तक कि रसूल और वह जो उन के साथ ईमान लाए कहने लगे अल्लाह की मदद कब आएगी? आगाह रहो बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है। (214)

वह आप (स) से पूछते हैं क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें जो माल तुम ख़र्च करो, सो माँ बाप के लिए और क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों के लिए, और तुम जो नेकी करोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानने वाला है। (215)

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا

एक चीज़	तुम नापसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	नागवार	और वह	जंग	तुम पर फ़र्ज़ की गई

وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ

तुम्हारे लिए	बुरी	और वह	एक चीज़	तुम पसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	बेहतर	और वह

ع ٢٦ ٦ ١٠ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۲۱۶ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ

महीना हुर्मत वाला	से	वह आप से सवाल करते हैं	216	नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह

قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह	रास्ता	से	और रोकना	बड़ा	उस में	जंग	आप कह दें	उस में	जंग

وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह के नज़दीक	बहुत बड़ा	उस से	उस के लोग	और निकाल देना	और मस्जिदे हराम	उस का	और न मानना

وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ

वह तुम से लड़ेंगे	और वह हमेशा रहेंगे	क़त्ल	से	बहुत बड़ा	और फ़ित्ना

حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ

फिर जाए	और जो	वह कर सकें	अगर	तुम्हारा दीन	से	तुम्हें फेर दें	यहां तक कि

مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ

ज़ाया हो गए	तो यही लोग	काफ़िर	और वह	फिर मर जाए	अपना दीन	से	तुम में से

اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ

दोज़ख़	वाले	और यही लोग	और आख़िरत	दुन्या	में	उन के अ़मल

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۲۱۷ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا

उन्हों ने हिज्रत की	और वह लोग जो	ईमान लाए	जो लोग	बेशक	217	हमेशा रहेंगे	उस में	वह

وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की रहमत	उम्मीद रखते हैं	यही लोग	अल्लाह का रास्ता	में	और उन्हों ने जिहाद किया

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۲۱۸ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ

और जुआ	शराब	से (बारे में)	वह पूछते हैं आप से	218	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह

قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ؗ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ

बहुत बड़ा	और उन दोनों का गुनाह	लोगों के लिए	ओर फ़ाइदे	बड़ा	गुनाह	उन दोनो में	आप कह दें

مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلِ الْعَفْوَ ؕ

ज़ाइद अज़ ज़रूरत	आप कह दें	वह ख़र्च करें	क्या कुछ	वह पूछते हैं आप (स) से	उन का फ़ाइदा	से

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۲۱۹ ۙ

219	ग़ौर ओ फ़िक्र करो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

तुम पर जंग फ़र्ज़ की गई और वह तुम्हें नागवार है, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ नापसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ पसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (216)

वह आप से सवाल करते हैं हुर्मत वाले महीने में जंग (के बारे) में, आप (स) कह दें उस में जंग करना बड़ा (गुनाह) है, और अल्लाह के रास्ते से रोकना और उस (अल्लाह) को न मानना और मस्जिदे हराम (से रोकना) और उस के लोगों को वहां से निकालना अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है और फ़ित्ना क़त्ल से (भी) बड़ा गुनाह है, और वह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि अगर वह कर सकें तो तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें, और तुम में से जो फिर जाए अपने दीन से और वह मर जाए (उस हाल में कि) वह काफ़िर हो तो यही लोग हैं जिन के अ़मल ज़ाया हो गए दुन्या में और आख़िरत में और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (217)

बेशक जो ईमान लाए और जिन लोगों ने हिज्रत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, यही लोग अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (218)

वह आप (स) से पूछते हैं शराब और जुआ के बारे में, आप कह दें कि उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए फ़ाइदे (भी) हैं (लेकिन) उन का गुनाह उन के फ़ाइदे से बहुत बड़ा है, और वह आप (स) से पूछते हैं कि वह क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें ज़ाइद अज़ ज़रूरत, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो (219)

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۗ قُلْ اِصْلَاحٌ

इस्लाह	आप कह दें	यतीम (जमा)	से (बारे में)	और वह आप (स) से पूछते हैं	और आख़िरत	दुन्या में

لَّهُمْ خَيْرٌ ۗ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ

ख़राबी करने वाला	जानता है	और अल्लाह	तो भाई तुम्हारे	मिला लो उन को	और अगर	बेहतर	उन की

مِنَ الْمُصْلِحِ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٠﴾

220	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	ज़रूर मुशक़्क़त में डालता तुम को	चाहता अल्लाह	और अगर	इस्लाह करने वाला	से (को)

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۗ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ

से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता लौंडी	वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुश्रिक औरतें	निकाह करो	और न

مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۗ

वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुश्रिकों	निकाह करो	और न	वह भली लगे तुम्हें	अगरचे	मुश्रिक औरत

وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۗ اُولٰٓئِكَ

वही लोग	वह भला लगे तुम्हें	अगरचे	मुश्रिक	से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता गुलाम

يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ

और बख़्शिश	जन्नत की तरफ़	बुलाता है	और अल्लाह	दोज़ख़ की तरफ़	बुलाते हैं

بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾ ع ٢٧ ٥ ١١

221	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	लोगों के लिए	अपने अहकाम	और वाज़ेह करता है	अपने हुक्म से

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۗ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ

औरतें	पस तुम अलग रहो	गन्दगी	वह	आप केह दें	हालते हैज़	से (बारे में)	और वह पूछते हैं आप (स) से

فِى الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ

तो आओ उन के पास	वह पाक हो जाएं	पस जब	वह पाक हो जाएं	यहां तक कि	क़रीब जाओ उन के	और न	हालते हैज़	में

مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ

और दोस्त रखता है	तौबा करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह	हुक्म दिया तुम्हें	जहां से

الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾ نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى

जहां से	अपनी खेती	सो तुम आओ	तुम्हारी	खेती	औरतें तुम्हारी	222	पाक रहने वाले

شِئْتُمْ ۡ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ۗ

मिलने वाले उस से	कि तुम	और तुम जान लो	अल्लाह	और डरो	अपने लिए	और आगे भेजो	तुम चाहो

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٢٣﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ

कि	अपनी क़स्मों के लिए	निशाना	अल्लाह	बनाओ	और न	223	ईमान वाले	और ख़ुशख़बरी दें

تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾

224	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	लोग	दरमियान	और सुलह कराओ	और परहेज़गारी करो	तुम हुस्ने सुलूक करो

दुन्या में और आख़िरत में, और वह आप (स) से यतीमों के बारे में पूछते हैं, आप कह दें उन की इस्लाह बेहतर है, और अगर उन को मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह ख़राबी करने वाले और इस्लाह करने वाले को खूब जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को जरूर मुशक़्क़त में डाल देता, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (220)

और मुश्रिक औरतों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान लौंडी बेहतर है मुश्रिक औरत से अगरचे तुम्हें वह भली लगे, और मुश्रिकों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान गुलाम बेहतर है मुश्रिक से अगरचे वह तुम्हें भला लगे, यह लोग दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं, और अल्लाह बुलाता है अपने हुक्म से जन्नत और बख़्शिश की तरफ़, और लोगों के लिए अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि वह नसीहत पकड़ें। (221)

वह आप (स) से हालते हैज़ के बारे में पूछते हैं, आप कह दें कि वह गन्दगी है, पस तुम औरतों से अलग रहो हालते हैज़ में और उन के क़रीब न जाओ यहां तक कि वह पाक हो जाएं, पस जब वह पाक हो जाएं तो तुम उन के पास आओ जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। (222)

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, पस तुम अपनी खेती में आओ जहां से चाहो और अपने लिए आगे भेजो (आगे की तदबीर करो) और अल्लाह से डरो, और तुम जान लो कि तुम अल्लाह से मिलने वाले हो, और ख़ुशख़बरी दें ईमान वालों को। (223)

और अपनी क़स्मों के लिए अल्लाह (के नाम) को निशाना न बनाओ कि तुम हुस्ने सुलूक और परहेज़गारी और लोगों के दरमियान सुलह कराने (से बाज़ रहो) और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (224)

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ

पकड़ता है तुम्हें	और लेकिन	क़स्में तुम्हारी	में	लग़ू (बेहूदा)	अल्लाह	नहीं पकड़ता तुम्हें

بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ

क़स्म खाते हैं	उन लोगों के लिए जो	225	बुर्दबार	बख़्शने वाला	और अल्लाह	दिल तुम्हारे	कमाया	पर-जो

مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَاۗءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	रुजूअ करलें	फिर अगर	महीने	चार	इन्तिज़ार	औरतें अपनी	से

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ

सुनने वाला	अल्लाह	तो बेशक	तलाक़	उन्हों ने इरादा किया	और अगर	226	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْۗءٍ ۭ

मुद्दते हैज़	तीन	अपने तईं	इन्तिज़ार करें	और तलाक़ याफ़्ता औरतें	227	जानने वाला	

وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ

अगर	उन के रहम (जमा)	में	अल्लाह	पैदा किया	जो	वह छुपाएं	कि	उन के लिए	और जाइज़ नहीं

كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ

वापसी उन की	ज़ियादा हक़दार	और ख़ाविन्द उन के	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखती हैं

فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ۭ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ

औरतों पर (फ़र्ज़)	जो	जैसे	और औरतों के लिए	बेहतरी (हुस्ने सुलूक)	वह चाहें	अगर	उस में

بِالْمَعْرُوْفِ ۠ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	एक दर्जा	उन पर	और मर्दों के लिए	दस्तूर के मुताबिक़

٢٨ ع ١٢ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۠ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ

या	दस्तूर के मुताबिक़	फिर रोक लेना	दो बार	तलाक़	228	हिक्मत वाला

تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ

उस से जो	तुम ले लो	कि	तुम्हारे लिए	जाइज़	और नहीं	हुस्ने सुलूक से	रुख़सत करना

اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـــًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह कि हुदूद	क़ाइम रख सकेंगे	कि न	दोनों अन्देशा करें	कि	सिवाए	कुछ	तुम ने दिया उन को

فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا

उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	अल्लाह की हुदूद	कि वह क़ाइम न रख सकेंगे	तुम डरो	फिर अगर

فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ۭ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ

आगे बढ़ो उस से	पस न	अल्लाह की हुदूद	यह	उस का	औरत बदला दे	उस में जो

وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

229	ज़ालिम	वह	पस वही लोग	अल्लाह की हुदूद	आगे बढ़ता है	और जो

तुम्हें नहीं पकड़ता अल्लाह तुम्हारी बेहूदा क़स्मों पर, लेकिन तुम्हें पकड़ता है उस पर जो तुम्हारे दिलों ने कमाया (इरादे से किया) और अल्लाह बख़्शने वाला, बुर्दबार है। (225)

उन लोगों के लिए जो अपनी औरतों के (पास न जाने की) क़स्म खाते हैं इन्तिज़ार करना है चार माह, फिर अगर वह रुजूअ कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (226)

और अगर उन्हों ने तलाक़ का इरादा कर लिया तो बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (227)

और तलाक़ याफ़्ता औरतें अपने तईं इन्तिज़ार करें तीन हैज़ तक, और उन के लिए जाइज़ नहीं कि वह छुपाएं जो अल्लाह ने उन के रहमों में पैदा किया अगर वह अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखती हैं, और उन के ख़ाविन्द उन की वापसी के ज़ियादा हक़दार हैं उस (मुद्दत) में अगर वह बेहतरी (हुस्ने सुलूक) करना चाहें, और औरतों के लिए (हक़) है जैसे औरतों पर (मर्दों का) हक़ है दस्तूर के मुताबिक़, और मर्दों का उन पर एक दर्जा (बरतरी) है और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (228)

तलाक़ दो बार है, फिर रोक लेना है दस्तूर के मुताबिक़ या रुख़सत कर देना हुस्ने सुलूक से, और नहीं तुम्हारे लिए जाइज़ कि जो तुम ने उन्हें दिया है उस से कुछ वापस ले लो सिवाए उस के कि दोनों अन्देशा करें कि अल्लाह की हुदूद क़ाइम न रख सकेंगे, फिर अगर तुम डरो कि वह दोनों अल्लाह की हुदूद क़ाइम न रख सकेंगे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर कि औरत उस का बदला (फ़िदया) देदे, यह अल्लाह की हुदूद हैं, पस उन के आगे न बढ़ो, और जो अल्लाह की हुदूद से आगे बढ़ता है पस वही लोग ज़ालिम हैं। (229)

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ

वह निकाह कर ले	यहां तक कि	उस के बाद	उस के लिए	तो जाइज़ नहीं	तलाक़ दी उस को	फिर अगर

زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ

अगर	उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	तलाक़ देदे उस को	फिर अगर	उस के अ़लावा	ख़ाविन्द

يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

और यह	अल्लाह की हुदूद	वह क़ाइम रखेंगे	कि	वह ख़याल करें	बशर्त यह कि	वह रुजूअ़ कर लें

حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۰﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ

तुम तलाक़ दो	और जब	230	जानने वालों के लिए	उन्हें वाज़ेह करता है	अल्लाह की हुदूद

النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ

दस्तूर के मुताबिक़	तो रोको उन को	अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औ़रतें

اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا

नुक़्सान	और तुम न रोको उन्हें	दस्तूर के मुताबिक़	रुख़सत कर दो	या

لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ

अपनी जान	तो बेशक उस ने ज़ुल्म किया	यह	करेगा	और जो	ताकि तुम ज़ियादती करो

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

अल्लाह की नेमत	और याद करो	मज़ाक़	अल्लाह के अहकाम	ठहराओ	और न

عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ

और हिक्मत	किताब	से	तुम पर	उस ने उतारा	और जो	तुम पर

يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

चीज़	हर	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	उस से	वह नसीहत करता है तुम्हें

عَلِيْمٌ ﴿۲۳۱﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ ع ٢٩ ٣ ١٣ الثلثة

अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औ़रतें	तुम तलाक़ दो	और जब	231	जानने वाला

فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا

वह राज़ी हों	जब	ख़ाविन्द अपने	वह निकाह करें	कि	रोको उन्हें	तो न

بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ

हो	जो	उस से	नसीहत की जाती है	यह	दस्तूर के मुताबिक़	आपस में

مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى

ज़ियादा सुथरा	यही	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान रखता	तुम में से

لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۲﴾

232	जानते	नहीं	और तुम	जानता है	और अल्लाह	और ज़ियादा पाकीज़ा	तुम्हारे लिए

पस अगर उस को तलाक़ दे दी तो जाइज़ नहीं उस के लिए उस के बाद यहां तक कि वह उस के अ़लावा किसी (दूसरे) ख़ाविन्द से निकाह कर ले, फिर अगर वह उसे तलाक़ देदे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर अगर वह रुजूअ़ कर लें, बशर्त यह कि वह ख़याल करें कि वह अल्लाह की हुदूद क़ाइम रखेंगे, और यह अल्लाह की हुदूद हैं, वह उन्हें जानने वालों के लिए वाज़ेह करता है। (230)

और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दे दो फिर वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन को दस्तूर के मुताबिक़ रोको या दस्तूर के मुताबिक़ रुख़सत कर दो और तुम उन्हें नुक़्सान पहुँचाने के लिए न रोको ताकि तुम ज़ियादती करो, और जो यह करेगा बेशक उस ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, और अल्लाह के अहकाम को मज़ाक़ न ठहराओ, और तुम पर जो अल्लाह की नेमत है उसे याद करो, और जो उस ने तुम पर किताब और हिक्मत उतारी, वह उस से तुम्हें नसीहत करता है, और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (231)

और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दे दो, फिर वह पूरी कर लें अपनी इद्दत तो उन्हें अपने ख़ाविन्दों से निकाह करने से न रोको जब वह राज़ी हों आपस में दस्तूर के मुताबिक़, यह उस को नसीहत की जाती है जो तुम में से ईमान रखता है अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा सुथरा और ज़ियादा पाकीज़ा है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (232)

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ

चाहे	जो कोई	पूरे	दो साल	अपनी औलाद	दूध पिलाएं	और माएँ

اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ

दस्तूर के मुताबिक़	और उन का लिबास	उन का खाना	जिस का बच्चा (बाप)	और पर	दूध पिलाने कि मुद्दत	कि वह पूरी करे

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ ۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ

जिस का बच्चा (बाप)	और न	उस के बच्चे के सबब	माँ	न नुक़्सान पहुँचाया जाए	उस की वुसअ़त	मगर	कोई शख़्स	नहीं तकलीफ़ दी जाती

بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ

आपस की रज़ामन्दी से	दूध छुड़ाना	दोनों चाहें	फिर अगर	यह-उस	ऐसा	वारिस	और पर	उस के बच्चे के सबब

مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ

कि	तुम चाहो	और अगर	उन दोनों पर	गुनाह	तो नहीं	और बाहम मशवरा	दोनों से

تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ

तुम ने दिया था	जो	तुम हवाले कर दो	जब	तुम पर	तो गुनाह नहीं	अपनी औलाद	तुम दूध पिलाओ

بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

233	देखने वाला	तुम करते हो	से-जो	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और डरो	दस्तूर के मुताबिक़

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ

अपने आप को	वह इन्तिज़ार में रखें	बीवियां	और छोड़ जाएं	तुम से	वफ़ात पा जाएं	और जो लोग

اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	तो नहीं गुनाह	अपनी मुद्दत (इद्दत)	वह पहुँच जाएं	फिर जब	और दस (दिन)	महीने	चार

فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

234	बाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	दस्तूर के मुताबिक़	अपनी जानें (अपने हक़)	में	वह करें	में-जो

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ

तुम छुपाओ	या	औरतों को	पैग़ामे निकाह	उस से	इशारे में	में-जो	तुम पर	और नहीं गुनाह

فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ

न वादा करो उन से	और लेकिन	जल्द ज़िक्र करोगे उन से	कि तुम	जानता है अल्लाह	अपने दिलों में

سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ

निकाह	गिरह	इरादा करो	और न	दस्तूर के मुताबिक़	बात	तुम कहो	मगर यह कि	छुप कर

حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ

में	जो	जानता है	अल्लाह	कि	और जान लो	उस की मुद्दत	इद्दत	पहुँच जाए	यहां तक

ع ٣٠ ١٣ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾

235	तहम्मुल वाला	बख़्शने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो	सो डरो उस से	अपने दिल

और माएँ अपनी औलाद को पूरे दो साल दूध पिलाएं जो कोई दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे, और उन (माओं) का खाना और उन का लिबास बाप पर (वाजिब है) दस्तूर के मुताबिक़, और किसी को तक्लीफ़ नहीं दी जाती मगर उस की वुसअ़त (बरदाश्त) के मुताबिक़, माँ को नुक़्सान न पहुँचाया जाए उस के बच्चे के सबब और न बाप को उस के बच्चे के सबब, और वारिस पर भी ऐसा ही (वाजिब) है, फिर अगर वह दोनों दूध छुड़ाना चाहें आपस की रज़ामन्दी और मशवरे से तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम चाहो कि अपनी औलाद को दूध पिलाओ (ग़ैर औ़रत से) तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जब तुम दस्तूर के मुताबिक़ (उन के) हवाले कर दो जो तुम ने देना ठहराया था, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे देखने वाला है। **(233)**

और तुम में से जो लोग वफ़ात पा जाएं और छोड़ जाएं बीवियां, वह (बेवाएँ) अपने आप को इन्तिज़ार में रखें चार माह दस दिन, फिर जब वह अपनी मुद्दत को पहुँच जाएं (इद्दत पूरी कर लें) तो उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने हक़ में करें दस्तूर के मुताबिक़, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। **(234)**

और तुम पर उस में कोई गुनाह नहीं कि तुम औ़रतों को इशारे कनाए में निकाह का पैग़ाम दो या अपने दिलों में छुपाओ, अल्लाह जानता है तुम जल्द उन से ज़िक्र कर दोगे, लेकिन उन से छुप कर (निकाह का) वादा न करो, मगर यह कि तुम दस्तूर के मुताबिक़ बात करो, और निकाह की गिरह बाँधने का इरादा न करो यहां तक कि इद्दत अपनी मुद्दत तक पहुँच जाए, और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह जानता है, सो तुम उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल वाला है। **(235)**

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ

या	तुम ने उन्हें हाथ लगाया	जो न	औरतें	तुम तलाक़ दो	अगर	तुम पर	नहीं गुनाह

تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ

उस की हैसियत	ख़ुशहाल	पर	और उन्हें ख़र्च दो	मेहर	उन के लिए	मुक़र्रर किया

وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

236	नेकोकार	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	ख़र्च	उस की हैसियत	तंगदस्त	और पर

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ

और तुम मुक़र्रर कर चुके हो	उन्हें हाथ लगाओ	कि	पहले	तुम उन्हें तलाक़ दो	और अगर

لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ

या	वह माफ़ कर दें	यह कि	सिवाए	तुम ने मुक़र्रर किया	जो	तो निस्फ़	मेहर	उन के लिए

يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۭ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۭ

परहेज़गारी के	ज़ियादा क़रीब	तुम माफ़ कर दो	और अगर	निकाह की गिरह	उस के हाथ में	वह जो	माफ़ कर दे

وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

237	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	बेशक अल्लाह	बाहम	एहसान करना	और न भूलो

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۤ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	और खड़े रहो	दरमियानी	और नमाज़	नमाज़ों की	तुम हिफ़ाज़त करो

قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ

अल्लाह	तो याद करो	तुम अम्न पाओ	फिर जब	सवार	या	तो प्यादापा	तुम्हें डर हो	फिर अगर	238	फ़रमांबरदार (जमा)

كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ

वफ़ात पा जाएं	और जो लोग	239	जानते	तुम न थे	जो	उस ने तुम्हें सिखाया	जैसा कि

مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۛ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا

नान नफ़क़ा	अपनी बीवियों के लिए	वसीयत	बीवियां	और छोड़ जाएं	तुम में से

اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ

में	तुम पर	गुनाह	तो नहीं	वह निकल जाएं	फिर अगर	निकाले	बग़ैर	एक साल	तक

مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾

240	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	दस्तूर	से	अपने तईं	में	जो वह करें

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾

241	परहेज़गारों	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	नान नफ़क़ा	और मुतल्लक़ा औरतों के लिए

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ ع ٣١ ١٥

242	समझो	ताकि तुम	अपने अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम औरतों को तलाक़ दो जब कि तुम ने उन्हें हाथ न लगाया हो या उन के लिए मेहर मुक़र्रर न किया हो, और उन्हें ख़र्च दो, ख़ुशहाल पर उस की हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त पर उस की हैसियत के मुताबिक़, ख़र्च दस्तूर के मुताबिक़ (देना) नेकोकारों पर लाज़िम है। (236)

और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो इस से पहले कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और उन के लिए तुम मेहर मुक़र्रर कर चुके हो तो उस का निस्फ़ (दे दो) जो तुम ने मुक़र्रर किया सिवाए उस के कि वह माफ़ कर दें या वह माफ़ कर दे जिस के हाथ में अक़्दे निकाह है,
और अगर तुम माफ़ कर दो तो यह परहेज़गारी के क़रीब तर है,
और बाहम एहसान करना न भूलो, बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (237)

तुम नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो (ख़ुसूसन) दरमियानी नमाज़ की और अल्लाह के लिए फ़रमांबरदार (बन कर) खड़े रहो। (238)

फिर अगर तुम्हें डर हो तो प्यादापा या सवार (अदा करो), फिर जब अम्न पाओ तो अल्लाह को याद करो जैसा कि उस ने तुम्हें सिखाया है जो तुम न थे जानते। (239)

और जो लोग तुम में से वफ़ात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो अपनी बीवियों के लिए एक साल तक नान नफ़क़ा की वसीयत करें निकाले बग़ैर, फिर अगर वह ख़ुद निकल जाएं तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने तईं दस्तूर के मुताबिक़ करें, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (240)

और मुतल्लक़ा औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक़ नान नफ़क़ा लाज़िम है परहेज़गारों पर। (241)

इसी तरह तुम्हारे लिए अल्लाह अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (242)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ص

मौत	डर	हज़ारों	और वह	अपने घर (जमा)	से	निकले	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا قف ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ

फ़ज़्ल वाला	बेशक अल्लाह	उन्हे ज़िन्दा किया	फिर	तुम मर जाओ	अल्लाह	उन्हें	सो कहा

عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	और तुम लड़ो	243	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	लोगों पर

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ

क़र्ज़ दे अल्लाह	जो कि	वह	कौन	244	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो

قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ط وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ص

और फ़राख़ी करता है	तंगी करता है	और अल्लाह	कई गुना ज़ियादा	उस के लिए	पस वह उसे बढ़ा दे	क़र्ज़ अच्छा

وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	से	बनी इस्राईल	से	सरदारों	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	245	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ़

مُوْسٰى م اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط

وقف لازم

अल्लाह का रास्ता	में	हम लड़ें	एक बादशाह	हमारे लिए	मुक़र्रर कर दें	अपने नबी से	उन्हों ने कहा	जब	मूसा (अ)

قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ط

कि तुम न लड़ो	जंग	तुम पर फ़र्ज़ की जाए	अगर	हो सकता है कि तुम	क्या	उस ने कहा

قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ

से	हम निकाले गए	और अलबत्ता	अल्लाह की राह	में	हम लड़ेंगे	कि न	और हमें क्या हुआ	वह कहने लगे

دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ط فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا

चन्द	सिवाए	वह फिर गए	जंग	उन पर फ़र्ज़ की गई	फिर जब	और अपनी आल औलाद	अपने घर

مِّنْهُمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	उन का नबी	उन्हें	और कहा	246	ज़ालिमों को	जानने वाला	और अल्लाह	उन में से

قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ط قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ

बादशाहत	उस के लिए	हो सकती है	कैसे	वह बोले	बादशाह	तालूत	तुम्हारे लिए	मुक़र्रर कर दिया है

عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ط

माल	से	वुस्अत	और नहीं दी गई	उस से	बादशाहत के	ज़ियादा हक़दार	और हम	हम पर

قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ

इल्म	में	वुस्अत	और उसे ज़ियादा दी	तुम पर	उसे चुन लिया	अल्लाह	बेशक	उस ने कहा

وَالْجِسْمِ ط وَاللّٰهُ يُؤْتِيْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٧﴾

247	जानने वाला है	वुस्अत वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिसे	अपना मुल्क	देता है	और अल्लाह	और जिस्म

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से निकले मौत के डर से? और वह हज़ारों थे, सो अल्लाह ने उन्हें कहा तुम मर जाओ, फिर उन्हें ज़िन्दा किया, बेशक अल्लाह फ़ज़्ल वाला है लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (243)

और तुम अल्लाह के रास्ते में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (244)

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़, फिर वह उसे कई गुना ज़ियादा बढ़ा दे, अल्लाह तंगी (भी) देता है और फ़राख़ी (भी) देता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (245)

क्या तुम ने बनी इस्राईल के सरदारों की तरफ़ नहीं देखा मूसा के बाद? जब उन्हों ने अपने नबी से कहा हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम लड़ें अल्लाह के रास्ते में, उस ने कहा: हो सकता है कि अगर तुम पर जंग फ़र्ज़ की जाए तो तुम न लड़ो, वह कहने लगे और हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह की राह में न लड़ेंगे, और अलबत्ता हम अपने घरों से और अपनी आल औलाद से निकाले गए हैं, फिर जब उन पर जंग फ़र्ज़ की गई तो उन में से चन्द एक के सिवा (सब) फिर गए, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (246)

और कहा उन्हें उन के नबी ने बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुक़र्रर कर दिया है, वह बोले कैसे हम पर उस की बादशाहत हो सकती है? हम उस से ज़ियादा बादशाहत के हक़दार हैं, और उसे वुस्अत नहीं दी गई माल से, उस ने कहा बेशक अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है और उसे ज़ियादा वुस्अत दी है इल्म और जिस्म में, और अल्लाह जिसे चाहता है अपना मुल्क देता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। (247)

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖۤ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ

उस में	ताबूत	आएगा तुम्हारे पास	कि	उस की हुकूमत	निशानी	बेशक	उन का नबी	उन्हें	और कहा

سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ

और आले हारून	आले मूसा	छोड़ा	उस से जो	और बची हुई	तुम्हारा रब	से	सामाने तसकीन

تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٤٨﴾ ع ٣٢ ١٦

248	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	निशानी	उस में	बेशक	फ़रिश्ते	उठाएंगे उसे

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ

एक नहर से	तुम्हारी आज़माइश करने वाला	बेशक अल्लाह	उस ने कहा	लश्कर के साथ	तालूत	बाहर निकला	फिर जब

فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْۤ اِلَّا

सिवाए	मुझ से	तो बेशक वह	उसे न चखा	और जिस	मुझ से	तो नहीं	उस से	पी लिया	पस जिस

مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ

उस के पार हुए	पस जब	उन से	चन्द एक	सिवाए	उस से	फिर उन्हों ने पी लिया	अपने हाथ से	एक चुल्लू	चुल्लू भर ले	जो

هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ

और उस का लश्कर	जालूत के साथ	आज	हमारे लिए	नहीं ताक़त	उन्हों ने कहा	उस के साथ	ईमान लाए	और वह जो	वह

قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ

छोटी	जमाअ़तें	से	बारहा	अल्लाह	मिलने वाले	कि वह	यक़ीन रखते थे	जो लोग	कहा

غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٢٤٩﴾ وَلَمَّا

और जब	249	सब्र करने वाले	साथ	और अल्लाह	अल्लाह के हुक्म से	बड़ी	जमाअ़तें	ग़ालिब हुईं

بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ

और जमादे	सब्र	हम पर	डाल दे	ऐ हमारे रब	उन्हों ने कहा	और उस का लश्कर	जालूत के	आमने सामने हुए

اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٥٠﴾ ؕ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ

अल्लाह के हुक्म से	फिर उन्हों ने शिकस्त दी उन्हें	250	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	और हमारी मदद कर	हमारे क़दम

وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ

और उसे सिखाया	और हिक्मत	मुल्क	अल्लाह	और उसे दिया	जालूत	दाऊद (अ)	और क़त्ल किया

مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ

बाज़ के ज़रीए	बाज़ लोग	लोग	अल्लाह	हटाता	और अगर न	चाहा	जो

لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ

यह	251	तमाम जहान	पर	फ़ज़्ल वाला	अल्लाह	और लेकिन	ज़मीन	ज़रूर ख़राब हो जाती

اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٥٢﴾

252	रसूल (जमा)	ज़रूर-से	और बेशक आप (स)	ठीक ठीक	आप पर	हम सुनाते हैं उन को	अल्लाह के अहकाम

और उन्हें उन के नबी ने कहा बेशक उस की हुकूमत की निशानी यह है कि तुम्हारे पास ताबूत आएगा, उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से सामाने तसकीन होगा और बची हुई चीज़ें जो आले मूसा और आले हारून ने छोड़ी थीं उसे फ़रिश्ते उठा लाएंगे, बेशक उस में तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान वाले हो। **(248)**

फिर जब तालूत लश्कर के साथ बाहर निकला, उस ने कहा बेशक अल्लाह एक नहर से तुम्हारी आज़माइश करने वाला है, पस जिस ने उस से (पानी) पी लिया वह मुझ से नहीं, और जिस ने उसे न चखा वह बेशक मुझ से है सिवाए उस के जो अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले, फिर चन्द एक के सिवा उन्हों ने उसे पी लिया, पस जब वह (तालूत) और जो उस के साथ ईमान लाए थे उस के पार हुए, उन्हों ने कहा आज हमें ताक़त नहीं जालूत और उस के लश्कर के साथ (मुक़ाबिले की), जो लोग यक़ीन रखते थे कि वह अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्हों ने कहा, बारहा छोटी जमाअ़तें ग़ालिब हुई हैं अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअ़तों पर, और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। **(249)**

और जब जालूत और उस के लश्कर आमने सामने हुए तो उन्हों ने कहा ऐ हमारे रब! हमारे (दिलों में) सब्र डाल दे, और हमारे क़दम जमादे, और हमारी मदद कर काफ़िर क़ौम पर। **(250)**

फिर उन्हों ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी और दाऊद (अ) ने जालूत को क़त्ल किया, और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत अ़ता की और उसे सिखाया जो चाहा, और अगर अल्लाह न हटाता बाज़ लोगों को बाज़ लोगों के ज़रीए तो ज़मीन ज़रूर ख़राब हो जाती और लेकिन अल्लाह तमाम जहानों पर फ़ज़्ल वाला है। **(251)**

यह अल्लाह के अहकाम हैं, हम वह आप को ठीक ठीक सुनाते हैं और बेशक आप (स) ज़रूर रसूलों में से हैं। **(252)**

الجزء ٣ وقف لازم

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ

उन में	बाज़	पर	उन के बाज़	हम ने फ़ज़ीलत दी	यह रसूल (जमा)

مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी	दरजे	उन के बाज़	और बुलन्द किए	जिस से अल्लाह ने कलाम किया

الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ

वह जो	बाहम लड़ते	न	चाहता अल्लाह	और अगर	रूहुल कुदुस (जिब्राईल अ) से	और उस की ताईद की हम ने	खुली निशानियां

مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا

उन्हों ने इख़तिलाफ़ किया	और लेकिन	खुली निशानियां	जो (जब) आ गई उन के पास	बाद से	उन के बाद

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۟ قف

वह बाहम न लड़ते	चाहता अल्लाह	और अगर	कुफ़्र किया	कोई-बाज़	और उन से	ईमान लाया	जो-कोई	फिर उन से

ع ٣٣ ٥ ١

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝٢٥٣ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا

तुम ख़र्च करो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	253	जो वह चाहता है	करता है	और लेकिन अल्लाह

مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ

और न दोस्ती	उस में	न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन	आजाए	कि	से पहले	हम ने दिया तुम्हें	से जो

وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٢٥٤ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

सिवाए उस के	नहीं माबूद	अल्लाह	254	ज़ालिम (जमा)	वही	और काफ़िर (जमा)	और न सिफ़ारिश

اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	जो	उसी का है	नीन्द	और न	ऊंघ	न उसे आती है	थामने वाला	ज़िन्दा

فِى الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا

जो	वह जानता है	उस की इजाज़त से	मगर (बग़ैर)	उस के पास	सिफ़ारिश करे	वह जो	कौन जो	ज़मीन में

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا

मगर	उस का इल्म	से	किसी चीज़ का	वह अहाता करते हैं	और नहीं	उन के पीछे	और जो	उन के सामने

بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

उन की हिफ़ाज़त	थकाती उस को	और नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस की कुर्सी	समा लिया	जितना वह चाहे

وَهُوَ الْعَلِىُّ الْعَظِيْمُ ۝٢٥٥ لَاۤ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ۚ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ

हिदायत	बेशक जुदा हो गई	दीन	में	नहीं ज़बरदस्ती	255	अज़मत वाला	बुलन्द मरतबा	और वह

مِنَ الْغَىِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

उस ने थाम लिया	पस तहक़ीक़	अल्लाह पर	और ईमान लाए	गुमराह करने वाले को	न माने	पस जो	गुमराही	से

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٢٥٦

256	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उस को	टूटना नहीं	मज़बूती	हलक़े को

यह रसूल हैं! हम ने उन में से बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी। उन में (बाज़) से अल्लाह ने कलाम किया और उन में से बाज़ के दरजे बुलन्द किए, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दीं और हम ने रूहुल कुदुस (अ) से उस की ताईद की, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते जो उन के बाद हुए, उस के बाद जबकि उन के पास खुली निशानियां आगईं, लेकिन उन्हों ने इख़तिलाफ़ किया, फिर उन में से कोई ईमान लाया और उन में से किसी ने कुफ़्र किया, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है। (253)

ऐ ईमान वालो! जो हम ने तुम्हें दिया उस में से ख़र्च करो इस से पहले कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी, न दोस्ती और न सिफ़ारिश, और काफ़िर वही ज़ालिम हैं। (254)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िन्दा, सब को थामने वाला, न उसे ऊन्घ आती है और न नीन्द, उसी का है जो आस्मानों और ज़मीन में है, कौन है जो सिफ़ारिश करे उस के पास उस की इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन के पीछे है, और वह नहीं अहाता कर सकते उस के इल्म में से किसी चीज़ का मगर जितना वह चाहे, उस की कुर्सी समाए हुए है आस्मानों और ज़मीन को, उस को उन की हिफ़ाज़त नहीं थकाती, और वह बुलन्द मरतबा, अज़मत वाला है। (255)

ज़बरदस्ती नहीं दीन में, बेशक हिदायत से गुमराही जुदा हो गई है, पस जो गुमराह करने वाले को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए, पस तहक़ीक़ उस ने हलक़े को मज़बूती से थाम लिया, टूटना नहीं उस को, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (256)

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ

रौशनी	तरफ़	अन्धेरों	से	वह उन्हें निकालता है	जो लोग ईमान लाए	मददगार	अल्लाह

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـئُهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ

रौशनी	से	और उन्हें निकालते हैं	शैतान	उन के साथी	और जो लोग काफ़िर हुए

اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ ع ٣٤ ٢

257	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ी	यही लोग	अन्धेरे (जमा)	तरफ़

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِىْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِىْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ

अल्लाह ने उसे दी	कि	उस का रब	बारे (में)	इब्राहीम (अ)	झगड़ा किया	वह शख़्स जो	तरफ़	क्या नहीं देखा आप (स) ने

الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّىَ الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا

मैं	उस ने कहा	और मारता है	ज़िन्दा करता है	जो कि	मेरा रब	इब्राहिम	कहा	जब	बादशाहत

وقف لازم

اُحْىٖ وَاُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِىْ بِالشَّمْسِ

सूरज को	लाता है	बेशक अल्लाह	इब्राहीम	कहा	और मैं मारता हूँ	ज़िन्दा करता हूँ

مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِىْ كَفَرَ ؕ

जिस ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तो वह हैरान रह गया	मग़्रिब	से	पस तू उसे ले आ	मश्रिक़	से

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥٨﴾ ۚ اَوْ كَالَّذِىْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ

एक बस्ती	पर (से)	गुज़रा	उस शख़्स के मानिंद जो	या	258	नाइन्साफ़ लोग	नहीं हिदायत देता	और अल्लाह

وَّهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْىٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ

बाद	अल्लाह	इस	ज़िन्दा करेगा	क्योंकर	उस ने कहा	अपनी छतों पर	गिर पड़ी थी	और वह

مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ

कितनी देर रहा	उस ने पूछा	उसे उठाया	फिर	साल	एक सौ	तो अल्लाह ने उस को मुर्दा रखा	इस का मरना

قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ

तू रहा	बल्कि	उस ने कहा	दिन से कुछ कम	या	एक दिन	मैं रहा	उस ने कहा

مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ

और देख	वह नहीं सड़ गया	और अपना पीना	अपना खाना	तरफ़	पस तू देख	एक सौ साल

اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ

हड्डियां	तरफ़	और देख	लोगों के लिए	एक निशानी	और हम तुझे बनाएंगे	अपना गधा	तरफ़

كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ

वाज़ेह हो गया	फिर जब	गोश्त	हम उसे पहनाते हैं	फिर	हम उन्हें जोड़ते हैं	किस तरह

لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٥٩﴾

259	क़ुदरत वाला	हर चीज़	पर	कि अल्लाह	मैं जान गया	उस ने कहा	उस पर

जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन का मददगार है, वह उन्हें निकालता है अन्धेरों से रौशनी की तरफ़, और जो लोग काफ़िर हुए उन के साथी गुमराह करने वाले हैं, वह उन्हें निकालते हैं रौशनी से अन्धेरों की तरफ़, यही लोग दोज़ख़ी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (257)

क्या आप ने उस शख़्स की तरफ़ नहीं देखा जिस ने इब्राहीम (अ) से उन के रब के बारे में झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे बादशाहत दी थी, जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। उस ने कहा मैं ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ, इब्राहीम (अ) ने कहा बेशक अल्लाह सूरज को मश्रिक़ से निकालता है, पस तू उसे ले आ मग़्रिब से, तो वह काफ़िर हैरान रह गया, और अल्लाह नाइन्साफ़ लोगों को हिदायत नही देता। (258)

या उस शख़्स के मानिंद जो एक बस्ती से गुज़रा, और वह अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी, उस ने कहा अल्लाह उस के मरने के बाद उसे क्योंकर ज़िन्दा करेगा? तो अल्लाह ने उसे एक सौ साल मुर्दा रखा, फिर उसे उठाया (ज़िन्दा किया), अल्लाह ने पूछा तू कितनी देर रहा? उस ने कहा मैं एक दिन या दिन से कुछ कम रहा, उस ने फ़रमाया बल्कि तू एक सौ साल रहा है, पस तू अपने खाने पीने की तरफ़ देख, वह सड़ नहीं गया, और अपने गधे की तरफ़ देख, और हम तुझे लोगों के लिए एक निशानी बनाएंगे, और हड्डियों की तरफ़ देख हम उन्हें किस तरह जोड़ते हैं, फिर उन्हें गोश्त चढ़ाते हैं, फिर जब उस पर वाज़ेह हो गया तो उस ने कहा मैं जान गया कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। (259)

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰی ؕ قَالَ اَوَلَمْ

क्या नहीं	उस ने कहा	मुर्दा	तू ज़िन्दा करता है	क्योंकर	मुझे दिखा	मेरे रब	इब्राहीम	कहा	और जब

تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰی وَلٰكِنْ لِّیَطْمَىِٕنَّ قَلْبِیْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً

चार (4)	पस पकड़ ले	उस ने कहा	मेरा दिल	ताकि इत्मिनान हो जाए	और लेकिन	क्यों नहीं	उस ने कहा	यक़ीन किया

مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰی كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ

उन से (उन के)	पहाड़	हर	पर	रख दे	फिर	अपने साथ	फिर उन को हिला	परिन्दे	से

جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ یَاْتِیْنَكَ سَعْیًا ؕ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ

ग़ालिब	कि अल्लाह	और जान ले	दौड़ते हुए	वह तेरे पास आएंगे	उन्हें बुला	फिर	टुकड़े

٣٥ ع ٣ حَكِیْمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	ख़र्च करते हैं	जो लोग	मिसाल	260	हिक्मत वाला

كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ

दाने	सौ (100)	हर बाल	में	बालें	सात	उगें	एक दाना	मानिंद

وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِیْنَ

जो लोग	261	जानने वाला	वुस्अत वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिस के लिए	बढ़ाता है	और अल्लाह

یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا

जो उन्हों ने ख़र्च किया	बाद में नहीं रखते	फिर	अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	ख़र्च करते हैं

مَنًّا وَّلَاۤ اَذًی ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ

उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	कोई तक्लीफ़	और न	कोई एहसान

وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَیْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ

ख़ैरात	से	बेहतर	और दरगुज़र	अच्छी	बात	262	ग़मगीन होंगे	वह	और न

یَّتْبَعُهَاۤ اَذًی ؕ وَاللّٰهُ غَنِیٌّ حَلِیْمٌ ﴿٢٦٣﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

ईमान वालो	ऐ	263	बुर्दबार	बेनियाज़	और अल्लाह	ईज़ा देना (सताना)	उस के बाद हो

لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰی ۙ كَالَّذِیْ یُنْفِقُ مَالَهٗ

अपना माल	ख़र्च करता	उस शख़्स की तरह जो	और सताना	एहसान जतला कर	अपने ख़ैरात	न ज़ाया करो

رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ

जैसी मिसाल	पस उस की मिसाल	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	और ईमान नहीं रखता	लोग	दिखलावा

صَفْوَانٍ عَلَیْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا یَقْدِرُوْنَ

वह क़ुदरत नहीं रखते	साफ़	तो उसे छोड़ दे	तेज़ बारिश	फिर उस पर बरसे	मिट्टी	उस पर	चिकना पत्थर

عَلٰی شَیْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٢٦٤﴾

264	काफ़िरों की क़ौम	राह नही दिखाता	और अल्लाह	उन्हों ने कमाया	उस से जो	कोई चीज़	पर

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरे रब! मुझे दिखा दे तू क्योंकर मुर्दा को ज़िन्दा करता है, अल्लाह ने कहा क्या तू ईमान नहीं रखता? उस ने कहा क्यों नहीं? बल्कि (चाहता हूँ) ताकि मेरे दिल को इत्मिनान हो जाए, उस ने कहा पस तू चार परिन्दे पकड़ ले, फिर उन को अपने साथ हिला ले, फिर रख दे हर पहाड़ पर उन के टुकड़े, फिर उन्हें बुला वह तेरे पास दौड़ते हुए आएंगे, और जान ले कि अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (260)

उन लोगों की मिसाल जो ख़र्च करते हैं अपने माल अल्लाह के रास्ते में, एक दाने के मानिंद है जिस से सात बालें उगें, हर बाल में सौ दाने हों, और अल्लाह जिस के लिए चाहता है बढ़ाता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। (261)

जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं, फिर नहीं रखते ख़र्च करने के बाद कोई एहसान, न कोई तक्लीफ़ (पहुँचाते हैं) उन के लिए उन के रब के पास अजर है, न कोई ख़ौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (262)

अच्छी बात करना और दरगुज़र करना बेहतर है उस ख़ैरात से जिस के बाद ईज़ा देना हो, और अल्लाह बेनियाज़ बुर्दबार है। (263)

ऐ ईमान वालो! अपने ख़ैरात एहसान जतला कर और सता कर ज़ाया न करो उस शख़्स की तरह जो अपना माल लोगों के दिखलावे को ख़र्च करता है और अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, पस उस की मिसाल उस साफ़ पत्थर जैसी है जिस पर मिट्टी हो, फिर उस पर तेज़ बारिश बरसे तो उसे छोड़ दे बिलकुल साफ़, वह उस पर कुछ क़ुदरत नहीं रखते जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह राह नहीं दिखाता काफ़िरों को। (264)

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ

और मिसाल	जो लोग	ख़र्च करते हैं	अपने माल	हासिल करना	अल्लाह की ख़ुशनूदी

وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ

और सबात ओ यक़ीन	से	अपने दिल (जमा)	जैसे	एक बाग़	बुलन्दी पर	उस पर पड़ी	तेज़ बारिश

فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ

तो उस ने दिया	फल	दुगना	फिर अगर	न पड़ी	तेज़ बारिश	तो फ़ुवार	और अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾ اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ

जो	तुम करते हो	देखने वाला	265	क्या पसन्द करता है	तुम में से कोई	कि	हो	उस का	एक बाग़	से (का)

نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ

खजूर	और अंगूर	बहती हों	से	उस के नीचे	नहरें	उस के लिए	उस में	से

كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ

हर क़िस्म के फल	और उस पर आ गया	बुढ़ापा	और उस के	बच्चे	बहुत कमज़ोर	तब उस पर पड़ा

اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ

एक बगोला	उस में	आग	तो वह जल गया	इसी तरह	अल्लाह वाज़ेह करता है	तुम्हारे लिए	निशानियां

لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ ع ٣٦ ٤

ताकि तुम	ग़ौर ओ फ़िक्र करो	266	ऐ	जो ईमान लाए (ईमान वालो)	तुम ख़र्च करो	से

طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ

पाकीज़ा	जो	तुम कमाओ	और से-जो	हम ने निकाला	तुम्हारे लिए	से	ज़मीन

وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ

और न	इरादा करो	गन्दी चीज़	से-जो	तुम ख़र्च करते हो	जब कि तुम नहीं हो	उस को लेने वाले

اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾

मगर	यह कि	चश्म पोशी करो	उस में	और तुम जान लो	कि अल्लाह	बेनियाज़	ख़ूबियों वाला	267

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ

शैतान	तुम को डराता है	तंगदस्ती	और तुम्हें हुक्म देता है	बेहयाई का	और अल्लाह

يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾

तुम से वादा करता है	बख़्शिश	उस से (अपनी)	और फ़ज़्ल	और अल्लाह	वुस्अत वाला	जानने वाला	268

يُؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ

वह अता करता है	हिक्मत, दानाई	जिसे	वह चाहता है	और जिसे	दी गई	हिक्मत

فَقَدْ اُوْتِىَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

तहक़ीक़ दी गई	भलाई	बहुत	और नहीं	नसीहत क़ुबूल करता	सिवाए	अक़्ल वाले	269

और (उन की) मिसाल जो अपने माल ख़र्च करते हैं ख़ुशनूदी हासिल करने अल्लाह की, और अपने दिलों के पूरे सबात ओ क़रार के साथ, (ऐसी है) जैसे बुलन्दी पर एक बाग़ है, उस पर तेज़ बारिश पड़ी तो उस ने दुगना फल दिया, फिर अगर तेज़ बारिश न पड़ी तो फ़ुवार (ही काफ़ी है), और अल्लाह जो तुम करते हो देखने वाला है। (265)

क्या तुम में से कोई पसन्द करता है कि उस का एक बाग़ हो खजूर और अंगूरों का, उस के नीचे नहरें बहती हों, उस के लिए उस में हर क़िस्म के फल हों, और उस पर बुढ़ापा आ गया हो और उस के बच्चे बहुत कमज़ोर हों, तब उस पर एक बगोला आ पड़ा, उस में आग थी तो वह (बाग़) जल गया, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए निशानियां वाज़ेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो। (266)

ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो उस में से पाकीज़ा चीज़ें जो तुम कमाओ और उस में से जो हम ने निकाला तुम्हारे लिए ज़मीन से, और उस में से गन्दी चीज़ ख़र्च करने का इरादा न करो, जबकि तुम ख़ुद उस को लेने वाले नहीं मगर यह कि तुम चश्म पोशी कर जाओ, और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़, ख़ूबियों वाला है। (267)

शैतान तुम को तंगदस्ती से डराता है और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है, और अल्लाह तुम से अपनी बख़्शिश और फ़ज़्ल का वादा करता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। (268)

वह जिसे चाहता है हिक्मत (दानाई) अता करता है, और जिसे हिक्मत दी गई तहक़ीक़ उसे दी गई बहुत भलाई, और अक़्ल वालों के सिवा कोई नसीहत क़ुबूल नहीं करता। (269)

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ

कोई नज़र	तुम नज़र मानो	या	कोई ख़ैरात	से	तुम ख़र्च करोगे	और जो

فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾

270	कोई मददगार	ज़ालिमों के लिए	और नहीं	उसे जानता है	तो बेशक अल्लाह

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا

उस को छुपाओ	और अगर	यह	तो अच्छी बात	ख़ैरात	ज़ाहिर (अ़लानिया) दो	अगर

وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ

तुम से	और दूर कर देगा	तुम्हारे लिए	बेहतर	तो वह	तंगदस्त (जमा)	और वह पहुँचाओ

مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۷۱﴾ لَيْسَ

नहीं	271	बाख़बर	जो कुछ तुम करते हो	और अल्लाह	तुम्हारी बुराइयाँ	से, कुछ

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا

और जो	वह चाहता है	जिसे	हिदायत देता है	और लेकिन अल्लाह	उन की हिदायत	आप पर (आप का ज़िम्मा)

تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ

हासिल करना	मगर	ख़र्च करो	और न	तो अपने वासते	माल से	तुम ख़र्च करोगे

وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ

तुम्हें	पूरा मिलेगा	माल से	तुम ख़र्च करोगे	और जो	अल्लाह की रज़ा

وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۲﴾ لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا

रुके हुए	जो	तंगदस्तों के लिए	272	न ज़ियादती की जाएगी तुम पर	और तुम

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ز

ज़मीन (मुल्क) में	चलना फिरना	नहीं कर सकते	अल्लाह का रास्ता	में

يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ

उन के चहरे से	तू पहचानता है उन्हें	सवाल न करने से	मालदार	नावाक़िफ़	उन्हें समझे

لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ

माल से	तुम ख़र्च करोगे	और जो	लिपट कर	लोग	वह सवाल नहीं करते

ع ٣٧ ٥ الربع فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۷۳﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ

अपने माल	ख़र्च करते हैं	जो लोग	273	जानने वाला	उस को	तो बेशक अल्लाह

بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

उन का अजर	पस उन के लिए है	और ज़ाहिर	पोशीदा	और दिन	रात में

وقف منزل عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۴﴾

274	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उन का रब	पास

और जो तुम ख़र्च करोगे कोई ख़ैरात या तुम कोई नज़र मानोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानता है, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (270)

अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर (अ़लानिया) दो तो यह अच्छी बात है, और अगर तुम उस को छुपाओ और तंगदस्तों को पहुँचाओ तो वह तुम्हारे लिए (ज़ियादा) बेहतर है, और वह दूर करेगा तुम्हारी कुछ बुराइयाँ, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (271)

उन की हिदायत आप का ज़िम्मा नहीं, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तो अपने (ही) वासते, और ख़र्च न करो मगर अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा मिलेगा, और तुम पर ज़ियादती न की जाएगी। (272)

तंगदस्तों के लिए जो रुके हुए हैं अल्लाह की राह में, वह मुल्क में चलने फिरने की ताक़त नहीं रखते, उन्हें समझे नावाक़िफ़ उन के सवाल न करने की वजह से मालदार, तुम उन्हें उन के चहरे से पहचान सकते हो, वह सवाल नहीं करते लोगों से लिपट लिपट कर, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (273)

जो लोग अपने माल ख़र्च करते हैं रात में और दिन को, पोशीदा और ज़ाहिर, पस उन के लिए है उन का अजर उन के रब के पास, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (274)

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِیْ

वह शख़्स जो	खड़ा होता है	जैसे	मगर	न खड़े होंगे	सूद	खाते हैं	जो लोग

يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ

तिजारत	दर हक़ीक़त	उन्हों ने कहा	इस लिए कि वह	यह	छूने से	शैतान	उस को पागल बना दिया

مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ

पहुँचे उस को	पस जिस	सूद	और हराम किया	तिजारत	हालांकि अल्लाह ने हलाल किया	सूद	मानिंद

مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की तरफ़	और उस का मामला	जो हो चुका	तो उस के लिए	फिर वह बाज़ आ गया	उस का रब	से	नसीहत

وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾

275	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	तो वही	फिर करे	और जो

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ

पसन्द नहीं करता	और अल्लाह	ख़ैरात	और बढ़ाता है	सूद	मिटाता है अल्लाह

كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	276	गुनाहगार	हर एक नाशुक्रा

وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ

उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	ज़कात	और अदा की	नमाज़	और उन्हों ने क़ाइम की

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا

तुम डरो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	277	ग़मगीन होंगे	और न वह	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न

اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِىَ مِنَ الرِّبٰٓوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾

278	ईमान वाले	तुम हो	अगर	सूद	से	जो बाक़ी रह गया	और छोड़ दो	अल्लाह

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ

तुम ने तौबा कर ली	और अगर	और उस का रसूल	अल्लाह	से	जंग के लिए	तो ख़बरदार हो जाओ	तुम न छोड़ोगे	फिर अगर

فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾

279	और न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा	न तुम ज़ुल्म करो	तुम्हारी अस्ल पूंजी	तो तुम्हारे लिए

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا

तुम बख़्शदो	और अगर	कुशादगी	तक	मुहलत	तंगदस्त	हो	और अगर

خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ

उस में	तुम लौटाए जाओगे	वह दिन	और तुम डरो	280	जानते	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर

اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾ ع ٣٨ ٨ ٦

281	ज़ुल्म न किये जाएंगे	और वह	उस ने कमाया	जो	हर शख़्स	पूरा दिया जाएगा	फिर	अल्लाह की तरफ़

وقف لازم

जो लोग सूद खाते हैं वह न खड़े होंगे मगर जैसे वह शख़्स खड़ा होता है जिस को पागल बना दिया हो शैतान ने छू कर, यह इस लिए कि उन्हों ने कहा तिजारत दर हक़ीक़त सूद के मानिंद है। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया और सूद को हराम किया, पस जिस को नसीहत पहुँची उस के रब की तरफ़ से फिर वह बाज़ आ गया तो उस के लिए है जो हो चुका, और उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द है और जो फिर (सूद की तरफ़) लौटे तो वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (275)

अल्लाह सूद को मिटाता है और ख़ैरात को बढ़ाता है, और अल्लाह हर एक (किसी) नाशुक्रे गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। (276)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की, उन के लिए उन का अजर है उन के रब के पास, और न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (277)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो, और जो सूद बाक़ी रह गया वह छोड़ दो अगर तुम ईमान वाले हो। (278)

फिर अगर तुम न छोड़ोगे तो अल्लाह और उस के रसूल से जंग के लिए ख़बरदार हो जाओ, और अगर तुम ने तौबा कर ली तो तुम्हारा अस्ल ज़र तुम्हारे लिए है, न तुम ज़ुल्म करो न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा। (279)

और अगर वह तंगदस्त हो तो कुशादगी होने तक मोहलत दे दो, और अगर (क़र्ज़) बख़्श दो तो तुम्हारे लिए ज़ियादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। (280)

और उस दिन से डरो (जस दिन) तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर हर शख़्स को पूरा पूरा दिया जाएगा जो उस ने कमाया और उन पर ज़ुल्म न होगा। (281)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

मुक़र्ररा	एक मुद्दत	तक	उधार का	तुम मामला करो	जब	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ

فَاكْتُبُوْهُ ۭ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۠ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ

कातिब	और न इन्कार करे	इन्साफ़ से	कातिब	तुम्हारे दरमियान	और चाहिए कि लिख दे	तो उसे लिख लिया करो

اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ

उस पर हक़	वह जो	और लिखाता जाए	चाहिए कि लिख दे	अल्लाह ने उस को सिखाया	जैसे	कि वह लिखे

وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـــًٔا ۭ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ

वह जो	है	फिर अगर	कुछ	उस से	कम करे	और न	अपना रब	और अल्लाह से डरे

عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ

तो चाहिए कि लिखाए	लिखाए वह	कि	न कर सकता हो	या	कमज़ोर	या	बेअ़क़्ल	उस पर हक़

وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ۭ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ

अपने मर्द	से	दो गवाह	और गवाह कर लो	इन्साफ़ से	उस का सरपरस्त

فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ

तुम पसन्द करो	से-जो	और दो औ़रतें	तो एक मर्द	दो मर्द	न हों	फिर अगर

مِنَ الشُّهَدَاۗءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ۭ

दूसरी	उन में से एक	तो याद दिला दे	उन में से एक	भूल जाए	अगर	गवाह (जमा)	से

وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَاۗءُ اِذَا مَا دُعُوْا ۭ وَلَا تَسْـَٔـمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ

तुम लिखो	की	सुस्ती करो	और न	वह बुलाए जाएं	जब	गवाह	और न इन्कार करें

صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ

और ज़ियादा मज़बूत	अल्लाह के नज़दीक	ज़ियादा इन्साफ़	यह	एक मीआ़द	तक	बड़ा	या	छोटा

لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً

हाज़िर (हाथों हाथ)	सौदा	हो	सिवाए कि	शुबा में पड़ो	कि न	और ज़ियादा क़रीब	गवाही के लिए

تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ۭ

कि तुम वह न लिखो	तुम पर कोई गुनाह	तो नहीं	आपस में	जिसे तुम लेते रहते हो

وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۠ وَلَا يُضَاۗرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ۭ

गवाह	और न	लिखने वाला	और न नुक़्सान पहुँचाया जाये	जब तुम सौदा करो	और तुम गवाह कर लो

وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ

और अल्लाह से तुम डरो	तुम पर	गुनाह	तो बेशक यह	तुम करोगे	और अगर

وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ٢٨٢

282	जानने वाला	हर चीज़	और अल्लाह	और अल्लाह सिखाता है तुम्हें

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो!) जब तुम एक मुक़र्ररा मुद्दत तक (के लिए) उधार का मामला करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि लिख दे लिखने वाला तुम्हारे दरमियान इन्साफ़ से, और कातिब लिखने से इन्कार न करे, जैसे उस को सिखाया है अल्लाह ने, उसे चाहिए कि लिख दे, और जिस पर हक़ (क़र्ज़) है वह लिखाता जाए, और अपने रब अल्लाह से डरे, और न उस से कुछ कम करे, फिर अगर वह जिस पर हक़ (क़र्ज़) है वह बेअ़क़्ल या कमज़ोर है या न लिखा सकता हो बोल कर तो चाहिए कि उस का सरपरस्त इन्साफ़ से लिखा दे और अपने मर्दों में से दो गवाह कर लो, फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औ़रतें जिन को तुम गवाह पसन्द करो (ताकि) अगर उन में से एक भूल जाए तो उन में से एक (दूसरी) याद दिला दे, और गवाह इन्कार न करें जब बुलाए जाएं, और तुम लिखने में सुस्ती न करो (ख़ाह मामला) छोटा हो या बड़ा, वापस लौटाने का वक़्त, यह ज़ियादा इन्साफ़ है और गवाही के लिए ज़ियादा मज़बूत है अल्लाह के नज़दीक, और ज़ियादा क़रीब है कि तुम शुबा में न पड़ो, उस के सिवाए कि सौदा हाथों हाथ का हो जिसे तुम आपस में लेते रहते हो, तो कोई गुनाह नहीं कि तुम वह न लिखो और जब तुम सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, और न नुक़्सान पहुँचाया जाये कातिब को और न गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो यह बेशक तुम पर गुनाह है, और तुम अल्लाह से डरो, और अल्लाह तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। **(282)**

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ

क़ब्ज़े में	तो गिरवी रखना	कोई लिखने वाला	तुम पाओ	और न	सफ़र	पर	तुम हो	और अगर

فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ

और अल्लाह से डरे	उस की अमानत	अमीन बनाया गया	जो शख़्स	तो चाहिए कि लौटा दे	किसी का	तुम्हारा कोई	एतिबार करे	फिर अगर

رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ

उस का दिल	गुनाहगार	तो बेशक	उसे छुपाएगा	और जो	गवाही	और तुम न छुपाओ	अपना रब

ع ٣٩ ٢ ٧

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	जो	अल्लाह के लिए	283	जानने वाला	तुम करते हो	उसे जो	और अल्लाह

وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ

अल्लाह	उस का	तुम्हारा हिसाब लेगा	तुम उसे छुपाओ	या	तुम्हारे दिल	में	जो	तुम ज़ाहिर करो	और अगर

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى

पर	और अल्लाह	वह चाहे	जिस को	वह अज़ाब देगा	वह चाहे	जिस को	फिर बख़्श देगा

كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ

उस का रब	से	उस की तरफ़	उतरा	जो कुछ	रसूल	मान लिया	284	क़ुदरत रखने वाला	हर चीज़

وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۫

और उस के रसूल	और उस की किताबें	और उस के फ़रिश्ते	अल्लाह पर	ईमान लाए	सब	और मोमिन (जमा)

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا

और हम ने इताअ़त की	हम ने सुना	और उन्हों ने कहा	उस के रसूल के	किसी एक	दरमियान	नहीं हम फ़र्क़ करते

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا

मगर	किसी पर	नहीं जिम्मदारी का बोझ डालता अल्लाह	285	लौट कर जाना	और तेरी तरफ़	हमारे रब	तेरी बख़्शिश

وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا

ऐ हमारे रब	जो उस ने कमाया	और उस पर	उस ने कमाया	जो	उस के लिए	उस की गुनजाइश

لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِيْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَاۤ

हम पर	डाल	और न	ऐ हमारे रब	हम चूकें	या	हम भूल जाएं	अगर	तो न पकड़ हमें

اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا

हम से उठवा	और न	ऐ हमारे रब	हम से पहले	जो लोग	पर	तू ने डाला	जैसे	बोझ

مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟

और बख़्श दे हमें	और दरगुज़र कर तू हम से	उस की	हम को	न ताक़त	जो

ع ٤٠ ٣ ٨

وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾

286	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	पस मदद कर हमारी	हमारा आक़ा	तू	और हम पर रहम कर

और अगर तुम सफ़र पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो गिरवी रखना चाहिए क़ब्ज़े में, फिर अगर तुम में कोई किसी का एतिबार करे तो जिस शख़्स को अमीन बनाया गया है उसे चाहिए कि लौटा दे उस की अमानत और अपने रब अल्लाह से डरे, और तुम गवाही न छुपाओ, और जो शख़्स उसे छुपाएगा तो बेशक उस का दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे जानने वाला है। (283)

अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और अगर तुम ज़ाहिर करो जो तुम्हारे दिलों में है या तुम उसे छुपाओ, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर जिस को वह चाहे बख़्श दे और जिसको वह चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (284)

रसूल ने मान लिया जो कुछ उस की तरफ़ उतरा उस के रब की तरफ़ से और मोमिनो ने (भी), सब ईमान लाए अल्लाह पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर, हम उस के रसूलों में से किसी एक के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और उन्हों ने कहा हम ने सुना और हम ने इताअ़त की, तेरी बख़्शिश चाहिए ऐ हमारे रब! और तेरी तरफ़ लौट कर जाना है। (285)

अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता मगर उस की गुनजाइश (के मुताबिक़), उस के लिए (अजर) है जो उस ने कमाया और उस पर (अ़ज़ाब) है जो उस ने कमाया, ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूल जाएं या हम चूकें, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डाल जैसे तू ने डाला हम से पहले लोगों पर, ऐ हमारे रब! हम से न उठवा जिस की हम को ताक़त नहीं, और दरगुज़र फ़रमा हम से, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम कर, तू हमारा आक़ा है, पस हमारी मदद कर काफ़िरो की क़ौम पर। (286)

رُكُوْعَاتُهَا ٢٠ ❀ سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرَانَ (٣) ❀ آيَاتُهَا ٢٠٠

रुकूआ़त 20	(3) सूरह आले इमरान (इमरान का घराना)	आयात 200

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ

किताब	आप (स) पर	उस ने उतारी	2	संभालने वाला	हमेशा ज़िन्दा	उस के सिवा	नहीं माबूद	अल्लाह	1	अलिफ़-लाम-मीम

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٣﴾

3	और इन्जील	तौरेत	और उस ने उतारी	उस से पहली	उस के लिए जो	तस्दीक़ करती	हक़ के साथ

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

इन्कार किया	जिन्हों ने	बेशक	फुरक़ान	और उतारा	लोगों के लिए	हिदायत	उस से पहले

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤﴾

4	बदला लेने वाला	ज़बरदस्त	और अल्लाह	सख़्त	अ़ज़ाब	उन के लिए	अल्लाह की आयतों से

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٥﴾

5	आस्मान में	और न	ज़मीन में	कोई चीज़	उस पर	नहीं छुपी हुई	बेशक अल्लाह

هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ۗ لَآ اِلٰهَ

नहीं माबूद	वह चाहे	जैसे	रहम (जमा)	में	सूरत बनाता है तुम्हारी	जो कि	वही है

اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ

उस से (में)	किताब	आप पर	नाज़िल की	जिस	वही	6	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	उस के सिवा

اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ۗ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

जो लोग	पस जो	मुताशाबेह	और दूसरी	किताब की अस्ल	वह	मुहक्कम (पुख़्ता)	आयतें

فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ

चाहना (ग़र्ज़)	उस से	मुताशाबिहात	सो वह पैरवी करते हैं	कजी	उन के दिल	में

الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ ۘ

وقف النبي ﷺ
وقف لازم
وقف منزل

सिवाए अल्लाह	उस का मतलब	जानता है	और नहीं	उस का मतलब	ढूंडना	फ़साद-गुमराही

وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ

हमारा रब	से-पास (तरफ़)	सब	उस पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	इल्म में	और मज़बूत

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ

बाद	हमारे दिल	फेर	न	ऐ हमारे रब	7	अ़क़्ल वाले	मगर	समझते	और नहीं

اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾

8	सब से बड़ा देने वाला	तू	बेशक तू	रहमत	अपने पास	से	हमें	और इनायत फ़रमा	तू ने हमें हिदायत दी	जब

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम (1)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िन्दा, (सब का) संभालने वाला। (2)

उस ने आप (स) पर किताब उतारी हक़ के साथ जो उस से पहली (किताबों) की तस्दीक़ करती है, और उस ने तौरेत और इन्जील उतारी (3)

उस से पहले लोगों की हिदायत के लिए, और उस ने फ़ुरक़ान (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) उतारा, बेशक जिन्हों ने अल्लाह की आयतों से इन्कार किया उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला। (4)

बेशक अल्लाह पर छुपी हुई नहीं कोई चीज़ ज़मीन में और न आस्मान में, (5)

वही तो है जो तुम्हारी सूरत बनाता है (माँ के) रहम में जैसे वह चाहे, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। (6)

वही तो है जिस ने आप (स) पर किताब नाज़िल की, उस में मुहक्कम (पुख़्ता) आयतें हैं वह किताब की अस्ल हैं, और दूसरी मुताशाबेह (कई मअ़ने देने वाली), पस जिन लोगों के दिलों में कजी है सो वह उस से मुताशाबिहात की पैरवी करते हैं, फ़साद (गुमराही) की ग़र्ज़ से और उस का (ग़लत) मतलब ढून्डने की ग़र्ज़ से, और उस का मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और मज़बूत (पुख़्ता) इल्म वाले कहते हैं हम उस पर ईमान लाए सब हमारे रब की तरफ़ से है। और नहीं समझते मगर अ़क़्ल वाले (सिर्फ़ अ़क़्ल वाले समझते हैं) (7)

ऐ हमारे रब! हमारे दिल न फेर इस के बाद जब कि तू ने हमें हिदायत दी और हमें इनायत फ़रमा अपने पास से रहमत, बेशक तू सब से बड़ा देने वाला है। (8)

ऐ हमारे रब! बेशक तू लोगों को उस दिन जमा करने वाला है कोई शक नहीं जिस में, बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (9)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हरगिज़ न उन के माल उन के काम आएंगे और न उन की औलाद अल्लाह के सामने कुछ भी, और वही वह दोज़ख़ का इंधन हैं। (10)

जैसे फ़िरऔन वालों का मामला हुआ और वह जो उन से पहले थे, उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, और अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (11)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें कह दें तुम अ़नक़रीब मग़लूब होगे और जहन्नम की तरफ़ हांके जाओगे, और वह बुरा ठिकाना है। (12)

अलबत्ता तुम्हारे लिए उन दो गिरोहों में निशानी है जो बाहम मुक़ाबिल हुए, एक गिरोह लड़ता था अल्लाह की राह में और दूसरा काफ़िर था, वह उन्हें खुली आँखों से अपने से दो चन्द दिखाई देते थे, और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है ताईद करता है, बेशक उस में देखने वालों (अ़क़्लमन्दों) के लिए एक इब्रत है। (13)

लोगों के लिए मरग़ूब चीज़ों की मुहब्बत ख़ुशनुमा कर दी गई, मसलन औरतें और बेटे, और ढेर जमा किए हुए सोने और चाँदी के, और निशान ज़दा घोड़े, और मवेशी, और खेती, यह दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ ओ सामान है, और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। (14)

कह दें, क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर बताऊँ? उन लोगों के लिए जो परहेज़गार हैं, उन के रब के पास बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें जारी (रवां) हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और पाक बीवियां और अल्लाह की ख़ुशनूदी, और अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (15)

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ

ऐ हमारे रब	बेशक तू	जमा करने वाला	लोगों	उस दिन	नहीं शक	उस में	बेशक अल्लाह	नहीं ख़िलाफ़ करता

الْمِيْعَادَ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ ع ١ ٩

वादा	9	बेशक	वह लोग जो	उन्हों ने कुफ़्र किया	हरगिज़ न	काम आएंगे	उन के	उन के माल

وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ﴿١٠﴾

और न	उन की औलाद	अल्लाह से	कुछ	और वही	वह	ईंधन	आग (दोज़ख़)	10

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ

जैसे-मामला	फ़िरऔन वाले	और वह जो कि	उन से पहले	उन्हों ने झुटलाया	हमारी आयतें	सो उन्हें पकड़ा

اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

अल्लाह	उन के गुनाहों पर	और अल्लाह	सख़्त	अ़ज़ाब	11	कह दें	वह जो कि	उन्हों ने कुफ़्र किया

سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ كَانَ

अ़नक़रीब तुम मग़लूब होगे	और तुम हांके जाओगे	तरफ़	जहन्नम	और बुरा	ठिकाना	12	अलबत्ता	है

لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى

तुम्हारे लिए	एक निशानी	में	दो गिरोह	वह बाहम मुक़ाबिल हुए	एक गिरोह	लड़ता था	में	अल्लाह की राह	और दूसरा

كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ

काफ़िर	वह उन्हें दिखाई देते	उन के दो चन्द	खुली आँखें	और अल्लाह	ताईद करता है	अपनी मदद

مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿١٣﴾

जिसे	वह चाहता है	बेशक	में	उस	एक इब्रत	देखने वालों के लिए	13

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ

ख़ुशनुमा कर दी गई	लोगों के लिए	मुहब्बत	मरग़ूब चीज़ें	से (मसलन)	औ़रतें	और बेटे	और ढेर

الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ

जमा किए हुए	से	सोना	और चाँदी	और घोड़े	निशान ज़दा	और मवेशी

وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ

और खेती	यह	साज़ ओ सामान	ज़िन्दगी	दुनिया	और अल्लाह	उस के पास

حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا

अच्छा	ठिकाना	14	कह दें	क्या मैं तुम्हें बताऊँ	बेहतर	से	उस	उन लोगों के लिए जो	परहेज़गार हैं

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ

पास	उन का रब	बाग़ात	जारी हैं	से	उन के नीचे	नहरें	हमेशा रहेंगे	उस में	और बीवियां

مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۚ ﴿١٥﴾

पाक	और ख़ुशनूदी	से	अल्लाह	और अल्लाह	देखने वाला	बन्दों को	15

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا

और हमें बचा	हमारे गुनाह	सो बख़्शदे हमें	ईमान लाए	बेशक हम	ऐ हमारे रब	कहते हैं	जो लोग

عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ

और ख़र्च करने वाले	और हुक्म बजा लाने वाले	और सच्चे	सब्र करने वाले	16	दोज़ख़	अ़ज़ाब

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ

नहीं माबूद	कि वह	अल्लाह ने गवाही दी	17	रात के आख़िर हिस्से में	और बख़्शिश मांगने वाले

اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًاۢ بِالْقِسْطِ ؕ

इन्साफ़ के साथ	क़ाईम (हाकिम)	और इल्म वाले	और फ़रिश्ते	सिवाए-उस

النصف

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ

दीन	बेशक	18	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	सिवाए उस	नहीं माबूद

عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۣ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا

मगर	किताब दी गई	वह जिन्हें	इख़्तिलाफ़ किया	और नहीं	इस्लाम	अल्लाह के नज़दीक

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ

इन्कार करे	और जो	आपस में	ज़िद	इल्म	जब आ गया उन के पास	बाद से

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ

तो कह दें	वह आप (स) से झगड़ें	फिर अगर	19	हिसाब	तेज़	तो बेशक अल्लाह	अल्लाह की आयात का

اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ

वह जो कि	और कह दें	मेरी पैरवी की	और जो-जिस	अल्लाह के लिए	अपना मुँह	मैं ने झुका दिया

اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ

तो उन्हों ने राह पा ली	वह इस्लाम लाए	पस अगर	क्या तुम इस्लाम लाए	और अनपढ़	किताब दिए गए (अहले किताब)

ع ۲ ۱۱ ۱۰

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾ ع

20	बन्दों को	देखने वाला	और अल्लाह	पहुँचा देना	आप पर	तो सिर्फ़	वह मुँह फेरें	अगर और

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

नबियों को	और क़त्ल करते हैं	अल्लाह की आयात का	इन्कार करते हैं	वह जो	बेशक

بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ

लोगों से	इन्साफ़ का	हुक्म करते हैं	जो लोग	और क़त्ल करते हैं	नाहक़

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ

ज़ाया हो गए	वह जो कि	यही	21	दर्दनाक	अ़ज़ाब	सो उन्हें ख़ुशख़बरी दें

اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾

22	मददगार	कोई	उन का	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	उन के अ़मल

जो लोग कहते हैं ऐ हमारे रब! बेशक हम ईमान लाए, सो हमें हमारे गुनाह बख़्शदे और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा। **(16)**

सब्र करने वाले और सच्चे, हुक्म बजा लाने वाले, ख़र्च करने वाले और बख़्शिश मांगने वाले रात के आख़िर हिस्से में। **(17)**

अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने (भी), (वही) हाकिम है इन्साफ़ के साथ, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। **(18)**

बेशक दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम है, और जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास आ गया इल्म, आपस की ज़िद से, और जो अल्लाह की आयात (हुक्मों) का इन्कार करे तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। **(19)**

फिर अगर वह आप (स) से झगड़ें तो कह दें मैं ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और जिस ने मेरी पैरवी की, और आप (स) अहले किताब और अनपढ़ों से कह दें क्या तुम इस्लाम लाए? पस अगर वह इस्लाम ले आए तो उन्हों ने राह पा ली, और अगर वह मुँह फेर लें तो आप पर सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह देखने वाला है (अपने) बन्दों को। **(20)**

बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और नबियों को क़त्ल करते हैं नाहक़, और उन्हें क़त्ल करते हैं जो लोग इन्साफ़ का हुक्म करते हैं, सो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दें। **(21)**

यही वह लोग हैं जिन के अ़मल ज़ाया हो गए दुनिया में और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार नहीं। **(22)**

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ اُوۡتُوۡا نَصِيۡبًا مِّنَ الۡكِتٰبِ يُدۡعَوۡنَ اِلٰى

तरफ़	बुलाए जाते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या नहीं देखा

كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحۡكُمَ بَيۡنَهُمۡ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيۡقٌ مِّنۡهُمۡ وَهُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿٢٣﴾

23	मुँह फेरने वाले	और वह	उन से	एक फ़रीक़	फिर जाता है	फिर	उन के दरमियान	ता कि वह फ़ैसला करे	अल्लाह की किताब

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَالُوۡا لَنۡ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَيَّامًا مَّعۡدُوۡدٰتٍ ۖ

गिनती के	चन्द दिन	मगर	आग	हमें हरगिज़ न छुएगी	कहते हैं	इस लिए कि वह	यह

وَّغَرَّهُمۡ فِىۡ دِيۡنِهِمۡ مَّا كَانُوۡا يَفۡتَرُوۡنَ ﴿٢٤﴾ فَكَيۡفَ اِذَا جَمَعۡنٰهُمۡ لِيَوۡمٍ

उस दिन	उन्हें हम जमा करेंगे	जब	सो क्या	24	वह घड़ते थे	जो	उन का दीन	में	और उन्हें धोके में डाल दिया

لَّا رَيۡبَ فِيۡهِ ۗ وَوُفِّيَتۡ كُلُّ نَفۡسٍ مَّا كَسَبَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿٢٥﴾

25	हक़ तलफ़ी न होगी	और वह	उस ने कमाया	जो	शख़्स	हर	और पूरा पाएगा	उस में	शक नहीं

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الۡمُلۡكِ تُؤۡتِى الۡمُلۡكَ مَنۡ تَشَآءُ وَتَنۡزِعُ الۡمُلۡكَ

मुल्क	और छीन ले	तू चाहे	जिसे	मुल्क	तू दे	मुल्क	मालिक	ऐ अल्लाह	आप कहें

مِمَّنۡ تَشَآءُ ۘ وَتُعِزُّ مَنۡ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنۡ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الۡخَيۡرُ ؕ

तमाम भलाई	तेरे हाथ में	तू चाहे	जिसे	और ज़लील कर दे	तू चाहे	जिसे	और इज़्ज़त दे	तू चाहे	जिस से

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿٢٦﴾ تُوۡلِجُ الَّيۡلَ فِى النَّهَارِ وَتُوۡلِجُ النَّهَارَ

दिन	और दाख़िल करता है तू	दिन में	रात	तू दाख़िल करता है	26	क़ादिर	चीज़	हर	पर	बेशक तू

فِى الۡيَّلِ ۘ وَتُخۡرِجُ الۡحَىَّ مِنَ الۡمَيِّتِ وَتُخۡرِجُ الۡمَيِّتَ مِنَ الۡحَىِّ ۘ

जानदार	से	बेजान	और तू निकालता है	बेजान	से	जानदार	और तू निकालता है	रात में

وَتَرۡزُقُ مَنۡ تَشَآءُ بِغَيۡرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ

मोमिन (जमा)	न बनाएं	27	बे हिसाब	तू चाहे	जिसे	और तू रिज़्क़ देता है

الۡكٰفِرِيۡنَ اَوۡلِيَآءَ مِنۡ دُوۡنِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۚ وَمَنۡ يَّفۡعَلۡ ذٰلِكَ

ऐसा	करे	और जो	मोमिन (जमा)	अलावा (छोड़ कर)	दोस्त (जमा)	काफ़िर (जमा)

فَلَيۡسَ مِنَ اللّٰهِ فِىۡ شَىۡءٍ اِلَّاۤ اَنۡ تَتَّقُوۡا مِنۡهُمۡ تُقٰٮةً ؕ

बचाव	उन से	बचाव करो	कि	सिवाए	कोई तअ़ल्लुक़	अल्लाह	से	तो नहीं

وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفۡسَهٗ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الۡمَصِيۡرُ ﴿٢٨﴾ قُلۡ اِنۡ

अगर तुम	कह दें	28	लौट जाना	और अल्लाह की तरफ़	अपनी ज़ात	और अल्लाह डराता है तुम्हें

تُخۡفُوۡا مَا فِىۡ صُدُوۡرِكُمۡ اَوۡ تُبۡدُوۡهُ يَعۡلَمۡهُ اللّٰهُ ؕ وَيَعۡلَمُ مَا

जो	और वह जानता है	अल्लाह उसे जानता है	तुम ज़ाहिर करो	या	तुम्हारे सीने (दिल)	में	जो	छुपाओ

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿٢٩﴾

29	क़ादिर	चीज़	हर	पर	और अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें दिया गया किताब का एक हिस्सा, वह अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाए जाते हैं ता कि वह उन के दरमियान फ़ैसला करे, फिर उन का एक फ़रीक़ फिर जाता है, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

यह इस लिए है कि वह कहते हैं हमें (दोज़ख़) की आग हरगिज़ न छुएगी मगर गिनती के चन्द दिन, और उन्हें उन के दीन (के बारे) में धोके में डाल दिया उस ने जो वह घड़ते थे। (24)

सो क्या (हाल होगा) जब हम उन्हें उस दिन जमा करेंगे जिस में कोई शक नहीं, और हर शख़्स पूरा पूरा पाएगा जो उस ने कमाया और उन की हक़ तलफ़ी न होगी। (25)

आप कहें ऐ अल्लाह! मालिके मुल्क तू जिसे चाहे मुल्क दे, तू मुल्क छीन ले जिस से तू चाहे, और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे हाथ में तमाम भलाई है, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। (26)

तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दाख़िल करता है दिन को रात में, और तू बेजान से जानदार निकालता है और जानदार से बेजान निकालता है, और जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (27)

मोमिन न बनाएं मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त, और जो ऐसा करे तो उस का अल्लाह से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं सिवाए इस के कि तुम उन से बचाव करो, और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से, और अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। (28)

कह दें जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अगर तुम छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो अल्लाह उसे जानता है, और वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (29)

معانقة ٢ عند المتاخرين ١٢ ع ٣/١١

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۖۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ

से - कोई	उस ने की	और जो	मौजूद	नेकी	से (कोई)	उस ने की	जो	शख़्स	हर	पाएगा	दिन

سُوْٓءٍ ۚۛ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا ۢ بَعِيْدًا ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ

और अल्लाह तुम्हें डराता है	दूर	फ़ासला	और उस के दरमियान	उस के दरमियान	काश कि	आरज़ू करेगा	बुराई

نَفْسَهٗ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ

तो मेरी पैरवी करो	अल्लाह	मुहब्बत रखते	अगर तुम हो	आप कह दें	30	बन्दों पर	शफ़क़त करने वाला	और अल्लाह	अपनी ज़ात

يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

31	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	गुनाह तुम्हारे	और तुम्हें बख़्शदेगा	तुम से मुहब्बत करेगा अल्लाह

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

32	काफ़िर (जमा)	नहीं दोस्त रखता	तो बेशक अल्लाह	वह फिर जाएं	फिर अगर	और रसूल	अल्लाह	तुम इताअ़त करो	आप कह दें

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ

और इमरान का घराना	और इब्राहीम (अ) का घराना	और नूह (अ)	आदम (अ)	चुन लिया	बेशक अल्लाह

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾ ۙ ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ ۚ

34	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	दूसरे	से	वह एक	औलाद	33	सारे जहान	पर

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِىْ بَطْنِىْ

मेरे पेट में	जो	तेरे लिए	मैं ने नज़्र किया	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	इमरान की बीवी	कहा	जब

مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا

उस ने उस को जन्म दिया	सो जब	35	जानने वाला	सुनने वाला	तू	बेशक तू	मुझ से	सो तू क़ुबूल कर ले	आज़ाद किया हुआ

قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ

उस ने जना	जो	खूब जानता है	और अल्लाह	लड़की	जन्म दी	मैं ने	ऐ मेरे रब	उस ने कहा

وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّىْٓ اُعِيْذُهَا

पनाह में देती हूँ उस को	और मैं	मरयम	उस का नाम रखा	और मैं	मानिंद लड़की	लड़का	और नहीं

بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ

क़ुबूल	उस का रब	तो क़ुबूल किया उस को	36	मरदूद	शैतान	से	और उस की औलाद	तेरी

حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا

उस के पास	दाख़िल होता	जिस वक़्त भी	ज़करिया (अ)	और सुपुर्द किया उस को	अच्छा	बढ़ाना	और परवान चढ़ाया उस को	अच्छा

زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ

यह	तेरे लिए	कहां	ऐ मरयम	उस ने कहा	खाना	उस के पास	पाया	मेहराब (हुजरा)	ज़करिया (अ)

قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

37	बे हिसाब	चाहे	जिसे	रिज़्क़ देता है	बेशक अल्लाह	पास अल्लाह	से	यह	उस ने कहा

जिस दिन हर शख़्स (मौजूद) पाएगा जो उस ने की कोई नेकी, और जो उस ने कोई बुराई की। वह आरज़ू करेगा काश उस के दरमियान और उस (बुराई) के दरमियान दूर का फ़ासला होता, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराता है, और अल्लाह शफ़क़त करने वाला है बन्दों पर। (30)

आप कह दें अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्शदेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (31)

आप कह दें तुम इताअ़त करो अल्लाह की और रसूल की, फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (32)

बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम (अ) और नूह (अ) को और इब्राहीम (अ) ओ इमरान के घराने को सारे जहान पर। (33)

वह औलाद थे एक दूसरे की, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (34)

जब इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब! जो मेरे पेट में है, मैं ने तेरी नज़्र किया (सब से) आज़ाद रख कर, सो तू मुझ से क़ुबूल कर ले, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (35)

सो जब उस ने उस (मरयम) को जन्म दिया तो वह बोली ऐ मेरे रब! मैं ने जन्म दी है लड़की, और अल्लाह खूब जानता है जो उस ने जन्म दिया, और लड़का लड़की के मानिंद नहीं होता और मैं ने उस का नाम मरयम रखा, और मैं उस को और उस की औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ शैतान मरदूद से। (36)

तो उस को उस के रब ने अच्छी तरह क़ुबूल किया और उस को अच्छी तरह परवान चढ़ाया और ज़करिया (अ) को उस का कफ़ील बनाया। जब भी ज़करिया (अ) उस के पास हुजरे में दाख़िल होते उस के पास खाना पाते,
उस (ज़करिया (अ) ने कहा ऐ मरयम! यह तेरे पास कहां से आया? उस ने कहा यह अल्लाह के पास से है, बेशक अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (37)

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

औलाद	अपने पास	से	अ़ता कर मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	अपना रब	ज़करिया	दुआ की	वहीं

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ

खड़े हुए	और वह	फ़रिश्ते	तो आवाज़ दी उस को	38	दुआ	सुनने वाला	बेशक तू	पाक

يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا ۢ بِكَلِمَةٍ

कलिमा	तस्दीक़ करने वाला	यहया (अ)	तुम्हें खुशख़बरी देता है	कि अल्लाह	मेहराब (हुजरा)	में	नमाज़ पढ़ते

مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	39	नेकोकार (जमा)	से	और नबी	और नफ़्स को क़ाबू में रखने वाला	और सरदार	अल्लाह	से

اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ

बांझ	और मेरी औरत	बुढ़ापा	जब कि मुझे पहुँच गया	लड़का	मेरे लिए	होगा	कहां

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ؕ

कोई निशानी	मेरे लिए	मुक़र्रर फ़रमा दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	40	जो वह चाहता है	करता है	अल्लाह	इसी तरह	उस ने कहा

قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ

अपना रब	और तू याद कर	इशारा	मगर	तीन दिन	लोग	कि न बात करेगा	तेरी निशानी	उस ने कहा

كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ ع وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ ع ٤ ١١ ١٢

फ़रिश्ते	कहा	और जब	41	और सुबह	शाम	और तस्बीह कर	बहुत

يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰكِ عَلٰى

पर	और बरगुज़ीदा किया तुझ को	और पाक किया तुझ को	चुन लिया तुझ को	बेशक अल्लाह	ऐ मरयम

نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ

और रुकूअ़ कर	और सिज्दा कर	अपने रब की	तू फ़रमांबरदारी कर	ऐ मरयम	42	तमाम जहान	औ़रतें

مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ

तेरी तरफ़	हम यह वहि करते हैं	ग़ैब	ख़बरें	से	यह	43	रुकूअ़ करने वाले	साथ

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۖ

मरयम	पर्वरिश करे	कौन-उन	अपने क़लम	वह डालते थे	जब	उन के पास	और तू न था

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ

ऐ मरयम	फ़रिश्ते	जब कहा	44	जब वह झगड़ते थे	उन के पास	और तू न था

اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

इब्ने मरयम	ईसा	मसीह (अ)	उस का नाम	अपने	एक कलिमा की	तुझे बशारत देता है	बेशक अल्लाह

وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ ۙ

45	मुक़र्रिब (जमा)	और से	और आख़िरत	दुनिया	में	बा आबरू

वहीं ज़करिया (अ) ने अपने रब से दुआ की। ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाक औलाद अ़ता कर, तू बेशक दुआ सुनने वाला है। (38)

तो उन्हें आवाज़ दी फ़रिश्तों ने जब वह हुजरे में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह तुम्हें यहया (अ) की खुशख़बरी देता है अल्लाह के कलिमे की तस्दीक़ करने वाला, सरदार, और नफ़्स को क़ाबू रखने वाला, और नबी (होगा) नेकोकारों में से। (39)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कहां से होगा? जब कि मुझे बुढ़ापा पहुँच चुका है, और मेरी औ़रत बांझ है, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है। (40)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुक़र्रर फ़रमा दे मेरे लिए कोई निशानी? उस ने कहा तेरी निशानी यह है कि तू लोगों से तीन दिन बात न करेगा मगर इशारे से, तू अपने रब को बहुत याद कर, और सुब्ह ओ शाम तस्बीह कर। (41)

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बेशक अल्लाह ने तुझ को चुन लिया और तुझ को पाक किया और तुझ को बरगुज़ीदा किया औ़रतों पर तमाम जहान की। (42)

ऐ मरयम! तू अपने रब की फ़रमांबरदारी कर और सिज्दा कर और रुकूअ़ कर रुकूअ़ करने वालों के साथ। (43)

यह ग़ैब की ख़बरें हैं, हम आप की तरफ़ वहि करते हैं, और आप उन के पास न थे जब वह (क़ुरआ के लिए) अपने क़लम डाल रहे थे कि उन में से कौन मरयम की पर्वरिश करेगा? और आप (स) उन के पास न थे जब वह झगड़ते थे। (44)

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तुझे अपने एक कलमे की बशारत देता है, उस का नाम मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम है, दुनिया और आख़िरत में बाआबरू, और मुक़र्रिबों से होगा, (45)

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَتْ

वह बोली	46	नेकोकार	और से	और पुख़्ता उम्र	पालने में	लोग	और बातें करेगा

رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ

अल्लाह	इसी तरह	उस ने कहा	कोई मर्द	हाथ लगाया मुझे	और नहीं	बेटा	होगा मेरे हां	कैसे	ऐ मेरे रब

يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۷﴾

47	सो वह हो जाता है	हो जा	उस को	वह कहता है	तो	कोई काम	वह इरादा करता है	जब	जो वह चाहता है	पैदा करता है

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿۴۸﴾ وَرَسُوْلًا اِلٰى

तरफ़	और एक रसूल	48	और इन्जील	और तौरेत	और दानाई	और वह सिखाएगा उस को किताब

بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْۤ اَخْلُقُ

बनाता हूँ	कि मैं	तुम्हारा रब	से	एक निशानी के साथ	आया हूँ तुम्हारी तरफ़	कि मैं	बनी इस्राईल

لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًاۢ بِاِذْنِ

हुक्म से	परिन्दा	तो वह हो जाता है	उस में	फिर फूंक मारता हूँ	परिन्दा	मानिंद-शक्ल	गारा	से	तुम्हारे लिए

اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह के हुक्म से	मुर्दे	और मैं ज़िन्दा करता हूँ	और कोढ़ी को	मादरज़ाद अन्धा	और मैं अच्छा करता हूँ	अल्लाह

وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

उस	में	बेशक	घरों अपने	में	तुम ज़ख़ीरा करते हो	और जो	तुम खाते हो	जो	और तुम्हें बताता हूँ

لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۴۹﴾ۚ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ

अपने से पहली	जो	और तस्दीक़ करने वाला	49	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	एक निशानी

مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ

और आया हूँ तुम्हारे पास	तुम पर	हराम की गई	वह जो कि	बाज़	तुम्हारे लिए	और ता कि हलाल कर दूँ	तौरेत	से

بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۟ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۵۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ

और तुम्हारा रब	मेरा रब	बेशक अल्लाह	50	और मेरा कहा मानो	सो तुम अल्लाह से डरो	तुम्हारा रब	से	एक निशानी

فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۵۱﴾ فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِيْسٰى

ईसा (अ)	महसूस किया	फिर जब	51	सीधा	रास्ता	यह	सो तुम इबादत करो उस की

مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

हवारी (जमा)	कहा	अल्लाह की तरफ़	मेरी मदद करने वाला	कौन	उस ने कहा	कुफ़्र	उन से

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا

हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	52	फ़रमांबरदार	कि हम	तू गवाह रह	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	अल्लाह की मदद करने वाले	हम

بِمَاۤ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۵۳﴾

53	गवाही देने वाले	साथ	सो तू हमें लिख ले	रसूल	और हम ने पैरवी की	तू ने नाज़िल किया	जो

और लोगों से गहवारे में और पुख़्ता उम्र में बातें करेगा और नेकोकारों में से होगा। (46)

वह बोली ऐ मेरे रब! मेरे हां बेटा कैसे होगा? और किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, जब वह किसी काम का इरादा करता है तो वह कहता है उस को "हो जा" सो वह हो जाता है। (47)

और वह उस को सिखाएगा किताब और दानाई और तौरेत और इन्जील। (48)

और बनी इस्राईल की तरफ़ एक रसूल, (उस ने कहा) कि मैं तुम्हारी तरफ़ एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब की तरफ़ से, मैं तुम्हारे लिए गारे से परिन्दे जैसी शक्ल बनाता हूँ, फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा हो जाता है, और मैं अच्छा करता हूँ मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को, और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे ज़िन्दा करता हूँ, और मैं तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते हो और जो तुम अपने घरों में ज़ख़ीरा करते हो, बेशक उस में तुम्हारे लिए एक निशानी है अगर तुम हो ईमान वाले। (49)

और मैं अपने से पहली (किताब) तौरेत की तस्दीक़ करने वाला हूँ और ता कि तुम्हारे लिए बाज़ वह चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुम पर हराम की गई थीं, और तुम्हारे पास एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब से, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (50)

बेशक अल्लाह (ही) मेरा और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (51)

फिर जब ईसा (अ) ने महसूस किया उन से कुफ़्र (तो) कहा कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरी मदद करने वाला? हवारियों ने कहा हम अल्लाह की मदद करने वाले हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, और गवाह रह कि हम फ़रमांबरदार हैं, (52)

ऐ हमारे रब! हम उस पर ईमान लाए जो तू ने नाज़िल किया और हम ने रसूल की पैरवी की, सो तू हमें गवाही देने वालों के साथ लिख ले। (53)

और उन्हों ने मक्र किया और अल्लाह ने ख़ुफ़िया तदबीर की, और अल्लाह (सब) तदबीर करने वालों से बेहतर है। (54)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ): मैं तुझे क़ब्ज़ कर लूँगा और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूँगा और तुझे पाक कर दूँगा उन लोगों से जिन्हों ने कुफ़्र किया, और जिन्हों ने तेरी पैरवी की उन्हें ऊपर (ग़ालिब) रखूँगा उन के जिन्हों ने कुफ़्र किया क़ियामत के दिन तक। फिर तुम्हें मेरी तरफ़ लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करूँगा जिस (बारे) में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (55)

पस जिन लोगों ने कुफ़्र किया, सो उन्हें सख़्त अज़ाब दूँगा दुनिया और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार न होगा। (56)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक काम किए तो (अल्लाह) उन के अजर उन्हें पूरे देगा, और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को। (57)

हम आप (स) पर यह आयतें और हिक्मत वाली नसीहत पढ़ते हैं। (58)

बेशक अल्लाह के नज़दीक ईसा (अ) की मिसाल आदम (अ) जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर कहा उस को "हो जा" तो वह हो गया। (59)

हक़ आप के रब की तरफ़ से है, पस शक करने वालों में से न होना। (60)

जो आप (स) से इस बारे में झगड़े उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आगया तो आप (स) कह दें! आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें, और हम खुद और तुम खुद (भी), फिर हम सब इल्तिजा करें, फिर झूटों पर अल्लाह की लानत भेजें। (61)

बेशक यही सच्चा बयान है, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (62)

ع ١٣ ٥ الثلثة ١٣

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ

अल्लाह ने कहा	जब	54	तदबीर करने वाले	बेहतर	और अल्लाह	और अल्लाह ने ख़ुफ़िया तदबीर की	और उन्हों ने मक्र किया

يٰعِيْسٰۤى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	से	और पाक कर दूँगा तुझे	अपनी तरफ़	और उठा लूँगा तुझे	क़ब्ज़ कर लूँगा तुझे	मैं	ऐ ईसा (अ)

كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى

तक	कुफ़्र किया	जिन्हों ने	ऊपर	तेरी पैरवी की	वह जिन्हों ने	और रखूँगा	उन्हों ने कुफ़्र किया

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ

तुम थे	जिस में	तुम्हारे दरमियान	फिर मैं फ़ैसला करूँगा	तुम्हें लौट कर आना है	मेरी तरफ़	फिर	क़ियामत का दिन

فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا

अज़ाब	सो उन्हें अज़ाब दूँगा	कुफ़्र किया	जिन लोगों ने	पस	55	इख़्तिलाफ़ करते	में

شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

56	मददगार	से	उन का	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	सख़्त

وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ

उन के अजर	तो पूरा देगा	नेक	और उन्हों ने काम किए	ईमान लाए	जो लोग	और जो

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ

आयतें	से	आप (स) पर	हम पढ़ते हैं	यह	57	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	और अल्लाह

وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ

उस को पैदा किया	आदम	मिसाल जैसी	अल्लाह के नज़दीक	ईसा	मिसाल	बेशक	58	हिक्मत वाली	और नसीहत

مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا

पस न	आप का रब	से	हक़	59	सो वह हो गया	हो जा	उस को	कहा	फिर	मिट्टी	से

تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ

जब आगया	बाद	से	इस में	आप (स) से झगड़े	सो जो	60	शक करने वाले	से	हो

مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا

और अपनी औरतें	और तुम्हारे बेटे	अपने बेटे	हम बुलाएं	तुम आओ	तो कह दें	इल्म	से

وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۫ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ

अल्लाह की लानत	फिर करें (डालें)	हम इल्तिजा करें	फिर	और तुम खुद	और हम खुद	और तुम्हारी औरतें

عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا

और नहीं	सच्चा	बयान	यही	यह	बेशक	61	झूटे	पर

مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾

62	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वही	और बेशक अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद

٦ ع ٩ ١٢

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ

आप कह दें	63	फ़साद करने वालों को	जानने वाला	तो बेशक अल्लाह	वह फिर जाएं	फिर अगर

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ

कि न हम इबादत करें	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	बराबर	एक बात	तरफ़ (पर)	आओ	ऐ अहले किताब

اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا

रब (जमा)	किसी को	हम में से कोई	और न बनाए	कुछ	उस के साथ	और न हम शरीक करें	सिवाए अल्लाह

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

64	मुस्लिम (फ़रमांबरदार)	कि हम	तुम गवाह रहो	तो कह दो तुम	वह फिर जाएं	फिर अगर	अल्लाह के सिवा

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمَآ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ

तौरेत	नाज़िल की गई	और नहीं	इब्राहीम (अ)	में	तुम झगड़ते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰٓاَنْتُمْ

हां तुम	65	तो क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते	उस के बाद	मगर	और इन्जील

هٰٓؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ

अब क्यों	इल्म	उस का	तुम्हें	जिस में	तुम ने झगड़ा किया	वह लोग

تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ

और तुम	जानता है	और अल्लाह	कुछ इल्म	उस का	तुम्हें	नहीं	उस में	तुम झगड़ते हो

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا

नसरानी	और न	यहूदी	इब्राहीम (अ)	न थे	66	जानते	नहीं

وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾

67	मुश्रिक (जमा)	से	थे	और न	मुस्लिम (फ़रमांबरदार)	एक रुख़	वह थे	और लेकिन

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا

और इस	उन्हों ने पैरवी की उन की	उन लोग	इब्राहीम (अ)	लोग	सब से ज़ियादा मुनासिबत	बेशक

النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	मोमिनीन	कारसाज़	और अल्लाह	ईमान लाए	और वह लोग जो	नबी

وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ

वह गुमराह कर दें तुम्हें	काश	अहले किताब	से (की)	एक जमाअ़त	चाहती है

وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	वह समझते	और नहीं	अपने आप	मगर	और नहीं वह गुमराह करते

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	गवाह हो	हालांकि तुम	अल्लाह की आयतों का	तुम इन्कार करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (63)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! उस एक बात पर आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर (मुशतरिक) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं और हम में से कोई किसी को न बनाए रब अल्लाह के सिवा, फिर अगर वह फिर जाएं तो तुम कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मुस्लिम (फ़रमांबरदार) हैं। (64)

ऐ अहले किताब! तुम इब्राहीम (अ) के बारे में क्यों झगड़ते हो? और नहीं नाज़िल की गई तौरेत और इन्जील मगर उन के बाद, तो क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते? (65)

हां! तुम वही लोग हो कि तुम ने उस (बारे) में झगड़ा किया जिस का तुम्हें इल्म था तो अब क्यों झगड़ते हो उस (बारे) में जिस का तुम्हें कुछ इल्म नहीं, और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (66)

इब्राहीम (अ) न यहूदी थे न नसरानी, (बल्कि) वह हनीफ़ (सब से रुख़ मोड़ कर अल्लाह के हो जाने वाले) मुस्लिम (फ़रमांबरदार) थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (67)

बेशक सब लोगों से ज़ियादा मुनासिबत है इब्राहीम (अ) से उन लोगों को जिन्हों ने उन की पैरवी की, और इस नबी को और वह लोग जो ईमान लाए, और अल्लाह मोमिनों का कारसाज़ है। (68)

अहले किताब की एक जमाअ़त चाहती है काश! वह तुम्हें गुमराह कर दें, और वह अपने सिवा किसी को गुमराह नहीं करते, और वह समझते नहीं। (69)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों इन्कार करते हो अल्लाह की आयतों का? हालांकि तुम गवाह हो। (70)

يٰٓاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تَلۡبِسُوۡنَ الۡحَقَّ بِالۡبَاطِلِ وَتَكۡتُمُوۡنَ الۡحَقَّ

हक़	और तुम छुपाते हो	झूट के साथ	सच	तुम उलझाते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

وَاَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اٰمِنُوۡا بِالَّذِىۡٓ ع ٨ ١٥

जो कुछ	तुम मान लो	अहले किताब	से (की)	एक जमाअ़त	और कहा	71	जानते हो	हालांकि तुम

اُنۡزِلَ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَجۡهَ النَّهَارِ وَاكۡفُرُوۡٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمۡ

शायद	उस का आख़िर (शाम)	और मुन्किर हो जाओ	दिन का अव्वल हिस्सा	जो लोग ईमान लाए (मुसलमान)	पर	नाज़िल किया गया

يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤۡمِنُوۡٓا اِلَّا لِمَنۡ تَبِعَ دِيۡنَكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡهُدٰى

हिदायत	बेशक	कह दें	तुम्हारा दीन	पैरवी करे	उस की जो	सिवाए	मानो तुम	और न	72	वह फिर जाएं

هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنۡ يُّؤۡتٰٓى اَحَدٌ مِّثۡلَ مَآ اُوۡتِيۡتُمۡ اَوۡ يُحَآجُّوۡكُمۡ

वह हुज्जत करें तुम से	या	कुछ तुम्हें दिया गया	जैसा	किसी को	दिया गया	कि	अल्लाह की हिदायत

عِنۡدَ رَبِّكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡفَضۡلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ

वह चाहता है	जिसे	वह देता है	अल्लाह के हाथ में	फ़ज़्ल	बेशक	कह दें	तुम्हारा रब	सामने

وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ﴿٧٣﴾ ۙ يَّخۡتَصُّ بِرَحۡمَتِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ

वह चाहता है	जिसे	अपनी रहमत से	वह ख़ास कर लेता है	73	जानने वाला	वुस्अ़त वाला	और अल्लाह

وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ مَنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ

अगर अमानत रखें उस को	जो	अहले किताब	और से	74	बड़ा-बड़े	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह

بِقِنۡطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيۡكَ ۚ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ بِدِيۡنَارٍ

एक दीनार	आप अमानत रखें उस को	अगर	और उन से जो	आप को	अदा करे	ढेर माल

لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيۡكَ اِلَّا مَا دُمۡتَ عَلَيۡهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَالُوۡا

उन्हों ने कहा	इस लिए कि	यह	खड़े	उस पर	तक रहें	मगर जब	आप को	वह अदा न करे

لَيۡسَ عَلَيۡنَا فِى الۡاُمِّيّٖنَ سَبِيۡلٌ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ

झूट	अल्लाह पर	और वह बोलते हैं	कोई राह	उम्मी (जमा)	में	हम पर	नहीं

وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنۡ اَوۡفٰى بِعَهۡدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गार रहे	अपना इक़रार	पूरा करे	जो	क्यों नहीं?	75	जानते हैं	और वह

يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَشۡتَرُوۡنَ بِعَهۡدِ اللّٰهِ وَاَيۡمَانِهِمۡ ثَمَنًا

क़ीमत	और अपनी क़समें	अल्लाह का इक़रार	ख़रीदते (हासिल करते) हैं	जो लोग	बेशक	76	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है

قَلِيۡلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا

और न	उन से कलाम करेगा अल्लाह	और न	आख़िरत में	उन के लिए	हिस्सा	नहीं	यही लोग	थोड़ी

يَنۡظُرُ اِلَيۡهِمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيۡهِمۡ ۖ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٧٧﴾

77	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए	उन्हें पाक करेगा	और न	क़ियामत के दिन	उन की तरफ़	नज़र करेगा

ऐ अहले किताब! तुम क्यों मिलाते हो सच को झूट के साथ और तुम हक़ को छुपाते हो हालांकि तुम जानते हो। (71)

और एक जमाअ़त ने कहा अहले किताब की कि जो कुछ मुसलमानों पर नाज़िल किया गया है, उसे दिन के अव्वल हिस्से में मान लो और मुन्किर हो जाओ उस के आख़िर हिस्से में (शाम को) शायद कि वह फिर जाएं। (72)

और तुम (किसी की बात) न मानो सिवाए उस के जो पैरवी करे तुम्हारे दीन की, आप (स) कह दें बेशक हिदायत अल्लाह ही की हिदायत है कि किसी को दिया गया जैसा कि तुम्हें दिया गया था, या वह तुम से तुम्हारे रब के सामने हुज्जत करें, आप (स) कह दें, बेशक फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह देता है जिस को वह चाहता है, और अल्लाह वुस्अ़त वाला, जानने वाला है। (73)

वह जिस को चाहता है अपनी रहमत से ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (74)

और अहले किताब में कोई (ऐसा है) कि अगर आप (स) उस के पास अमानत रखें ढेरों माल तो वह आप (स) को अदा करदे, और उन में से कोई (ऐसा है) अगर आप उस के पास एक दीनार अमानत रखें तो वह अदा न करे मगर जब तक आप (स) उस के सर पर खड़े रहें, यह इस लिए है कि उन्हों ने कहा हम पर उम्मियों के (बारे) में (इल्ज़ाम की) कोई राह नहीं, और वह अल्लाह पर झूट बोलते हैं, और वह जानते हैं। (75)

क्यों नहीं? जो कोई अपना इक़रार पूरा करे और परहेज़गार रहे तो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (76)

बेशक जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों से हासिल करते हैं थोड़ी क़ीमत, यही लोग हैं जिन के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं और न अल्लाह उन से कलाम करेगा और न उन की तरफ़ नज़र करेगा क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (77)

وَاِنَّ مِنۡهُمۡ لَفَرِيۡقًا يَّلۡوٗنَ اَلۡسِنَتَهُمۡ بِالۡكِتٰبِ لِتَحۡسَبُوۡهُ

ता कि तुम समझो	किताब में	अपनी ज़बानें	मरोड़ते हैं	एक फ़रीक़	उन से (उन में)	और बेशक

مِنَ الۡكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الۡكِتٰبِ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ هُوَ مِنۡ

से	वह	और वह कहते हैं	किताब	से	वह	और नहीं	किताब	से

عِنۡدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ

झूट	अल्लाह पर	और वह बोलते हैं	अल्लाह की तरफ़	से	वह	हालांकि नहीं	अल्लाह की तरफ़

وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنۡ يُّؤۡتِيَهُ اللّٰهُ الۡكِتٰبَ

किताब	उसे अ़ता करे अल्लाह	कि	किसी आदमी के लिए	नहीं	78	वह जानते हैं	और वह

وَالۡحُكۡمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوۡلَ لِلنَّاسِ كُوۡنُوۡا عِبَادًا لِّىۡ

मेरे	बन्दे	तुम हो जाओ	लोगों को	वह कहे	फिर	और नुबूव्वत	और हिक्मत

مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلٰكِنۡ كُوۡنُوۡا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنۡتُمۡ تُعَلِّمُوۡنَ الۡكِتٰبَ

किताब	तुम सिखाते हो	इस लिए कि	अल्लाह वाले	तुम हो जाओ	और लेकिन	अल्लाह	सिवा (बजाए)

وَبِمَا كُنۡتُمۡ تَدۡرُسُوۡنَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَاۡمُرَكُمۡ اَنۡ تَتَّخِذُوا

तुम ठहराओ	कि	हुक्म देगा तुम्हें	और न	79	तुम पढ़ते हो	और इस लिए कि

الۡمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرۡبَابًا ؕ اَيَاۡمُرُكُمۡ بِالۡكُفۡرِ بَعۡدَ

बाद	कुफ़्र का	क्या वह तुम्हें हुक्म देगा?	परवरदिगार	और नबी	फ़रिश्ते

٨ ع ٩ ١٦ اِذۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ﴿٨٠﴾ ع وَاِذۡ اَخَذَ اللّٰهُ مِيۡثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ

जो कुछ	नबी (जमा)	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और जब	80	मुसलमान	तुम	जब

اٰتَيۡتُكُمۡ مِّنۡ كِتٰبٍ وَّحِكۡمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلٌ مُّصَدِّقٌ

तस्दीक़ करता हुआ	रसूल	आए तुम्हारे पास	फिर	और हिक्मत	किताब	से	मैं तुम्हें दूँ

لِّمَا مَعَكُمۡ لَتُؤۡمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنۡصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقۡرَرۡتُمۡ وَاَخَذۡتُمۡ

और तुम ने क़ुबूल किया	क्या तुम ने इक़रार किया	उस ने फ़रमाया	और तुम ज़रूर मदद करोगे उस की	उस पर	तुम ज़रूर ईमान लाओगे	तुम्हारे पास	जो

عَلٰى ذٰلِكُمۡ اِصۡرِىۡ ؕ قَالُوۡۤا اَقۡرَرۡنَا ؕ قَالَ فَاشۡهَدُوۡا وَاَنَا مَعَكُمۡ

तुम्हारे साथ	और मैं	पस तुम गवाह रहो	उस ने फ़रमाया	हम ने इक़रार किया	उन्हों ने कहा	मेरा अ़हद	इस	पर

مِّنَ الشّٰهِدِيۡنَ ﴿٨١﴾ فَمَنۡ تَوَلّٰى بَعۡدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

वह	तो वही	इस	बाद	फिर जाए	फिर जो	81	गवाह (जमा)	से

الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيۡرَ دِيۡنِ اللّٰهِ يَبۡغُوۡنَ وَلَهٗۤ اَسۡلَمَ مَنۡ

जो	फ़रमांबरदार है	और उस के लिए	वह ढून्डते हैं	अल्लाह का दीन	क्या? सिवा	82	नाफ़रमान

فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّكَرۡهًا وَّاِلَيۡهِ يُرۡجَعُوۡنَ ﴿٨٣﴾

83	वह लौटाए जाएंगे	और उस की तरफ़	और नाख़ुशी से	ख़ुशी से	और ज़मीन	आस्मानों	में

और बेशक उन में एक फ़रीक़ है जो किताब (पढ़ते वक़्त) अपनी ज़बानें मरोड़ते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब से है, हालांकि वह किताब से नहीं (होता), और वह कहते हैं कि वह अल्लाह की तरफ़ से है, हालांकि वह नहीं अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह पर झूट बोलते हैं और वह जानते हैं। (78)

किसी आदमी के लिए (यह शायान) नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और नुबूव्वत अ़ता करे, फिर वह लोगों को कहे कि तुम अल्लाह के बजाए मेरे बन्दे हो जाओ, लेकिन (वह यहि कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले हो जाओ, इस लिए कि तुम किताब सिखाते हो और तुम ख़ुद (भी) पढ़ते हो। (79)

और न वह तुम्हें हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को परवरदिगार ठहराओ, क्या वह तुम्हें हुक्म देगा कुफ़्र का? इस के बाद कि तुम मुसलमान (फ़रमांबरदार) हो चुके। (80)

और जब अल्लाह ने अ़हद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिक्मत दूँ, फिर तुम्हारे पास रसूल आए उस की तस्दीक़ करता हुआ जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर ज़रूर ईमान लाओगे, और ज़रूर उस की मदद करोगे, उस ने फ़रमाया क्या तुम ने इक़रार किया और तुम ने इस पर मेरा अ़हद क़ुबूल क्या? उन्हों ने कहा कि हम ने इक़रार किया, उस ने फ़रमाया पस तुम गवाह रहो और मैं तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ। (81)

फिर जो इस के बाद फिर जाए तो वही नाफ़रमान हैं। (82)

क्या वह अल्लाह के दीन के सिवा (कोई और दीन) चाहते हैं? और उसी का फ़रमांबरदार है जो आस्मानों और ज़मीन में है, चार ओ नाचार, और उसी की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे। (83)

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	पर	नाज़िल किया गया	और जो	हम पर	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दें

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى

मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलाद	और याकूब (अ)	और इसहाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)

وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۡ وَنَحْنُ

और हम	उन से	कोई एक	दरमियान	फ़र्क़ करते	नहीं	उन का रब	से	और नबी (जमा)	और ईसा (अ)

لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ

उस से	क़ुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	कोई दीन	इस्लाम	सिवा	चाहेगा	और जो	84	फ़रमांबरदार	उसी के

وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ

हिदायत देगा अल्लाह	क्योंकर	85	नुक़्सान उठाने वाले	से	आख़िरत	में	और वह

قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ

और आएं उन के पास	सच्चे	रसूल	कि	और उन्हों ने गवाही दी	उन का (अपना) ईमान	बाद	ऐसे लोग जो काफ़िर हो गए

الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُھُمْ

उन की सज़ा	ऐसे लोग	86	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत देता	नहीं	और अल्लाह	खुली निशानियां

اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾

87	तमाम	और लोग	और फ़रिश्ते	अल्लाह की लानत	उन पर	कि

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	मुहलत दी जाएगी	उन्हें	और न	अज़ाब	उन से	हलका किया जाएगा	न	उस में	हमेशा रहेंगे

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۣ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और इस्लाह की	इस	बाद	तौबा की	जो लोग	मगर

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ

फिर	अपने ईमान	बाद	काफ़िर हो गए	जो लोग	बेशक	89	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الضَّاۗلُّوْنَ ﴿٩٠﴾

90	गुमराह	वह	और वही लोग	उन की तौबा	क़ुबूल की जाएगी	हरगिज़ न	कुफ़्र में	बढ़ते गए

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ

क़ुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	हालते कुफ़्र	और वह	और वह मर गए	कुफ़्र किया	जो लोग	बेशक

مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۭ

उस को	बदला दे	अगरचे	सोना	ज़मीन	भरा हुआ	उन में कोई	से

اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾ ع ٩ ١١ ١٧

91	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	यही लोग

कह दें हम ईमान लाए अल्लाह पर, और जो हम पर नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक़ (अ), याकूब (अ) और उन की औलाद पर, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) और नबियों को उन के रब की तरफ़ से, हम फ़र्क़ नहीं करते उन में से किसी एक के दरमियान, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (84)

और जो कोई चाहेगा इस्लाम के सिवा कोई और दीन तो उस से हरगिज़ क़ुबूल न किया जाएगा, और वह आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में से होगा। (85)

अल्लाह ऐसे लोगों को क्योंकर हिदायत देगा जो काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद और गवाही दे चुके कि यह रसूल सच्चे हैं, और उन के पास खुली निशानियां आ गईं, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (86)

ऐसे लोगों की सज़ा है कि उन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। (87)

वह उस में हमेशा रहेंगे। न उन से अज़ाब हलका किया जाएगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (88)

मगर जिन लोगों ने इस के बाद तौबा की और इस्लाह की, तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (89)

बेशक जो लोग काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद, फिर बढ़ते गए कुफ़्र में, उन की तौबा हरगिज़ न क़ुबूल की जाएगी, और वही लोग गुमराह हैं। (90)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और वह मर गए हालते कुफ़्र में, तो हरगिज़ न क़ुबूल किया जाएगा उन में से किसी से ज़मीन भर सोना भी, अगरचे वह उस को बदले में दे, यही लोग हैं उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है और उन के लिए कोई मददगार नहीं। (91)

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا

तुम ख़र्च करोगे	और जो	तुम मुहब्बत रखते हो	उस से जो	तुम ख़र्च करो	जब तक	नेकी	तुम हरगिज़ न पहुँचोगे

مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٩٢﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا

हलाल	थे	खाने	तमाम	92	जानने वाला	उस को	तो बेशक अल्लाह	से (कोई) चीज़

لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ

कि	क़ब्ल	से	अपनी जान	पर	इस्राईल (याकूब अ)	जो हराम कर लिया	मगर	बनी इस्राईल के लिए

تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	फिर उस को पढ़ो	तौरेत	सो तुम लाओ	आप कह दें	तौरेत	नाज़िल की जाए (उतरे)

صٰدِقِيْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

इस	से - बाद	झूट	अल्लाह पर	झूट बाँधे	फिर जो	93	सच्चे

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۣ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	दीन	पस पैरवी करो	अल्लाह ने सच फ़रमाया	आप कह दें	94	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग

حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	मुक़र्रर किया गया	घर	पहला	बेशक	95	मुशरिक (जमा)	से	थे	और न	हनीफ़

لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ

मुक़ामे	खुली	निशानियां	उस में	96	तमाम जहानों के लिए	और हिदायत	बरकत वाला	मक्का में	जो

اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ

ख़ानाए कअ़बा का हज करना	लोग	पर	और अल्लाह के लिए	अम्न में	हो गया	दाख़िल हुआ उस में	और जो	इब्राहीम

مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ

से	बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	कुफ़्र किया	और जो-जिस	राह	उस की तरफ़	इस्तिताअ़त रखता हो	जो

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٧﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	अल्लाह की आयतों से	तुम कुफ़्र करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब	कह दें	97	जहान वाले

شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ

से	क्यों रोकते हो?	ऐ अहले किताब	कह दें	98	जो तुम करते हो	पर	गवाह

سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ

अल्लाह	और नहीं	गवाह (जमा)	और तुम खुद	कजी	तुम ढूंडते हो उस में	ईमान लाए	जो	अल्लाह का रास्ता

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا

एक गिरोह	तुम कहा मानोगे	अगर	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ	99	तुम करते हो	से-जो	बेख़बर

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100	हालते कुफ़्र	तुम्हारे ईमान	बाद	वह फेर देंगे तुम्हें	दी गई किताब	वह लोग जो	से

तुम हरगिज़ नेकी को न पहुँचोगे जब तक उस में से ख़र्च न करो जिस से तुम मुहब्बत रखते हो, और जो तुम ख़र्च करोगे कोई चीज़ तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (92)

तमाम खाने हलाल थे बनी इस्राईल के लिए, मगर जो याकूब (अ) ने अपने आप पर हराम कर लिया था उस से क़ब्ल कि तौरेत उतरे, आप कह दें कि तुम तौरेत लाओ, फिर उस को पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। (93)

फिर जो कोई अल्लाह पर इस के बाद झूट बाँधे तो वही लोग ज़ालिम हैं। (94)

आप कह दें अल्लाह ने सच फ़रमाया, पस तुम इब्राहीम हनीफ़ (एक के हो जाने वाले) के दीन की पैरवी करो और वह मुशरिकों में से न थे। (95)

बेशक सब से पहले जो घर मुक़र्रर किया गया लोगों के लिए वह जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहानों के लिए हिदायत। (96)

उस में निशानियां हैं खुली (जैसे) मुक़ामे इब्राहीम (अ), और जो उस में दाख़िल हुआ वह अम्न में हो गया, और अल्लाह के लिए (अल्लाह का हक़ है) लोगों पर ख़ानाए कअ़बा का हज करना जो उस की तरफ़ राह (चलने की) इस्तिताअ़त रखता हो, और जिस ने कुफ़्र किया तो बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज़ है। (97)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! क्यों तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो? और अल्लाह उस पर गवाह है (बाख़बर है) जो तुम करते हो। (98)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह के रास्ते से क्यों रोकते हो (उस को) जो अल्लाह पर ईमान लाए, तुम उस में कजी ढूंडते हो, और तुम खुद गवाह हो, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (99)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो!) अगर कहा मानोगे उन लोगों के एक फ़रीक़ का जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें (हालते) कुफ़्र में फेर देंगे। (100)

الجزء ٤

وقف جبرئيل عليه السلام

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ

उस का रसूल	और तुम्हारे दरमियान	अल्लाह की आयतें	तुम पर	पढ़ी जाती हैं	जबकि तुम	तुम कुफ़्र करते हो	और कैसे

وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ ع ١٠ ١

101	सीधा रास्ता	तरफ़	तो उसे हिदायत दी गई	अल्लाह को	मज़बूत पकड़ेगा	और जो

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ

और तुम	मगर	और तुम हरगिज़ न मरना	उस से डरना	हक़	तुम डरो अल्लाह से	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ

مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا

और याद करो	आपस में फूट डालो	और न	सब मिल कर	अल्लाह की रस्सी को	और मज़बूती से पकड़ लो	102	मुसलमान (जमा)

نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ

तो तुम हो गए	तुम्हारे दिलों में	तो उल्फ़त डाल दी	दुश्मन (जमा)	जब तुम थे	तुम पर	अल्लाह की नेमत

بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ

तो तुम्हें बचा लिया	आग	से (के)	गढ़ा	किनारा	पर	और तुम थे	भाई भाई	उस के फ़ज़्ल से

مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ وَلْتَكُنْ

और चाहिए रहे	103	हिदायत पाओ	ताकि तुम	अपनी आयात	तुम्हारे लिए	वाज़ेह करता है अल्लाह	इसी तरह	उस से

مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ

और वह रोके	अच्छे कामों का	और वह हुक्म दे	भलाई	तरफ़	वह बुलाए	एक जमाअ़त	तुम से (में)

عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ

उन की तरह जो	और न हो जाओ	104	कामयाब होने वाले	वह	और यही लोग	बुराई से

تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	और यही लोग	वाज़ेह हुक्म	उन के पास आगए	कि	उस के बाद	और बाहम इख़्तिलाफ़ करने लगे	मुतफ़र्रिक़ हो गए

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٥﴾ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ

बाज़ चेहरे	और सियाह होंगे	बाज़ चेहरे	सफ़ेद होंगे	दिन	105	बड़ा	अ़ज़ाब

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۫ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

अपने ईमान	बाद	क्या तुम ने कुफ़्र किया	उन के चेहरे	सियाह हुए	लोग	पस जो

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ

उन के चेहरे	सफ़ेद होंगे	वह लोग जो	और अलबत्ता	106	कुफ़्र करते	तुम थे	क्यों कि	अ़ज़ाब	तो चखो

فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٧﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ

अल्लाह की आयात	यह	107	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	अल्लाह की रहमत	सो - में

نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

108	जहान वालों के लिए	कोई ज़ुल्म	चाहता	और नहीं अल्लाह	ठीक ठीक	आप (स) पर	हम पढ़ते हैं वह

और तुम कैसे कुफ़्र करते हो जबकि तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम्हारे दरमियान उस का रसूल (स) मौजूद है, और जो कोई मज़बूती से पकड़ेगा अल्लाह (की रस्सी) को तो उसे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी गई। (101)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो)! अल्लाह से डरो जैसा कि उस से डरने का हक़ है और तुम हरगिज़ न मरना मगर (उस हाल में) कि तुम मुसलमान हो। (102)

और मज़बूती से पकड़ लो अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर और आपस में फूट न डालो, और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उस ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी तो तुम उस के फ़ज़्ल से भाई भाई हो गए, और तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे तो उस ने तुम्हें उस से बचा लिया, इसी तरह वह तुम्हारे लिए अपनी आयात वाज़ेह करता है ताकि तुम हिदायत पाओ। (103)

और चाहिए कि तुम में से एक जमाअ़त रहे, वह भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छे कामों का हुक्म दे और बुराई से रोके, और यही लोग कामयाब होने वाले हैं। (104)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो मुतफ़र्रिक़ हो गए और बाहम इख़्तिलाफ़ करने लगे उस के बाद कि उन के पास वाज़ेह हुक्म आगए, और यही लोग हैं जिन के लिए है अ़ज़ाब बहुत बड़ा। (105)

जिस दिन बाज़ चेहरे सफ़ेद होंगे और बाज़ चेहरे सियाह होंगे, पस जिन लोगों के सियाह हुए चेहरे (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान के बाद कुफ़्र किया? तो अब अ़ज़ाब चखो क्यों कि तुम कुफ़्र करते थे। (106)

और अलबत्ता जिन लोगों के चेहरे सफ़ेद होंगे वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वह उस में हमेशा रहेंगे। (107)

यह अल्लाह की आयात हैं, हम आप पर ठीक ठीक पढ़ते हैं, और अल्लाह जहान वालों पर कोई ज़ुल्म नहीं चाहता। (108)

ع ١١ ٨ ٢

وَلِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَاِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾

109	तमाम काम	लौटाए जाएंगे	और अल्लाह की तरफ़	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	और अल्लाह के लिए जो

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

अच्छे कामों का	तुम हुक्म करते हो	लोगों के लिए	भेजी गई	उम्मत	बेहतरीन	तुम हो

وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ

ईमान ले आते	और अगर	अल्लाह पर	और ईमान लाते हो	बुरे काम	से	और मना करते हो

اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ

और उन के अक्सर	ईमान वाले	उन से	उन के लिए	बेहतर	तो था	अहले किताब

الْفٰسِقُوْنَ ﴿١١٠﴾ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ قف

पीठ (जमा)	वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे	वह तुम से लड़ेंगे	और अगर	सताना	सिवाए	बिगाड़ सकेंगे तुम्हारा	हरगिज़ न	110	नाफ़रमान

ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا

जहां कहीं	ज़िल्लत	उन पर	चस्पां कर दी गई	111	उन की मदद न होगी	फिर

ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ

ग़ज़ब के साथ	वह लौटे	लोगों से	और उस (अ़हद)	अल्लाह से	उस (अ़हद)	सिवाए	वह पाए जाएं

مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا

थे	इस लिए कि वह	यह	मोहताजी	उन पर	और चस्पां कर दी गई	अल्लाह से (के)

يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ

यह	नाहक़	नबी (जमा)	और क़त्ल करते थे	अल्लाह की आयतें से	कुफ़्र करते

بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾ لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ

से (में)	बराबर	नहीं	112	हद से बढ़ जाते	और थे	उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस लिए

اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ

रात के औक़ात	अल्लाह की आयात	वह पढ़ते हैं	क़ाइम	एक जमाअ़त	अहले किताब

وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

आख़िरत	और दिन	अल्लाह पर	ईमान रखते हैं	113	सिजदा करते हैं	और वह

وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ

और वह दौड़ते हैं	बुरे काम	से	और मना करते हैं	अच्छी बात का	और हुक्म करते हैं

فِی الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا

वह करेंगे	और जो	114	नेकोकार (जमा)	से	और यही लोग	नेक काम	में

مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾

115	परहेज़गारों को	जानने वाला	और अल्लाह	तो हरगिज़ नाक़द्री न होगी उस की	नेकी	से (कोई)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और तमाम काम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (109)

तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए भेजी गई (पैदा की गई) तुम अच्छे कामों का हुक्म करते हो और बुरे कामों से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उन के लिए बेहतर था, उन में (कुछ) ईमान वाले हैं और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (110)

वह सताने के सिवा तुम्हारा हरगिज़ कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर वह तुम से लड़ेंगे तो वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे, फिर उन की मदद न होगी, (111)

उन पर ज़िल्लत चस्पां कर दी गई जहां कहीं वह पाए जाएं सिवाए उस के कि अल्लाह के अ़हद में आ जाएं और लोगों के अ़हद में, वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उन पर चस्पां कर दी गई मोहताजी, यह इस लिए कि वह अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे, यह इस लिए (था) कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ जाते थे। (112)

अहले किताब में सब बराबर नहीं, एक जमाअ़त (सीधी राह पर) क़ाइम है और रात के औक़ात में अल्लाह की आयात पढ़ते हैं और वह सिजदा करते हैं। (113)

वह ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और वह अच्छी बात का हुक्म करते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और वह नेक कामों में दौड़ते हैं, और यही लोग नेकोकारों में से हैं। (114)

और वह जो करेंगे कोई नेकी तो हरगिज़ उस की नाक़द्री न होगी, और अल्लाह परहेज़गारों को जानने वाला है। (115)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم

उन की औलाद	और न	उन के माल	उन से (के)	हरगिज़ काम न आएगा	कुफ़्र किया	वह लोग जो	बेशक

مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾

116	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	आग (दोज़ख़) वाले	और यही लोग	कुछ	अल्लाह से (के आगे)

مَثَلُ مَا يُنفِقُونَ فِي هَٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ

हवा	ऐसी - जैसे	दुनिया	ज़िन्दगी	इस	में	ख़र्च करते हैं	जो	मिसाल

فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا

और नहीं	फिर उस को हलाक कर दे	जानें अपनी	उन्हों ने ज़ुल्म किया	क़ौम	खेती	वह जा लगे	पाला	उस में

ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	117	वह ज़ुल्म करते हैं	अपनी जानें	बल्कि	ज़ुल्म किया उन पर अल्लाह

لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا ۖ وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ ۚ

तुम तक्लीफ़ पाओ	कि	वह चाहते हैं	ख़राबी	वह कमी नहीं करते	सिवाए-अपने	से	दोस्त (राज़दार)	न बनाओ

قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۖ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ

बड़ा	उन के सीने	छुपा हुआ	और जो	उन के मुँह	से	दुश्मनी	अलबत्ता ज़ाहिर हो चुकी

قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَا أَنتُمْ أُولَاءِ

वह लोग	सुन लो-तुम	118	अक़्ल रखते	तुम हो	अगर	आयात	तुम्हारे लिए	हम ने खोल कर बयान कर दिया

تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ ۖ وَإِذَا لَقُوكُمْ

वह तुम से मिलते हैं	और जब	सब	किताब पर	और तुम ईमान रखते हो	वह दोस्त रखते हैं तुम्हें	और नहीं	तुम दोस्त रखते हो उन को

قَالُوا آمَنَّا ۖ وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ

गुस्से	से	उंगलियां	तुम पर	वह काटते हैं	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए	कहते हैं

قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾

119	सीने वाली (दिल की बातें)	जानने वाला	बेशक अल्लाह	अपने गुस्से में	तुम मर जाओ	कह दीजिए

إِن تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا ۚ

उस से	वह खुश होते हैं	कोई बुराई	तुम्हें पहुँचे	और अगर	उन्हें बुरी लगती है	कोई भलाई	पहुँचे तुम्हें	अगर

وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۚ

कुछ	उन का फ़रेब	न बिगाड़ सकेगा तुम्हारा	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	और अगर

إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ ع وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ ١٢ ع ١١ ٣

अपने घर	से	आप (स) सुबह सवेरे निकले	और जब	120	घेरे हुए है	वह करते हैं	जो कुछ	बेशक अल्लाह

تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾

121	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	जंग के	ठिकाने	मोमिन (जमा)	बिठाने लगे

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हरगिज़ अल्लाह के आगे उन के माल और न उन की औलाद कुछ भी काम आएंगे, और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(116)**

उन की मिसाल जो ख़र्च करते हैं इस दुनिया में ऐसी है जैसे हवा हो, उस में पाला हो, वह जा लगे खेती को उस क़ौम की जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, फिर उस को तबाह कर दे, अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर खुद ज़ुल्म करते हैं। **(117)**

ऐ ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को राज़दार न बनाओ, वह तुम्हारी ख़राबी में कमी नहीं करते, वह चाहते हैं कि तुम तक्लीफ़ पाओ, (उन की) दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है उन के मुँह से, और जो उन के सीनों में छुपा हुआ है वह (उस से भी) बड़ा है, हम ने तुम्हारे लिए आयात खोल कर बयान कर दी हैं अगर तुम अक़्ल रखते हो। **(118)**

सुन लो! तुम वह लोग हो जो उन को दोस्त रखते हो और वह तुम्हें दोस्त नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो, और जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब अकेले होते हैं तो वह तुम पर गुस्से से उंगलियां चबाते हैं, कह दीजिए! तुम अपने गुस्से में मर जाओ, बेशक अल्लाह दिल की बातों को (खूब) जानने वाला है। **(119)**

अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है, और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह उस से खुश होते हैं, और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो, तुम्हारा न बिगाड़ सकेगा उन का फ़रेब कुछ भी, बेशक जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है। **(120)**

और जब आप सुबह सवेरे निकले अपने घर से, मोमिनों को जंग के मोर्चों पर बिठाने लगे, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। **(121)**

إِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَاۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ

और अल्लाह पर	उनका मददगार	और अल्लाह	हिम्मत हार दें	कि	तुम से	दो गिरोह	इरादा किया	जब

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ

कमज़ोर	जबकि तुम	बद्र में	मदद कर चुका तुम्हारी अल्लाह	और अलबत्ता	122	मोमिन	चाहिए भरोसा करें

فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिनों को	जब आप कहने लगे	123	शुक्रगुज़ार हो	ताकि तुम	तो डरो अल्लाह से

اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ

फ़रिश्ते	से	तीन हज़ार से	तुम्हारा रब	मदद करे तुम्हारी	कि	क्या काफ़ी नहीं तुम्हारे लिए

مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾ ؕ بَلٰٓىۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ

फ़ौरन-वह	से	और तुम पर आएं	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	अगर	क्यों नहीं	124	उतारे हुए

الربع
هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

125	निशान ज़दा	फ़रिश्ते	से	पाँच हज़ार	तुम्हारा रब	मदद करेगा तुम्हारी	यह

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ؕ

उस से	तुम्हारे दिल	और इस लिए कि इत्मीनान हो	तुम्हारे लिए	ख़ुशख़बरी	मगर (सिर्फ़)	उस को बनाया अल्लाह ने	और नहीं

وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾ ۙ لِيَقْطَعَ طَرَفًا

गिरोह	ताकि काट डाले	126	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह के पास	से	मगर (सिवाए)	मदद	और नहीं

مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٧﴾ لَيْسَ لَكَ

नहीं - आप (स) के लिए	127	नामुराद	तो वह लौट जाएं	उन्हें ज़लील करे	या	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	से

مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٢٨﴾

128	ज़ालिम (जमा)	क्यों कि वह	उन्हें अज़ाब दे	या	उन की	ख़्वाह तौबा क़ुबूल कर ले	कुछ	काम (दख़्ल)	से

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ

चाहे	जिस को	वह बख़्श दे	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	और अल्लाह के लिए जो

ع ١٣ / ٩ / ٤
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٩﴾ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

जो	ऐ	129	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	चाहे	जिस	और अज़ाब दे

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰٓوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ

और डरो अल्लाह से	दुगना हुआ (चौगना)	दुगना	सूद	न खाओ	ईमान लाए (ईमान वाले)

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾ ۚ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ

तैयार की गई	जो कि	आग	और डरो	130	फ़लाह पाओ	ताकि तुम

لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾ ۚ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ ۚ

132	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	और रसूल	अल्लाह	और हुक्म मानो तुम	131	काफ़िरों के लिए

जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें, और अल्लाह उन का मददगार था, और अल्लाह पर चाहिए कि मोमिन भरोसा करें। (122)

और अलबत्ता अल्लाह तुम्हारी बद्र में मदद कर चुका है जबकि तुम कमज़ोर (समझे जाते) थे, तो अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (123)

जब आप मोमिनों को कहते थे क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्तों से उतारे हुए। (124)

क्यों नहीं अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो, और वह (दुश्मन) तुम पर चढ़ आएं तो फ़ौरन तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करेगा पाँच हज़ार निशान ज़दा फ़रिश्तों से। (125)

और यह अल्लाह ने सिर्फ़ तुम्हारी ख़ुशख़बरी के लिए किया और इस लिए कि उस से तुम्हारे दिलों को इत्मीनान हो, और नहीं मदद मगर (सिर्फ़) अल्लाह के पास से है जो ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (126)

ताकि वह उन लोगों के एक गिरोह को काट डाले जिन्हों ने कुफ़्र किया या उन्हें ज़लील कर दे तो वह नामुराद लौट जाएं। (127)

आप (स) का इस में दख़्ल नहीं कुछ भी, ख़्वाह (अल्लाह) उन की तौबा क़ुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे क्यों कि वह ज़ालिम हैं। (128)

और अल्लाह ही के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और जिस को चाहे बख़्श दे और अज़ाब दे जिस को चाहे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (129)

ईमान वालो! न खाओ सूद दुगना चौगना, और अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (130)

और डरो उस आग से जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (131)

और तुम अल्लाह और रसूल (स) का हुक्म मानो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (132)

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ

और दौड़ो	तरफ़	से	बख़्शिश	अपना रब	और जन्नत	उस का अर्ज़	आस्मान (जमा)

وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّآءِ

और ज़मीन	तैयार की गई	परहेज़गारों के लिए	133	जो लोग	ख़र्च करते हैं	ख़ुशी में

وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ

और तक्लीफ़	और पी जाते हैं	ग़ुस्सा	और माफ़ करते हैं	से	लोग

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا

और अल्लाह	दोस्त रखता है	एहसान करने वाले	134	और वह लोग जो	जब	वह करें	कोई बेहयाई	या	ज़ुल्म करें

اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ

अपने तईं	वह अल्लाह को याद करें	फिर बख़्शिश मांगें	अपने गुनाहों के लिए	और कौन	बख़्शता है	गुनाह

اِلَّا اللّٰهُ ۖ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

अल्लाह के सिवा	और न	वह अड़ें	पर	जो	उन्हों ने किया	और वह	जानते हैं	135

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ

यही लोग	उन की जज़ा	बख़्शिश	से	उन का रब	और बाग़ात

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ

बहती हैं	से	उस के नीचे	नहरें	हमेशा रहेंगे	उस में	और कैसा अच्छा

اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا

बदला	काम करने वाले	136	गुज़र चुके	तुम से पहले	तरीक़े (वाक़िआत)	तो चलो फिरो

فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾

ज़मीन में	फिर देखो	कैसा	हुआ	अन्जाम	झुटलाने वालों	137

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

यह	बयान	लोगों के लिए	और हिदायत	और नसीहत	परहेज़गारों के लिए	138

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

और सुस्त न पड़ो	और ग़म न खाओ	और तुम	ग़ालिब	अगर तुम हो	ईमान वाले	139

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ

अगर	तुम्हें पहुँचा	ज़ख़्म	तो अलबत्ता	पहुँचा	क़ौम	ज़ख़्म	उस जैसा	और यह	अय्याम

نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

हम बारी बारी बदलते हैं इस को	लोगों के दरमियान	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	जो लोग	ईमान लाए

وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٠﴾

और बनाए	तुम से	शहीद (जमा)	और अल्लाह	दोस्त नहीं रखता	ज़ालिम (जमा)	140

और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और जन्नत की तरफ़ जिस का अर्ज़ आस्मानों और ज़मीन (के बराबर) है, तैयार की गई है परहेज़गारों के लिए। (133)

जो ख़र्च करते हैं ख़ुशी (ख़ुशहाली) और तक्लीफ़ में और पी जाते हैं ग़ुस्सा और माफ़ कर देते हैं लोगों को, और अल्लाह दोस्त रखता है एहसान करने वालों को। (134)

और वह लोग जो बेहयाई करें या अपने तईं कोई ज़ुल्म कर बैठें तो वह अल्लाह को याद करें, फिर अपने गुनाहों के लिए बख़्शिश मांगें, और कौन गुनाह बख़्शता है अल्लाह के सिवा? और जो उन्हों ने (ग़लत) किया उस पर जानते बूझते न अड़ें। (135)

ऐसे ही लोगों की जज़ा उन के रब की तरफ़ से बख़्शिश और बाग़ात हैं जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, और कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का! (136)

गुज़र चुके हैं तुम से पहले तरीक़े (वाक़िआत) तो ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का! (137)

यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (138)

और तुम सुस्त न पड़ो और ग़म न खाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम ईमान वाले हो। (139)

अगर तुम को ज़ख़्म पहुँचा तो अलबत्ता पहुँचा है उस क़ौम को (भी) उस जैसा ही ज़ख़्म, और यह (ख़ुशी और ग़म के) दिन हैं जो हम लोगों के दरमियान बारी बारी बदलते रहते हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले उन लोगों को जो ईमान लाए और तुम में से (बाज़ को) शहीद बनाए (दरजए शहादत दे), और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (140)

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾

141	काफ़िर (जमा)	और मिटा दे	ईमान लाए	जो लोग	और ताकि पाक साफ़ कर दे अल्लाह

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا

जिहाद करने वाले	जो लोग	अल्लाह ने मालूम किया	और अभी नहीं	जन्नत	तुम दाख़िल होगे	कि	क्या तुम समझते हो?

مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ

से	मौत	तुम तमन्ना करते थे	और अलबत्ता	142	सब्र करने वाले	और मालूम किया	तुम में से

ع ١٤ ١٢ ٥ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾

143	देखते हो	और तुम	तो अब तुम ने उसे देख लिया	तुम उस से मिलो	कि	क़ब्ल

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ

रसूल (जमा)	उन से पहले	अलबत्ता गुज़रे	एक रसूल	मगर (तो)	मुहम्मद (स)	और नहीं

اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ

फिर जाए	और जो	अपनी एड़ियों पर	तुम फिर जाओगे	क़त्ल हो जाएं	या	वह वफ़ात पा लें	क्या फिर अगर

عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

144	शुक्र करने वाले	और जल्द जज़ा देगा अल्लाह	कुछ भी	तो हरगिज़ न बिगाड़ेगा अल्लाह का	अपनी एड़ियों पर

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ

मुक़र्ररा वक़्त	लिखा हुआ	अल्लाह के हुक्म से	बग़ैर	वह मरे	कि	किसी शख़्स के लिए	और नहीं

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ

चाहेगा	और जो	उस से	हम देंगे उस को	दुनिया	इनआम	चाहेगा	और जो

ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

145	शुक्र करने वाले	और हम जल्द जज़ा देंगे	उस से	हम देंगे उस को	आख़िरत	बदला

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا

सुस्त पड़े	पस न	बहुत	अल्लाह वाले	उन के साथ	लड़े	नबी	और बहुत से

لِمَاۤ اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ

और न दब गए	उन्हों ने कमज़ोरी की	और न	अल्लाह की राह	में	उन्हें पहुँचे	ब सबब- जो

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ

कि	सिवाए	उन का कहना	और न था	146	सब्र करने वाले	दोस्त रखता है	और अल्लाह

قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْۤ اَمْرِنَا

हमारे काम में	और हमारी ज़ियादती	हमारे गुनाह	बख़्शदे हम को	ऐ हमारे रब	उन्हों ने दुआ की

وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

147	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	और हमारी मदद फ़रमा	हमारे क़दम	और साबित रख

और ताकि अल्लाह पाक साफ़ कर दे उन लोगों को जो ईमान लाए और मिटा दे काफ़िरों को। (141)

क्या तुम यह समझते हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और अभी अल्लाह ने मालूम नहीं किया (इम्तिहान नहीं लिया) कि कौन तुम में से जिहाद करने वाले हैं और सब्र करने वाले हैं। (142)

और अलबत्ता तुम मौत से मिलने से क़ब्ल उस की तमन्ना करते थे, तो अब तुम ने उसे (मौत को) देख लिया और तुम उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हो। (143)

और मुहम्मद (स) तो एक रसूल हैं, अलबत्ता गुज़र चुके हैं उन से पहले बहुत से रसूल, फिर अगर वह वफ़ात पा लें या क़त्ल हो जाएं तो क्या तुम अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) लौट जाओगे? और जो अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फिर जाए तो वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा, और अल्लाह जल्द जज़ा देगा शुक्र करने वालों को। (144)

और किसी शख़्स के लिए (मुमकिन) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर मर जाए, लिखा हुआ है एक मुक़र्ररा वक़्त, और जो दुनिया का इनआम चाहेगा हम उसे उस में से दे देंगे, और जो चाहेगा आख़िरत का बदला हम उसे उस में से देंगे, और हम शुक्र करने वालों को जल्द जज़ा देंगे। (145)

और बहुत से नबी (हुए हैं) उन के साथ (मिल कर) बहुत से अल्लाह वाले लड़े, पस वह सुस्त न पड़े (उन मुसीबतों) के सबब जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुँची और न उन्हों ने कमज़ोरी (ज़ाहिर) की और न दब गए, और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। (146)

और उन का कहना न था उस के सिवाए कि उन्हों ने दुआ की: ऐ हमारे रब! हमें बख़्शदे हमारे गुनाह, और हमारी ज़ियादती हमारे काम में, और साबित रख हमारे क़दम और काफ़िरों की क़ौम पर हमारी मदद फ़रमा। (147)

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ

तो उन्हें दिया अल्लाह	इनआम	दुनिया	और अच्छा	इनआम-ए-आख़िरत

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا ع ١٥ ٥ ٦

और अल्लाह	दोस्त रखता है	एहसान करने वाले	148	ऐ	लोग जो	ईमान लाए

اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا

अगर तुम कहा मानोगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह तुम्हें फेर देंगे	पर	तुम्हारी एड़ियां	फिर तुम पलट जाओगे

خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

घाटे में	149	बल्कि अल्लाह	तुम्हारा मददगार	और वह	बेहतर	मददगार (जमा)	150

سَنُلْقِىْ فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا

अ़नक़रीब हम डाल देंगे	में	दिल (जमा)	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	रुअ़ब	इस लिए कि उन्हों ने शरीक किया

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ

अल्लाह का	जिस	नहीं उतारी	उस की	कोई सनद	और उन का ठिकाना	दोज़ख़

وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ

और बुरा	ठिकाना	ज़ालिम (जमा)	151	और अलबत्ता	सच्चा कर दिया तुम से अल्लाह	अपना वादा

اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ

जब	तुम क़त्ल करने लगे उन्हें	उस के हुक्म से	यहां तक कि	जब	तुम ने बुज़दिली की	और झगड़ा किया

فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ

काम में	और तुम ने नाफ़रमानी की	उस के बाद	जब तुम्हें दिखाया	जो	तुम चाहते थे

مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ

तुम से	जो चाहता था	दुनिया	और तुम से	जो चाहता था	आख़िरत

ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ

फिर	तुम्हें फेर दिया	उन से	ताकि तुम्हें आज़माए	और तहक़ीक़	माफ़ किया	तुम से (तुम्हें)

وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا

और न	तुम चढ़ते थे	जब	152	मोमिन (जमा)	पर	फ़ज़्ल करने वाला	और अल्लाह

تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِىْۤ اُخْرٰىكُمْ

मुड़ कर देखते थे	किसी को	और रसूल (स)	तुम्हें पुकारते थे	तुम्हारे पीछे से

فَاَثَابَكُمْ غَمًّا ۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ

फिर तुम्हें पहुँचाया	ग़म पर ग़म	ताकि न	तुम रंज करो	पर	जो तुम से निकल गया

وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾

और न	जो	तुम्हें पेश आए	और अल्लाह	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	153

तो अल्लाह ने उन्हें इन्आम दिया दुनिया का और आख़िरत का अच्छा इन्आम, और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (148)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों का कहा मानोगे तो वह तुम्हें एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फेर देंगे फिर तुम घाटे में पलट जाओगे। (149)

बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (150)

हम अ़नक़रीब काफ़िरों के दिलों में रुअ़ब डाल देंगे इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह का शरीक किया जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और बुरा ठिकाना है ज़ालिमों का। (151)

और अलबत्ता अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया जब तुम उन्हें उस के हुक्म से क़त्ल करने लगे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और काम में झगड़ा किया और उस के बाद नाफ़रमानी की जबकि तुम्हें दिखाया जो तुम चाहते थे, तुम में से कोई दुनिया चाहता था और तुम में से कोई आख़िरत चाहता था, फिर उस ने तुम्हें उन से पस्पा कर दिया ताकि तुम्हें आज़माए, और तहक़ीक़ उस ने तुम्हें माफ़ कर दिया, और अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़्ल करने वाला है। (152)

जब तुम (मुँह उठा कर) चढ़ते जाते थे और किसी को पीछे मुड़ कर न देखते थे और रसूल (स) तुम्हारे पीछे से तुम्हें पुकारते थे, फिर तुम्हें ग़म पर ग़म पहुँचा ताकि तुम रंज न करो उस पर जो (तुम्हारे हाथ से) निकल गया और न (उस पर) जो तुम्हें पेश आए, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (153)

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ

तुम में से	एक जमाअ़त	ढांक लिया	ऊँघ	अम्न	ग़म	बाद	तुम पर	उस ने उतारा	फिर

وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ

बे हक़ीक़त	अल्लाह के बारे में	वह गुमान करते थे	अपनी जानें	उन्हें फ़िक्र पड़ी थी	और एक जमाअ़त

ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ

काम	कि	आप कह दें	कुछ	काम	से	हमारे लिए	क्या	वह कहते थे	जाहिलियत	गुमान

كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ

अगर होता	वह कहते हैं	आप के लिए (पर)	ज़ाहिर नहीं करते	जो	अपने दिल	में	वह छुपाते हैं	तमाम - अल्लाह के लिए

لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ

अपने घर (जमा)	में	अगर तुम होते	आप कह दें	यहां	हम न मारे जाते	थोड़ा सा इख़्तियार	हमारे लिए

لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ

और ताकि आज़माए अल्लाह	अपनी क़त्लगाह (जमा)	तरफ़	मारा जाना	उन पर	लिखा था	ज़रूर निकल खड़े होते वह लोग

مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

जानने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे दिल	में	जो	और ताकि साफ़ कर दे	तुम्हारे सीनों में	जो

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ

आमने सामने हुईं दो जमाअ़तें	दिन	तुम में से	पीठ फेरेंगे	जो लोग	बेशक	154	सीनों वाले (दिलों के भेद)

اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ

उन से	माफ़ कर दिया अल्लाह	और अलबत्ता	जो उन्हों ने कमाया (आमाल)	बाज़ की वजह से	शैतान	दरहक़ीक़त उन को फिसला दिया

ع ١٦ ٧

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۵۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا

न हो जाओ	ईमान वालो (ईमान लाए)	जो लोग	ऐ	155	हिल्म वाला	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह

كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ

वह सफ़र करें ज़मीन (राह) में	जब	अपने भाइयों को	और वह कहते हैं	काफ़िर	उन लोगों की तरह

اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ

ताकि बना दे अल्लाह	और न मारे जाते	वह मरते	न	हमारे पास	अगर वह होते	जंग में हों	या

ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ

और मारता है	ज़िन्दा करता है	और अल्लाह	उन के दिल	में	हस्रत	यह - उस

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۵۶﴾ وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह की राह	में	तुम मारे जाओ	और अलबत्ता अगर	156	देखने वाला	तुम करते हो	जो कुछ	और अल्लाह

اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

157	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	और रहमत	अल्लाह (की तरफ़) से	यक़ीनन बख़्शिश	या तुम मर जाओ

फिर उस ने तुम पर ग़म के बाद अम्न ऊंघ (की सूरत में) उतारी, एक जमाअ़त को ढाँक लिया तुम में से, और एक जमाअ़त को अपनी जान की फ़िक्र पड़ी थी, वह अल्लाह के बारे में बे हक़ीक़त गुमान करते थे जाहिलियत के गुमान, वह कहते थे क्या कोई काम कुछ हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) है? आप (स) कह दें, कि तमाम काम अल्लाह के लिए (अल्लाह के इख़्तियार में) है, वह अपने दिलों में छुपाते हैं जो आप के लिए (आप पर) ज़ाहिर नहीं करते, वह कहते हैं अगर कुछ काम हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) होता तो हम यहां न मारे जाते, आप कह दें अगर तुम अपने घरों में होते तो जिन पर (जिन की क़िस्मत में) मारा जाना लिखा था वह ज़रूर निकल खड़े होते अपनी क़त्लगाहों की तरफ़, ताकि अल्लाह आज़माए जो तुम्हारे सीनों में है, और ताकि साफ़ कर दे जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह दिलों के भेद खूब जानने वाला है। (154)

बेशक जो लोग तुम में से पीठ फेर गए जिस दिन दो जमाअ़तें आमने सामने हुईं, दरहक़ीक़त उन्हें शैतान ने फिसलाया उन के बाज़ आमाल की वजह से, और अलबत्ता अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है। (155)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो काफ़िर हुए और वह कहते हैं अपने भाइयों को जब वह सफ़र करें ज़मीन में या जंग में शरीक हों, अगर वह होते हमारे पास तो वह न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह उस को हस्रत बना दे उन के दिलों में, और अल्लाह (ही) ज़िन्दा करता है और मारता है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखने वाला है। (156)

और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या तुम मर जाओ तो यक़ीनन बख़्शिश और रहमत है अल्लाह की तरफ़ से, (यह) उस से बेहतर है जो वह (दौलत) जमा करते हैं। (157)

और अगर तुम मर गए या मार दिए गए तो यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ इकट्ठे किए जाओगे। (158)

पस अल्लाह की रहमत (ही) से है कि आप (स) उन के लिए नरम दिल हैं, और अगर तुन्दख़ू सख़्त दिल होते तो वह आप (स) के पास से मुन्तशिर हो जाते, पस आप (स) माफ़ कर दें उन्हें और उन के लिए बख़्शिश मांगें, और काम में उन से मश्वरा कर लिया करें, फिर जब आप (स) (पुख़्ता) इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, बेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है। (159)

अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे उस के बाद, और चाहिए कि ईमान वाले अल्लाह पर भरोसा करें। (160)

और नबी के लिए (शायान) नहीं कि वह छुपाए, और जो छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज़ क़ियामत के दिन लाएगा, फिर पूरा पूरा पाएगा हर शख़्स जो उस ने कमाया (अमल किया) और वह ज़ुल्म नहीं किए जाएंगे। (161)

तो क्या जिस ने पैरवी की रज़ाए इलाही (अल्लाह की ख़ुशनूदी की) उस के मानिन्द है जो अल्लाह के ग़ुस्से के साथ लौटा? और उस का ठिकाना जहन्नम है, और (बहुत) बुरा ठिकाना है। (162)

उन के (मुख़्तलिफ़) दरजे हैं अल्लाह के पास, और वह जो कुछ करते हैं अल्लाह देखने वाला है। (163)

बेशक अल्लाह ने ईमान वालों (मोमिनों) पर एहसान किया जब उन में एक रसूल (स) भेजा उन में से, वह उन पर उस की आयतें पढ़ता है, और उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब ओ हिक्मत सिखाता है, और बेशक वह उस से क़ब्ल अलबत्ता खुली गुमराही में थे। (164)

क्या जब तुम्हें पहुँची कोई मुसीबत, अलबत्ता तुम उस से दो चंद पहुँचा चुके थे, तुम कहते हो यह कहां से आई? आप कह दें वह तुम्हारे अपने (ही) पास से, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (165)

وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ

रहमत	पस - से	158	तुम इकट्ठे किए जाओगे	यक़ीनन अल्लाह की तरफ़	तुम मार दिए गए	या	तुम मर गए	और अगर

مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۠

आप (स) के पास	से	तो वह मुन्तशिर हो जाते	सख़्त दिल	तुन्दख़ू	और अगर आप (स) होते	उन के लिए	नरम दिल	अल्लाह (की तरफ़) से

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ ۚ

काम	में	और मश्वरा करें उन से	उन के लिए	और बख़्शिश मांगें	उन से (उन्हें)	आप (स) माफ़ कर दें

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾

159	भरोसा करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह पर	तो भरोसा करें	आप (स) इरादा कर लें	फिर जब

اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِىْ

जो कि	वह	तो कौन?	वह तुम्हें छोड़ दे	और अगर	तुम पर	तो नहीं ग़ालिब आने वाला	अल्लाह	वह मदद करे तुम्हारी	अगर

يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ

था - है	और नहीं	160	ईमान वाले	चाहिए कि भरोसा करें	और अल्लाह पर	उस के बाद	वह तुम्हारी मदद करे

لِنَبِىٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۗ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ

क़ियामत के दिन	जो उस ने छुपाया	लाएगा	छुपाएगा	और जो	कि छुपाए	नबी के लिए

ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ

पैरवी की	तो क्या जिस	161	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह	उस ने कमाया	जो	हर शख़्स	पूरा पाएगा	फिर

رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۗ

जहन्नम	और उस का ठिकाना	अल्लाह के	ग़ुस्से के साथ	लौटा	मानिन्द - जो	अल्लाह	रज़ा (ख़ुशनूदी)

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

जो	देखने वाला	और अल्लाह	अल्लाह के पास	दरजे	वह - उन	162	ठिकाना	और बुरा

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

एक रसूल	उन में	जब भेजा	ईमान वाले (मोमिनीन)	पर	अल्लाह ने एहसान किया	अलबत्ता बेशक	163	वह करते हैं

مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

किताब	और उन्हें सिखाता है	और उन्हें पाक करता है	उस की आयतें	उन पर	वह पढ़ता है	उन की जानें (उन के दरमियान)	से

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾ النصف

164	खुली	गुमराही	अलबत्ता - में	उस से क़ब्ल	वह थे	और बेशक	और हिक्मत

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ۚ

कहां से यह?	तुम कहते हो	उस से दो चंद	अलबत्ता तुम ने पहुँचाई	कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँची	क्या जब

قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

165	क़ादिर	शै	हर	पर	बेशक अल्लाह	तुम्हारी जानें (अपने पास)	पास	से	वह	आप कह दें

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾ لا

166	ईमान वाले	और ताकि वह मालूम कर ले	तो अल्लाह के हुक्म से	दो जमाअतें	मुडभेड़ हुई	दिन	तुम्हें पहुँचा	और जो

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا

लड़ो	आओ	उन्हें	और कहा गया	मुनाफ़िक़ हुए	वह जो कि	और ताकि जान ले

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ۭ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنٰكُمْ ۭ

ज़रूर तुम्हारा साथ देते	जंग	अगर हम जानते	वह बोले	दिफ़ाअ करो	या	अल्लाह की राह	में

هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَىِٕذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ

अपने मुँह से	वह कहते हैं	ब निसबत ईमान	उन से	ज़ियादा क़रीब	उस दिन	कुफ़्र के लिए (कुफ़्र से)	वह

مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾ ج اَلَّذِيْنَ قَالُوْا

उन्हों ने कहा	वह लोग जो	167	वह छुपाते हैं	जो	खूब जानने वाला	और अल्लाह	उन के दिलों में	जो नहीं

لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ۭ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ

से	तुम हटा दो	कह दीजिए	वह न मारे जाते	वह हमारी मानते	अगर	और वह बैठ रहे	अपने भाइयों के बारे में

اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا

मारे गए	जो लोग	हरगिज़ ख़याल करो	और न	168	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	अपनी जानें

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾ لا

169	वह रिज़्क़ दिए जाते हैं	अपना रब	पास	ज़िन्दा (जमा)	बल्कि	मुर्दा (जमा)	अल्लाह का रास्ता	में

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ

नहीं	उन की तरफ़ से जो	और खुश वक़्त हैं	अपने फ़ज़्ल से	उन्हें अल्लाह ने दिया	से-जो	खुश

وقف لازم

يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾ م

170	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	यह कि नहीं	उन के पीछे	से	उन से	मिले

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ

ज़ाया नहीं करता	और यह कि अल्लाह	और फ़ज़्ल	अल्लाह	से	नेमत से	वह खुशियां मना रहे हैं

ع ١٦ / ١٧ / ٨

اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧١﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ

कि	बाद	और रसूल	अल्लाह का	क़बूल किया	जिन लोगों ने	171	ईमान वाले	अजर

ص ٢ ع — عند المتقدمين ١٢

اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾ ج

172	बड़ा	अजर	और परहेज़गारी की	उन में से	उन्हों ने नेकी की	उन के लिए जो	ज़ख़्म	पहुँचा उन्हें

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ

पस उन से डरो	तुम्हारे लिए	जमा किया है	लोग	कि	लोग	उन के लिए	कहा	वह लोग जो

فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾

173	कारसाज़	और कैसा अच्छा	हमारे लिए काफ़ी है अल्लाह	और उन्हों ने कहा	ईमान	तो ज़ियादा हुआ उन का

और तुम्हें जो (तक्लीफ़) पहुँची जिस दिन दो जमाअतों में मुडभेड़ हुई तो अल्लाह के हुक्म से (पहुँची) ताकि वह मालूम कर ले ईमान वालों को। (166)

और ताकि जान ले उन लोगों को जो मुनाफ़िक़ हुए, और उन्हें कहा गयाः आओ! अल्लाह की राह में लड़ो या दिफ़ाअ करो, तो वह बोले अगर हम जंग जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब थे ब निसबत ईमान के, वह अपने मुँह से कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, और अल्लाह खूब जानने वाला है जो वह छुपाते हैं। (167)

वह लोग जिन्हों ने अपने भाइयों के बारे में कहा और खुद बैठ रहे अगर वह हमारी बात मानते तो वह न मारे जाते, कह दीजिए! तुम अपनी जानों से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (168)

जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें हरगिज़ ख़याल न करो मुर्दा, बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के पास से वह रिज़्क़ पाते हैं। (169)

खुश हैं उस से जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया, और वह उन लोगों की तरफ़ से खुश वक़्त हैं जो नहीं मिले उन से उन के पीछे, उन पर न कोई ख़ौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे। (170)

वह खुशियां मना रहे हैं अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल से, और यह कि अल्लाह ज़ाया नहीं करता ईमान वालों का अजर। (171)

जिन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल का (हुक्म) क़बूल किया उस के बाद कि उन्हें ज़ख़्म पहुँचा, उन में से जिन लोगों ने नेकी और परहेज़गारी की उन के लिए बड़ा अजर है। (172)

जिन्हें लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के लिए सामान) जमा कर लिया है, पस उन से डरो तो उन का ईमान ज़ियादा हुआ, और उन्हों ने कहा हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वह कैसा अच्छा कारसाज़ है! (173)

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا

और उन्हों ने पैरवी की	कोई बुराई	उन्हें नहीं पहुँची	और फ़ज़्ल	अल्लाह	से	नेमत के साथ	फिर वह लौटे

رِضْوَانَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ

शैतान	यह तुम्हें	इस के सिवा नहीं	174	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	अल्लाह की रज़ा

يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

175	ईमान वाले	तुम हो	अगर	और डरो मुझ से	उन से डरो	सो न	अपने दोस्त	डराता है

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ

कुछ	अल्लाह	हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे	यक़ीनन वह	कुफ़्र में	दौड़ धूप करते हैं	जो लोग	आप को ग़मगीन करें	और न

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾

176	बड़ा	अज़ाब	और उन के लिए	आख़िरत	में	कोई हिस्सा	उन को	दे	कि न	चाहता है अल्लाह

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ

और उन के लिए	कुछ	बिगाड़ सकते अल्लाह का	हरगिज़ नहीं	ईमान के बदले	कुफ़्र	उन्हों ने मोल लिया	वह लोग जो	बेशक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ

बेहतर	उन्हें	हम ढील देते हैं	यह कि	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	हरगिज़ गुमान करें	और न	177	दर्दनाक	अज़ाब

لِّاَنْفُسِهِمْ ۭ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾

178	ज़लील करने वाला	अज़ाब	और उन के लिए	गुनाह	ताकि वह बढ़ जाएं	उन्हें	हम ढील देते हैं	दरहक़ीक़त	उन के लिए

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى

यहां तक कि	उस पर	तुम	जो	पर	ईमान वाले	कि छोड़े	अल्लाह	नहीं है

يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ

ग़ैब	पर	कि तुम्हें ख़बर दे	अल्लाह	और नहीं है	पाक	से	नापाक	जुदा कर दे

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ

और उस के रसूल	अल्लाह पर	तो तुम ईमान लाओ	वह चाहे	जिस को	अपने रसूल	से	चुन लेता है	और लेकिन अल्लाह

وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ

हरगिज़ ख़याल करें	और न	179	बड़ा	अजर	तो तुम्हारे लिए	और परहेज़गारी करो	तुम ईमान लाओ	और अगर

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ

उन के लिए	बेहतर	वह	अपने फ़ज़्ल से	उन्हें दिया अल्लाह ने	में-जो	बुख़्ल करते हैं	जो लोग

بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۭ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

क़ियामत	दिन	उस में	उन्हों ने बुख़्ल किया	जो	अनक़रीब तौक़ पहनाया जाएगा	उन के लिए	बुरा	वह	बल्कि

وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ ع ١٨ ٩ ٩

180	बाख़बर	जो तुम करते हो	और अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए मीरास

फिर वह लौटे अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल के साथ, उन्हें कोई बुराई न पहुँची, और उन्हों ने पैरवी की रज़ाए इलाही की, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (174)

इस के सिवा नहीं कि शैतान तुम्हें डराता है अपने दोस्तों से, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (175)

और आप को ग़मगीन न करें वह लोग जो कुफ़्र में दौड़ धूप करते हैं, यक़ीनन वह हरगिज़ अल्लाह का न बिगाड़ सकेंगे कुछ, अल्लाह चाहता है कि उन को आख़िरत में कोई हिस्सा न दे, और उन के लिए अज़ाब है बड़ा। (176)

बेशक जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया वह हरगिज़ नहीं बिगाड़ सकते अल्लाह का कुछ, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (177)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह हरगिज़ गुमान न करें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं यह उन के लिए बेहतर है, दरहक़ीक़त हम उन्हें ढील देते हैं ताकि वह गुनाह में बढ़ जाएं, और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (178)

अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि ईमान वालों को (इस हाल पर) छोड़ दे जिस पर तुम हो यहां तक कि नापाक को पाक से जुदा कर दे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब की ख़बर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिस को चाहे चुन लेता है, तो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बड़ा अजर है। (179)

और वह लोग हरगिज़ यह ख़याल न करें जो उस (माल) में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया कि वह बेहतर है उन के लिए, बल्कि वह उन के लिए बुरा हे, जिस (माल) में उन्हों ने बुख़्ल किया अनक़रीब क़ियामत के दिन तौक़ (बना कर) पहनाया जाएगा, और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (180)

وقف لازم

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ

मालदार	और हम	फ़क़ीर	कि अल्लाह	कहा	जिन लोगों ने	क़ौल (बात)	अलबत्ता सुन लिया अल्लाह ने

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ

नाहक़	नबी (जमा)	और उन का क़त्ल करना	जो उन्हों ने कहा	अब हम लिख रखेंगे

وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

आगे भेजा	बदला-जो	यह	181	जलाने वाला	अ़ज़ाब	तुम चखो	और हम कहेंगे

اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا

कहा	जिन लोगों ने	182	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ

اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا

वह लाए हमारे पास	यहां तक कि	किसी रसूल पर	हम ईमान लाएं	कि न	हम से	अ़हद किया	कि अल्लाह

بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ

निशानियों के साथ	मुझ से पहले	बहुत से रसूल	अलबत्ता तुम्हारे पास आए	आप कह दें	आग	जिसे खा ले	क़ुरबानी

وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾

183	सच्चे	तुम हो	अगर	तुम ने उन्हें क़त्ल किया	फिर क्यों	तुम कहते हो	और उस के साथ जो

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ

वह आए	आप से पहले	बहुत से रसूल	झुटलाए गए	तो अलबत्ता	वह झुटलाएं आप (स) को	फिर अगर

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۭ

मौत	चखना	जान	हर	184	रौशन	और किताब	और सहीफ़े	खुली निशानियों के साथ

وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ فَمَنْ

फिर जो	क़ियामत के दिन	तुम्हारे अजर	पूरे पूरे मिलेंगे	और बेशक

زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ

दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं	पस मुराद को पहुँचा	जन्नत	और दाख़िल किया गया	दोज़ख़	से	दूर किया गया

اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۣ

और अपनी जानें	अपने माल	में	तुम ज़रूर आज़माए जाओगे	185	धोका	सौदा	सिवाए

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जिन्हें	से	और ज़रूर सुनोगे

وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۭ

बहुत	दुख देने वाली	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और-से

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾

186	काम (जमा)	हिम्मत	से	यह	तो बेशक	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	और अगर

अलबत्ता अल्लाह ने उन की बात सुन ली जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह फ़क़ीर है और हम मालदार हैं। अब हम लिख रखेंगे जो उन्हों ने कहा और उन का नबियों को नाहक़ क़त्ल करना, और कहेंगेः चखो जलाने वाला अ़ज़ाब। (181)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (182)

जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह ने हम से अ़हद कर रखा है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं यहां तक कि वह हमारे पास क़ुरबानी लाए जिसे आग खा ले, आप (स) कह दें अलबत्ता तुम्हारे पास मुझ से पहले बहुत से रसूल आए निशानियों के साथ और उस के साथ भी जो तुम कहते हो, फिर क्यों तुम ने उन्हें क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो, (183)

फिर अगर वह आप को झुटलाएं तो अलबत्ता झुटलाए गए हैं आप (स) से पहले बहुत से रसूल जो आए खुली निशानियों के साथ, और सहीफ़े और रौशन किताब (ले कर)। (184)

हर जान को मौत (का ज़ाइक़ा) चखना है, और क़ियामत के दिन तुम्हारे अजर पूरे पूरे मिलेंगे, फिर जो कोई दोज़ख़ से दूर किया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया पस वह मुराद को पहुँचा, और दुनिया की ज़िन्दगी (कुछ) नहीं एक धोके के सौदे के सिवा। (185)

तुम अपने मालों और अपनी जानों में ज़रूर आज़माए जाओगे, और तुम ज़रूर सुनोगे उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और मुश्रिकों से (भी) दुख देने वाली (बातें) बहुत सी, और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो तो बेशक यह बड़े हिम्मत के कामों में से है। (186)

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ

उसे ज़रूर बयान कर देना	किताब दी गई	वह लोग जिन्हें	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और जब

لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ

हासिल की उस के बदले	अपनी पीठ (जमा)	पीछे	तो उन्हों ने उसे फेंक दिया	छुपाना उसे	और न	लोगों के लिए

ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	आप हरगिज़ न समझें	187	वह ख़रीदते हैं	तो कितना बुरा है जो	थोड़ी	क़ीमत

يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا

उस पर जो	उन की तारीफ़ की जाए	कि	और वह चाहते हैं	उन्हों ने किया	उस पर जो	ख़ुश होते हैं

لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अ़ज़ाब	से	रिहा शुदा	समझें आप उन्हें	पस न	उन्हों ने नहीं किया

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए बादशाहत	188	दर्दनाक	अ़ज़ाब

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۸۹﴾ اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ١٩ ع ٩ ١٠

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदाइश	में	बेशक	189	क़ादिर	हर शै	पर

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾

190	अ़क़्ल वालों के लिए	निशानियां हैं	और दिन	रात	और आना जाना

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ

अपनी करवटें	और पर	और बैठे	खड़े	याद करते हैं अल्लाह को	जो लोग

وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا

नहीं	ऐ हमारे रब	और ज़मीन	आस्मानों	पैदाइश में	और वह ग़ौर करते हैं

خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾

191	आग (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	तू हमें बचा ले	तू पाक है	बे मक़सद	यह	तू ने पैदा किया

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिमों के लिए	और नहीं	तू ने उस को रुसवा किया	तो ज़रूर	आग (दोज़ख़)	दाख़िल किया	जो-जिस	बेशक तू	ऐ हमारे रब

مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِىْ

पुकारता है	पुकारने वाला	सुना	बेशक हम ने	ऐ हमारे रब	192	मददगार	कोई

لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا

हमें	तो बख़्श दे	ऐ हमारे रब	सो हम ईमान लाए	अपने रब पर	कि ईमान ले आओ	ईमान के लिए

ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾

193	नेकों के साथ	और हमें मौत दे	हमारी बुराइयां	और दूर कर दे हम से	हमारे गुनाह

और (याद करो) जब अल्लाह ने अहले किताब से अ़हद लिया कि तुम उसे लोगों के लिए ज़रूर बयान करना और न उसे छुपाना, उन्हों ने उसे अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उस के बदले थोड़ी क़ीमत हासिल की, तो कितना बुरा है जो वह ख़रीदते हैं! (187)

आप हरगिज़ न समझें जो लोग ख़ुश होते हैं जो उन्हों ने किया (अपने किए पर) और चाहते हैं कि उस पर उन की तारीफ़ की जाए जो उन्हों ने नहीं किया, पस आप (स) उन्हें रिहा शुदा न समझें अ़ज़ाब से, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (188)

और अल्लह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह हर शै पर क़दिर है। (189)

बेशक पैदाइश में आस्मानों की और ज़मीन की, और रात दिन के आने जाने में अ़क़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (190)

जो लोग अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर याद करते हैं, और ग़ौर करते हैं आस्मानों की और ज़मीन की पैदाइश में, ऐ हमारे रब! तू ने यह बेमक़सद पैदा नहीं किया, तू पाक है, तू बचा ले हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से। (191)

ऐ हमारे रब! तू ने जिस को दोज़ख़ में दाख़िल किया तो ज़रूर तू ने उस को रुसवा किया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (192)

ऐ हमारे रब! बेशक हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़ पुकारता है कि अपने रब पर ईमान ले आओ, सो हम ईमान लाए, ऐ हमारे रब! तो हमें बख़्श दे हमारे गुनाह, और हम से हमारी बुराइयां दूर कर दे, और हमें नेकों के साथ मौत दे। (193)

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

क़ियामत के दिन	और न रुसवा कर हमें	अपने रसूल (जमा)	पर (ज़रीआ)	तू ने हम से वादा किया	जो	और हमें दे	ऐ हमारे रब

اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ

मेहनत	ज़ाया नहीं करता	कि मैं	उन का रब	उन के लिए	पस क़ुबूल की	194	वादा	नहीं ख़िलाफ़ करता	बेशक तू

عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

बाज़ से (आपस में)	तुम में से बाज़	या औरत	मर्द से	तुम में से	कोई मेहनत करने वाला

فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِىْ سَبِيْلِىْ

मेरी राह में	और सताए गए	अपने शहरों	से	और निकाले गए	उन्हों ने हिज्रत की	सो लोग

وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ

और ज़रूर उन्हें दाख़िल करूँगा	उन की बुराइयां	उन से	मैं ज़रूर दूर करूँगा	और मारे गए	और लड़े

جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के पास (तरफ़)	से	सवाब	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं	बाग़ात

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	चलना फिरना	न धोका दे आप (स) को	195	सवाब	अच्छा	उस के पास	और अल्लाह

فِى الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ؕ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ قف ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ

दोज़ख़	उन का ठिकाना	फिर	थोड़ा	फ़ाइदा	196	शहर (जमा)	में

وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ

बहती हैं	बाग़ात	उन के लिए	अपना रब	डरते रहे	जो लोग	लेकिन	197	बिछौना (आराम गाह)	और कितना बुरा

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا

और जो	अल्लाह के पास	से	मेहमानी	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से

الثلثة
عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ

बाज़ वह जो	अहले किताब	से	और बेशक	198	नेक लोगों के लिए	बेहतर	अल्लाह के पास

يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ

अल्लाह के आगे	आजिज़ी करते हैं	उन की तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं

لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰۤئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ

उन का अजर	उन के लिए	यही लोग	थोड़ा	मोल	अल्लाह की आयतों का	मोल नहीं लेते

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا

तुम सब्र करो	ईमान वालो	ऐ	199	हिसाब	तेज़	बेशक अल्लाह	उन का रब	पास

ع ٢٠ ١١ ١١
وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا قف وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾ ع

200	मुराद को पहुँचो	ताकि तुम	और डरो अल्लाह से	और जंग की तैयारी करो	और मुक़ाबले में मज़बूत रहो

ऐ हमारे रब! और हमें दे जो तू ने अपने रसूलों के ज़रीए हम से वादा किया और हमें क़ियामत के दिन रुसवा न कर, बेशक तू नहीं ख़िलाफ़ करता (अपना) वादा। (194)

पस उन के रब ने (उन की दुआ) क़ुबूल की कि मैं किसी मेहनत करने वाले की मेहनत ज़ाया नहीं करता तुम में से मर्द हो या औरत, तुम आपस में (एक हो), सो जिन लोगों ने हिज्रत की और अपने शहरों से निकाले गए, और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए, मैं उन की बुराइयां उन से ज़रूर दूर करदूँगा और उन्हें बाग़ात में दाख़िल करूँगा, बहती हैं जिन के नीचे नहरें, (यह) अल्लाह की तरफ़ से सवाब है, और अल्लाह के पास अच्छा सवाब है। (195)

शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना आप (स) को धोका न दे। (196)

(यह) थोड़ा सा फ़ाइदा है, फिर उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वह कितनी बुरी आराम गाह है? (197)

जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, मेहमानी है अल्लाह के पास से, और जो अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए बेहतर है। (198)

और बेशक अहले किताब में से बाज़ वह हैं जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया, अल्लाह के आगे आजिज़ी करते हैं, अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा मोल नहीं लेते, यही लोग हैं उन के लिए उन के रब के पास अजर है, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (199)

ऐ ईमान वालो! तुम सब्र करो, और मुक़ाबले में मज़बूत रहो, और जंग की तैयारी करो, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम मुराद को पहुँचो। (200)

آيَاتُهَا ١٧٦ ❀ (٤) سُوْرَةُ النِّسَآءِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

रुकूआत 24 | (4) सूरतुन निसा (औरतें) | आयात 176

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

जान	से	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	अपना रब	डरो	लोगो	ऐ

وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا

बहुत	मर्द (जमा)	दोनों से	और फैलाए	जोड़ा उस का	उस से	और पैदा किया	एक

وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ

और रिश्ते	उस से (उस के नाम पर)	आपस में मांगते हो	वह जो	और अल्लाह से डरो	और औरतें

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝١ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ

उन के माल	यतीम (जमा)	और दो	1	निगहबान	तुम पर	है	बेशक अल्लाह

وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ

उन के माल	खाओ	और न	पाक से	नापाक	बदलो	और न

اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ۝٢ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا

कि न	तुम डरो	और अगर	2	बड़ा	गुनाह	है	बेशक	अपने माल तरफ़ (साथ)

تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ

तुम्हें	पसन्द हो	जो	तो निकाह कर लो	यतीमों	में	इन्साफ़ कर सकोगे

مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا

इन्साफ़ कर सकोगे	कि न	तुम्हें अन्देशा हो	फिर अगर	और चार, चार	और तीन, तीन	दो, दो	औरतें	से

فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝٣ ؕ

3	झुक पड़ो	कि न	क़रीब तर	यह	लौंडी जिस के तुम मालिक हो	जो	या	तो एक ही

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ

तुम को	खुशी से छोड़ दें	फिर अगर	खुशी से	उन के मेहर	औरतें	और दे दो

عَنْ شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ۝٤ وَلَا تُؤْتُوا

दो	और न	4	मज़ेदार, खुशगवार	तो उसे खाओ	दिल से	उस से	कुछ

السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ

और उन्हें खिलाते रहो	सहारा	तुम्हारे लिए	अल्लाह ने बनाया	जो	अपने माल	बेअ़क़्ल (जमा)

فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٥

5	मअ़रूफ़	बात	उन से	और कहो	और उन्हें पहनाते रहो	उस में

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान (आदम अ़) से पैदा किया और उसी से उस का जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से फैलाए बहुत से मर्द और औ़रतें, और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर तुम आपस में मांगते हो और (ख़याल रखो) रिश्तों का, बेशक अल्लाह है तुम पर निगहबान। (1)

और यतीमों को उन के माल दो और न बदलो नापाक (हराम) को पाक (हलाल) से, और उन के माल न खाओ अपने मालों के साथ (मिला कर), बेशक यह बड़ा गुनाह है। (2)

और अगर तुम को डर हो कि यतीम (के हक़) में इन्साफ़ न कर सकोगे तो निकाह कर लो जो औ़रतें तुम्हें भली लगें, दो दो और तीन तीन और चार चार, फिर अगर तुम्हें अन्देशा हो कि इन्साफ़ न कर सकोगे तो एक ही, या जिस लौंडी के तुम मालिक हो, यह उस के क़रीब है कि न झुक पड़ोगे। (3)

और औ़रतों को उन के मेहर ख़ुशी से दे दो, फिर अगर वह ख़ुशी से तुम्हें छोड़ दें उस में से कुछ तो उसे मज़ेदार ख़ुशगवार समझ कर खाओ। (4)

और न दो बेअ़क़्लों को अपने माल जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए सहारा (गुज़रान का ज़रीआ़) बनाया है और उन्हें उस से खिलाते और पहनाते रहो, और कहो उन से मअ़रूफ़ बात। (5)

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ

तुम पाओ	फिर अगर	निकाह	वह पहुँचें	जब	यहां तक कि	यतीम (जमा)	और आज़माते रहो

مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ

वह खाओ	और न	उन के माल	उन के	तो हवाले कर दो	सलाहियत	उन में

اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا

ग़नी	हो	और जो	वह बड़े हो जाएंगे	कि	और जल्दी जल्दी	ज़रूरत से ज़ियादा

فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ

दस्तूर के मुताबिक़	तो खाए	हाजत मन्द	हो	और जो	बचता रहे

فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ

उन पर	तो गवाह कर लो	उन के माल	उन के	हवाले करो	फिर जब

وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝٦ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ

छोड़ा	उस से जो	हिस्सा	मर्दों के लिए	6	हिसाब लेने वाला	अल्लाह	और काफ़ी

الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا

उस से जो	हिस्सा	और औरतों के लिए	और क़रावतदार	माँ बाप

تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ

ज़ियादा	या	उस से	थोड़ा	उस में से	और क़रावतदार	माँ बाप	छोड़ा

نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝٧ وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ

तक़सीम के वक़्त	हाज़िर हों	और जब	7	मुक़र्रर किया हुआ	हिस्सा

اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ

उस से	तो उन्हें खिला दो (दे दो)	और मिस्कीन	और यतीम	रिश्तेदार

وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٨ وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ

वह लोग	और चाहिए कि डरें	8	अच्छी	बात	उन से	और कहो

لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا

उन्हें फ़िक्र हो	नातवां	औलाद	अपने पीछे	से	छोड़ जाएं	अगर

عَلَيْهِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٩

9	सीधी	बात	और चाहिए कि कहें	पस चाहिए कि वह डरें अल्लाह से	उन का

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا

उस के सिवा कुछ नहीं	ज़ुल्म से	यतीमों	माल	खाते हैं	जो लोग	बेशक

ع ١٠ ١٢ يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۭ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝١٠

10	आग (दोज़ख़)	और अनक़रीब दाख़िल होंगे	आग	अपने पेट	में	वह भर रहे हैं

और यतीमों को आज़माते रहो यहां तक कि वह निकाह की उम्र को पहुँच जाएं, फिर अगर उन में सलाहियत (हुस्ने तदबीर) पाओ तो उन के माल उन के हवाले कर दो, और उन का माल न खाओ ज़रूरत से ज़ियादा और जल्दी (इस ख़याल से) कि वह बड़े हो जाएंगे, और जो ग़नी हो वह (माले यतीम से) बचता रहे, और जो हाजत मन्द हो वह दस्तूर के मुताबिक़ खाए, फिर जब उन के माल उन के हवाले करो तो उन पर गवाह कर लो, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (6)

मर्दों के लिए हिस्सा है उस में से जो माँ बाप ने और क़रावतदारों ने छोड़ा, और औरतों के लिए हिस्सा है उस में से जो छोड़ा माँ बाप ने और क़रावतदारों ने, ख़ाह थोड़ा हो या ज़ियादा, हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है। (7)

और जब हाज़िर हों तक़सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन तो उस में से उन्हें भी (कुछ) दे दो और कहो उन से अच्छी बात। (8)

और चाहिए कि वह लोग डरें कि अगर वह छोड़ जाएं अपने पीछे नातवां औलाद तो उन्हें उन के तअ़ल्लुक़ से कैसा कुछ डर होता, पस चाहिए कि वह अल्लाह से डरें और चाहिए कि बात कहें सीधी। (9)

बेशक जो लोग ज़ुल्म से यतीमों का माल खाते हैं, कुछ नहीं बस वह अपने पेटों में आग भर रहे हैं, और अ़नक़रीब दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। (10)

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ

हों	फिर अगर	दो औरतें	हिस्सा	मानिंद (बराबर)	मर्द को	तुम्हारी औलाद	में	तुम्हें वसीयत करता है अल्लाह

نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا

तो उस के लिए	एक	हो	और अगर	जो छोड़ा (तरका)	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो	ज़ियादा	औरतें

النِّصْفُ ۭ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ

अगर हो	छोड़ा (तरका)	उस से जो	छटा हिस्सा (1/6)	उन दोनों में से	हर एक के लिए	और माँ बाप के लिए	निस्फ़ (1/2)

لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ

तिहाई (1/3)	तो उस की माँ का	माँ बाप	और उस के वारिस हों	उस की औलाद	न हो	फिर अगर	उस की औलाद

فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ

वसीयत	बाद	से	छटा (1/6)	तो उस की माँ का	कई भाई बहन	उस के हों	फिर अगर

يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۭ اٰبَاۗؤُكُمْ وَاَبْنَاۗؤُكُمْ ۚ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ

नज़दीक तर तुम्हारे लिए	उन में से कौन	तुम को नहीं मालूम	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप	या क़र्ज़	उस की वसीयत की हो

نَفْعًا ۭ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١﴾

11	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह का	हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है	नफ़ा

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ

हो	फिर अगर	उन की कोई औलाद	न हो	अगर	तुम्हारी बीवियां	जो छोड़ मरें	आधा (1/2)	और तुम्हारे लिए

لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ

उस की	वह वसीयत कर जाएं	वसीयत	बाद	उस में से जो वह छोड़ें	चौथाई (1/4)	तो तुम्हारे लिए	उन की औलाद

اَوْ دَيْنٍ ۭ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ

फिर अगर	तुम्हारी औलाद	न हो	अगर	तुम छोड़ जाओ	उस में से जो	चौथाई (1/4)	और उन के लिए	या क़र्ज़

كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ

वसीयत	बाद	से	उस में से जो तुम छोड़ जाओ	आठवां (1/8)	तो उन के लिए	औलाद	हो तुम्हारी

تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۭ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ

या औरत	जिस का बाप बेटा न हो	मीरास हो	ऐसा मर्द	हो	और अगर	या क़र्ज़	उस की	तुम वसीयत करो

وَّلَهٗٓ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ

ज़ियादा	हों	फिर अगर	छटा (1/6)	उन में से हर एक	तो तमाम के लिए	या बहन	भाई	और उस

مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاۗءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ

जिस की वसीयत की जाए	वसीयत	उस के बाद	तिहाई (1/3) में	शरीक	तो वह सब	उस से (एक से)

اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَاۗرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

12	हिल्म वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अल्लाह से	हुक्म	नुक़्सान दह न हो	या क़र्ज़

अल्लाह तुम्हें वसीयत करता है तुम्हारी औलाद (के बारे) में, मर्द का हिस्सा दो औ़रतों के बराबर है, फिर अगर औरतें हों दो से ज़ियादा तो उन के लिए (उस में से) दो तिहाई है जो (वारिस ने) छोड़ा, और अगर एक ही हो तो उस के लिए निस्फ़ है, और उस के माँ बाप के लिए दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है उस में से जो (मय्यत ने) छोड़ा अगर उस की औलाद हो। फिर अगर उस की औलाद न हो और माँ बाप ही उस के वारिस हों तो उस की माँ का तिहाई हिस्सा है, फिर अगर उस (मय्यत) के कई भाई बहन हों तो उस की माँ का छटा हिस्सा है उस वसीयत के बाद जो वह कर गया या (बाद अदाए) क़र्ज़, तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तो तुम को नहीं मालूम उन में से कौन तुम्हारे लिए नफ़ा (पहुँचाने में) नज़दीक तर है, यह अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा है, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। **(11)**

और तुम्हारे लिए आधा है जो छोड़ मरें तुम्हारी बीवियां अगर उन की कोई औलाद न हो, फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए उस में से जो वह छोड़ें चौथाई हिस्सा है वसीयत के बाद जिस की वह वसीयत कर जाएं या (बाद अदाए) क़र्ज़, और उस में से उन के लिए चौथाई हिस्सा है जो तुम छोड़ जाओ अगर न हो तुम्हारी औलाद, फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो जो तुम छोड़ जाओ उस में से उन का आठवां (1/8) हिस्सा है उस वसीयत (के निकालने) के बाद जो तुम वसीयत कर जाओ या (अदाए) क़र्ज़, और अगर ऐसे मर्द की मीरास है या ऐसी औ़रत की जो "कलाला" है (उस का बाप बेटा नहीं) और उस के भाई बहन हों तो उन दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है, फिर अगर वह एक से ज़ियादा हों तो वह सब शरीक हैं एक तिहाई में उस वसीयत के बाद जो वसीयत कर दी जाए या (बाद अदाए) क़र्ज़ (बशर्ते यह कि किसी को) नुक़्सान न पहुँचाया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिल्म वाला है। **(12)**

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ

बाग़ात	वह उसे दाख़िल करेगा	और उस का रसूल	अल्लाह की इताअ़त करे	और जो	अल्लाह की (मुक़र्रर कर दह) हदें	यह

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ

कामयाबी	और यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं

الْعَظِيْمُ ﴿١٣﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ

उस की हदें	और बढ़ जाए	और उस का रसूल	अल्लाह	नाफ़रमानी करे	और जो	13	बड़ी

ع ٢ ١٣ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۠ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٤﴾ وَالّٰتِيْ

और जो औ़रतें	14	ज़लील करने वाला	अ़ज़ाब	और उस के लिए	उस में	हमेशा रहेगा	आग	वह उसे दाख़िल करेगा

يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَاۗىِٕكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ

उन पर	तो गवाह लाओ	तुम्हारी औ़रतें	से	बदकारी	मुर्तकिब हों

اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ

घरों में	उन्हें बन्द रखो	वह गवाही दें	फिर अगर	अपनों में से	चार

حَتّٰى يَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٥﴾

15	कोई सबील	उन के लिए	कर दे अल्लाह	या	मौत	उन्हें उठा ले	यहां तक कि

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا

और इस्लाह कर लें	फिर अगर वह तौबा करें	तो उन्हें ईज़ा दो	तुम में से	मुर्तकिब हों	और जो दो

فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٦﴾

16	निहायत मेहरबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	है	बेशक अल्लाह	उन का	तो पीछा छोड़ दो

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَي اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْۗءَ بِجَهَالَةٍ

नादानी से	बुराई	वह करते हैं	उन लोगों के लिए	अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे)	तौबा क़ुबूल करना	उस के सिवा नहीं

ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰۗىِٕكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ

तौबा क़ुबूल करता है अल्लाह	पस यही लोग हैं	जल्दी से	तौबा करते हैं	फिर

عَلَيْهِمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ

तौबा	और नहीं	17	हिक्मत वाला	जानने वाला	और है अल्लाह	उन की

لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ

उन में से किसी को	सामने आ जाए	जब	यहां तक	बुराइयां	वह करते हैं	उन के लिए (उन की)

الْمَوْتُ قَالَ اِنِّىْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ

मर जाते हैं	वह लोग जो	और न	अब	तौबा करता हूँ	कि मैं	कहे	मौत

وَهُمْ كُفَّارٌ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾

18	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	यही लोग	काफ़िर	और वह

यह अल्लाह की (मुक़र्रर करदा) हदें हैं, और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करेगा वह उसे बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है। (13)

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करेगा और बढ़ जाएगा उस की हदों से तो वह उसे आग में दाख़िल करेगा, वह उस में हमेशा रहेंगे, और उन के लिए ज़लील करने वाला अ़ज़ाब है। (14)

और तुम्हारी औ़रतों में से जो बदकारी की मुर्तकिब हों उन पर गवाह लाओ चार अपनों में से, फिर अगर वह गवाही दें तो उन औ़रतों को घरों में बन्द रखो यहां तक कि मौत उन्हें उठा ले या अल्लाह उन के लिए कोई सबील कर दे (कोई राह निकाले)। (15)

और जो दो मुर्तकिब हों तुम में से तो उन्हें ईज़ा दो, फिर अगर वह तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो, बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला निहायत मेहरबान है। (16)

इस के सिवा नहीं कि तौबा क़ुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे उन ही लोगों के लिए है जो करते हैं बुराई नादानी से, फिर जल्दी से तौबा कर लेते हैं, पस यही लोग हैं अल्लाह तौबा क़ुबूल करता है उन की, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (17)

और उन लोगों के लिए तौबा नहीं जो बुराइयां (गुनाह) करते रहते हैं यहां तक कि जब मौत उन में से किसी के सामने आ जाए तो कहे कि मैं अब तौबा करता हूँ और न उन लोगों की जो मर जाते हैं हालते कुफ़्र में, यही लोग हैं हम ने तैयार किया है उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब। (18)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम वारिस बन जाओ औ़रतों के ज़बरदस्ती, और न उन्हें रोके रखो कि उन से अपना दिया हुआ कुछ (वापस) ले लो मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुर्तकिब हों, और उन औरतों के साथ दस्तूर के मुताबिक़ गुज़रान करो, फिर अगर वह तुम्हें नापसन्द हों तो अ़ैन मुमकिन है कि तुम्हें एक चीज़ नापसन्द हो और अल्लाह रखे उस में बहुत भलाई। (19)

और अगर बदल लेना चाहो एक बीवी की जगह दूसरी बीवी, और तुम ने उन में से किसी एक को ख़ज़ाना दिया है तो उस से कुछ वापस न लो, क्या तुम वह लेते हो बुहतान (लगा कर) और सरीह (खुले) गुनाह से? (20)

और तुम वह कैसे वापस लोगे? और अलबत्ता तुम में से एक दूसरे तक पहुँच चुका (सुहबत कर चुका), और उन्हों ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया। (21)

और उन औ़रतों से निकाह न करो जिन से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो मगर जो (पहले) गुज़र चुका, बेशक यह बेहयाई और ग़ज़ब की बात थी और बुरा रास्ता (ग़लत तरीक़ा) था। (22)

तुम पर हराम की गईं तुम्हारी माएँ और तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियां और तुम्हारी ख़ालाएं, और भतीजियां और बेटियां बहन की (भांजियां), और तुम्हारी रज़ाई माएँ जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूध शरीक बहनें, और तुम्हारी औ़रतों की माएँ (सास), और तुम्हारी वह बेटियां जो तुम्हारी पर्वरिश में हैं तुम्हारी उन बीवियों से जिन से तुम ने सुहबत की, पस अगर तुम ने उन से सुहबत नहीं की तो कुछ गुनाह नहीं है तुम पर, और तुम्हारे उन बेटों की बीवियां जो तुम्हारी पुश्त से हैं, और यह कि तुम दो बहनों को जमा करो मगर जो पहले गुज़र चुका, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (23)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا

और न	ज़बरदस्ती	औ़रतें	कि वारिस बन जाओ	तुम्हारे लिए	हलाल नहीं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ

मुर्तकिब हों	यह कि	मगर	उन को दिया हो	जो	कुछ	कि ले लो	उन्हें रोके रखो

بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ

वह नापसन्द हों	फिर अगर	दस्तूर के मुताबिक़	और उन से गुज़रान करो	खुली हुई	बेहयाई

فَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿۱۹﴾

19	बहुत	भलाई	उस में	और रखे अल्लाह	एक चीज़	कि तुम को नापसन्द हो	तो मुमकिन है

وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا

ख़ज़ाना	उन में से एक को	और तुम ने दिया है	दूसरी बीवी	जगह (बदले)	एक बीवी	बदल लेना	तुम चाहो	और अगर

فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۲۰﴾

20	सरीह (खुला)	और गुनाह	बुहतान	क्या तुम वह लेते हो	कुछ	उस से	तो न (वापस) लो

وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ

तुम से	और उन्हों ने लिया	दूसरे तक	तुम में एक	पहुँच चुका	और अलबत्ता	तुम उसे लोगे	और कैसे

مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۲۱﴾ وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا

मगर	औ़रतें	से	तुम्हारे बाप	जिस से निकाह किया	निकाह करो	और न	21	पुख़्ता	अ़हद

مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۲۲﴾ حُرِّمَتْ ع ٣/٨/١٤

हराम की गईं	22	रास्ता (तरीक़ा)	और बुरा	और ग़ज़ब की बात	बेहयाई	था	बेशक वह	जो गुज़र चुका

عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ

और भतीजियां	और तुम्हारी ख़ालाएं	और तुम्हारी फूफियां	और तुम्हारी बहनें	और तुम्हारी बेटियां	तुम्हारी माएँ	तुम पर

وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْۤ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ

दूध शरीक	से	और तुम्हारी बहनें	तुम्हें दूध पिलाया	वह जिन्हों ने	और तुम्हारी माएँ	और बहन कि बेटियां

وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ

जिन से	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारी पर्वरिश	में	जो कि	और तुम्हारी बेटियां	और तुम्हारी औ़रतों की माएँ

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۫ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫

तुम पर	तो नहीं गुनाह	उन से	तुम ने नहीं की सुहबत	पस अगर	उन से	तुम ने सुहबत की

وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ

दो बहनों को	तुम जमा करो	और यह कि	तुम्हारी पुश्त	से	जो	तुम्हारे बेटे	और बीवियां

اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۳﴾ ۙ

23	मेहरबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	पहले गुज़र चुका	मगर जो

الجزء ٥

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ

तुम्हारे दाहने हाथ	मालिक हो जाएं	जो-जिस	मगर	औरतें	से	और ख़ावन्द वाली औरतें

كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا

तुम चाहो	कि	उन के	सिवा	तुम्हारे लिए	और हलाल की गईं	तुम पर	अल्लाह का हुक्म

بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۭ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ

तो उन को दो	उन में से	उस से	तुम नफ़ा (लज़्ज़त) हासिल करो	पस जो	हवसरानी को	न	क़ैदे (निकाह) में लाने को	अपने मालों से

اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	उस से	तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ	उस में जो	तुम पर	गुनाह	और नहीं	उन के मेहर मुक़र्रर किए हुए

الْفَرِيْضَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ

ताक़त रखे	न	और जो	24	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	मुक़र्रर किया हुआ

مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ

तुम्हारे हाथ मालिक हो जाएं	जो	तो-से	मोमिन (जमा)	बीवियां	कि निकाह करे	तुम में से मक़्दूर

مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۭ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

बाज़ (एक दूसरे से)	से	तुम्हारे बाज़	तुम्हारे ईमान को	खूब जानता है	और अल्लाह	मोमिन मुसलमान	तुम्हारी कनीज़ें	से

فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ

क़ैदे (निकाह) में आने वालियां	दस्तूर के मुताबिक़	उन के मेहर	और उन को दो	उन के मालिक	इजाज़त से	सो उन से निकाह करो

غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ

वह करें	फिर अगर	निकाह में आजाएं	पस जब	चोरी छुपे	आशनाई करने वालियां	और न	मस्ती निकालने वालियां	न कि

بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ۭ ذٰلِكَ

यह	(सज़ा) अ़ज़ाब	से	आज़ाद औरतें	पर	जो	निस्फ़	तो उन पर	बेहयाई

لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۭ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	बेहतर	तुम सब्र करो	और अगर	तुम में से	तक्लीफ़ (ज़िना)	डरा	उस के लिए जो

ع ٢ / ١
رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	वह जो कि	तरीक़े	और तुम्हें हिदायत दे	तुम्हारे लिए	ताकि बयान कर दे	चाहता है अल्लाह	25	रहम करने वाला

وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ

तवज्जुह करे	कि	चाहता है	और अल्लाह	26	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तुम पर	और तवज्जुह करे

عَلَيْكُمْ ۣ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾

27	बहुत ज़ियादा	फिर जाना	फिर जाओ	कि	ख़्वाहिशात	जो लोग पैरवी करते हैं	और चाहते हैं	तुम पर

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

28	कमज़ोर	इन्सान	और पैदा किया गया	तुम से	हलका कर दे	कि	चाहता है अल्लाह

और ख़ावन्द वाली औरतें (हराम हैं) मगर (काफ़िरों की औरतें) जिन के मालिक तुम्हारे दाहने हाथ हो जाएं (तुम मालिक हो जाओ), यह तुम पर अल्लाह का हुक्म है, और उन के सिवा सब औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं बशर्त यह कि तुम चाहो अपने मालों से क़ैदे (निकाह) में लाने को, न कि हवसरानी को, पस तुम में से जो उन से नफ़ा (लज़्ज़त) हासिल करें तो उन को उन के मुक़र्रर किए हुए मेहर देदें और तुम पर उस में कुछ गुनाह नहीं जिस पर तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ उस के मुक़र्रर कर लेने के बाद, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (24)

और जिस को तुम में से मक़्दूर न हो कि वह (आज़ाद) मुसलमान बीवियों से निकाह करे तो जो मुसलमान कनीज़ें तुम्हारे हाथ की मिल्क हों (क़ब्ज़े में हों), और अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है, तुम एक दूसरे के (हम जिन्स हो), सो उन के मालिक की इजाज़त से उन से निकाह कर लो, और उन को दे दो उन के मेहर दस्तूर के मुताबिक़, क़ैदे निकाह में आने वालियां न कि मस्ती निकालने वालियां न आशनाई करने वालियां चोरी छुपे, पस जब निकाह में आजाएं फिर अगर वह बेहयाई का काम करें तो उन पर निस्फ़ सज़ा है जो आज़ाद औरतों पर है, यह उस के लिए जो तुम में से डरे (बदकारी की) तक्लीफ़ में पड़ने से, और अगर तुम सब्र करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (25)

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए बयान कर दे और तुम्हें हिदायत दे तुम से पहले लोगों के तरीक़ों की, और तुम पर तवज्जुह करे (तौबा क़ुबूल करे) और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (26)

और अल्लाह चाहता है कि वह तवज्जुह करे तुम पर, और जो लोग ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं वह चाहते हैं कि तुम (राहे हिदायत से) फिर जाओ बहुत ज़ियादा। (27)

अल्लाह चाहता है कि तुम से (बोझ) हलका कर दे, और इन्सान पैदा किया गया है कमज़ोर। (28)

ऐ मोमिनों अपने माल आपस में न खाओ नाहक़ (तौर पर) मगर यह कि तुम्हारी आपस की ख़ुशी से कोई तिजारत हो, और क़त्ल न करो एक दूसरे को, बेशक अल्लाह तुम पर बहुत मेह्रबान है। **(29)**

और जो शख़्स यह करेगा सरकशी (ज़ोर) और ज़ुल्म से, पस अ़नक़रीब हम उस को आग में डाल देंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। **(30)**

अगर तुम बड़े गुनाहों से बचते रहे जो तुम्हें मना किए गए हैं तो हम तुम से दूर कर देंगे तुम्हारे छोटे गुनाह और हम तुम्हें इ़ज़्ज़त के मुक़ाम में दाख़िल कर देंगे। **(31)**

और आर्ज़ू न करो (उस की) जो बड़ाई दी अल्लाह ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर, मर्दों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्हों ने कमाया, और औ़रतों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल मांगो, बेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। **(32)**

और हम ने हर एक के लिए वारिस मुक़र्रर कर दिए हैं उस (माल) के लिए जो छोड़ मरें वालिदैन और क़राबतदार, और जिन लोगों से तुम्हारा अ़हद ओ पैमान बन्ध चुका तो उन को उन का हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह (मुत्तला) है। **(33)**

मर्द औ़रतों पर हाकिम (निगरान) हैं इस लिए कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिए कि उन्हों ने अपने माल ख़र्च किए, पस जो नेकोकार हैं (मर्द की) ताबे फ़रमान हैं, पीठ पीछे (अ़दम मौजूदगी में) हिफ़ाज़त करने वाली हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से। और तुम्हें डर हो जिन औ़रतों की बद ख़ूई का पस उन को समझाओ और ख़्वाबगाहों में उन को तन्हा छोड़ दो और उन को मारो, फिर अगर वह तुम्हारा कहा मानें तो उन पर (इल्ज़ाम की) कोई राह तलाश न करो। बेशक अल्लाह सब से आला (बुलन्द) सब से बड़ा है। **(34)**

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

नाहक़	आपस में	अपने माल	न खाओ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ

अपने नफ़्स (एक दूसरे)	और न क़त्ल करो	तुम से	आपस की ख़ुशी से	कोई तिजारत	यह कि हो	मगर

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۲۹﴾ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا

और ज़ुल्म से	सरकशी (ज़ोर)	यह	करेगा	और जो	29	बहुत मेह्रबान	तुम पर	है	बेशक अल्लाह

فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾ اِنْ

अगर	30	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	आग	उस को डालेंगे	पस अ़नक़रीब

تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

और हम तुम्हें दाख़िल कर देंगे	तुम्हारे छोटे गुनाह	तुम से	हम दूर कर देंगे	उस से	जो मना किए गए	बड़े गुनाह	तुम बचते रहो

مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ

बाज़	पर	तुम में से बाज़	उस से	जो बड़ाई दी अल्लाह	आर्ज़ू करो	और न	31	इ़ज़्ज़त	मुक़ाम

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ

उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	और औ़रतों के लिए	उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	मर्दों के लिए

وَسْئَلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۳۲﴾ وَلِكُلٍّ

और हर एक के लिए	32	जानने वाला	चीज़	हर	है	बेशक अल्लाह	उस के फ़ज़्ल से	और अल्लाह से सवाल करो (मांगो)

جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ

बन्ध चुका	और वह जो कि	और क़राबतदार	वालिदैन	छोड़ मरें	उस से जो	वारिस	हम ने मुक़र्रर किए

اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿۳۳﴾ ع ٥ ٨ ٢

33	गवाह (मुत्तला)	हर चीज़	ऊपर	है	बेशक अल्लाह	उन का हिस्सा	तो उन को दे दो	तुम्हारा अ़हद

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى

उन में से बाज़ पर	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	इस लिए कि	औ़रतें	पर	हाकिम (निगरान)	मर्द

بَعْضٍ وَّبِمَاۤ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ

निगहबानी करने वालियां	ताबे फ़रमान	पस नेकोकार औ़रतें	अपने माल	से	उन्हों ने ख़र्च किए	और इस लिए कि	बाज़

لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ

पस उन को समझाओ	उन की बद ख़ूई	तुम डरते हो	और वह जो	अल्लाह	हिफ़ाज़त की	उस से जो	पीठ पिछे

وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ

वह तुम्हारा कहा मानें	फिर अगर	और उन को मारो	ख़्वाबगाहों में	और उन को तन्हा छोड़ दो

فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿۳۴﴾

34	सब से बड़ा	सब से आला	है	बेशक अल्लाह	कोई राह	उन पर	तो न तलाश करो

وَاِنۡ خِفۡتُمۡ شِقَاقَ بَيۡنِهِمَا فَابۡعَثُوۡا حَكَمًا مِّنۡ اَهۡلِهٖ

मर्द का ख़ानदान	से	एक मुन्सिफ़	तो मुक़र्रर करदो	उन के दरमियान	ज़िद (कशमकश)	तुम डरो	और अगर

وَحَكَمًا مِّنۡ اَهۡلِهَا ۚ اِنۡ يُّرِيۡدَاۤ اِصۡلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيۡنَهُمَا ؕ

उन दोनों में	अल्लाह	मुवाफ़क़त कर देगा	सुलह कराना	दोनों चाहेंगे	अगर	औरत का ख़ानदान	से	और एक मुन्सिफ़

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيۡمًا خَبِيۡرًا ﴿۳۵﴾ وَاعۡبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشۡرِكُوۡا بِهٖ

और न शरीक करो उस के साथ	और तुम अल्लाह की इबादत करो	35	बहुत बाख़बर	बड़ा जानने वाला	है	बेशक अल्लाह

شَيۡـئًا وَّبِالۡوَالِدَيۡنِ اِحۡسَانًا وَّبِذِى الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى

और यतीम (जमा)	और क़रावतदारों से	अच्छा सुलूक	और माँ बाप से	कुछ-किसी को

وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَالۡجَارِ ذِى الۡقُرۡبٰى وَالۡجَارِ الۡجُنُبِ

अजनबी	और हमसाया	क़रावत वाले	और हमसाया	और मोहताज (जमा)

وَالصَّاحِبِ بِالۡجَنۡۢبِ وَابۡنِ السَّبِيۡلِ ۙ وَمَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	तुम्हारी मिल्क (कनीज़-गुलाम)	और जो	और मुसाफ़िर	और पास बैठने वाले (हम मज्लिस) से

لَا يُحِبُّ مَنۡ كَانَ مُخۡتَالًا فَخُوۡرَا ۙ﴿۳۶﴾ الَّذِيۡنَ يَبۡخَلُوۡنَ وَيَاۡمُرُوۡنَ

और हुक्म करते (सिखाते) हैं	बुख़्ल करते हैं	जो लोग	36	बड़ मारने वाला	इतराने वाला	हो	जो	दोस्त नहीं रखता

النَّاسَ بِالۡبُخۡلِ وَيَكۡتُمُوۡنَ مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ

अपना फ़ज़्ल	से	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और छुपाते हैं	बुख़्ल	लोग

وَاَعۡتَدۡنَا لِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابًا مُّهِيۡنًا ۚ﴿۳۷﴾ وَالَّذِيۡنَ يُنۡفِقُوۡنَ

ख़र्च करते हैं	और जो लोग	37	ज़िल्लत वाला	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार कर रखा है

اَمۡوَالَهُمۡ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ ؕ

आख़िरत के दिन पर	और न	अल्लाह पर	ईमान लाते	और नहीं	लोग	दिखावे को	अपने माल

وَمَنۡ يَّكُنِ الشَّيۡطٰنُ لَهٗ قَرِيۡنًا فَسَآءَ قَرِيۡنًا ﴿۳۸﴾ وَمَاذَا

और क्या	38	साथी	तो बुरा	साथी	उस का	शैतान	हो	और जो-जिस

عَلَيۡهِمۡ لَوۡ اٰمَنُوۡا بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَاَنۡفَقُوۡا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ

अल्लाह	उन्हें दिया	उस से जो	और वह ख़र्च करते	और यौमे आख़िरत पर	अल्लाह पर	अगर वह ईमान लाते	उन पर

وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمۡ عَلِيۡمًا ﴿۳۹﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظۡلِمُ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنۡ تَكُ

हो	और अगर	ज़र्रा	बराबर	ज़ुल्म नहीं करता	बेशक अल्लाह	39	ख़ूब जानने वाला	उन को	अल्लाह	और है

حَسَنَةً يُّضٰعِفۡهَا وَيُؤۡتِ مِنۡ لَّدُنۡهُ اَجۡرًا عَظِيۡمًا ﴿۴۰﴾ فَكَيۡفَ

फिर कैसा-क्या	40	बड़ा	सवाब	अपने पास से	और देता है	उस को कई गुना करता है	कोई नेकी

اِذَا جِئۡنَا مِنۡ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيۡدٍ وَّجِئۡنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيۡدًا ﴿۴۱﴾

41	गवाह	इन के	पर	आप को	और बुलाएंगे	एक गवाह	हर उम्मत	से	हम बुलाएंगे	जब

وقف النبی ﷺ

और अगर तुम डरो उन दोनों के दरमियान ज़िद (कशमकश) से तो मुक़र्रर कर दो एक मुन्सिफ़ मर्द के ख़ानदान से और एक मुन्सिफ़ औरत के ख़ानदान से, अगर वह दोनों सुलह कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान मुवाफ़क़त कर देगा, बेशक अल्लाह बड़ा जानने वाला बहुत बाख़बर है। (35)

और अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ शरीक न करो किसी को और अच्छा सुलूक करो माँ बाप से और क़रावतदारों से और यतीमों और मोहताजों से और क़रावत वाले हमसाया से और अजनबी हमसाया से और पास बैठने वाले (हम मज्लिस) से और मुसाफ़िर से और जो तुम्हारी मिल्क हों (कनीज़ ग़ुलाम), बेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो इतराने वाला, बड़ मारने वाला हो, (36)

और जो बुख़्ल करते हैं और लोगों को बुख़्ल सिखाते हैं और वह छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया, और हम ने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखा है ज़िल्लत वाला अज़ाब। (37)

और जो लोग अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं और ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और न आख़िरत के दिन पर, और जिस का शैतान साथी हो तो वह बुरा साथी है। (38)

और उन का क्या (नुक़्सान) होता अगर वह ईमान ले आते अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर और उस से ख़र्च करते जो अल्लाह ने उन्हें दिया, और अल्लाह उन को ख़ूब जानने वाला है। (39)

बेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं करता, और अगर कोई नेकी हो तो उसे कई गुना कर देता है और देता है अपने पास से बड़ा सवाब। (40)

फिर क्या (कैफ़ियत होगी) जब हम हर उम्मत से एक गवाह बुलाएंगे और आप (स) को इन पर गवाह बना कर बुलाएंगे। (41)

ع ٦ / ٩ / ٣

يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى

काश बराबर कर दी जाए	रसूल	और नाफ़रमानी की	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया	आर्ज़ू करेंगे	उस दिन

بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

वह लोग जो	ऐ	42	कोई बात	अल्लाह	छुपाएंगे	और न	ज़मीन	उन पर

اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا

समझने लगो	यहां तक कि	नशे	जब कि तुम	नमाज़	न नज़दीक जाओ	ईमान लाए

مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ

तुम गुस्ल कर लो	यहां तक कि	हालते सफ़र	सिवाए	गुस्ल की हाजत में	और न	तुम कहते हो	जो

وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ

से	तुम में	कोई	या आए	सफ़र	पर-में	या	मरीज़	तुम हो	और अगर

الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا

तो तयम्मुम करो	पानी	फ़िर तुम ने न पाया	औरतें	तुम पास गए	या	जाए ज़रूर

صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

है	बेशक अल्लाह	और अपने हाथ	अपने मुँह	मसह कर लो	पाक	मिट्टी

عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٤٣﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ

किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	43	बख़्शने वाला	माफ़ करने वाला

يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿٤٤﴾ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	44	रास्ता	भटक जाओ	कि	और वह चाहते हैं	गुमराही	मोल लेते हैं

اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۫ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

45	मददगार	अल्लाह	और काफ़ी	हिमायती	अल्लाह	और काफ़ी	तुम्हारे दुश्मनों को	खूब जानता है

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ

उस की जगह	से	कलिमात	तहरीफ़ करते हैं (बदल देते हैं)	यहूदी हो गए	वह लोग जो	से (बाज़)

وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا

और राइना	सुनवाया जाए	न	और सुनो	और हम ने नाफ़रमानी की	हम ने सुना	और कहते हैं

لَيًّا ۢ بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا

हम ने सुना	कहते	वह	और अगर	दीन में	ताने की नीयत से	अपनी ज़बानों को	मोड़ कर

وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ

और ज़ियादा दुरुस्त	उन के लिए	बेहतर	तो होता	और हम पर नज़र कीजिए	और सुनिए	और हम ने इताअत की

وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٤٦﴾

46	थोड़े	मगर	पस ईमान नहीं लाते	उन के कुफ़्र के सबब	अल्लाह	उन पर लानत की	और लेकिन

उस दिन आर्ज़ू करेंगे वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल की नाफ़रमानी की, काश! (उन्हें मिट्टी में दबा कर) ज़मीन बराबर कर दी जाए, और वह अल्लाह से न छुपा सकेंगे कोई बात। **(42)**

ऐ ईमान वालो! तुम नमाज़ के नज़दीक न जाओ जब तुम नशे (की हालत में) हो, यहां तक कि समझने लगो जो (ज़बान से) कहते हो, और न (उस वक़्त जब कि) गुस्ल की हाजत हो सिवाए हालते सफ़र के, यहां तक कि तुम गुस्ल कर लो, और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में या तुम में से कोई जाए ज़रूर (बैतुलख़ला) से आए या तुम औरतों के पास गए (हम सुहबत हुए) फिर तुम ने पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो, मसह कर लो अपने मुँह और हाथों का, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। **(43)**

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मोल लेते हैं (इख़्तियार करते हैं) गुमराही, और चाहते हैं कि तुम रास्ते से भटक जाओ। **(44)**

और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और अल्लाह काफ़ी है हिमायती, और अल्लाह काफ़ी है मददगार। **(45)**

बाज़ यहूदी लोग कलिमात ओ अलफ़ाज़ को उन की जगह से बदल देते हैं (तहरीफ़ करते हैं) और कहते हैं "हम ने सुना" और "नाफ़रमानी की" (कहते हैं हमारी) सुनो (तुम्हें) न सुनवाया जाए! और राइना (कहते हैं) अपनी ज़बानों को मोड़ कर दीन में ताने की नीयत से, और अगर वह कहते "हम ने सुना और इताअत की" (और कहते) "सुनिए और हम पर नज़र कीजिए" तो यह उन के लिए बेहतर होता और ज़ियादा दुरुस्त होता, लेकिन अल्लाह ने उन के कुफ़्र के सबब उन पर लानत की, पस वह ईमान नहीं लाते मगर थोड़े। **(46)**

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا

जो	तसदीक़ करने वाला	हम ने नाज़िल किया	उस पर जो	ईमान लाओ	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	ऐ

مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ

उन की पीठ	पर	फिर उलट दें	चेहरे	हम मिटा दें	कि	इस से पहले	तुम्हारे पास

اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

47	होकर (रहने वाला)	अल्लाह का हुक्म	और है	हफ़्ते वाले	हम ने लानत की	जैसे	हम उन पर लानत करें	या

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ

जिस को	उस के सिवा	जो	और बख़्शता है	शरीक ठहराए उस का	कि	नहीं बख़्शता	बेशक अल्लाह

يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾

48	बड़ा	गुनाह	पस उस ने बान्धा	अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जो-जिस	वह चाहे

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ

जिसे	पाक करता है	बल्कि अल्लाह	अपने आप को	पाक मुक़द्दस कहते हैं	वह जो कि	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा

يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	बान्धते हैं	कैसा	देखो	49	धागे के बराबर	और उन पर ज़ुल्म न होगा	वह चाहता है

ع ٨
الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	50	सरीह	गुनाह	यही	और काफ़ी है	झूट

اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ

और सरकश (शैतान)	बुत (जमा)	वह मानते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया

وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	से	राहे रास्त पर	यह लोग	जिन लोगों ने कुफ़्र क्या (काफ़िर)	और कहते हैं

سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ

लानत करे	और जिस पर	उन पर अल्लाह ने लानत की	वह लोग जो	यही लोग	51	राह

اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ

सलतनत	से	कोई हिस्सा	उन का	क्या	52	कोई मददगार	तू पाएगा उस का	तो हरगिज़ नहीं	अल्लाह

فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ

लोग	वह हसद करते हैं	या	53	तिल बराबर	लोग	न दें	फिर उस वक़्त

عَلٰى مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ

सो हम ने दिया	अपना फ़ज़्ल	से	जो अल्लाह ने उन्हें दिया	पर

اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾

54	बड़ा	मुल्क	और उन्हें दिया	और हिक्मत	किताब	आले इब्राहीम (अ)

ऐ अहले किताब! ईमान लाओ उस पर जो हम ने नाज़िल किया उस की तसदीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है उस से पहले कि हम चहरे मिटा डालें (मस्ख़ करदें) फिर उन (चहरों) को उलट दें उन की पीठ की तरफ़ या हम उन पर लानत करें जैसे "हफ़्ते वालों" पर लानत की, और अल्लाह का हुक्म (पूरा) हो कर रहने वाला है। (47)

बेशक अल्लाह (उस को) नहीं बख़्शता जो उस का शरीक ठहराए, और उस के सिवा जिस को चाहे बख़्श दे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया पस उस ने बड़ा गुनाह (बुहतान) बान्धा। (48)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? वह जो अपने आप को मुक़द्दस कहते हैं, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मुक़द्दस बनाता है और उन पर खजूर की गुठली के रेशे (धागे) के बराबर भी ज़ुल्म न होगा। (49)

देखो! अल्लाह पर कैसा झूट (बुहतान) बान्धते हैं, और यही सरीह गुनाह काफ़ी है। (50)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मानते हैं बुतों को और शैतान को, और काफ़िरों को कहते हैं कि यह मोमिनों से ज़ियादा राह (रास्त) पर हैं। (51)

यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और जिस पर अल्लाह लानत करे तो हरगिज़ तू उस का कोई मददगार नहीं पाएगा। (52)

क्या उन के पास सलतनत का कोई हिस्सा है? फिर उस वक़्त यह न दें लोगों को तिल बराबर भी। (53)

या लोगों से उस पर हसद करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें दिया अपने फ़ज़्ल से, सो हम ने दी है आले इब्राहीम (अ) को किताब और हिक्मत और उन्हें दिया है बड़ा मुल्क। (54)

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ

जहन्नम	और काफ़ी	उस से	रुका रहा	कोई	और उन में से	उस पर	कोई ईमान लाया	फिर उन में से

سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا

जिस वक़्त	आग	हम उन्हें डालेंगे	अ़नक़रीब	हमारी आयतों का	कुफ़्र किया	जो लोग	बेशक	55	भड़कती हुई आग

نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ

अ़ज़ाब	ताकि वह चखें	उस के अ़लावा	खालें	हम बदल देंगे	उन की खालें	पक जाएंगी

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ الربع

नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और वह लोग जो	56	हिक्मत वाला	ग़ालिब	है	बेशक अल्लाह

سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ

हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	अ़नक़रीब हम उन्हें दाख़िल करेंगे

لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	57	घनी	छाऊँ	और हम उन्हें दाख़िल करेंगे	पाक सुथरी	बीवियां	उस में	उन के लिए

يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ

लोग	दरमियान	तुम फ़ैसला करने लगो	और जब	अमानत वाले	तरफ़ (को)	अमानतें	पहुंचा दो	कि	तुम्हें हुक्म देता है

اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

है	बेशक अल्लाह	इस से	नसीहत करता है तुम्हें	अच्छी	बेशक अल्लाह	इन्साफ़ से	तुम फ़ैसला करो	तो

سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ﴿٥٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا

और इताअ़त करो	इताअ़त करो अल्लाह की	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	58	देखने वाला	सुनने वाला

الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ

तो उस को रुजूअ़ करो	किसी बात में	तुम झगड़ पड़ो	फिर अगर	तुम में से	और साहिबे हुकूमत	रसूल

اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

और रोज़े आख़िरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो	अगर	और रसूल (स)	अल्लाह की तरफ़

ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٥٩﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ ع ٨ ٥

दावा करते हैं	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	59	अन्जाम	और बहुत अच्छा	बेहतर	यह

اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ

वह चाहते हैं	आप (स) से पहले	और जो नाज़िल किया गया	आप (स) की तरफ़	उस पर जो नाज़िल किया गया	ईमान लाए	कि वह

اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا

वह न मानें	कि	हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका	ताग़ूत (सरकश)	तरफ़ (पास)	मुक़दमा ले जाएं	कि

بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿٦٠﴾

60	दूर	गुमराही	उन्हें बहका दे	कि	शैतान	और चाहता है	उस को

फिर उन में से कोई उस पर ईमान लाया और उन में से कोई रुका (ठटका) रहा, और जहन्नम काफ़ी है भड़कती हुई आग। (55)

जिन लोगों ने हमारी आयतों का कुफ़्र किया बेशक उन्हें हम अ़नक़रीब आग में डाल देंगे, जिस वक़्त उन की खालें पक (गल) जाएंगी हम उस के अ़लावा (दूसरी) बदल देंगे ताकि वह अ़ज़ाब चखें, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (56)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, हम अ़नक़रीब उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं और उस में रहेंगे हमेशा हमेशा, उन के लिए उस में पाक सुथरी बीवियां हैं, और हम उन्हें घनी छाऊँ (साया) में दाख़िल करेंगे। (57)

बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को पहुँचा दो, और जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करने लगो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो, बेशक अल्लाह तुम्हें अच्छी नसीहत करता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। (58)

ऐ ईमान वालो! इताअ़त करो अल्लाह की और इताअ़त करो रसूल (स) की और उन की जो तुम में से साहिबे हुकूमत हैं, फिर अगर तुम झगड़ पड़ो किसी बात में तो उस को अल्लाह और रसूल (स) की तरफ़ रुजूअ़ करो अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यह बेहतर है और उस का अन्जाम बहुत अच्छा है। (59)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वह उस पर ईमान ले आए जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया वह चाहते हैं कि (अपना) मुक़दमा ताग़ूत (सरकश) शैतान के पास ले जाएं हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि वह उस को न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर दूर गुमराही (में डाल दे)। (60)

وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡا اِلٰى مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوۡلِ

रसूल (स)	और तरफ़	जो अल्लाह ने नाज़िल किया	तरफ़	आओ	उन्हें	कहा जाता है	और जब

رَاَيۡتَ الۡمُنٰفِقِيۡنَ يَصُدُّوۡنَ عَنۡكَ صُدُوۡدًا ﴿۶۱﴾ فَكَيۡفَ اِذَاۤ

जब	फिर कैसी	61	रुक कर	आप से	हटते हैं	मुनाफ़िक़ीन	आप देखेंगे

اَصَابَتۡهُمۡ مُّصِيۡبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ ثُمَّ جَآءُوۡكَ

फिर वह आएं आप (स) के पास	उन के हाथ	आगे भेजा	उस के सबब जो	कोई मुसीबत	उन्हें पहुँचे

يَحۡلِفُوۡنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنۡ اَرَدۡنَاۤ اِلَّاۤ اِحۡسَانًا وَّتَوۡفِيۡقًا ﴿۶۲﴾ اُولٰٓئِكَ

यह लोग	62	और मुवाफ़क़त	भलाई	सिवाए (सिर्फ़)	हम ने चाहा	कि	अल्लाह की	क़सम खाते हुए

الَّذِيۡنَ يَعۡلَمُ اللّٰهُ مَا فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ ۖ فَاَعۡرِضۡ عَنۡهُمۡ وَعِظۡهُمۡ

और उन को नसीहत करें	उन से	तो आप (स) तग़ाफ़ुल करें	उन के दिलों में	जो	अल्लाह जानता है	वह जो कि

وَقُلۡ لَّهُمۡ فِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ قَوۡلًا ۢ بَلِيۡغًا ﴿۶۳﴾ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ رَّسُوۡلٍ

कोई रसूल	हम ने भेजा	और नहीं	63	असर कर जाने वाली बात	उन के हक़ में	उन से	और कहें

اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ وَلَوۡ اَنَّهُمۡ اِذۡ ظَّلَمُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ

अपनी जानों पर	जब उन्हों ने ज़ुल्म किया	यह लोग	और अगर	अल्लाह के हुक्म से	ताकि इताअ़त की जाए	मगर

جَآءُوۡكَ فَاسۡتَغۡفَرُوا اللّٰهَ وَاسۡتَغۡفَرَ لَهُمُ الرَّسُوۡلُ

रसूल	उन के लिए	और मग़्फ़िरत चाहता	फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते वह	वह आते आप (स) के पास

لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيۡمًا ﴿۶۴﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ

वह मोमिन न होंगे	पस क़सम है आप के रब की	64	मेहरबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को

حَتّٰى يُحَكِّمُوۡكَ فِيۡمَا شَجَرَ بَيۡنَهُمۡ ثُمَّ لَا يَجِدُوۡا فِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ

अपने दिलों में	वह न पाएं	फिर	उन के दरमियान	झगड़ा उठे	उस में जो	आप को मुन्सिफ़ बनाएं	जब तक

حَرَجًا مِّمَّا قَضَيۡتَ وَيُسَلِّمُوۡا تَسۡلِيۡمًا ﴿۶۵﴾ وَلَوۡ اَنَّا كَتَبۡنَا

हम लिख देते (हुक्म करते)	और अगर	65	ख़ुशी से	और तसलीम कर लें	आप (स) फ़ैसला करें	उस से जो	कोई तंगी

عَلَيۡهِمۡ اَنِ اقۡتُلُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ اَوِ اخۡرُجُوۡا مِنۡ دِيَارِكُمۡ

अपने घर	से	या निकल जाओ	अपने आप	क़त्ल करो तुम	कि	उन पर

مَّا فَعَلُوۡهُ اِلَّا قَلِيۡلٌ مِّنۡهُمۡ ؕ وَلَوۡ اَنَّهُمۡ فَعَلُوۡا مَا يُوۡعَظُوۡنَ

नसीहत की जाती है	जो	करते	यह लोग	और अगर	उन से	सिवाए चन्द एक	वह यह न करते

بِهٖ لَكَانَ خَيۡرًا لَّهُمۡ وَاَشَدَّ تَثۡبِيۡتًا ﴿۶۶﴾ وَّاِذًا لَّاٰتَيۡنٰهُمۡ

हम उन्हें देते	और उस सूरत में	66	साबित रखने वाला	और ज़ियादा	उन के लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	उस की

مِّنۡ لَّدُنَّاۤ اَجۡرًا عَظِيۡمًا ﴿۶۷﴾ وَّلَهَدَيۡنٰهُمۡ صِرَاطًا مُّسۡتَقِيۡمًا ﴿۶۸﴾

68	सीधा	रास्ता	और हम उन्हें हिदायत देते	67	बड़ा (अ़ज़ीम)	अजर	अपने पास से

और जब उन्हें कहा जाता है कि जो अल्लाह ने नाज़िल किया उस की तरफ़ आओ और रसूल (स) की तरफ़ तो आप (स) मुनाफ़िक़ों को देखेंगे कि वह रुक कर आप (स) से हटते हैं (पहलु तही करते हैं)। (61)

फिर कैसी (नदामत होगी) जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा फिर वह आप (स) के पास अल्लाह की क़सम खाते हुए आएं कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही थी और मुवाफ़क़त। (62)

यह लोग हैं कि अल्लाह जानता है जो उन के दिलों में है, तो आप (स) तग़ाफ़ुल करें उन से। और आप (स) उन को नसीहत करें और उन से उन के हक़ में असर कर जाने वाली बात कहें। (63)

और हम ने नहीं भेजा कोई रसूल मगर इस लिए कि अल्लाह के हुक्म से उस की इताअ़त की जाए, और यह लोग जब उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था अगर वह आप (स) के पास आते, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते और उन के लिए रसूल (स) अल्लाह से मग़्फ़िरत चाहते तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान। (64)

पस क़सम है आप (स) के रब की वह मोमिन न होंगे जब तक आप (स) को मुन्सिफ़ न बनाएं उस झगड़े में जो उन के दरमियान उठे, फिर वह अपने दिलों में आप (स) के फ़ैसले से कोई तंगी न पाएं और उस को ख़ुशी से (पूरी तरह) तसलीम करलें। (65)

और अगर हम उन पर लिख देते (फ़र्ज़ कर देते) कि अपने आप को क़त्ल कर डालो या अपने घर बार (छोड़ कर) निकल जाओ तो उन में से चन्द एक के सिवा वह (कभी ऐसा) न करते, और अगर यह लोग वह करें जिस की उन्हें नसीहत की जाती है तो यह उन के लिए बेहतर होता और (दीन में) ज़ियादा साबित रखने वाला होता। (66)

और उस सूरत में हम उन्हें अपने पास से बड़ा अजर देते। (67)

और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देते। (68)

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ

इन्आ़म किया	उन लोगों के साथ	तो यही लोग	और रसूल	अल्लाह	इताअ़त करे	और जो

اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ

और सालिहीन	और शुहदा	और सिद्दीक़ीन	अंबिया	से (यानी)	उन पर	अल्लाह

وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى

और काफ़ी	अल्लाह से	फ़ज़्ल	यह	69	साथी	यह लोग	और अच्छे

بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ع ٩ ١١ ٦

फिर निकलो	अपने बचाओ (हथियार)	ले लो	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	70	जानने वाला	अल्लाह

ثُبَاتٍ اَوِانْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾ وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ

फिर अगर	ज़रूर देर लगादेगा	वह है जो	तुम में	और बेशक	71	सब	या निकलो (कूच करो)	जुदा जुदा

اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ

उन के साथ	मैं न था	जब	मुझ पर	बेशक अल्लाह ने इन्आ़म किया	कहे	कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँचे

شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾ وَلَىِٕنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ

न थी	गोया	तो ज़रूर कहेगा	अल्लाह से	कोई फ़ज़्ल	तुम्हें पहुँचे	और अगर	72	हाज़िर-मौजूद

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ

तो मुराद पाता	उन के साथ	मैं होता	ऐ काश मैं	कोई दोस्ती	और उस के दरमियान	तुम्हारे दरमियान

فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ

बेचते हैं	वह जो कि	अल्लाह का रास्ता	में	सो चाहिए कि लड़ें	73	बड़ी	मुराद

الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۭ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	लड़े	और जो	आख़िरत के बदले	दुनिया	ज़िन्दगी

فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾ وَمَا لَكُمْ

तुम्हें	और क्या	74	बड़ा अजर	हम उसे देंगे	अ़नक़रीब	ग़ालिब आए	या	फिर मारा जाए

لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ

मर्द (जमा)	से	और कमज़ोर (बेबस)	अल्लाह का रास्ता	में	तुम नहीं लड़ते

وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا

हमें निकाल	ऐ हमारे रब	कहते हैं (दुआ़)	जो	और बच्चे	और औ़रतें

مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ

से	हमारे लिए	और बनादे	उस के रहने वाले	ज़ालिम	बस्ती	इस	से

لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۙ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ ۭ

75	मददगार	अपने पास	से	हमारे लिए	और बनादे	(हिमायती) दोस्त	अपने पास

और जो इताअ़त करे अल्लाह और रसूल (स) की तो यही लोग हैं उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इन्आ़म किया (यानी) अंबिया और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालिहीन (नेक बन्दे), और यह अच्छे साथी हैं। (69)

यह अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़्ल है, और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला। (70)

ऐ ईमान वालो! अपने बचाओ (का सामान, हथियार) ले लो, फिर जुदा जुदा (दस्तों की सूरत में) या सब इकटठे हो कर कूच करो। (71)

बेशक तुम में (कोई ऐसा भी है) जो ज़रूर देर लगादेगा, फिर अगर तुम्हें पहुँचे कोई मुसीबत तो कहे कि अल्लाह ने मुझ पर इन्आ़म किया कि में उन के साथ न था। (72)

और तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से कोई फ़ज़्ल (नेमत) पहुँचे तो ज़रूर कहेगा, गोया (जैसे) कि न थी तुम्हारे और उस के दरमियान कोई दोस्ती, "ऐ काश! मैं उन के साथ होता तो बड़ी मुराद पाता"। (73)

सो चाहिए कि अल्लाह के रास्ते में लड़ें वह लोग जो दुनिया की ज़िन्दगी बेचते (क़ुरबान करते) हैं आख़िरत के बदले, और जो अल्लाह के रास्ते में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आए हम अ़नक़रीब उसे बड़ा अजर देंगे। (74)

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में नहीं लड़ते कमज़ोर (बेबस) मर्दों और औ़रतों और बच्चों (की ख़ातिर) जो दुआ़ कर रहे हैं: ऐ हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं और बनादे हमारे लिए अपने पास से हिमायती और बनादे हमारे लिए अपने पास से मददगार। (75)

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अल्लाह का रास्ता	में	वह लड़ते हैं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)

يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ

शैतान	दोस्त (साथी)	सो तुम लड़ो	तागूत (सरकश)	रास्ता	में	वह लड़ते हैं

ع ١٠ ٧

اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿٧٦﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ

कहा गया	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	76	कमज़ोर (बोदा)	है	शैतान	चाल	बेशक

لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا

फिर जब	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और क़ाइम करो	अपने हाथ	रोक लो	उन को

كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ

जैसे अल्लाह का डर	लोग	डरते हैं	उन में से	एक फ़रीक़	जब	लड़ना (जिहाद)	उन पर फ़र्ज़ हुआ

اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ

लड़ना (जिहाद)	हम पर	तू ने क्यों लिखा	ऐ हमारे रब	और वह कहते हैं	डर	ज़ियादा	या

لَوْ لَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۭ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ

और आख़िरत	थोड़ा	दुनिया	फ़ाइदा	कह दें	थोड़ी	मुद्दत	तक	हमें ढील दी	क्यों न

خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۣ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا

तुम होगे	जहां कहीं	77	धागे बराबर	और न तुम पर ज़ुल्म होगा	परहेज़गार के लिए	बेहतर

يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۭ وَاِنْ تُصِبْهُمْ

उन्हें पहुँचे	और अगर	मज़बूत	बुर्जों में	अगरचे तुम हो	मौत	तुम्हें पा लेगी

حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ

कुछ बुराई	उन्हें पहुँचे	और अगर	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	यह	वह कहते हैं	कोई भलाई

يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۭ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ فَمَالِ

तो क्या हुआ	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	सब	कह दें	आप (स) की तरफ़ से	से	यह	वह कहते हैं

هٰٓؤُلَاۗءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ

कोई भलाई	तुझे पहुँचे	जो	78	बात	कि समझें	नहीं लगते	क़ौम	इस

فَمِنَ اللّٰهِ ۡ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ۭ وَاَرْسَلْنٰكَ

और हम ने तुम्हें भेजा	तो तेरे नफ़्स से	कोई बुराई	तुझे पहुँचे	और जो	सो अल्लाह से

لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ

रसूल (स)	इताअ़त की	जो-जिस	79	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	रसूल	लोगों के लिए

فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾

80	निगहबान	उन पर	हम ने आप (स) को भेजा	तो नहीं	रू गर्दानी की	और जो-जिस	अल्लाह	पस तहक़ीक़ इताअ़त की

ईमान लाने वाले अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं और काफ़िर लड़ते हैं तागूत (सरकश मुफ़्सिद) के रास्ते में, सो तुम शैतान के साथियों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल कमज़ोर (बोदा) है। (76)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कहा गया अपने हाथ रोक लो और क़ाइम करो नमाज़ और ज़कात अदा करो, फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ तो उन में से एक फ़रीक़ लोगों से डरता है जैसे अल्लाह का डर हो या उस से भी ज़ियादा डर, और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! तू ने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया, हमें और थोड़ी मुद्दत क्यों न मुहलत दी? कह दें, दुनिया का फ़ाइदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है परहेज़गार के लिए, और तुम पर ज़ुल्म न होगा धागे बराबर (भी), (77)

तुम जहां कहीं होगे तुम्हें मौत पा लेगी अगरचे तुम होगे बुर्जों में मज़बूत, और अगर उन्हें कोई भलाई पहुँचे तो वह कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, और अगर उन्हें कुछ बुराई पहुँचे तो कहते हैं कि यह आप (स) की तरफ़ से है। आप (स) कह दें सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है, उस क़ौम को (उन लोगों को) क्या हो गया है कि यह बात समझते नहीं लगते (बात समझते मअ़लूम नहीं होते) (78)

जो तुम्हें कोई भलाई पहुँचे सो वह अल्लाह की तरफ़ से है, और जो तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह तुम्हारे नफ़्स से है, और हम ने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है, और अल्लाह काफ़ी है गवाह। (79)

जिस ने रसूल की इताअ़त की पस तहक़ीक़ उस ने अल्लाह की इताअ़त की, और जिस ने रू गर्दानी की तो हम ने आप (स) को उन पर निगहबान नहीं भेजा। (80)

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۡ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ

एक गिरोह	रात को मशवरा करता है	आप (स) के पास	से	बाहर जाते हैं	फिर जब	(हम ने) हुक्म माना	और वह कहते हैं

مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِىْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ

मुँह फेरलें	जो वह रात को मशवरे करते हैं	लिख लेता है	और अल्लाह	कहते हैं	उस के ख़िलाफ़ जो	उन से

عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ

फिर क्या वह ग़ौर नहीं करते?	81	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी है	अल्लाह पर	और भरोसा करें	उन से

الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا

इख़्तिलाफ़	उस में	ज़रूर पाते	अल्लाह के सिवा	पास	से	और अगर होता	क़ुरआन

كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ

उसे	मशहूर कर देते हैं	ख़ौफ़	या	अम्न	से (की)	कोई ख़बर	उन के पास आती है	और जब	82	बहुत

وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ

जो लोग	तो उस को जान लेते	अपने में से	हाकिम	और तरफ़	रसूल की तरफ़	उसे पहुँचाते	और अगर

يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ

तुम पीछे लग जाते	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	उन से	सही नतीजा निकाल लिया करते हैं

الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا

मगर	मुकल्लफ़ नहीं	अल्लाह की राह	में	पस लड़ें	83	चन्द एक	सिवाए	शैतान

نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ

जिन लोगों ने	जंग	रोक दे	कि	क़रीब है कि अल्लाह	मोमिन (जमा)	और आमादा करें	अपनी ज़ात

كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً

सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	जो	84	सज़ा देना	और सब से सख़्त	जंग	सख़्त तरीन	और अल्लाह	कुफ़्र किया (काफ़िर)

حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ

होगा - उस के लिए	बुरी बात	सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	और जो	उस में से	हिस्सा	होगा - उस के लिए	नेक बात

كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾ وَاِذَا حُيِّيْتُمْ

तुम्हें दुआ दे	और जब	85	क़ुदरत रखने वाला	हर चीज़	पर	अल्लाह	और है	उस से	बोझ (हिस्सा)

بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى

पर (का)	है	बेशक अल्लाह	या वही लौटा दो (कह दो)	उस से	बेहतर	तो तुम दुआ दो	किसी दुआ (सलाम) से

النصف

كُلِّ شَىْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى

तरफ़	वह तुम्हें ज़रूर इकट्ठा करेगा	उस के सिवा	नहीं इबादत के लाइक़	अल्लाह	86	हिसाब करने वाला	हर चीज़

ع ١١ ١٠ ٨

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾ ع

87	बात में	अल्लाह से	ज़ियादा सच्चा	और कौन?	इस में	नहीं शक	रोज़े क़ियामत

वह (मुँह से तो) यह कहते हैं कि हम ने माना, फिर जब बाहर जाते हैं आप (स) के पास से तो उन में से एक गिरोह रात को उस के ख़िलाफ़ मशवरा करता है जो वह कह चुके, और अल्लाह लिख लेता है जो वह रात को मशवरे करते हैं, आप (स) उन से मुँह फेर लें और अल्लाह पर भरोसा करें, और अल्लाह काफ़ी है कारसाज़। (81)

फिर क्या वह क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते? और अगर अल्लाह के सिवा किसी और के पास से होता तो उस में ज़रूर बहुत इख़्तिलाफ़ पाते। (82)

और जब उन के पास कोई अम्न की ख़बर आती है या ख़ौफ़ की तो उसे मशहूर कर देते हैं और अगर उसे पहुँचाते रसूल की तरफ़ और अपने हाकिमों की तरफ़ तो जो लोग उन में से तहक़ीक़ कर लिया करते हैं उस को जान लेते। और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तुम पर और उस की रहमत (न होती) तो चन्द एक के सिवा तुम शैतान के पीछे लग जाते। (83)

पस आप (स) अल्लाह की राह में लड़ें, आप (स) मुकल्लफ़ नहीं मगर अपनी जान के, और मोमिनों को आमादा करें, क़रीब है कि अल्लाह रोक दे काफ़िरों की जंग (का ज़ोर) और अल्लाह की जंग सख़्त तरीन है और उस की सज़ा सब से सख़्त है। (84)

जो कोई नेक बात में सिफ़ारिश करे उस के लिए उस से हिस्सा होगा, और जो कोई सिफ़ारिश करे बुरी बात में उस को उस का बोझ (हिस्सा) मिलेगा, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (85)

और जब तुम्हें कोई दुआ दे (सलाम करे) तो तुम उस से बेहतर दुआ दो या वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब करने वाला है। (86)

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह जरूर तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा जिस में कोई शक नहीं, और कौन ज़ियादा सच्चा है बात में अल्लाह से। (87)

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ

उस के सबब जो उन्हों ने कमाया (किया)	उन्हें उलट दिया (औन्धा कर दिया)	और अल्लाह	दो फ़रीक़	मुनाफ़िक़ीन के बारे में	सो क्या हुआ तुम्हें?

اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

गुमराह करे अल्लाह	और जो-जिस	अल्लाह ने गुमराह किया	जो-जिस	कि राह पर लाओ	क्या तुम चाहते हो?

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿٨٨﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا

वह काफ़िर हुए	जैसे	काश तुम काफ़िर हो जाओ	वह चाहते हैं	88	कोई राह	उस के लिए	पस तुम हरगिज़ न पाओगे

فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا

वह हिज्रत करें	यहां तक कि	दोस्त	उन से	पस तुम न बनाओ	बराबर	तो तुम हो जाओ

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ

जहां कहीं	और उन्हें क़त्ल करो	तो उन को पकड़ो	मुँह मोड़ें	फिर अगर	अल्लाह की राह	में

وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٨٩﴾ اِلَّا

मगर	89	मददगार	और न	दोस्त	उन से	बनाओ	और न	तुम उन्हें पाओ

الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ

या	अहद (मुआहदा)	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	क़ौम	तरफ़ (से)	मिल गए हैं (तअल्लुक़ रखते हैं)	जो लोग

جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا

लड़ें	या	वह तुम से लड़ें	कि	उन के सीने (दिल)	तंग हो गए	वह तुम्हारे पास आएं

قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ

फिर अगर	तो वह तुम से ज़रूर लड़ते	तुम पर	उन्हें मुसल्लत कर देता	चाहता अल्लाह	और अगर	अपनी क़ौम से

اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ

सुलह	तुम्हारी तरफ़	और डालें	वह तुम से लड़ें	फिर न	तुम से किनारा कश हों

فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ

और लोग	अब तुम पाओगे	90	कोई राह	उन पर	तुम्हारे लिए	अल्लाह	तो नहीं दी

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ

फ़ित्ने की तरफ़	जब कभी लौटाए (बुलाए जाते हैं)	अपनी क़ौम	और अम्न में रहें	कि तुम से अम्न में रहें	वह चाहते हैं

اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ

तुम्हारी तरफ़	और (न) डालें वह	तुम से किनारा कशी न करें	पस अगर	उस में	पलट जाते हैं

السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ

जहां कहीं	और उन्हें क़त्ल करो	तो उन्हें पकड़ो	अपने हाथ	और रोकें	सुलह

ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾ ع ١٢ ٤ ٩

91	खुली	सनद (हुज्जत)	उन पर	तुम्हारे लिए	हम ने दी	और यही लोग	तुम उन्हें पाओ

सो तुम्हें क्या हो गया है? मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो गिरोह (हो रहे हो) और अल्लाह ने उन्हें औन्धा कर दिया उस के सबब जो उन्हों ने किया, क्या तुम चाहते हो कि उसे राह पर लाओ जिस को अल्लाह ने गुमराह किया? और जिस को अल्लाह गुमराह करे तुम हरगिज़ उस के लिए कोई राह न पाओगे। (88)

वह चाहते हैं काश तुम (भी) काफ़िर हो जाओ जैसे वह काफ़िर हुए तो तुम बराबर हो जाओ। पस तुम उन में से (किसी को) दोस्त न बनाओ यहां तक कि वह हिज्रत करें अल्लाह की राह में, फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो तुम जहां कहीं उन्हें पाओ पकड़ो और क़त्ल करो, और उन में से (किसी को) न दोस्त बनाओ न मददगार, (89)

मगर जो लोग तअल्लुक़ रखते हैं (ऐसी) क़ौम से कि तुम्हारे और उन के दरमियान मुआहदा है, या तुम्हारे पास आएं (उस हाल में) कि तंग हो गए हैं उन के दिल (उस बात से) कि तुम से लड़ें या अपनी क़ौम से लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर मुसल्लत कर देता तो वह तुम से ज़रूर लड़ते, फिर अगर वह तुम से किनारा कश रहें फिर तुम से न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ सुलह (का पयाम) डालें, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर (सताने की) कोई राह नहीं रखी। (90)

अब तुम और लोग पाओगे जो चाहते हैं कि वह तुम से (भी) अम्न में रहें और अपनी क़ौम से (भी) अम्न में रहें, जब कभी फ़ित्ना (फ़साद) की तरफ़ बुलाए जाते हैं तो उस में पलट जातें हैं, पस अगर तुम से किनारा कशी न करें और वह न डालें तुम्हारी तरफ़ (पैग़ामे) सुलह, और (न) रोकें अपने हाथ, तो उन्हें पकड़ो और क़त्ल करो जहां कहीं तुम उन्हें पाओ, और यही लोग हैं जिन पर हम ने तुम्हें खुली सनद (हुज्जत) दी। (91)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَأً ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً

ग़लती से	किसी मुसलमान	क़त्ल करे	और जो	मगर ग़लती से	किसी मुसलमान	कि वह क़त्ल करे	किसी मुसलमान के लिए	है	और नहीं

فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ۭ فَاِنْ

फिर अगर	वह माफ़ कर दें	यह कि	मगर	उस के वारिसों को	हवाले करना	और ख़ून बहा	मुसलमान	एक गर्दन (ग़ुलाम)	तो आज़ाद करे

كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۭ وَاِنْ

और अगर	मुसलमान	एक गर्दन (ग़ुलाम)	तो आज़ाद कर दे	मुसलमान	और वह	तुम्हारी	दुश्मन क़ौम	से	हो

كَانَ مِنْ قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ

उस के वारिसों को	हवाले करना	ख़ून बहा	अ़हद (मुआ़हदा)	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	ऐसी क़ौम से	हो

وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۙ

लगातार	दो माह	तो रोज़े रखे	न पाए	सो जो	मुसलमान	एक गर्दन (ग़ुलाम)	और आज़ाद करना

تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝٩٢ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا

दानिस्ता (क़स्दन)	किसी मुसलमान को	क़त्ल कर दे	और जो कोई	92	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	अल्लाह से	तौबा

فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ

उस के लिए तैयार कर रखा है	और उस की लानत	उस पर	और अल्लाह का ग़ज़ब	उस में	हमेशा रहेगा	जहन्नम	तो उस की सज़ा

عَذَابًا عَظِيْمًا ۝٩٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह की राह	में	तुम सफ़र करो	जब	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	93	बड़ा	अ़ज़ाब

فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ

तुम चाहते हो	मुसलमान	तू नहीं है	सलाम	तुम्हारी तरफ़	डाले (करे)	जो कोई	तुम कहो	और न	तो तहक़ीक़ कर लो

عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۭ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ

इस से पहले	तुम थे	उसी तरह	बहुत	ग़नीमतें	फिर अल्लाह के पास	दुनिया की ज़िन्दगी	असबाब (सामान)

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝٩٤

94	ख़ूब बाख़बर	तुम करते हो	उस से जो	है	बेशक अल्लाह	सो तहक़ीक़ कर लो	तुम पर	तो एहसान किया अल्लाह

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ

और मुजाहिद (जमा)	उ़ज़्र वाले (मअ़ज़ूर)	बग़ैर	मोमिनीन	से	बैठ रहने वाले	बराबर नहीं

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ

जिहाद करने वाले	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	और अपनी जानें	अपने मालों से	अल्लाह की राह	में

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ

अल्लाह ने वादा दिया	और हर एक	दरजे	बैठ रहने वाले	पर	और अपनी जानें	अपने मालों से

الْحُسْنٰى ۭ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٩٥

95	अजरे अ़ज़ीम	बैठ रहने वाले	पर	मुजाहिदीन	और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	अच्छा

और नहीं किसी मुसलमान के (शायां) कि वह किसी मुसलमान को क़त्ल कर दे मगर ग़लती से। और जो किसी मुसलमान को क़त्ल करे ग़लती से तो वह एक ग़ुलाम आज़ाद करे और ख़ून वहा उस के वारिसों के हवाले कर दे मगर यह कि वह माफ़ कर दें। फिर अगर वह तुम्हारी दुश्मन क़ौम से हो और वह ख़ुद मुसलमान हो तो आज़ाद करे एक मुसलमान ग़ुलाम। और अगर ऐसी क़ौम से हो कि उन के और तुम्हारे दरमियान मुआ़हदा है तो ख़ून वहा उस के वारिसों के हवाले कर दे और एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद कर दे। सो जो न पाए (मयस्सर न हो) तो दो माह लगातार रोज़े रखे, यह तौबा है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (92)

और जो कोई किसी मुसलमान को दानिस्ता क़त्ल कर दे तो उस की सज़ा जहन्नम है, वह हमेशा रहेगा उस में, और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उस की लानत, और उस के लिए (अल्लाह ने) बड़ा अ़ज़ाब तैयार कर रखा है (93)

ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) सफ़र करो तो तहक़ीक़ कर लिया करो, और जो तुम्हें सलाम करे उसे न कहो कि तू मुसलमान नहीं है, तुम चाहते हो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान, फिर अल्लाह के पास बहुत ग़नीमतें हैं, तुम उसी तरह थे इस से पहले तो अल्लाह ने तुम पर एहसान किया, सो तहक़ीक़ कर लिया करो, बेशक जो तुम करते हो उस से अल्लाह ख़ूब बाख़बर है। (94)

बग़ैर उ़ज़्र बैठ रहने वाले मोमिनीन और वह बराबर नहीं जो अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वाले हैं, अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी दरजे में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर, और हर एक को अल्लाह ने अच्छा वादा दिया है, और अल्लाह ने मुजाहिदों को बैठ रहने वालों पर फ़ज़ीलत दी है अजरे अ़ज़ीम (के एतिबार से)। (95)

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	और रहमत	और बख़्शिश	उस की तरफ़ से	दरजे

ع ١٣ ٥ ١٠ رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ

ज़ुल्म करते थे	फ़रिश्ते	उन की जान निकालते हैं	वह लोग जो	बेशक	96	मेहरबान

اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ

बेबस	वह कहते हैं हम थे	तुम थे	किस (हाल) में	वह कहते हैं	अपनी जानें

فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً

वसीअ़	अल्लाह की ज़मीन	क्या न थी	वह कहते हैं	ज़मीन (मुल्क)	में

فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

97	पहुँचने की जगह	और बुरा है	जहन्नम	उन का ठिकाना	सो यह लोग	पस तुम हिज्रत कर जाते उस में

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ

और बच्चे	और औ़रतें	मर्द (जमा)	से	बेबस	मगर

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾

98	कोई रास्ता	पाते हैं	और न	कोई तदबीर	नहीं कर सकते

فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

और है अल्लाह	उन से (उन को)	कि माफ़ फ़रमाए	उम्मीद है कि अल्लाह	सो ऐसे लोग हैं

عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ

वह पाएगा	अल्लाह का रास्ता	में	हिज्रत करे	और जो	99	बख़्शने वाला	माफ़ करने वाला

فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ وَمَنْ يَّخْرُجْ

निकले	और जो	और कुशादगी	बहुत (वाफ़िर) जगह	ज़मीन	में

مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ

आ पकड़े उस को	फिर	और उस का रसूल	अल्लाह की तरफ़	हिज्रत कर के	अपना घर	से

الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	अल्लाह पर	उस का अजर	तो साबित हो गया	मौत

ع ١٤ ١١ رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	पस नहीं	ज़मीन में	तुम सफ़र करो	और जब	100	मेहरबान

جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ

तुम्हें सताएंगे	कि	तुम को डर हो	अगर	नमाज़	से	क़स्र करो	कि	कोई गुनाह

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾

101	दुश्मन खुले	तुम्हारे	हैं	काफ़िर (जमा)	बेशक	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

उस की तरफ़ से दरजे हैं और बख़्शिश और रहमत है, और अल्लाह है बख़्शने वाला मेहरबान। (96)

बेशक वह लोग जिन की फ़रिश्ते जान निकालते हैं (उस हाल में कि वह) ज़ुल्म करते थे अपनी जानों पर, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम किस हाल में थे? वह कहते हैं कि हम बेबस थे इस मुल्क में, (फ़रिश्ते) कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ न थी? पस तुम उस में हिज्रत कर जाते, सो यही लोग हैं उन का ठिकाना जहन्नम है और वह पहुँचने (पलटने) की बुरी जगह है। (97)

मगर जो बेबस हैं मर्द और औ़रतें और बच्चे कि कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई रास्ता पाते हैं, (98)

सो उम्मीद है कि ऐसे लोगों को अल्लाह माफ़ फ़रमाए, और अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला। (99)

और जो अल्लाह के रास्ते में हिज्रत करे वह पाएगा ज़मीन में बहुत (वाफ़िर) जगह और कुशादगी, और जो अपने घर से हिज्रत कर के निकले अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़, फिर उस को मौत आ पकड़े तो उस का अजर अल्लाह पर साबित हो गया, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (100)

और जब तुम मुल्क में सफ़र करो, पस नहीं तुम पर कोई गुनाह कि तुम नमाज़ क़स्र करो (कम कर लो) अगर तुम को डर हो कि तुम्हें सताएंगे काफ़िर, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। (101)

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ

एक जमाअ़त	तो चाहिए कि खड़ी हो	नमाज़	उन के लिए	फिर क़ाइम करें	उन में	आप हों	और जब

مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا

तो हो जाएं	वह सिज्दा कर लें	फिर जब	अपने हथियार	और चाहिए कि वह ले लें	आप (स) के साथ	उन में से

مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۪ وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا

पस वह नमाज़ पढ़ें	नमाज़ नहीं पढ़ी	दूसरी	जमाअ़त	और चाहिए कि आए	तुम्हारे पीछे

مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ

चाहते हैं जिन लोगों ने	और अपना अस्लिहा	अपना बचाओ	और चाहिए कि लें	आप (स) के साथ

كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ

तो वह झुक पड़ें (हमला करें)	और अपने सामान	अपने हथियार (जमा)	से	कहीं तुम ग़ाफ़िल हो	कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ

तुम्हें	हो	अगर	तुम पर	गुनाह	और नहीं	एक बार (यकबारगी)	झुकना	तुम पर

اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ

अपना अस्लिहा	कि उतार रखो	बीमार	या तुम हो	बारिश से	तक्लीफ़

وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٠٢﴾

102	ज़िल्लत वाला	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	तैयार किया	बेशक अल्लाह	अपना बचाओ	और ले लो

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا

और बैठे	खड़े	तो अल्लाह को याद करो	नमाज़	तुम अदा कर चुको	फिर जब

وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ

बेशक	नमाज़	तो क़ाइम करो	तुम मुत्मइन हो जाओ	फिर जब	अपनी करवटें	और पर

الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿١٠٣﴾

103	मुक़र्ररा औक़ात में	फ़र्ज़	मोमिनीन	पर	है	नमाज़

وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ

तो बेशक उन्हें	तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचती है	अगर	क़ौम (कुफ़्फ़ार)	पीछा करने	में	और हिम्मत न हारो

يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ۭ

वह उम्मीद रखते	जो नहीं	अल्लाह	से	और तुम उम्मीद रखते हो	जैसे तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचती है	तक्लीफ़ पहुँचती है

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٠٤﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ ع ١٥ ٤ ١٢

ताकि आप फ़ैसला करें	हक़ के साथ (सच्ची)	किताब	आप (स) की तरफ़	हम ने नाज़िल किया	बेशक हम	104	हिक्मत वाला	जानने वाला	और है अल्लाह

بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۭ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿١٠٥﴾

105	झगड़ने वाला (तरफ़दार)	ख़ियानत करने वालों (दग़ाबाज़ों) के लिए	हों	और न	अल्लाह	जो दिखाए आप को	लोग	दरमियान

और जब आप (स) उन में मौजूद हों, फिर उन के लिए नमाज़ क़ाइम करें (नमाज़ पढ़ाने लगें) तो चाहिए कि उन में से एक जमाअ़त आप के साथ खड़ी हो और चाहिए कि वह अपने हथियार ले लें, फिर जब वह सिज्दा कर लें तो तुम्हारे पीछे हो जाएं, और (अब) आए दूसरी जमाअ़त (जिस ने) नमाज़ नहीं पढ़ी, पस वह आप (स) के साथ नमाज़ पढ़ें, और चाहिए कि वह लिए रहें अपना बचाओ और अपना अस्लिहा, काफ़िर चाहते हैं कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने सामान से ग़ाफ़िल हो तो तुम पर यकबारगी झुक पड़ें (हमला कर दें), और तुम पर गुनाह नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब तक्लीफ़ हो या तुम बीमार हो कि तुम अपना अस्लिहा उतार रखो, और अपना बचाओ ले लो, बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (102)

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए, फ़िर जब तुम मुत्मइन (ख़ातिर जमा) हो जाओ तो (हस्बे दस्तूर) नमाज़ क़ाइम करो, बेशक नमाज़ मोमिनों पर (बक़ैदे वक़्त) मुक़र्ररा औक़ात में फ़र्ज़ है। (103)

और कुफ़्फ़ार का पीछा (तआ़क़ुब) करने में हिम्मत न हारो, अगर तुम्हें दुख पहुँचता है तो बेशक उन्हें (भी) दुख पहुँचता हैं जैसे तुम्हें दुख पहुँचता है, और तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो जो वह उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (104)

बेशक हम ने आप (स) की तरफ़ किताब नाज़िल की सच्ची ताकि आप लोगों के दरमियान फ़ैसला कर दें जो आप को अल्लाह दिखा दे (सुझा दे) और आप न हों दग़ाबाज़ों के तरफ़दार। (105)

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٦﴾ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ

से	और न झगड़ें	106	मेहरबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से बख़्शिश मांगें

الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ

जो हो	दोस्त नहीं रखता	बेशक अल्लाह	अपने तईं	ख़ियानत करते हैं	जो लोग

خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿١٠٧﴾ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ

और नहीं छुपते (शर्माते)	लोग	से	वह छुपते (शर्माते) हैं	107	गुनाहगार	ख़ाइन (दग़ाबाज़)

مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى

पसन्द करता	जो नहीं	जब रातों को मशवरा करते हैं	उन के साथ	हालांकि वह	अल्लाह से

مِنَ الْقَوْلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿١٠٨﴾ هٰٓاَنْتُمْ

हाँ तुम	108	अहाता किए (घेरे) हुए	वह करते हैं	उसे जो	अल्लाह	और है	बात	से

هٰٓؤُلَاۗءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۣ فَمَنْ يُّجَادِلُ

झगड़ेगा	सो- कौन	दुनियवी ज़िन्दगी	में	उन (की तरफ़) से	तुम ने झगड़ा किया	वह

اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿١٠٩﴾

109	वकील	उन पर (उन का)	होगा	कौन?	या	रोज़े क़ियामत	उन (की तरफ़) से	अल्लाह

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ

वह पाएगा	फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे	अपनी जान	या ज़ुल्म करे	बुरा काम	काम करे	और जो

اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١١٠﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ

वह कमाता है	तो फ़क़त	गुनाह	कमाए	और जो	110	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह

عَلٰي نَفْسِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْۗـَٔةً

ख़ता	कमाए	और जो	111	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	अपनी जान पर

ع ١٦ ٨ ١٣ اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْۗـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾

112	सरीह (खुला)	और गुनाह	भारी बुहतान	तो उस ने लादा	किसी बेगुनाह	उस की तुहमत लगा दे	फिर	या गुनाह

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ

उन में से	एक जमाअ़त	तो क़स्द किया ही था	और उस की रहमत	आप पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न

اَنْ يُّضِلُّوْكَ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ

और नहीं बिगाड़ सकते आप (स) का	अपने आप	मगर	बहका रहे हैं	और नहीं	कि आप को बहका दें

مِنْ شَيْءٍ ۭ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ

और आप को सिखाया	और हिक्मत	किताब	आप (स) पर	और अल्लाह ने नाज़िल की	कुछ भी

مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۭ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾ الثلثة

113	बड़ा	आप (स) पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और है	तुम जानते	जो नहीं थे

और अल्लाह से बख़्शिश मांगें, बेशक अल्लाह है बख़्शने वाला मेहरबान। (106)

आप उन लोगों की तरफ़ से न झगड़ें जो अपने तईं ख़ियानत करते हैं, बेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो ख़ाइन (दग़ाबाज़) गुनाहगार हो। (107)

वह लोगों से छुपते (शर्माते) हैं और अल्लाह से नहीं छुपते (शर्माते) हालांकि वह उन के साथ है जब कि वह रातों को मशवरा करते हैं जो बात (अल्लाह को) पसन्द नहीं, और जो वह करते हैं अल्लाह उसे अहाता किए (घेरे हुए) है। (108)

हाँ (सुनो) तुम वह लोग हो तुम ने उन (की तरफ़) से दुनियवी ज़िन्दगी में झगड़ा किया, सो कौन अल्लाह से झगड़ेगा रोज़े क़ियामत उन की तरफ़ से, या कौन उन का वकील होगा? (109)

और जो कोई करे बुरा काम या अपनी जान पर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा। (110)

और जो कोई गुनाह कमाए तो वह फ़क़त अपनी जान पर (अपने हक़ में) कमाता है। और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। (111)

और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए, फिर उस की तुहमत लगा दे किसी बेगुनाह पर तो उस ने भारी बुहतान और सरीह (खुला) गुनाह लादा। (112)

और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत आप (स) पर न होती तो उन की एक जमाअ़त ने क़स्द कर ही लिया था कि आप को बहका दें, और वह नहीं बहका रहे हैं मगर अपने आप को, और आप (स) का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, और अल्लाह ने आप (स) पर नाज़िल की किताब और हिक्मत, और आप (स) को सिखाया जो आप (स) न जानते थे, और है आप (स) पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल। (113)

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ

या	ख़ैरात का	हुक्म दे	मगर	उन की सरगोशियों	से	अक्सर	में	नहीं कोई भलाई

مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

यह	करे	और जो	लोगों के दरमियान	या इस्लाह कराना	अच्छी बात का

ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾ وَمَنْ

और जो	114	बड़ा	सवाब	हम उसे देंगे	सो अनक़रीब	अल्लाह की रज़ा	हासिल करना

يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى

हिदायत	उस के लिए	ज़ाहिर हो चुकी	जब	उस के बाद	रसूल	मुख़ालिफ़त करे

وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ

और हम उसे दाख़िल करेंगे	जो उस ने इख़्तियार किया	हम हवाले कर देंगे	मोमिनों का रास्ता		ख़िलाफ़	और चले

ع ١٧ ٣ ١٤ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ

कि शरीक ठहराया जाए	नहीं बख़्शता	बेशक अल्लाह	115	पहुँचने (पलटने) की जगह	और बुरी जगह	जहन्नम

بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ

अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जिस	वह चाहे	जिस को	उस	सिवा	जो	और बख़्शेगा	उस का

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ

उस के सिवा	वह नहीं पुकारते	116	दूर	गुमराही	सो गुमराह हुआ

وقف لازم اِلَّآ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ

अल्लाह ने उस पर लानत की	117	सरकश	शैतान	मगर	पुकारते हैं	और नहीं	मगर औरतें

وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾

118	मुक़र्ररा	हिस्सा	तेरे बन्दे	से	मैं ज़रूर लूँगा	और उस ने कहा

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ

कान	तो वह ज़रूर चीरेंगे	और उन्हें हुकम दुँगा	और उन्हें ज़रूर उम्मीदें दिलाऊंगा	और उन्हें ज़रूर बहकाऊंगा

الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَّخِذِ

पकड़े (बनाए)	और जो	अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें	तो वह ज़रूर बदलेंगे	और उन्हें हुकम दुँगा	जानवर (जमा)

الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ؕ ﴿١١٩﴾

119	सरीह	नुक़्सान	तो वह पड़ा नुक़्सान में	अल्लाह के सिवा	दोस्त	शैतान

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾

120	सिर्फ़ फ़रेब	मगर	शैतान	और उन्हें वादे नहीं देता	और उन्हें उम्मीद दिलाता है	वह उन को वादा देता है

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾

121	भागने की जगह	उस से	और वह न पाएंगे	जहन्नम	जिन का ठिकाना	यही लोग

उन के अक्सर मशवरों (सरगोशियों) में कोई भलाई नहीं मगर यह कि जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों के दरमियान इस्लाह कराने का, और जो यह करे अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, सो अनक़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे। (114)

और जो कोई उस के बाद रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करे जब कि उस पर हिदायत ज़ाहिर हो चुकी है, और सब मोमिनों के रास्ते के ख़िलाफ़ चले हम उस के हवाले कर देंगे जो उस ने इख़्तियार किया और हम उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और यह पलटने की बुरी जगह है। (115)

बेशक अल्लाह उस को नहीं बख़्शता कि उस का शरीक ठहराया जाए और बख़्श देगा उस के सिवा जिस को चाहे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया, सो वह गुमराह हुआ, गुमराही में बहुत दूर निकल गया। (116)

वह उस (अल्लाह) के सिवा नहीं पुकारते (परस्तिश करते) मगर औरतों को, और नहीं पुकारते मगर सरकश शैतान को, (117)

अल्लाह ने उस पर लानत की। उस (शैतान) ने कहा मैं तेरे बन्दों से अपना हिस्सा ज़रूर लूंगा मुक़र्ररा। (118)

और मैं उन्हें ज़रूर बहकाऊँगा, और ज़रूर उम्मीदें दिलाऊँगा, और उन्हें ज़रूर सिखाऊँगा तो वह ज़रूर चीरेंगे (बुतों की ख़ातिर) जानवरों के कान, और मैं उन्हें सिखाऊंगा तो वह अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें बदलेंगे, और जो बनाए अल्लाह के सिवा शैतान को दोस्त तो वह सरीह नुक़्सान में पड़ गया। (119)

वह उन को वादे करता है और उम्मीदें दिलाता है और शैतान उन्हें वादे नहीं करता मगर सिर्फ़ फ़रेब (निरा धोका) (120)

यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है और वह उस से भागने की जगह न पाएंगे। (121)

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

बाग़ात	हम अनक़रीब उन्हें दाख़िल करेंगे	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और जो लोग

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	हमेशा हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं

حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿۱۲۲﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ

तुम्हारी आर्ज़ूओं पर	न	122	बात में	अल्लाह	से	सच्चा	और कौन	सच्चा

وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ

उस की सज़ा पाएगा	बुराई	जो करेगा	अहले किताब	आर्ज़ूएं	और न

وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ

करेगा	और जो	123	और न मददगार	कोई दोस्त	अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और न पाएगा

مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ

तो ऐसे लोग	मोमिन	बशर्ते यह कि वह	या औ़रत	मर्द	से	अच्छे काम	से

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ

ज़ियादा बेहतर	और कौन	124	तिल बराबर	उन पर ज़ुल्म होगा	और न	जन्नत	दाख़िल होंगे

دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ

दीन	और उस ने पैरवी की	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए	अपना मुँह	झुका दिया	से-जिस	दीन

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾ وَلِلّٰهِ مَا

और अल्लाह के लिए जो	125	दोस्त	इब्राहीम (अ)	और अल्लाह ने बनाया	एक का हो कर रहने वाला	इब्राहीम (अ)

۱۸ ع ۱۱ ۱۵ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۶﴾

126	अहाता किए हुए	चीज़	हर	और है अल्लाह	ज़मीन	में	और जो	आस्मानों में

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا

और जो	उन के बारे में	तुम्हें हुक्म देता है	अल्लाह	आप कहदें	औ़रतों के बारे में	और वह आप से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं

يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ

वह जिन्हें	औ़रतें	यतीम	(बारे) में	किताब (क़ुरआन) में	तुम्हें	सुनाया जाता है

لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ

उन को निकाह में ले लो	कि	और नहीं चाहते हो	उन के लिए	जो लिखा गया (मुक़र्रर)	तुम उन्हें नहीं देते

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى

यतीमों के बारे में	क़ाइम रहो	और यह कि	बच्चे	से (बारे में)	और बेबस

بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۷﴾

127	उस को जानने वाला	है	तो बेशक अल्लाह	कोई भलाई	और जो तुम करोगे	इन्साफ़ पर

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए हम अनक़रीब उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और कौन है अल्लाह से ज़ियादा सच्चा बात में? (122)

(अ़ज़ाब ओ सवाब) न तुम्हारी आर्ज़ूओं पर है और न अहले किताब की आर्ज़ूओं पर, जो कोई बुराई करेगा उस की सज़ा पाएगा और अपने लिए नहीं पाएगा अल्लाह के सिवा कोई दोस्त और न मददगार। (123)

और जो अच्छे काम करेगा, मर्द हो या औ़रत, बशर्त यह कि वह मोमिन हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन पर तिल बराबर ज़ुल्म न होगा। (124)

और किस का दीन उस से बेहतर? जिस ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार भी है, और उस ने एक के हो रहने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की पैरवी की, और अल्लाह ने इब्राहीम (अ) को दोस्त बनाया। (125)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को अहाता किए हुए है। (126)

आप (स) से औ़रतों के बारे में हुक्म दर्याफ़्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म (इजाज़त) देता है, और जो तुम्हें क़ुरआन मजीद में सुनाया जाता है यतीम औ़रतों के बारे में, जिन्हें तुम नहीं देते उन का मुक़र्रर किया हुआ (मेहर) और नहीं चाहते कि उन को निकाह में ले लो, और बेबस बच्चों के बारे में, और यह कि तुम यतीमों के बारे में इन्साफ़ पर क़ाइम रहो, और तुम जो भलाई करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (127)

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا

बे रग़बती	या	ज़ियादती	अपने ख़ावन्द से	डरे	कोई औ़रत	और अगर

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ

बेहतर	और सुलह	सुलह	आपस में	कि वह सुलह कर लें	उन दोनों पर	तो नहीं गुनाह

وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गारी करो	तुम नेकी करो	और अगर	बुख़ल	तबीअ़तें	और हाज़िर किया गया (मौजूद है)

كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٢٨﴾ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا

बराबरी रखो	कि	कर सकोगे	और हरगिज़ न	128	बाख़बर	जो तुम करते हो	है

بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا

कि एक को डाल रखो	बिलकुल झुक जाना	पस न झुक पड़ो	बोहतेरा चाहो	अगरचे	औ़रतों के दरमियान

كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا

बख़्शने वाला	है	तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गारी करो	इस्लाह करते रहो	और अगर	जैसे लटकती हुई

رَّحِيْمًا ﴿١٢٩﴾ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ

और है	अपनी कशाइश से	से	हर एक को	अल्लाह बेनियाज़ कर देगा	दोनों जुदा हो जाएं	और अगर	129	मेहरबान

اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿١٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	और अल्लाह के लिए जो	130	हिक्मत वाला	कशाइश वाला	अल्लाह

وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ

और तुम्हें	तुम से पहले	से	जिन्हें किताब दी गई	वह लोग	और हम ने ताकीद कर दी है

اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	जो	तो बेशक अल्लाह के लिए	तुम कुफ़्र करोगे	और अगर	कि डरते रहो अल्लाह से

فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	में	और अल्लाह के लिए जो	131	सब ख़ूबियों वाला	बेनियाज़	अल्लाह	और है	ज़मीन में

وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

तुम्हें ले जाए	अगर वह चाहे	132	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी	ज़मीन में	और जो

اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ

उस पर	और है अल्लाह	दूसरों को	और ले आए	ऐ लोगो

قَدِيْرًا ﴿١٣٣﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ

तो अल्लाह के पास	दुनिया का सवाब	चाहता है	जो	133	क़ादिर

ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾ ع ١٩ ٨ ١٦

134	देखने वाला	सुनने वाला	और है अल्लाह	और आख़िरत	दुनिया	सवाब

और अगर कोई औ़रत डरे (अन्देशा करे) अपने ख़ावन्द (की तरफ़) से ज़ियादती या बेरग़बती तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि वह सुलह कर लें आपस में, और सुलह बेहतर है, और तबीअ़तों में बुख़ल हाज़िर किया गया है (मौजूद होता ही है), और अगर तुम नेकी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो तो बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (128)

और हरगिज़ न कर सकोगे अगरचे तुम बोहतेरा चाहो कि औ़रतों के दरमियान बराबरी रखो, पस न झुक पड़ो बिलकुल (एक ही तरफ़) कि एक को (आध में) लटकती हुई डाल रखो, और अगर तुम इस्लाह करते रहो और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (129)

और अगर दोनों (मियां बीवी) जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को बेनियाज़ कर देगा अपनी कशाइश से, और अल्लाह कशाइश वाला हिक्मत वाला है। (130)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और हम ने ताकीद कर दी है उन लोगों को जिन्हें किताब दी गई तुम से पहले और तुम्हें (भी) कि अल्लाह से डरते रहो, और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो बेशक अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह बेनियाज़ है, सब ख़ूबियों वाला। (131)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (132)

अगर (अल्लाह) चाहे कि तुम्हें ले जाए (फ़ना कर दे) ऐ लोगो! और दूसरों को ले आए (ला बसाए), और अल्लाह उस पर क़ादिर है। (133)

जो कोई दुनिया का सवाब चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया और आख़िरत का सवाब है, और अल्लाह सुनने वाला, और देखने वाला है। (134)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ

गवाही देने वाले अल्लाह के लिए	इन्साफ़ पर	क़ाइम रहने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا

कोई मालदार	अगर (चाहे) हो	और क़राबतदार	माँ बाप	या	खुद तुम्हारे ऊपर (ख़िलाफ़)	अगरचे

اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۣ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ

की इन्साफ़ करो	ख़ाहिश	पैरवी करो	सो-न	उन का	ख़ैर ख़ाह	पस अल्लाह	या मोहताज

وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾

135	बाख़बर	तुम करते हो	जो	है	तो बेशक अल्लाह	या पहलूतही करोगे	और अगर तुम ज़बान दबाओगे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ

जो उस ने नाज़िल की	और किताब	और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान लाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ

अल्लाह का	इन्कार करे	और जो	इस से क़ब्ल	जो उस ने नाज़िल की	और किताब	अपने रसूल पर

وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا

गुमराही	तो वह भटक गया	और रोज़े आख़िरत	और उस के रसूलों	और उस की किताबों	और उस के फ़रिश्तों

بَعِيْدًا ﴿١٣٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ

फिर	फिर काफ़िर हुए	ईमान लाए	फिर	फिर काफ़िर हुए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	136	दूर

ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿١٣٧﴾

137	राह	और न दिखाएगा	उन्हें	कि बख़्शदे	अल्लाह	नहीं है	बढ़ते रहे कुफ़्र में

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمَا ۙ ﴿١٣٨﴾ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ

पकड़ते हैं (बनाते हैं)	जो लोग	138	दर्दनाक अ़ज़ाब	उन के लिए	कि	मुनाफ़िक़ (जमा)	ख़ुशख़बरी दें

الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ

उन के पास	क्या ढून्डते हैं?	मोमिनीन	सिवाए (छोड़ कर)	दोस्त	काफ़िर (जमा)

الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿١٣٩﴾ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ

किताब में	तुम पर	उतार चुका	और तहक़ीक़	139	सारी	अल्लाह के लिए	इ़ज़्ज़त	बेशक	इ़ज़्ज़त

اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا

तो न बैठो	उस का	मज़ाक़ उड़ाया जाता है	उस का	इन्कार किया जाता है	अल्लाह की आयतें	जब तुम सुनो	यह कि

مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۚ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ۭ

उन जैसे	उस सूरत में	यक़ीनन तुम	उस के सिवा	बात	में	वह मशग़ूल हों	यहां तक कि	उन के साथ

اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَا ۙ ﴿١٤٠﴾

140	तमाम	जहन्नम में	और काफ़िर (जमा)	मुनाफ़िक़ (जमा)	जमा करने वाला	बेशक अल्लाह

ऐ ईमान वालो! हो जाओ इन्साफ़ पर क़ाइम रहने वाले अल्लाह के लिए गवाही देने वाले अगरचे खुद तुम्हारे ख़िलाफ़ या माँ बाप और क़राबतदारों (के ख़िलाफ़) हो, चाहे कोई मालदार हो या मोहताज (बहर हाल) अल्लाह उन का (सब से बढ़ कर) ख़ैर ख़ाह है, सो तुम ख़ाहिश (नफ़्स) की पैरवी न करो इन्साफ़ करने में, और अगर तुम (गवाही में) ज़बान दबाओगे या पहलूतही करोगे तो बेशक अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (135)

ऐ ईमान वालो! तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और उस किताब पर जो उस ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल की (क़ुरआन) और उन किताबों पर जो उस से क़ब्ल नाज़िल कीं, और जो इन्कार करे अल्लाह का, और उस के फ़रिश्तों, उस की किताबों, उस के रसूलों और रोज़े आख़िरत का तो भटक गया दूर की गुमराही में। (136)

बेशक जो लोग ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर कुफ़्र में बढ़ते रहे, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा और न उन्हें (सीधी) राह दिखाएगा। (137)

मुनाफ़िक़ों को ख़ुशख़बरी दें कि उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (138)

जो लोग मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन के पास इ़ज़्ज़त ढून्डते हैं? बेशक सारी इ़ज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है। (139)

और तहक़ीक़ (अल्लाह) किताब (क़ुरआन) में तुम पर (यह हुक्म) उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जाता है और उन का मज़ाक़ उड़ाया जाता है तो उन के साथ न बैठो यहां तक कि वह मशग़ूल हों उस के सिवा (किसी और) बात में, यक़ीनन उस सूरत में तुम उन जैसे होगे, बेशक अल्लाह जमा करने वाला है तमाम मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को जहन्नम में (एक जगह)। (140)

जो लोग तकते (इन्तिज़ार करते) रहते हैं तुम्हारा, फिर अगर तुम को अल्लाह की तरफ़ से फ़तह हो तो कहते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों के लिए हिस्सा हो (फ़तह हो) तो कहते हैं क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं आए थे? और हम ने तुम्हें बचाया था मुसलमानों से। सो अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा, और हरगिज़ न देगा अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानो पर राह (ग़लबा)। (141)

बेशक मुनाफ़िक़ धोका देते हैं अल्लाह को, और वह उन को धोके (का जवाब) देगा, और जब नमाज़ को खड़े हों तो सुस्ती से खड़े हों, वह दिखाते हैं लोगों को और अल्लाह को याद नहीं करते मगर बहुत कम। (142)

उस के दरमियान अधर में लटके हुए हैं न इन की तरफ़ न उन की तरफ़, और जिस को अल्लाह गुमराह करे तू हरगिज़ उस के लिए न पाएगा कोई राह। (143)

ऐ ईमान वालो! काफ़िरों को दोस्त न बानओ मुसलमानों को छोड़ कर, क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने ऊपर अल्लाह का सरीह इल्ज़ाम लो? (144)

बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से निचले दरजे में होंगे, और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा। (145)

मगर जिन लोगों ने तौबा की और (अपनी) इस्लाह कर ली और मज़बूती से अल्लाह (की रस्सी) को पकड़ लिया और अपना दीन अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे, और अल्लाह जल्द मोमिनों को बड़ा सवाब देगा। (146)

अगर तुम शुक्र करोगे और ईमान लाओगे तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा? और अल्लाह क़द्रदान, ख़ूब जानने वाला है। (147)

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا

कहते हैं	अल्लाह (की तरफ़) से	फ़तह	तुम को	फिर अगर हो	तुम्हें	तकते रहते हैं	जो लोग

اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا

कहते हैं	हिस्सा	काफ़िरों के लिए	हो	और अगर	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे?

اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ

तुम्हारे दरमियान	फ़ैसला करेगा	सो अल्लाह	मोमिनीन	से	और हम ने मना किया था (बचाया था) तुम्हें	तुम पर	क्या हम ग़ालिब नहीं आए थे

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ١٤١ ع ٢٠ ١٧

141	राह	मोमिनों पर	काफ़िरों को	अल्लाह	और हरगिज़ न देगा	क़ियामत के दिन

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا

खड़े हों	और जब	उन्हें धोका देगा	और वह	धोका देते हैं अल्लाह को	बेशक मुनाफ़िक़

اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَاۗءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ

याद करते	और नहीं	लोग	वह दिखाते हैं	खड़े हों सुस्ती से	नमाज़	तरफ़ (को)

اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ١٤٢ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ وَلَآ

और न	इन की तरफ़	न	उस	दरमियान	अधर में लटके हुए	142	मगर बहुत कम	अल्लाह

اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ١٤٣ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	143	कोई राह	उस के लिए	तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे अल्लाह	और जो-जिस	उन की तरफ़

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ

सिवाए	दोस्त	काफ़िर (जमा)	न पकड़ो (न बनाओ)	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)

الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ١٤٤

144	सरीह	इल्ज़ाम	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह का	कि तुम करो (लो)	क्या तुम चाहते हो	मोमिनीन

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ

और हरगिज़ न पाएगा	दोज़ख़	से	सब से नीचे का दरजा	में	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक

لَهُمْ نَصِيْرًا ١٤٥ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह को	और मज़बूती से पकड़ा	और इस्लाह की	जिन्हों ने तौबा की	मगर	145	कोई मददगार	उन के लिए

وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ وَسَوْفَ

और जल्द	मोमिनों के साथ	तो ऐसे लोग	अल्लाह के लिए	अपना दीन	और ख़ालिस कर लिया

يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ١٤٦ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ

तुम्हारे अज़ाब से	अल्लाह	क्या करेगा	146	बड़ा सवाब	मोमिन (जमा)	देगा अल्लाह

اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ١٤٧

147	ख़ूब जानने वाला	क़द्रदान	अल्लाह	और है	और ईमान लाओगे	अगर तुम शुक्र करोगे

الجزء ٦

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ

ज़ुल्म हुआ हो	जो-जिस	मगर	बात	बुरी	ज़ाहिर करना	अल्लाह	पसन्द नहीं करता

وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا

या माफ़ कर दो	या उसे छुपाओ	कोई भलाई	अगर तुम खुल्लम खुल्ला करो	148	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	और है

عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ

इन्कार करते हैं	जो लोग	बेशक	149	क़ुदरत वाला	माफ़ करने वाला	है	अल्लाह	तो बेशक	बुराई	से

بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

और उस के रसूल	अल्लाह	दरमियान	फ़र्क़ निकालें	कि	और चाहते हैं	और उस के रसूलों	अल्लाह का

وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ

कि	और वह चाहते हैं	बाज़ को	और नहीं मानते	बाज़ को	हम मानते हैं	और कहते हैं

يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥٠﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ

अस्ल	काफ़िर (जमा)	वह	यही लोग	150	एक राह	उस के दरमियान	पकड़ें (निकालें)

وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	और जो लोग ईमान लाए	151	ज़िल्लत का	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया है

وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ

उन के अजर	उन्हें देगा	अ़नक़रीब	यही लोग	उन में से	किसी के	और फ़र्क़ नहीं करते दरमियान	और उस के रसूलों पर

ع ٢١ ١١ ١

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾ يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ

उतार लाए	कि	अहले किताब	आप (स) से सवाल करते हैं	152	निहायत मेह्रबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है

عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ

उस से	बड़ा	मूसा (अ)	सो वह सवाल कर चुके हैं	आस्मान	से	किताब	उन पर

فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ

फिर	उन के ज़ुल्म के बाइस	बिजली	सो उन्हें आ पकड़ा	अ़लानिया	अल्लाह	हमें दिखा दे	उन्हों ने कहा

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا

सो हम ने दरगुज़र किया	निशानियां	उन के पास आई	कि	उस के बाद	बछड़ा (गौशाला)	उन्हों ने बना लिया

عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ

उन के ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	153	ज़ाहिर (सरीह)	ग़लबा	मूसा (अ)	और हम ने दिया	उस से (उस को)

الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا

और हम ने कहा	सिज्दा करते	दरवाज़ा	तुम दाख़िल हो	उन के लिए (उन से)	और हम ने कहा	उन से अ़हद लेने की ग़र्ज़ से	तूर

لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

154	मज़बूत	अ़हद	उन से	और हम ने लिया	हफ़्ते का दिन	में	न ज़ियादती करो	उन से

अल्लाह (किसी की) बुरी बात का ज़ाहिर करना पसन्द नहीं करता मगर जिस पर ज़ुल्म हुआ हो, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (148)

अगर तुम कोई भलाई खुल्लम खुल्ला करो या उसे छुपाओ या माफ़ कर दो कोई बुराई तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, क़ुदरत वाला है। (149)

बेशक जो लोग इन्कार करते हैं अल्लाह का और उस के रसूलों का और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के दरमियान फ़र्क़ निकालें, और कहते हैं कि हम बाज़ को मानते हैं और बाज़ को नहीं मानते, और वह चाहते हैं कि कुफ़्र और ईमान के दरमियान निकालें एक राह। (150)

यही लोग अस्ल काफ़िर हैं, और हम ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है (151)

और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते यही वह लोग हैं अ़नक़रीब उन्हें (अल्लाह) उन के अजर देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (152)

अहले किताब आप (स) से सवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से किताब उतार लाएं, सो वह सवाल कर चुके हैं मूसा (अ) से उस से भी बड़ा, उन्हों ने कहा हमें अल्लाह को अ़लानिया (खुल्लम खुल्ला) दिखादे, सो उन्हें बिजली ने आ पकड़ा उन के ज़ुल्म के बाइस, फ़िर उन्हों ने बछड़े (गौशाला) को (माबूद) बना लिया उस के बाद कि उन के पास निशानियां आगईं, उस पर भी हम ने उन से दरगुज़र किया, और हम ने मूसा (अ) को सरीह ग़लबा दिया। (153)

और हम ने उन के ऊपर बुलन्द किया "तूर" पहाड़ उन से अ़हद लेने की ग़र्ज़ से, और हम ने उन से कहा दरवाज़े में सिज्दा करते हुए दाख़िल हो, और हम ने उन से कहा हफ़्ते के दिन में ज़ियादती न करो, और हम ने उन से मज़बूत अ़हद लिया। (154)

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ

नबियों (जमा)	और उन का क़त्ल करना	अल्लाह की आयात	और उन का इन्कार करना	अपना अ़हद ओ पैमान	उन का तोड़ना	बसबब

بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ

उन के कुफ़्र के सबब	उन पर	मोहर कर दी अल्लाह ने	बल्कि	पर्दे में	हमारे दिल (जमा)	और उन का कहना	नाहक़

فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵۵﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ

मरयम (अ)	पर	और उन का कहना (बान्धना)	और उन के कुफ़्र के सबब	155	कम	मगर	सो वह ईमान नहीं लाते

بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿۱۵۶﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ

रसूल	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	मसीह (अ)	हम ने क़त्ल किया	हम	और उन का कहना	156	बड़ा	बुहतान

اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا

जो लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं	और बेशक	उन के लिए	सूरत बना दी गई	और बल्कि	और नहीं सूली दी उस को	और नहीं क़त्ल किया उस को	अल्लाह

فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ

पैरवी	मगर	कोई इल्म	उस का	नहीं उन को	उस से	अलबत्ता शक में	उस में

الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۢ ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا

ग़ालिब	अल्लाह	और है	अपनी तरफ़	अल्लाह	उस को उठा लिया	बल्कि	157	यक़ीनन	और उस को क़त्ल नहीं किया	अटकल

حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ

अपनी मौत	पहले	उस पर	ज़रूर ईमान लाएगा	मगर	अहले किताब	से	और नहीं	158	हिक्मत वाला

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ ﴿۱۵۹﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا

जो यहूदी हुए (यहूदी)	से	सो ज़ुल्म के सबब	159	गवाह	उन पर	होगा	और क़ियामत के दिन

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	और उन के रोकने की वजह से	उन के लिए	हलाल थी	पाक चीज़ें	उन पर	हम ने हराम कर दिया

كَثِيْرًا ﴿۱۶۰﴾ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ

लोग	माल (जमा)	और उन का खाना	उस से	हालांकि वह रोक दिए गए थे	सूद	और उन का लेना	160	बहुत

بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾ لٰكِنِ

लेकिन	161	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन में से	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया	नाहक़

الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

आप की तरफ़	नाज़िल किया गया	जो	वह मानते हैं	और मोमिनीन	उन में से	इल्म में	पुख़्ता (जमा)

وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करने वाले	नमाज़	और क़ाइम रखने वाले	आप (स) से पहले	से	नाज़िल किया गया	और जो

وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۶۲﴾ ع ۲۲ ۱۰ ۲

162	बड़ा	अजर	हम ज़रूर देंगे उन्हें	यही लोग	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	और ईमान लाने वाले

(उन को सज़ा मिली) बसबब उन के अ़हद ओ पैमान तोड़ने, और उन के अल्लाह की आयतों का इन्कार करने, और उन के नबियों को नाहक़ क़त्ल करने, और उन के यह कहने (के सबब) कि हमारे दिल पर्दे में (महफ़ूज़) हैं, बल्कि अल्लाह ने उन पर उन के कुफ़्र के सबब मोहर कर दी, सो ईमान नहीं लाते मगर कम। (155)

(और उन को सज़ा मिली) उन के कुफ़्र और मरयम (अ) पर बड़ा बुहतान बान्धने के सबब। (156)

और उन के यह कहने (के सबब) कि हम ने क़त्ल किया अल्लाह के रसूल ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को, और उन्हों ने उस को क़त्ल नहीं किया और उन्हों ने उस को सूली नहीं दी बल्कि उन के लिए (उन जैसी) सूरत बना दी गई और बेशक जो लोग उस (बारे) में इख़्तिलाफ़ करते हैं वह अलबत्ता उस बारे में शक में हैं, अटकल की पैरवी के सिवा उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, और उस (अ) को उन्हों ने यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, (157)

बल्कि अल्लाह ने उस (अ) को अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (158)

और कोई अहले किताब से न रहेगा मगर उस (अ) पर अपनी मौत से पहले ज़रूर ईमान लाएगा, और क़ियामत के दिन वह (अ) उन पर गवाह होंगे। (159)

सो हम ने यहूदियों पर (बहुत सी) पाक चीज़ें जो उन के लिए हलाल थीं हराम कर दीं उन के ज़ुल्म की वजह से और उन के अल्लाह के रास्ते से बहुत रोकने की वजह से, (160)

और उन के सूद लेने (की वजह से) हालांकि वह उस से रोक दिए गए थे और (इस वजह से) कि वह खाते थे लोगों के माल नाहक़, और हम ने उन में से काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (161)

लेकिन उन में से जो इल्म में पुख़्ता हैं, और जो मोमिन हैं वह उस को मानते हैं जो नाज़िल किया गया आप (स) की तरफ़ और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया, और नमाज़ क़ाइम रखने वाले हैं और अदा करने वाले हैं ज़कात और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने वाले हैं, ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अजर देंगे। (162)

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنۢ بَعْدِهٖ ۚ

उस के बाद	और नबियों	नूह (अ)	तरफ़	हम ने वहि भेजी	जैसे	आप (स) की तरफ़	हम ने वहि भेजी	बेशक हम

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرٰهِيمَ وَإِسْمٰعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ

और याक़ूब (अ)	और इसहाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी

وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسٰى وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهٰرُونَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ

और सुलैमान (अ)	और हारून (अ)	और यूनुस (अ)	और अय्यूब (अ)	और ईसा (अ)	और औलादे याक़ूब

وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ

आप (स) पर (आप से)	हम ने उन का अहवाल सुनाया	और ऐसे रसूल (जमा)	163	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी

مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوسٰى

मूसा (अ)	अल्लाह	और कलाम किया	आप पर (आप को)	हम ने हाल बयान किया	नहीं	और ऐसे रसूल	इस से क़ब्ल

تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾ رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	ताकि न रहे	और डराने वाले	ख़ुशख़बरी सुनाने वाले	रसूल (जमा)	164	कलाम करना (ख़ूब)

عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾

165	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	रसूलों के बाद	हुज्जत	अल्लाह	पर

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	अपने इल्म के साथ	वह नाज़िल किया	आप (स) की तरफ़	उस ने नाज़िल किया	उस पर जो	गवाही देता है	अल्लाह	लैकिन

يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	बेशक	166	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	गवाही देते हैं

وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾ إِنَّ

बेशक	167	दूर	गुमराही	तहक़ीक़ वह गुमराही में पड़े	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका

الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ

उन्हें हिदायत दे	और न	उन्हें	कि बख़्शदे	अल्लाह	नहीं है	और ज़ुल्म किया	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो

طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ

यह	और है	हमेशा	उस में	रहेंगे	जहन्नम	रास्ता	मगर	168	रास्ता (सीधा)

عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	रसूल	तुम्हारे पास आया	लोग	ऐ	169	आसान	अल्लाह पर

مِنْ رَّبِّكُمْ فَـَٔامِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا

जो	अल्लाह के लिए	तो बेशक	तुम न मानोगे	और अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	सो ईमान लाओ	तुम्हारा रब	से

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾

170	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों में

बेशक हम ने आप (स) की तरफ़ वहि भेजी है जैसे हम ने वहि भेजी थी नूह (अ) की तरफ़ और उस के बाद नबियों की तरफ़ और हम ने वहि भेजी इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक़ (अ), याक़ूब (अ) और औलादे याक़ूब (अ) की तरफ़ और ईसा (अ) अय्यूब (अ) यूनुस (अ) हारून (अ) और सुलैमान (अ) (की तरफ़ वहि भेजी) और हम ने दाऊद (अ) को दी ज़बूर। (163)

और ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिन के अहवाल हम ने उस से क़ब्ल आप (स) से बयान किए और ऐसे रसूल (भी भेजे) जिनके अहवाल हम ने आप (स) से बयान नहीं किए, और अल्लाह ने मूसा (अ) से (ख़ूब) कलाम किया (164)

(हम ने भेजे) रसूल ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले ताकि रसूलों के बाद लोगों को अल्लाह पर कोई हुज्जत न रहे, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (165)

लेकिन अल्लाह उस पर गवाही देता है जो उस ने आप (स) की तरफ़ नाज़िल किया, वह अपने इल्म से नाज़िल किया और फ़रिश्ते (भी) गवाही देते हैं, और गवाह (तो) अल्लाह ही काफ़ी है। (166)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, तहक़ीक़ वह गुमराही में दूर जा पड़े। (167)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और ज़ुल्म किया, अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत देगा (सीधे) रास्ते की, (168)

मगर जहन्नम का रास्ता, उस में हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (169)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ रसूल (स) आगया है, सो ईमान ले आओ तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम न मानोगे तो बेशक जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (170)

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ

पर (बारे में) अल्लाह	और न कहो	अपने दीन में	गुलू न करो	ऐ अहले किताब

اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ

और उस का कलिमा	अल्लाह	रसूल	इब्ने मरयम (अ)	ईसा	मसीह	इस के सिवा नहीं	हक़	सिवाए

اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ؗ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۫ وَلَا

और न	और उस के रसूल	अल्लाह पर	सो ईमान लाओ	उस से	और रूह	मरयम (अ)	तरफ़	उस को डाला

تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ

माबूदे वाहिद	अल्लाह	इसके सिवा नहीं	तुम्हारे लिए	बेहतर	बाज़ रहो	तीन	कहो

سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا وقف لازم

और जो	आस्मानों में	जो	उस का	औलाद	उस की	हो	कि	वह पाक है

فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ ع ٢٣ ٩ ٣

कि	मसीह (अ)	हरगिज़ आर नहीं	171	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी है	ज़मीन में

يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ

आर करे	और जो	मुक़र्रब (जमा)	फ़रिश्ते	और न	अल्लाह का	बन्दा	हो

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾ فَاَمَّا

फिर जो	172	सब	अपने पास	तो अ़नक़रीब उन्हें जमा करेगा	और तकब्बुर करे	उस की इबादत	से

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ

उन के अजर	उन्हें पूरा देगा	नेक	ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए	लोग

وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا

और उन्हों ने तकब्बुर किया	उन्हों ने आर समझा	वह लोग जो	और फिर	अपना फ़ज़्ल	से	और उन्हें ज़ियादा देगा

فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	से (के)	अपने लिए	और वह न पाएंगे	दर्दनाक	अ़ज़ाब	तो उन्हें अ़ज़ाब देगा

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ

रौशन दलील	तुम्हारे पास आ चुकी	ऐ लोगो!	173	मददगार	और न	दोस्त

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	पस	174	वाज़ेह	रौशनी	तुम्हारी तरफ़	और हम ने नाज़िल किया	तुम्हारा रब	से

بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ

रहमत में	वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा	उस को	और मज़बूत पकड़ा	अल्लाह पर

مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾ ؕ

175	सीधा	रास्ता	अपनी तरफ़	और उन्हें हिदायत देगा	और फ़ज़्ल	उस से (अपनी)

ऐ अहले किताब! अपने दीन में गुलू न करो (हद से न बढ़ो) और न कहो अल्लाह के बारे में हक़ के सिवा, इस के सिवा नहीं कि मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उस का कलिमा, जिस को मरयम की तरफ़ डाला और उस (की तरफ़) से आत्मा हैं, सो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो (ख़ुदा) तीन हैं, (उस से) बाज़ रहो, तुम्हारे लिए बेहतर है, इस के सिवा नहीं (बेशक) कि अल्लाह माबूदे वाहिद है और उस से पाक है कि उस की औलाद हो। जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है उस का है, और अल्लाह कारसाज़ काफ़ी है। **(171)**

मसीह (अ) को हरगिज़ आर (शर्म) नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा हो, और न मुक़र्रिब फ़रिश्तों को (आर है) और जो कोई उस (अल्लाह) की बन्दगी से आर और तकब्बुर करे तो वह अ़नक़रीब उन्हें अपने पास जमा करेगा सब को। **(172)**

फिर जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए वह उन्हें उन के अजर पूरे पूरे देगा और उन्हें ज़ियादा देगा अपने फ़ज़्ल से, और जिन लोगों ने (बन्दगी को) आर समझा और तकब्बुर किया तो वह उन्हें अ़ज़ाब देगा, दर्दनाक अ़ज़ाब। और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाएंगे कोई दोस्त और न मददगार। **(173)**

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आ चुकी और हम ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है वाज़ेह रौशनी। **(174)**

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्हों ने उस को मज़बूती से पकड़ा, वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा अपनी रहमत और फ़ज़्ल में, और उन्हें अपनी तरफ़ सीधे रास्ते की हिदायत देगा। **(175)**

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ

मर जाए	कोई मर्द	अगर	कलाला (के बारे) में	तुम्हें हुक्म बताता है	अल्लाह	कह दें	आप से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं

لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ

उस का वारिस होगा	और वह	जो उस ने छोड़ा (तर्का)	निस्फ़ (1/2)	तो उस के लिए	एक बहन	और उस की हो	उस की कोई औलाद	न हो

اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا

उस से जो	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो बहनें	हों	फिर अगर	कोई औलाद	उस की	न हो	अगर

تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ

हिस्सा	बराबर	तो मर्द के लिए	और कुछ औरतें	कुछ मर्द	भाई बहन	हों	और अगर	उस ने छोड़ा (तर्का)

ع ٢٤ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٧٦﴾

176	जानने वाला	चीज़	हर	और अल्लाह	ताकि भटक न जाओ	तुम्हारे लिए	अल्लाह	खोल कर बयान करता है	दो औरत

आप (स) से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें कलाला के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई (ऐसा) मर्द मर जाए जिस की कोई औलाद न हो और उस की एक बहन हो तो उस (बहन) को उस के तरके का निस्फ़ मिलेगा, और वह उस का वारिस होगा अगर उस (बहन) की कोई औलाद न हो, फिर अगर (मरने वाले की) दो बहनें हों तो उन के लिए दो तिहाई है उस (भाई) के तरके में से, और अगर भाई बहन कुछ मर्द और कुछ औ़रतें हों तो एक मर्द के लिए दो औ़रतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान करता है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। **(176)**

آيَاتُهَا ١٢٠ ❀ سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ (٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

आयात **120** — (5) सूरतुल माइदा / ख़ान — रुकूआत **16**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

الْمنزل الثاني ٢

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ

चौपाए	हलाल किए गए तुम्हारे लिए	अ़हद-क़ौल	पूरा करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	एहराम में हो	जब कि तुम	हलाल जाने हुए शिकार	मगर	पढ़े जाएंगे (सुनाए जाएंगे) तुम्हें	जो	सिवाए	मवेशी

يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ﴿١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا

और न	अल्लाह की निशानियां	हलाल न समझो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	1	जो चाहे	हुक्म करता है

الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْىَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ

एहतराम वाला घर (ख़ाने कअ़बा)	क़सद करने वाले (आने वाले)	और न	गले में पट्टा डाले हुए	और न	नियाज़े कअ़बा	और न	महीने अदब वाले

يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ

तो शिकार कर लो	एहराम खोल दो	और जब	और ख़ुशनूदी	अपने रब से	फ़ज़्ल	वह चाहते हैं

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

मस्जिद हराम (ख़ाने कअ़बा)	से	तुम को रोकती थी	जो	क़ौम	दुश्मनी	तुम्हारे लिए बाइस हो	और न

وقف لازم

اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ

गुनाह	पर (में)	और एक दूसरे की मदद न करो	और तक़्वा (परहेज़गारी)	नेकी पर (में)	और एक दूसरे की मदद करो	कि तुम ज़ियादती करो

الربع

وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢﴾

2	अ़ज़ाब	सख़्त	बेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से	और ज़ियादती (सरकशी)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

ऐ ईमान वालो! अपने अ़हद पूरे करो, तुम्हारे लिए चौपाए मवेशी हलाल किए गए सिवाए उन के जो तुम्हें सुनाए जाएंगे, मगर शिकार को हलाल न जानो जबकि तुम (हालते) एहराम में हो, बेशक अल्लाह जो चाहे हुक्म करता है। **(1)**

ऐ ईमान वालो! शआ़एर अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) हलाल न समझो और न अदब वाले महीने (ज़ुलक़अ़दह, ज़ुलहिज्जह, मोहर्रम, रज्जब) और न नियाज़े कअ़बा (के जानवर) और न गले में (क़ुरबानी के) पट्टा डाले हुए, और न आने वाले ख़ाने कअ़बा को जो अपने रब का फ़ज़्ल और ख़ुशनूदी चाहते हैं। और जब एहराम खोलदो (चाहो) तो शिकार करलो, और (उस) क़ौम की दुश्मनी जो तुम को रोकती थी मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) से (उस का) बाइस न बने कि तुम ज़ियादती करो। और एक दूसरे की मदद करो नेकी और परहेज़गारी में, और एक दूसरे की मदद न करो गुनाह और सरकशी में, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। **(2)**

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ

पुकारा गया	और जो-जिस	और सुव्वर का गोश्त	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम कर दिया गया

لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَآ

और जो-जिस	और सींग मारा हुआ	और गिर कर मरा हुआ	और चोट खाकर मरा हुआ	और गला घोंटने से मरा हुआ	उस पर	अल्लाह के सिवा

اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۗ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا

तुम तक़्सीम करो	और यह कि	थानों पर	ज़ुबह किया गया	और जो	तुम ने ज़ुबह कर लिया	मगर जो	दरिन्दा	खाया

بِالْاَزْلَامِ ۭ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ۭ اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ

तुम्हारे दीन से	जिन लोगो ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	मायूस हो गए	आज	गुनाह	यह	तीरों से

فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۭ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ

और पूरी कर दी	तुम्हारा दीन	तुम्हारे लिए	मैं ने मुकम्मल कर दिया	आज	और मुझ से डरो	सो तुम उन से न डरो

عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۭ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ

में	लाचार हो जाए	फिर जो	दीन	इस्लाम	तुम्हारे लिए	और मैं ने पसन्द किया	अपनी नेमत	तुम पर

مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣ يَسْـَٔلُوْنَكَ

आप (स) से पूछते हैं	3	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	गुनाह की तरफ़	माइल हो	न	भूक

مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ۭ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ

शिकारी जानवर	से	तुम सुधाओ	और जो	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गईं	कह दें	उन के लिए	हलाल किया गया	क्या

مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۡ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ

तुम्हारे लिए	वह पकड़ रखें	उस से जो	पस तुम खाओ	अल्लाह	तुम्हें सिखाया	उस से जो	तुम उन्हें सिखाते हो	शिकार पर दौड़ाए हुए

وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٤

4	तेज़ हिसाब लेने वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरो	उस पर	अल्लाह	नाम	और याद करो (लो)

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۭ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ

हलाल	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	और खाना	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गईं	आज

لَّكُمْ ۠ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۡ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ

और पाक दामन	मोमिन औरतें	से	और पाक दामन औरतें	उन के लिए	हलाल	और तुम्हारा खाना	तुम्हारे लिए

مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ

उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जो	से

مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ

मुन्किर हुआ	और जो	छुपी आश्नाई	और न बनाने को	न कि मस्ती निकालने को	क़ैद में लाने को

بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٥ ع ١ ٥

5	नुक़्सान उठाने वाले	से	आख़िरत में	और वह	उस का अमल	तो ज़ाया हुआ	ईमान से

हराम कर दिया गया तुम पर मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर पुकारा गया अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम), और गला घोंटने से मरा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और गिर कर मरा हुआ और सींग मारा हुआ, और जिस को दरिन्दे ने खाया हो मगर जो तुम ने ज़ुबह कर लिया, और (हराम किया गया) जो आसथाने (परस्तिश गाहों) पर ज़ुबह किया गया, और यह कि तुम तीरों से (पांसे डाल कर) तक़्सीम करो, यह गुनाह हैं। आज काफ़िर तुम्हारे दीन से मायूस हो गए, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो, आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसन्द किया। फिर जो भूक में लाचार हो जाए (लेकिन) माइल न हो गुनाह की तरफ़ (उस के लिए गुंजाइश है) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (3)

आप (स) से पूछते हैं उन के लिए क्या हलाल किया गया है? कह दें तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गई हैं और जो तुम शिकारी जानवर सधाओ शिकार पर दौड़ाने को कि तुम उन्हें सिखाते हो उस से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, पस उस में से खाओ जो वह तुम्हारे लिए पकड़ रखें, और उस पर अल्लाह का नाम लो (ज़ुबह कर लो) और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (4)

आज तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गईं, और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है, और तुम्हारा खाना उन के लिए हलाल है, और पाक दामन मोमिन औरतें और पाक दामन औरतें उन में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई (हलाल हैं), जब तुम उन्हें उन के मेहर दे दो (क़ैद निकाह) में लाने को, न कि मस्ती निकालने को और न चोरी छुपे आश्नाई करने को, और जो ईमान का मुन्किर हुआ उस का अमल ज़ाया हुआ, और वह आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में से है। (5)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا

तो धोलो	नमाज़ के लिए	तुम उठो	जब	वह जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

और अपने पाऊँ	अपने सरों का	और मसह करो	कुहनियां	तक	और अपने हाथ	अपने मुँह

اِلَى الْكَعْبَيْنِ ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	और अगर	तो खूब पाक हो जाओ	नापाक	तुम हो	और अगर	टख़नों	तक

مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰي سَفَرٍ اَوْ جَاۗءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۗىِٕطِ

बैतुलख़ला से	तुम में से	कोई	आए	और	सफ़र	पर (में)	या	बीमार

اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَاۗءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَاۗءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا

मिट्टी	तो तयम्मुम कर लो	पानी	फ़िर न पाओ	औरतों से	या तुम मिलो (सुहबत की)

طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ۭ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ

अल्लाह	नहीं चाहता	उस से	और अपने हाथ	अपने मुँह	तो मसह करो	पाक

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ

कि तुम्हें पाक करे	चाहता है	और लेकिन	तंगी	कोई	तुम पर	कि करे

وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ٦ وَاذْكُرُوْا

और याद करो	6	एहसान मानो	ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत	और यह कि पूरी करे

نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ

उस से	तुम ने बान्धा	जो	और उस का अ़हद	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह की नेमत

اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

बात	जानने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	और हम ने माना	हम ने सुना	जब तुम ने कहा

الصُّدُوْرِ ٧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	खड़े होने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	7	दिलों की

شُهَدَاۗءَ بِالْقِسْطِ ۡ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى

पर	किसी क़ौम	दुशमनी	और तुम्हें न उभारे	इन्साफ़ के साथ	गवाह

اَلَّا تَعْدِلُوْا ۭ اِعْدِلُوْا ۣ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا

और डरो	तक़वा के	ज़ियादा क़रीब	वह (यह)	तुम इन्साफ़ करो	कि इन्साफ़ न करो

اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ٨ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	अल्लाह	वादा किया	8	जो तुम करते हो	खूब बाख़बर	बेशक अल्लाह	अल्लाह

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ٩

9	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो धो लो अपने मुँह और अपने हाथ कुहनियों तक और अपने सरों का मसह करो और अपने पाऊँ (धो) टख़नों तक, और अगर तुम नापाक हो (ग़ुस्ल की हाजत हो) तो खूब पाक हो जाओ (ग़ुस्ल कर लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई बैतुलख़ला से आए या तुम ने औ़रतों से सुहबत की, फिर न पाओ पानी तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो (यानी) उस से अपने मुँह और हाथों का मसह करो, अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी करे लेकिन चाहता है कि तुम्हें पाक करे और यह कि अपनी नेमत पूरी करे तुम पर ताकि तुम एहसान मानो। (6)

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो और उस का अ़हद जो तुम ने उस से बान्धा जब तुम ने कहा हम ने सुना और हम ने माना, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह दिलों की बात जानने वाला है। (7)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए खड़े होने वाले हो जाओ इन्साफ़ की गवाही देने को, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें (उस पर) न उभारे कि इन्साफ़ न करो, तुम इन्साफ़ करो यह तक़वा के ज़ियादा क़रीब है, और अल्लाह से डरो, बेशक तुम जो करते हो अल्लाह उस से खूब बाख़बर है। (8)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए अल्लाह ने वादा किया कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (9)

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٠﴾

10	जहन्नम वाले	यही	हमारी आयतें	और झुटलाया	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

अपने ऊपर	अल्लाह	नेमत	तुम याद करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ

पस रोक दिए	अपने हाथ	तुम्हारी तरफ़	बढ़ाएं	कि	एक गिरोह	जब इरादा किया

اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

चाहिए भरोसा करें	अल्लाह	और पर	अल्लाह	और डरो	तुम से	उन के हाथ

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ

ع ٢ ٦

बनी इस्राईल	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और अलबत्ता	11	ईमान वाले

وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۭ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّىْ مَعَكُمْ ۭ

बेशक मैं तुम्हारे साथ	अल्लाह	और कहा	सरदार	बारह (12)	उन से	और हम ने मुक़र्रर किए

لَىِٕنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ

और ईमान लाओगे	ज़कात	और देते रहोगे	नमाज़	क़ाइम रखोगे	अगर

بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا

हसना	क़र्ज़	अल्लाह	और क़र्ज़ दोगे	और उन की मदद करोगे	मेरे रसूलों पर

لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

बहती हैं	बाग़ात	और ज़रूर दाख़िल कर दूँगा तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	तुम से	मैं ज़रूर दूर करदूँगा

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ

तुम में से	उस के बाद	कुफ़्र किया	फिर जो-जिस	नहरें	उन के नीचे	से

فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ

उन का अ़हद	उनका तोड़ना	सो बसबब (पर)	12	रास्ता	सीधा	बेशक गुमराह हुआ

لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ

से	कलाम	वह फेर देते हैं	सख़्त	उन के दिल (जमा)	और हम ने कर दिया	हम ने उन पर लानत की

مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ

और हमेशा	उन्हें जिस की नसीहत की गई	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	और वह भूल गए	उस के मवाक़े

تَطَّلِعُ عَلٰى خَاۗئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ

उन से	थोड़े	सिवाए	उन से	ख़ियानत	पर	आप ख़बर पाते रहते हैं

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣﴾

13	एहसान करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	और दरगुज़र कर	उन को	सो माफ़ कर

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही जहन्नम वाले हैं। (10)

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (एहसान) याद करो जब एक गिरोह ने इरादा किया कि वह बढ़ाएं तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ (दस्त दराज़ी करने को) तो उस ने तुम से उन के हाथ रोक दिए, और अल्लाह से डरो, और चाहिए कि अल्लाह पर भरोसा करें ईमान वाले। (11)

और अलबत्ता अल्लाह ने बनी इस्राईल से अ़हद लिया, और हम ने उन में से मुक़र्रर किए बारह (12) सरदार, और अल्लाह ने कहा मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखोगे और देते रहोगे ज़कात और मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और अल्लाह को क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़) दोगे, मैं तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर करदूंगा और तुम्हें (उन) बाग़ात में ज़रूर दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, फिर उस के बाद तुम में से जिस ने कुफ़्र किया बेशक वह सीधे रास्ते से गुमराह हुआ। (12)

सो उन के अ़हद तोड़ने पर हम ने उन पर लानत की और उन के दिलों को सख़्त कर दिया, वह कलाम को उस के मवाक़े से फेर देते हैं (बदल देते) हैं और वह भूल गए (फ़रामोश कर बैठे) उस का बड़ा हिस्सा जिस की उन्हें नसीहत की गई थी, और आप (स) उन में से थोड़ों के सिवा हमेशा उनकी ख़ियानत पर ख़बर पाते रहते हैं, सो उन को माफ़ करदें और दरगुज़र करें, बेशक अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (13)

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ

उन का अ़हद	हम ने लिया	नसारा	हम	जिन लोगो ने कहा	और से

فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ

उन के दरमियान	तो हम ने लगा दी	जिस की नसीहत की गई थी	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	फिर वह भूल गए

الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ وَسَوْفَ

और जल्द	रोज़े क़ियामत	तक	और बुग़ज़	अ़दावत

يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

ऐ अहले किताब	14	करते थे	जो वह	अल्लाह	उन्हें जता देगा

قَدْ جَاۗءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا

बहुत सी बातें जो	तुम्हारे लिए	वह ज़ाहिर करते हैं	हमारे रसूल	यक़ीनन तुम्हारे पास आगए

كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۭ

बहुत उमूर से	और वह दरगुज़र करता है	किताब से	छुपाते	तुम थे

قَدْ جَاۗءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾

15	रौशन	और किताब	नूर	अल्लाह से	तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगया

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ

सलामती	राहें	उस की रज़ा	जो तावे हुआ	अल्लाह	उस से	हिदायत देता है

وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ

अपने हुक्म से	नूर की तरफ़	अन्धेरे	से	और वह उन्हें निकालता है

وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ

तहक़ीक़ काफ़िर हो गए	16	सीधा	रास्ता	तरफ़	और उन्हें हिदायत देता है

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۭ

इब्ने मरयम	वही मसीह (अ)	बेशक अल्लाह	जिन लोगो ने कहा

قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ

हलाक कर दे	अगर वह चाहे कि	कुछ भी	अल्लाह के आगे	बस चलता है	तो किस	कह दीजिए

الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۭ

सब	ज़मीन	में	और जो	और उस की माँ	इब्ने मरयम	मसीह (अ)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ يَخْلُقُ

वह पैदा करता है	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए सल्तनत

مَا يَشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

17	क़ादिर	हर शै	पर	और अल्लाह	जो वह चाहता है

और उन लोगों से जिन्हों ने कहा हम नसारा हैं, हम ने उन का अ़हद लिया, फिर वह उस का बड़ा हिस्सा भूल गए जिस की उन्हें नसीहत की गई थी तो हम ने उन के दरमियान लगा दिया (डाल दिया) रोज़े क़ियामत तक अ़दावत और बुग़ज़, और अल्लाह जल्द उन्हें जता देगा जो वह करते थे। (14)

ऐ अहले किताब! यक़ीनन तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आगए, वह तुम्हारे लिए (तुम पर) बहुत सी बातें ज़ाहिर करते हैं जो तुम किताब में से छुपाते थे और वह बहुत उमूर से दरगुज़र करते हैं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगया अल्लाह की तरफ़ से नूर और रौशन किताब। (15)

उस से अल्लाह सलामती की राहों की उसे हिदायत देता है जो उस की रज़ा के तावे हुआ और वह उन्हें निकालता है अन्धेरों से नूर की तरफ़ अपने हुक्म से और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देता है। (16)

तहक़ीक़ काफ़िर हो गए वह जिन लोगों ने कहा अल्लाह वही मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) है। कह दीजिए: तो किस का बस चलता है अल्लाह के आगे कुछ भी। अगर वह चाहे कि मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) को और उस की माँ को हलाक कर दे और जो ज़मीन में है सब को। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, वह पैदा करता है जो वह चाहता है, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (17)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ۭ قُلْ فَلِمَ

फिर क्यों	कह दीजिए	और उस के प्यारे	अल्लाह	बेटे	हम	और नसारा	यहूद	और कहा

يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ

वह चाहता है	जिस को	वह बख़्श देता है	उस ने पैदा किया (मख़लूक़)	उन में से	बशर	तुम	बल्कि	तुम्हारे गुनाहों पर	तुम्हें अ़ज़ाब देता है

وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا

और जो	और ज़मीन	आस्मानों	सल्तनत	और अल्लाह के लिए	जिस को वह चाहता है	और अ़ज़ाब देता है

بَيْنَهُمَا ۡ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ١٨ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاۗءَكُمْ رَسُوْلُنَا

हमारे रसूल	तहक़ीक़ तुम्हारे पास आए	ऐ अहले किताब	18	लौट कर जाना है	और उसी की तरफ़	उन दोनों के दरमियान

يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰي فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَاۗءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ

ख़ुशख़बरी देने वाला	कोई	हमारे पास नहीं आया	तुम कहो	कि कहीं	रसूल (जमा)	से (के)	सिलसिला टूट जाना	पर (बाद)	तुम्हारे लिए	वह खोल कर बयान करते हैं

وَّلَا نَذِيْرٍ ۡ فَقَدْ جَاۗءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर	और अल्लाह	और डराने वाले	ख़ुशख़बरी सुनाने वाले	तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगए	डराने वाला	और न

قَدِيْرٌ ١٩ ع وَاِذْ قَالَ مُوْسٰي لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ ٣ ٨ ٧

अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम को	मूसा	कहा	और जब	19	क़ादिर

عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَاۗءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۡ وَّاٰتٰىكُمْ

और तुम्हें दिया	बादशाह	और तुम्हें बनाया	नबी (जमा)	तुम में	उस ने बनाया	जब	अपने ऊपर

مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ٢٠ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا

दाख़िल हो जाओ	ऐ मेरी क़ौम	20	जहानों में	से	किसी को	दिया	जो नहीं

الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ

अपनी पीठ	पर	लौटो	और न	तुम्हारे लिए	अल्लाह ने लिख दी	जो	अर्ज़े मुक़द्दस (उस पाक सर ज़मीन)

فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ٢١ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۚ

ज़बरदस्त	एक क़ौम	बेशक उस में	ऐ मूसा (अ)	उन्हों ने कहा	21	नुक़्सान में	वरना तुम जा पड़ोगे

وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا

उस से	वह निकले	फिर अगर	उस से	वह निकल जाएं	यहां तक कि	हरगिज़ दाख़िल न होंगे	और हम बेशक

فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ٢٢ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ

अल्लाह ने इन्आ़म किया था	डरने वाले	उन लोगों से जो	दो आदमी	कहा	22	दाख़िल होंगे	तो हम ज़रूर

عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ

तो तुम	तुम दाख़िल होगे उस में	पस जब	दरवाज़ा	तुम दाख़िल हो उन पर (हमला कर दो)	उन दोनो पर

غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ٢٣

23	ईमान वाले	अगर तुम हो	भरोसा रखो	और अल्लाह पर	ग़ालिब आओगे

और यहूद ओ नसारा ने कहा हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं, कह दीजिए फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सज़ा क्यों देता है? (नहीं) बल्कि तुम भी एक बशर हो उस की मख़लूक़ में से, वह जिस को चाहता है बख़्श देता है और जिस को चाहता है अ़ज़ाब देता है। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (18)

ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आ गए वह नबियों का सिलसिला टूट जाने के बाद तुम पर खोल कर बयान करते हैं कि कहीं तुम यह कहो हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी सुनाने वाला नहीं आया और न डराने वाला, तहक़ीक़ तुम्हारे पास (मुहम्मद (स) ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले आगए, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (19)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को कहाः ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो जब उस ने तुम में नबी बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें दिया जो जहानों में किसी को नहीं दिया। (20)

ऐ मेरी क़ौम! अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पीठ फेरते हुए न लौटो वरना तुम नुक़्सान में जा पड़ोगे। (21)

उन्हों ने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक उस में एक ज़बरदस्त क़ौम है, और हम वहां हरगिज़ दाख़िल न होंगे यहां तक कि वह उस में से निकल जाएं, फिर अगर वह उस में से निकले तो हम ज़रूर उस में दाख़िल होंगे। (22)

डरने वालों में से दो आदमियों ने कहा, उन दोनों पर अल्लाह ने इन्आ़म किया थाः कि तुम उन पर दरवाज़े से (हमला कर के) दाख़िल हो जाओ, जब तुम उस में दाख़िल होगे तो तुम ही ग़ालिब होगे, और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो। (23)

قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَاۤ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ

सो जा	उस में	जब तक वह हैं	कभी भी	हरगिज़ वहां दाख़िल न होंगे	बेशक हम	ऐ मूसा	उन्हों ने कहा

اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ

मैं बेशक	ऐ मेरे रब	मूसा (अ) ने कहा	24	बैठे हैं	यहीं	हम	तुम दोनों लड़ो	और तेरा रब	तू

لَاۤ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِىْ وَاَخِىْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ

क़ौम	और दरमियान	हमारे दरमियान	पस जुदाई कर दे	और अपना भाई	अपनी जान के सिवा	इख़्तियार नहीं रखता

الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ

साल	चालीस	उन पर	हराम करदी गई	पस यह	उस ने कहा	25	नाफ़रमान

يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ع ٨

26	नाफ़रमान	क़ौम	पर	तू अफ़सोस न कर	ज़मीन में	भटकते फिरेंगे

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَىْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ

وقف لازم

तो क़ुबूल कर ली गई	कुछ नियाज़	जब दोनों ने पेश की	अहवाल-ए-वाक़ई	आदम के दो बेटे	ख़बर	उन्हें	और सुना

مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ

उस ने कहा	मैं तुझे ज़रूर मार डालूंगा	उस ने कहा	दूसरे से	और न क़ुबूल की गई	उन में से एक	से

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَىَّ يَدَكَ

النصف

अपना हाथ	मेरी तरफ़	अलबत्ता अगर तू बढ़ाएगा	27	परहेज़गार (जमा)	से	अल्लाह	क़ुबूल करता है	बेशक सिर्फ़

لِتَقْتُلَنِىْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِىَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّىْۤ اَخَافُ

डरता हूँ	बेशक मैं	कि तुझे क़त्ल करूँ	तेरी तरफ़	अपना हाथ	बढ़ाने वाला	मैं नहीं	कि मुझे क़त्ल करे

اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنِّىْۤ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْۤاَ بِاِثْمِىْ

मेरे गुनाह	कि तू हासिल करे	चाहता हूँ	बेशक मैं	28	परवरदिगार सारे जहान का	अल्लाह

وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ۚ

29	ज़ालिम (जमा)	सज़ा	और यह	जहन्नम वाले	से	फिर तू हो जाए	और अपने गुनाह

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٣٠﴾

30	नुक़्सान उठाने वाले	से	तो वह हो गया	सो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	अपना भाई	क़त्ल	उस का नफ़्स	उस को	फिर राज़ी किया

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِى الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِىْ

वह छुपाए	कैसे	ताकि उसे दिखाए	ज़मीन में	कुरेदता था	एक कव्वा	अल्लाह	फिर भेजा

سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰۤى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا

इस- यह	जैसा	कि मैं हो जाऊँ	मुझ से न हो सका	हाए अफ़सोस मुझ पर	उस ने कहा	अपना भाई	लाश

الْغُرَابِ فَاُوَارِىَ سَوْءَةَ اَخِىْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿٣١﴾ ۛ

31	नादिम होने वाले	से	पस वह हो गया	अपना भाई	लाश	फिर छुपाऊँ	कव्वा

उन्हों ने कहा ऐ मूसा (अ)! जब तक वह उस में हैं हम वहां कभी भी हरगिज़ दाख़िल न होंगे, सो तू जा और तेरा रब, तुम दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (24)

मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं इख़्तियार नहीं रखता सिवाए अपनी जान के और अपने भाई के, पस हमारे और हमारी नाफ़रमान क़ौम के दरमियान जुदाई डाल दे (फ़ैसला कर दे)। (25)

अल्लाह ने कहा पस यह सरज़मीन हराम कर दी गई उन पर चालीस साल, वह ज़मीन में भटकते फिरेंगे, तू नाफ़रमान क़ौम पर अफ़सोस न कर। (26)

उन्हें आदम (अ) के दो बेटों का हाले वाक़ई सुनाओ, जब दोनों ने कुछ नियाज़ पेश की तो उन में से एक की क़ुबूल कर ली गई और दूसरे से क़ुबूल न की गई, उस ने (भाई को) कहा मैं तुझे ज़रूर मार डालूँगा, उस ने कहा अल्लाह सिर्फ़ क़ुबूल करता है परहेज़गारों से। (27)

अलबत्ता अगर तू मेरी तरफ़ अपना हाथ मुझे क़त्ल करने के लिए बढ़ाएगा, मैं (फिर भी) अपना हाथ तेरी तरफ़ बढ़ाने वाला नहीं कि तुझे क़त्ल करूँ, बेशक मैं सारे जहान के परवरदिगार अल्लाह से डरता हूँ। (28)

बेशक मैं चाहता हूँ कि तू हासिल करे (ज़िम्मेदार हो जाए) मेरे गुनाह का और अपने गुनाह का, फिर तू जहन्नम वालों में से होजाए और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (29)

फिर उस को उस के नफ़्स ने अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर लिया, उस ने उस को क़त्ल कर दिया तो नुक़्सान उठाने वालों में से हो गया। (30)

फिर अल्लाह ने भेजा एक कव्वा ज़मीन कुरेदता ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश कैसे छुपाए। उस ने कहा हाए अफ़सोस! मुझ से इतना न हो सका कि उस कव्वे जैसा हो जाऊँ कि अपने भाई की लाश को छुपाऊँ, पस वह नादिम (पशेमां) होने वालों में से होगया। (31)

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ

कि जो-जिस	बनी इस्राईल	पर	हम ने लिख दिया	उस	वजह	से

مَنْ قَتَلَ نَفْسًاۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِى الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ

उस ने क़त्ल किया	तो गोया	ज़मीन (मुल्क) में	या फ़साद करना	किसी जान के बग़ैर	कोई जान	कोई क़त्ल करे

النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ

तमाम	लोग	उस ने ज़िन्दा रखा	तो गोया	उस को ज़िन्दा रखा	और जो-जिस	तमाम	लोग

وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ۫ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ

उन में से	अक्सर	बेशक	फिर	रौशन दलाइल के साथ	हमारे रसूल	और उन के पास आ चुके

بَعْدَ ذٰلِكَ فِى الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ

जंग करते हैं	जो लोग	सज़ा	यही	32	हद से बढ़ने वाले	ज़मीन (मुल्क) में	उस के बाद

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا

कि वह क़त्ल किए जाएं	फ़साद करने	जमीन (मुल्क) में	और कोशिश करते हैं	और उस का रसूल (स)	अल्लाह

اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ

एक दूसरे के मुख़ालिफ़ से	से	और उन के पाऊँ	उन के हाथ	काटे जाएं	या	वह सूली दिए जाएं	या

اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْىٌ فِى الدُّنْيَا

दुनिया में	रुसवाई	उन के लिए	यह	मुल्क से	या मुल्क बदर कर दिए जाएं

وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٣٣﴾ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

वह लोग जिन्हों ने तौबा कर ली	मगर	33	बड़ा	अज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	अल्लाह	कि	तो जान लो	उन पर	तुम क़ाबू पाओ	कि	उस से पहले

رَّحِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا ع ٨ ٩

और तलाश करो	अल्लाह	डरो	जो लोग ईमान लाए	ऐ	34	मेहरबान

اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِىْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	उस का रास्ता	में	और जिहाद करो	क़ुर्ब	उस की तरफ़

تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا

जो	उन के लिए	यह कि	अगर	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	बेशक	35	फ़लाह पाओ

فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ

अज़ाब	से	उस के साथ	कि फ़िदया (बदले में) दें	उस के साथ	और इतना	सब का सब	ज़मीन में

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾

36	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	उन से	क़ुबूल किया जाएगा	न	क़ियामत का दिन

उस वजह से हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिस ने किसी एक जान को किसी जान के (बदले के) बग़ैर या मुल्क में फ़साद करने के बग़ैर क़त्ल किया तो गोया उस ने क़त्ल किया तमाम लोगों को, और जिस ने (किसी एक को) ज़िन्दा रखा (बचाया) तो गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा (बचा लिया), और उन के पास आ चुके हमारे रसूल रौशन दलाइल के साथ, फिर उस के बाद उन में से अक्सर ज़मीन में हद से बढ़ जाने वाले हैं। (32)

यही सज़ा है (उन की) जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से जंग करते हैं और सअ़ई करते हैं मुल्क में फ़साद बर्पा करने की कि वह क़त्ल किए जाएं या सूली दिए जाएं या उन के हाथ और पाऊँ काटे जाएं मुख़ालिफ़ जानिब से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ), या मुल्क बदर कर दिए जाएं, यह उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है। (33)

मगर वह लोग जिन्हों ने उस से पहले तौबा कर ली कि तुम क़ाबू पाओ उन पर, तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (34)

ऐ ईमान वालो! डरो अल्लाह से और उस की तरफ़ (उस का) क़ुर्ब तलाश करो और उस के रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (35)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया जो कुछ ज़मीन में है अगर सब का सब और उस के साथ और इतना ही उन के पास हो कि वह उस को क़ियामत के दिन अ़ज़ाब के फ़िदये (बदला) में दें तो वह उन से क़ुबूल न किया जाएगा, और उन के लिए अ़ज़ाब है दर्दनाक। (36)

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ

निकलने वाले	हालांकि नहीं वह	आग	से	वह निकल जाएं	कि	वह चाहेंगे

مِنْهَا ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا

काट दो	और चोर औरत	और चोर मर्द	37	हमेशा रहने वाला	अ़ज़ाब	और उन के लिए	उस से

اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	अल्लाह	से	इब्रत	उस की जो उन्हों ने किया	सज़ा	उन दोनों के हाथ

حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और इस्लाह की	अपना जुल्म	बाद	से	पस जो-जिस तौबा की	38	हिक्मत वाला

يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

उसी की	अल्लाह	कि	क्या तू नहीं जानता	39	मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उस की तौबा कुबूल करता है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ

और बख़्शदे	जिसे चाहे	अ़ज़ाब दे	और ज़मीन	आस्मानों	सल्तनत

لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ

रसूल (स)	ऐ	40	क़ादिर	हर शै	पर	और अल्लाह	जिस को चाहे

لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا

उन्हों ने कहा	जो लोग	से	कुफ़्र	में	भाग दौड़ करते हैं	जो लोग	आप को ग़मगीन न करें

اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛۚ

वह लोग जो यहूदी हुए	और से	उन के दिल	और मोमिन नहीं	अपने मुँह से (जमा)	हम ईमान लाए

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ

वह आप (स) तक नहीं आए	दूसरी	क़ौम के लिए	वह जासूस हैं	झूट के लिए	जासूसी करते हैं

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ

कहते हैं	उस का ठिकाना	बाद	कलाम	वह फेर देते हैं

اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ

तो उस से बचो	यह तुम्हें न दिया जाए	और अगर	उस को कुबूल कर लो	यह	अगर तुम्हें दिया जाए

وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

कुछ	अल्लाह	से	उस के लिए	तू हरगिज़ न आ सकेगा	गुमराह करना	अल्लाह चाहे	और जो-जिस

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ

उन के लिए	उन के दिल	पाक करे	कि	अल्लाह	नहीं चाहा	वह लोग जो	यही लोग

فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ ۖ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾

41	बड़ा	अ़ज़ाब	आख़िरत	में	और उन के लिए	रुसवाई	दुनिया में

वह चाहेंगे कि वह आग से निकल जाएं हालांकि वह उस से निकलने वाले नहीं, और उन के लिए हमेशा रहने वाला (दाइमी) अ़ज़ाब है। (37)

चोर मर्द और चोर औ़रत दोनों के हाथ काट दो यह सज़ा है उस की जो उन्हों ने किया, इब्रत है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (38)

पस जिस ने तौबा की अपने जुल्म के बाद और इस्लाह कर ली तो बेशक अल्लाह उस की तौबा कुबूल करता है, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (39)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ही की है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की? वह जिसे चाहे अ़ज़ाब दे और जिस को चाहे बख़्शदे, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (40)

ऐ रसूल (स)! आप (स) को वह लोग ग़मगीन न करें जो कुफ़्र में भाग दौड़ करते हैं, वह लोग जो अपने मुँह से कहते है हम ईमान लाए हालांकि उन के दिल मोमिन नहीं, वह जो यहूदी हुए वह झूट के लिए जासूसी करते हैं, वह जासूस हैं एक दूसरी जमाअ़त के जो आप (स) तक नहीं आए, कलाम को फेर देते (बदल डालते) हैं उस के ठिकाने के बाद (ठिकाना छोड़ कर), कहते हैं अगर तुम्हें यह दिया जाए तो उस को कुबूल कर लो और अगर तुम्हें न दिया जाए तो उस से बचो, और जिस को अल्लाह गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तू अल्लाह के हाँ कुछ न कर सकेगा, यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने नहीं चाहा कि उन के दिल पाक करे, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है। (41)

ع ٦
عند المتقدمين ١٢

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ

तो फ़ैसला कर दें आप (स)	आप (स) के पास आएं	पस अगर	हराम	बड़े खाने वाले	झूट के लिए	जासूसी करने वाले

بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ

आप (स) का बिगाड़ सकेंगे	तो हरगिज़ न	उन से	आप (स) मुँह फेर लें	और अगर	उन से	मुँह फेर लें	या	उन के दरमियान

شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	इन्साफ़ से	उन के दरमियान	तो फ़ैसला करें	आप फ़ैसला करें	और अगर	कुछ

الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا

उस में	तौरात	जबकि उन के पास	वह आप (स) को मुन्सिफ़ बनाएंगे	और कैसे	42	इन्साफ़ करने वाले

حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ

वह लोग	और नहीं	उस	बाद	फिर जाते हैं	फिर	अल्लाह का हुक्म

بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ ع ٦ ١٠

और नूर	हिदायत	उस में	तौरात	हम ने नाज़िल की	बेशक हम	43	मानने वाले

يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا

उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए (यहूद को)	जो फ़रमांबरदार थे	नबी (जमा)	उस के ज़रीआ	हुक्म देते थे

وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ

अल्लाह की किताब	से (की)	वह निगहबान किए गए	इस लिए कि	और उलमा	अल्लाह वाले (दर्वेश)

وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ

और डरो मुझ से	लोग	पस न डरो	निगरान (मुहाफ़िज़)	उस पर	और थे

وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ

उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला न करे	और जो	थोड़ी	क़ीमत	मेरी आयतों के बदले	और न ख़रीदो (न हासिल करो)

اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ

उन पर	और हम ने लिखा (फ़र्ज़ किया)	44	काफ़िर (जमा)	वह	सो यही लोग	अल्लाह ने नाज़िल किया

فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ

और नाक	आँख के बदले	और आँख	जान के बदले	जान	कि	उस में

بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ

और ज़ख़्मों	दाँत के बदले	और दाँत	कान के बदले	और कान	नाक के बदले

قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَمَنْ

और जो	उस के लिए	कफ़्फ़ारा	तो वह	उस को	माफ़ कर दिया	फिर जो-जिस	बदला

لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	ज़ालिम (जमा)	वह	तो यही लोग	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला नहीं करता

झूट के लिए जासूसी करने वाले, हराम खाने वाले, पस अगर वह आप (स) के पास आएं तो आप (स) उन के दरमियान फ़ैसला कर दें या उन से मुँह फेर लें, और अगर आप (स) उन से मुँह फेर लें तो हरगिज़ आप (स) का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर आप (स) फ़ैसला करें तो उन के दरमियान इन्साफ़ से फ़ैसला करें, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है इन्साफ़ करने वालों को। **(42)**

और वह आप (स) को कैसे मुन्सिफ़ बनाते हैं जबकि उन के पास तौरात है जिस में अल्लाह का हुक्म है, फिर उस के बाद वह फिर जाते हैं, और वह मानने वाले नहीं। **(43)**

बेशक हम ने नाज़िल की तौरात। उस में हिदायत और नूर है, उस के ज़रीआ हमारे नबी जो फ़रमांबरदार थे हुक्म देते थे यहूद को, और दर्वेश और उलमा (भी) इस लिए कि वह अल्लाह की किताब के निगहबान मुक़र्रर किए गए थे और उस पर निगरान थे, पस तुम लोगों से न डरो और मुझ (ही) से डरो और न हासिल करो मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत, और जो उस के मुताबिक़ फैसला न करे जो अल्लाह ने नाज़िल किया है सो यही लोग काफ़िर हैं। **(44)**

और हम ने उस (किताब) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत है, और ज़ख़्मों का क़िसास (बदला) है, फिर जिस ने उस (क़िसास) को माफ़ कर दिया तो वह उस के लिए कफ़्फ़ारा है, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो यही लोग ज़ालिम हैं। **(45)**

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا

उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	इब्ने मरयम	ईसा (अ)	उन के निशाने क़दम	पर	और हम ने पीछे भेजा

بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ

और नूर	हिदायत	उस में	इंजील	और हम ने उसे दी	तौरात	से	उस से पहले

وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً

और नसीहत	और हिदायत	तौरात	से	उस से पहले	उस की जो	और तस्दीक़ करने वाली

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۭ وَمَنْ

और जो	उस में	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के साथ जो	इंजील वाले	और फ़ैसला करें	46	परहेज़गारों के लिए

لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاَنْزَلْنَآ

और हम ने नाज़िल की	47	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)	वह	तो यही लोग	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला नहीं करता

اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ

किताब	से	उस से पहले	उस की जो	तस्दीक़ करने वाली	सच्चाई के साथ	किताब	आप की तरफ़

وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ

और न पैरवी करें	अल्लाह	नाज़िल किया	उस से जो	उन के दरमियान	सो फ़ैसला करें	उस पर	और निगहबान ओ मुहाफ़िज़

اَهْوَاۗءَهُمْ عَمَّا جَاۗءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۭ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً

दस्तूर	तुम में से	हम ने मुक़र्रर किया है	हर एक के लिए	हक़	से	तुम्हारे पास आगया	उस से	उन की ख़ाहिशात

وَّمِنْهَاجًا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ

ताकि तुम्हें आज़माए	और लेकिन	वाहिदा (एक)	उम्मत	तो तुम्हें कर देता	अल्लाह चाहता	और अगर	और रास्ता

فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

वह तुम्हें बतलादेगा	सब को	तुम्हें लौटना	अल्लाह	तरफ़	नेकियां	पस सबक़त करो	उस ने तुम्हें दिया	जो	में

بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

अल्लाह	नाज़िल किया	उस से जो	उन के दरमियान	और फ़ैसला करें	48	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	जो

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ

जो	बाज़ (किसी)	से	बहका न दें	कि	और उन से बचते रहो	उन की ख़ाहिशें	और न चलो

اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ

उन्हें पहुँचादे	कि	अल्लाह	चाहता है	सिर्फ़ यही	तो जान लो	वह मुँह फेर लें	फिर अगर	आप की तरफ़	अल्लाह	नाज़िल किया

بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ اَفَحُكْمَ

क्या हुक्म	49	नाफ़रमान	लोग	से	अक्सर	और बेशक	उन के गुनाह	बसबब बाज़

ع ٧ ١١ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۭ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

50	यक़ीन रखते हैं	लोगो के लिए	हुक्म	अल्लाह	से	बेहतर	और किस	वह चाहते हैं	जाहिलियत

और हम ने ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को उन के निशाने क़दम पर भेजा, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उस (ईसा (अ) से पहले तौरात से थी, और हम ने उसे इंजील दी, उस में हिदायत और नूर है और उस की तस्दीक़ करने वाली जो उस से पहले तौरात से थी और परहेज़गारों के लिए हिदायत ओ नसीहत थी। (46)

और इंजील वाले उस के साथ फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उस में नाज़िल किया, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तो यही लोग फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हैं। (47)

और हम ने आप (स) की तरफ़ किताब सच्चाई के साथ नाज़िल की अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली और उस पर निगहबान ओ मुहाफ़िज़, सो उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो अल्लाह ने नाज़िल किया और उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें उस के बाद (जबकि) तुम्हारे पास हक़ आगया, हम ने मुक़र्रर किया है तुम में से हर एक के लिए (अलग) दस्तूर और (जुदा) रास्ते, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें उम्मते वाहिदा (एक उम्मत) कर देता, लेकिन (वह चाहता है) ताकि वह तुम्हें उस से आज़माए जो उस ने तुम्हें दिया है, पस नेकियों में सबक़त करो, तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है वह तुम्हें बतला देगा जिस बात में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (48)

और उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो नाज़िल किया अल्लाह ने, और उन कि ख़ाहिशों पर न चलो और उन से बचते रहो कि तुम्हें बहका न दें किसी ऐसे (हुक्म) से जो नाज़िल किया है अल्लाह ने आप (स) की तरफ़, फिर अगर वह मुँह फेर लें तो जान लो कि अल्लाह सिर्फ़ यही चाहता है कि उन्हें (सज़ा) पहुँचाए उन के बाज़ गुनाहों के सबब, और उन में से अक्सर लोग नाफ़रमान हैं। (49)

क्या वह (दौरे) जाहिलियत का हुक्म (रस्म ओ रिवाज) चाहते हैं? और अल्लाह से बेहतर हुक्म किस का है उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं? (50)

وقف لازم
وقف منزل عند البعض
وقف غفران

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ۘ

दोस्त	और नसारा	यहूद	न बनाओ	ईमान लाए	जो लोग	ऐ

بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۭ

उन से	तो बेशक वह	तुम में से	उन से दोस्ती रखेगा	और जो	बाज़ (दूसरे)	दोस्त	उन में से बाज़

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ

में	वह लोग जो	पस तू देखेगा	51	ज़ालिम	लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह

قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ

कि	हमें डर है	कहते हैं	उन में (उन की तरफ़)	दोड़ते हैं	रोग	उन के दिल

تُصِيْبَنَا دَاۗىِٕرَةٌ ۭ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ

अपने पास	से	या कोई हुक्म	लाए फ़तह	कि	अल्लाह	सो क़रीब है	गर्दिश	हम पर (न) आजाए

فَيُصْبِحُوْا عَلٰي مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَيَقُوْلُ

और कहते हैं	52	पछताने वाले	अपने दिल (जमा)	में	वह छुपाते थे	जो	पर	तो रह जाएं

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ

कि वह	अपनी क़स्में	पक्की	अल्लाह की	क़स्में खाते थे	जो लोग	क्या यह वही हैं	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)

لَمَعَكُمْ ۭ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	53	नुक़्सान उठाने वाले	पस रह गए	उन के अ़मल	अकारत गए	तुम्हारे साथ

الثالثة

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ

ऐसी क़ौम	लाएगा अल्लाह	तो अ़नक़रीब	अपना दीन	से	तुम से	फिरेगा	जो	जो लोग ईमान लाए (ईमाम वाले)

يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۡ

काफ़िर (जमा)	पर	ज़बरदस्त	मोमिनीन	पर	नर्म दिल	और वह उसे महबूब रखते हैं	वह उन्हें महबूब रखता है

يُّجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَاۗىِٕمٍ ۭ ذٰلِكَ

यह	कोई मलामत करने वाला	मलामत	और नहीं डरते	अल्लाह	में रास्ता	जिहाद करते हैं

فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٤﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ

तुम्हारा रफ़ीक	उस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	54	इल्म वाला	वुस्अ़त वाला	और अल्लाह	जिसे चाहता है	वह देता है	अल्लाह	फ़ज़्ल

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

नमाज़	क़ाइम करते हैं	जो लोग	ओर जो लोग ईमान लाए	और उस का रसूल	अल्लाह

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ

अल्लाह	दोस्त रखते हैं	और जो	55	रुकुअ़ करने वाले	और वह	ज़कात	और देते हैं

ع ٨ ١٢

وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٦﴾

56	ग़ालिब (जमा)	वह	अल्लाह की जमाअ़त	तो बेशक	ओर जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	और उस का रसूल

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ, उन में से बाज़ दोस्त हैं बाज़ के (एक दूसरे के दोस्त हैं) और तुम में से जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो बेशक वह उन में से होगा, बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (51)

पस तू देखेगा जिन लोगों के दिलों में रोग है वह उन (यहूद ओ नसारा) की तरफ़ दौड़ते हैं, वह कहते हैं हमें डर है कि हम पर गर्दिशे (ज़माना) न आजाए, सो क़रीब है कि अल्लाह फ़तह लाए या अपने पास से कोई हुक्म (लाए) तो वह अपने दिलों में जो छुपाते थे उस पर पछताते रह जाएं। (52)

और मोमिन कहें गे क्या यह वही लोग हैं जो अल्लाह की पक्की क़स्में खाते थे कि वह तुम्हारे साथ हैं। उन के अ़मल अकारत गए, पस वह नुक़्सान उठाने वाले (हो कर) रह गए। (53)

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़नक़रीब अल्लाह ऐसी क़ौम लाएगा जिन्हें वह महबूब रखता है और वह उसे महबूब रखते हैं, वह मोमिनों पर नरम दिल हैं काफ़िरों पर ज़बरदस्त हैं, अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह जिस को चाहता है देता है, और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है। (54)

तुम्हारे रफ़ीक़ तो सिर्फ़ अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले हैं, और वह जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और (अल्लाह के हुज़ूर) झुकने वाले हैं। (55)

जो दोस्त रखें अल्लाह और उस के रसूल (स) को और ईमान वालों को, तो बेशक अल्लाह की जमाअ़त ही (सब पर) ग़ालिब होगी। (56)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ

तुम्हारा दीन	जो लोग ठहराते हैं	न बनाओ	ईमान लाए (ईमान वाले)	जो लोग	ऐ

هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से क़ब्ल	किताब दिए गए	वह लोग - जो	से	और खेल	एक मज़ाक़

وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾

57	ईमान वाले	अगर तुम हो	अल्लाह	और डरो	दोस्त	और काफ़िर

وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ؕ ذٰلِكَ

यह	और खेल	एक मज़ाक़	वह उसे ठहराते हैं	नमाज़	तरफ़ (लिए)	तुम पुकारते हो	और जब

بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۵۸﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ

क्या ज़िद रखते हो	ऐ अहले किताब	आप (स) कह दें	58	अक़्ल नहीं रखते हैं (बेअक़्ल)	लोग	इस लिए कि वह

مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ

उस से क़ब्ल	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	यह कि	मगर	हम से

وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۵۹﴾ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ

उस	से	बद तर	तुम्हें बतलाऊँ	क्या	आप कह दें	59	नाफ़रमान	तुम में अक्सर	और यह कि

مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ

और बना दिया	उस पर	और ग़ज़ब किया	अल्लाह	उस पर लानत की	जो-जिस	अल्लाह	हां	ठिकाना (जज़ा)

مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ

बद तरीन	वही लोग	तागूत	और गुलामी	और ख़िन्ज़ीर (जमा)	बन्दर (जमा)	उन से

مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿۶۰﴾ وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا

कहते हैं	तुम्हारे पास आएं	और जब	60	रास्ता	सीधा	से	बहुत बहके हुए	दरजे में

اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	उस (कुफ़्र) के साथ	निकले चले गए	और वह	कुफ़्र की हालत में	हालांकि वह दाख़िल हुए (आए)	हम ईमान लाए

اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ

वह भाग दौड़ करते हैं	उन से	बहुत	और तू देखेगा	61	छुपाते	थे	वह जो	खूब जानता है

فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا

जो वह	बुरा है	हराम	और उन का खाना	और ज़ियादती	गुनाह	में

يَعْمَلُوْنَ ﴿۶۲﴾ لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ

से	और उलमा	अल्लाह वाले (दर्वेश)	क्यों उन्हें मना नहीं करते	62	कर रहे हैं

قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۶۳﴾

63	वह कर रहे हैं	जो	बुरा है	हराम	और उन का खाना	उन की बातें गुनाह की

ऐ ईमान वालो! उन लोगों को जो तुम्हारे दीन को एक मज़ाक़ और खेल ठहराते हैं (यानी वह) जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और काफ़िरों को दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57)

और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो (अज़ान देते हो) तो वह उसे एक मज़ाक़ और खेल ठहराते हैं, यह इस लिए है कि वह लोग अक़्ल नहीं रखते। (58)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! क्या तुम हम से यही ज़िद रखते हो (इन्तिक़ाम लेते हो) कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उस से क़ब्ल नाज़िल किया गया, और यह कि तुम में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (59)

आप (स) कह दें क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ उस से बदतर जज़ा (किस की है) अल्लाह के हां (वही) जिस पर अल्लाह ने लानत की और उस पर ग़ज़ब किया और उन में से बना दिए बन्दर और ख़िन्ज़ीर, और (उन्हों ने) तागूत (सरकश - शैतान) की गुलामी की। वही लोग बदतरीन दरजे में हैं, और सीधे रास्ते से सब से ज़ियादा बहके हुए हैं। (60)

और जब तुम्हारे पास आएं तो कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि आए थे कुफ़्र की हालत में और निकले तो कुफ़्र के साथ, और अल्लाह खूब जानता है जो वह छुपाते हैं। (61)

और तू देखेगा उन में से बहुत से भाग दौड़ करते हैं गुनाह और ज़ियादती में और हराम खाने में, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (62)

उन्हें क्यों मना नहीं करते दर्वेश और उलमा गुनाह (की बात) कहने से और उन के हराम खाने से, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (63)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا

उस से जो	और उन पर लानत की गई	उन के हाथ	बाँध दिए जाएं	बन्धा हुआ	अल्लाह का हाथ	यहूद	और कहा (कहते हैं)

قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا

وقف لازم

बहुत से	और ज़रूर बढ़ेगी	वह चाहता है	जैसे	वह ख़र्च करता है	कुशादा है	उस (अल्लाह) के हाथ	बल्कि	उन्हों ने कहा

مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ

उन के अन्दर	और हम ने डाल दिया	और कुफ़्र	सरकशी	आप का रब	से	आप की तरफ़	जो नाज़िल किया गया	उन से

الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا

आग	भड़काते हैं	जब कभी	क़ियामत का दिन	तक	और बुग़ज़ (बैर)	दुश्मनी

لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	फ़साद करते	ज़मीन (मुल्क) में	और वह दौड़ते हैं	अल्लाह	उसे बुझा देता है	लड़ाई की

لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا

अलबत्ता हम दूर कर देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	अहले किताब	यह कि	और अगर	64	फ़साद करने वाले	पसन्द नहीं करता

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا

क़ाइम रखते	वह	और अगर	65	नेमत के बाग़ात	और ज़रूर हम उन्हें दाख़िल करते	उन की बुराइयां	उन से

التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ

से	तो वह खाते	उन का रब	से	उन की तरफ़ (उन पर)	नाज़िल किया गया	और जो	और इंजील	तौरात

فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ

और अक्सर	सीधी राह पर (मियाना रो)	एक जमाअ़त	उन से	अपने पाऊँ	नीचे	और से	अपने ऊपर

مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

ع ٩ ١٠ ١٣

तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)	जो नाज़िल किया गया	पहुँचा दो	रसूल (स)	ऐ	66	जो वह करते हैं	बुरा	उन से

مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ

आप (स) को बचाले गा	और अल्लाह	उस का पैग़ाम	आप (स) ने पहुँचाया	तो नहीं	यह न किया	और अगर	तुम्हारा रब	से

مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾ قُلْ

आप कह दें	67	क़ौमे कुफ़्फ़ार	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	लोग	से

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ

और जो	और इंजील	तौरात	तुम क़ाइम करो	जब तक	किसी चीज़ पर (कुछ भी)	तुम नहीं हो	ऐ अहले किताब

اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

आप की तरफ़ (आप पर)	जो नाज़िल किया गया	उन से	अक्सर	और ज़रूर बढ़ जाएगी	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)	नाज़िल किया गया

مِّنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	क़ौमे कुफ़्फ़ार	पर	तो अफ़सोस न करें	और कुफ़्र	सरकशी	आप के रब की तरफ़ से

और यहूद कहते हैं अल्लाह का हाथ बन्धा हुआ है (अल्लाह बख़ील है), बाँध दिए जाएं उन के हाथ, और जो उन्हों ने कहा उस से उन पर लानत की गई। बल्कि अल्लाह के हाथ कुशादा हैं, वह ख़र्च करता है जैसे वह चाहता है, और जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया उस से उन में से बहुतों की सरकशी ज़रूर बढ़ेगी और कुफ़्र, और हम ने उन के अन्दर क़ियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और बैर डाल दिया है, वह जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है, और वह मुल्क में फ़साद करते हुए दौड़ते हैं (फ़साद बर्पा करते हैं), और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता। (64)

और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम अलबत्ता उन से उन की बुराइयां दूर कर देते और नेमत के बाग़ात में ज़रूर दाख़िल करते। (65)

और अगर वह तौरेत और इंजील क़ाइम रखते और जो उन के रब की तरफ़ से उन पर नाज़िल किया गया तो वह खाते अपने ऊपर से और अपने पाऊँ के नीचे से, उन में से एक जमाअ़त मियाना रो है, और उन में से अक्सर बुरे काम करते हैं। (66)

ऐ रसूल (स) पहुँचादो जो आप (स) के रब की तरफ़ से आप (स) पर नाज़िल किया गया है, और अगर यह न किया तो (गोया) आप (स) ने उस का पैग़ाम नहीं पहुँचाया, और अल्लाह आप (स) को लोगों से बचा लेगा, बेशक अल्लाह क़ौमे कुफ़्फ़ार को हिदायत नहीं देता। (67)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम कुछ भी नहीं हो जब तक तुम (न) क़ाइम करो तौरात और इंजील और जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और ज़रूर बढ़ जाएगी उन में से अक्सर की सरकशी और कुफ़्र उस की वजह से जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है तो आप (स) अफ़सोस न करें (ग़म न खाएं) क़ौमे कुफ़्फ़ार पर। (68)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى

और नसारा	और साबी	यहूदी हुए	और जो लोग	जो लोग ईमान लाए	बेशक

مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	अच्छे	और उस ने अ़मल किए	और आख़िरत के दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो

يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	और हम ने भेजे	बनी इस्राईल	पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	बेशक	69	ग़मगीन होंगे

رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا

झुटलाया	एक फ़रीक़	उन के दिल	न चाहते थे	उस के साथ जो	कोई रसूल	आया उन के पास	जब भी	रसूल (जमा)

وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ

तो	और बहरे हो गए	सो वह अन्धे हुए	कोई ख़राबी	कि न होगी	और उन्हों ने गुमान किया	70	क़त्ल कर डालते	और एक फ़रीक़

تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

जो	देख रहा है	और अल्लाह	उन से	अक्सर	और बहरे होगए	अँधे होगए	फिर	उन की	अल्लाह	तौबा क़ुबूल की

يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ

इब्ने मरयम	मसीह (अ)	वही	अल्लाह	तहक़ीक़	वह जिन्हों ने कहा	बेशक काफ़िर हुए	71	वह करते हैं

وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ

बेशक वह	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह	इबादत करो	ऐ बनी इस्राईल	मसीह (अ)	और कहा

مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ

दोज़ख़	और उस का ठिकाना	जन्नत	उस पर	अल्लाह ने हराम कर दी	तो तहक़ीक़	अल्लाह का	शरीक ठहराए	जो

وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ

तीन का	बेशक अल्लाह	वह लोग जिन्हों ने कहा	अलबत्ता काफ़िर हुए	72	मददगार	कोई	ज़ालिमों के लिए	और नहीं

وقف لازم

ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	उस से जो	वह बाज़ न आएं	और अगर	वाहिद	माबूद	सिवाए	माबूद	कोई	और नहीं	तीसरा (एक)

لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ

पस वह क्यों तौबा नहीं करते	73	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन से	जिन्हों ने कुफ़्र किया	ज़रूर पहुँचेगा

اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ

इब्ने मरयम	मसीह (अ)	नहीं	74	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	और उस से बख़्शिश मांगते	अल्लाह की तरफ़ (आगे)

اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ

खाते थे	वह दोनों	सिदद्दीक़ा (सच्ची-वली)	और उस की माँ	रसूल	उस से पहले	गुज़र चुके	रसूल	मगर

الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾

75	औन्धे जा रहे हैं	कहां (कैसे)	देखो	फिर	आयात (दलाइल)	उन के लिए	हम बयान करते हैं	कैसे	देखो	खाना

बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबी (सितारा परस्त) और नसारा, जो भी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और अच्छे अ़मल करे तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (69)

बेशक हम ने बनी इस्राईल से पुख़्ता अ़हद लिया और हम ने उन की तरफ़ रसूल भेजे, जब भी उन के पास कोई रसूल आया उस (हुक्म) के साथ जो उन के दिल न चाहते थे तो एक फ़रीक़ को झुटलाया और एक फ़रीक़ को क़त्ल कर डाला, (70)

और उन्हों ने गुमान किया कि कोई ख़राबी न होगी, सो वह अन्धे हो गए और बहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन्हें माफ़ किया, फिर उन में से अक्सर अन्धे और बहरे हो गए, सो अल्लाह देख रहा है जो वह करते हैं। (71)

बेशक वह काफ़िर हुए जिन्हों ने कहा तहक़ीक़ अल्लाह वही है मसीह (अ) इब्ने मरयम, और मसीह (अ) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो तहक़ीक़ अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (72)

अलबत्ता वह लोग काफ़िर हुए जिन्हों ने कहा बेशक अल्लाह तीन में का एक है। और माबूद वाहिद के सिवा कोई माबूद नहीं, और अगर वह उस से बाज़ न आए जो वह कहते हैं तो उन में से जिन्हों ने कुफ़्र किया उन्हें ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुँचेगा। (73)

और वह तौबा क्यों नहीं करते अल्लाह के आगे और उस से गुनाहों की बख़्शिश क्यों नहीं मांगते? और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (74)

मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) नहीं मगर रसूल (वह सिर्फ़ एक रसूल हैं) उस से पहले रसूल गुज़र चुके हैं, और उस की माँ सिदद्दीक़ा (सच्ची - वली) हैं, वह दोनों खाना खाते थे, देखो! हम उन के लिए कैसे दलाइल बयान करते हैं, फिर देखो ये कैसे औन्धे जा रहे हैं? (75)

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ

कह दें	क्या तुम पूजते हो	से	अल्लाह के सिवा	जो नहीं	मालिक	तुम्हारे लिए	नुक़्सान	और न नफ़ा

وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِىْ

और अल्लाह	वही	सुनने वाला	जानने वाला	76	कह दें	ऐ अहले किताब	ग़ुलू (मुबालिग़ा) न करो	में

دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ

अपना दीन	नाहक़	और न	पैरवी करो	ख़ाहिशात	वह लोग	गुमराह हो चुके	इस से क़ब्ल

وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ لُعِنَ ع ١٠ ١١ ١٢

और उन्हों ने गुमराह किया	बहुत से	और भटक गए	से	सीधा	रास्ता	77	लानत किए गए (मलऊन हुए)

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	से	बनी इस्राईल	पर	ज़बान	दाऊद (अ)	और ईसा (अ)

ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ

इब्ने मरयम	यह	इस लिए कि	उन्हों ने नाफ़रमानी की	और वह थे	हद से बढ़ते	78	एक दूसरे को न रोकते थे

عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

से	बुरे काम	वह करते थे	अलबत्ता बुरा है	जो वह थे	करते	79

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ

आप (स) देखेंगे	अक्सर	उन से	दोस्ती करते हैं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अलबत्ता बुरा है	जो आगे भेजा

لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِى الْعَذَابِ هُمْ

अपने लिए	उन की जानें	कि	ग़ज़बनाक हुआ अल्लाह	उन पर	और अज़ाब में	वह

خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِىِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ

हमेशा रहने वाले	80	और अगर	वह ईमान लाए	अल्लाह	और रसूल	और जो	नाज़िल किया गया

اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ

उस की तरफ़	न	उन्हें बनाते	दोस्त	और लेकिन	अक्सर	उन से

فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

नाफ़रमान	81	तुम ज़रूर पाओगे	सब से ज़ियादा	लोग	दुश्मनी	अहले ईमान (मुसलमानों) के लिए

الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً

यहूद	और जिन लोगों ने शिर्क किया	और अलबत्ता ज़रूर पाओगे	सब से ज़ियादा क़रीब	दोस्ती

لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ

उन के लिए जो	ईमान लाए (मसलमान)	जिन लोगों ने कहा	हम	नसारा	यह	इस लिए कि

مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

उन से	आलिम	और दर्वेश	और यह कि वह	तकब्बुर नहीं करते	82

कह दें: क्या तुम अल्लाह के सिवा उसे पूजते हो जो तुम्हारे लिए मालिक नहीं किसी नुक़्सान का और न नफ़ा का, और अल्लाह ही सुनने वाला जानने वाला है। (76)

कह दें: ऐ अहले किताब! अपने दीन में नाहक़ मुबालिग़ा न करो और उन लोगों की ख़ाहिशात की पैरवी न करो जो उस से क़ब्ल गुमराह हो चुके हैं और उन्हों ने बहुत सों को गुमराह किया और (ख़ुद भी) बहक गए सीधे रास्ते से। (77)

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह मलऊन हुए दाऊद (अ) और ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) की ज़बानी, यह इस लिए कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (78)

वह एक दूसरे को बुरे काम से जो वह कर रहे थे न रोकते थे, अलबत्ता बुरा है जो वह करते थे। (79)

आप (स) देखेंगे उन में से अक्सर काफ़िरों से दोस्ती करते हैं। अलबत्ता बुरा है जो आगे भेजा ख़ुद उन्हों ने अपने लिए कि उन पर अल्लाह ग़ज़बनाक हुआ और वह हमेशा अज़ाब में रहने वाले हैं। (80)

और अगर (काश) वह अल्लाह और रसूल पर ईमान ले आते और उस पर जो उस की तरफ़ नाज़िल किया गया तो उन्हें दोस्त न बनाते लेकिन उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (81)

तुम सब लोगों से ज़ियादा दुश्मन पाओगे अहले ईमान (मुस्लमानों) का यहूद को और मुशरिकों को, और अलबत्ता तुम मुसलमानों के लिए दोस्ती में सब से क़रीब पाओगे (उन लोगों को) जिन लोगों ने कहा हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में आ़लिम और दर्वेश हैं, और यह कि वह तकब्बुर नहीं करते। (82)

الجزء ٧

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ

उन की आँखें	तू देखे	रसूल	तरफ़	जो नाज़िल किया गया	सुनते हैं	और जब

تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا

हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	वह कहते हैं	हक़	से-को	उन्हों ने पहचान लिया	इस (वजह से)	आँसू	से	वह पड़ती हैं

فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا

हमारे पास आया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान न लाएं	हम को	और क्या	83	गवाह (जमा)	साथ	पस हमें लिख ले

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٤﴾

84	नेक लोग	क़ौम	साथ	हमारा रब	हमें दाख़िल करे	कि	और हम तमअ़ रखते हैं	हक़	से-पर

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहेंगें	नहरें	उस के नीचे	से	बहती हैं	बाग़ात	उस के बदले जो उन्हों ने कहा	अल्लाह	पस दिए उन को

فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا

और झुटलाया	उन्हों ने कुफ़्र किया	और जो लोग	85	नेकोकार (जमा)	जज़ा	और यह	उस (उन) में

ع ١١ ٩ ١

بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٨٦﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	86	दोज़ख़	साथी (वाले)	यही लोग	हमारी आयात

لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	और हद से न बढ़ो	तुम्हारे लिए	हलाल कीं अल्लाह ने	जो	पाकीज़ा चीज़ें	न हराम ठहराओ

لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۠

पाकीज़ा	हलाल	तुम्हें दिया अल्लाह ने	उस से जो	और खाओ	87	हद से बढ़ने वाले	नहीं पसन्द करता

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ

तुम्हारा मुआख़ज़ा करता अल्लाह	नहीं	88	मानते हो	उस को	तुम	वह जिस	और डरो अल्लाह से

بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ

क़सम	मज़बूत बांधा	उस पर जो	मुआख़ज़ा करता है तुम्हारा	और लेकिन	तुम्हारी क़समें	में-पर	बेहूदा

فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ

तुम खिलाते हो	जो	औसत	से-का	मोहताज (जमा)	दस	खाना खिलाना	सो उस का कफ़्फ़ारा

اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ

तो रोज़ा रखे	न पाए	पस जो	एक गर्दन	या आज़ाद करना	या उन्हें कपड़े पहनाना	अपने घर वाले

ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا

और हिफ़ाज़त करो	तुम क़सम खाओ	जब	तुम्हारी क़समें	कफ़्फ़ारा	यह	तीन दिन

اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	शुक्र करो	ताकि तुम	अपने अहकाम	तुम्हारे लिए	बयान करता है अल्लाह	इसी तरह	अपनी क़समें

और जब वह सुनते हैं जो रसूल (स) की तरफ़ नाज़िल किया गया, तू देखे कि उन की आँखें आँसूओं से वह पड़ती हैं (उबल पड़ती हैं) इस वजह से कि उन्हों ने हक़ को पहचान लिया, वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, पस हमें गवाहों (ईमान लाने वालों) के साथ लिख ले। **(83)**

और हम को क्या हुआ कि हम ईमान न लाएं अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमारे पास आया, और हम तमअ़ रखते हैं कि हमें दाख़िल करे हमारा रब नेक लोगों के साथ। **(84)**

पस जो उन्हों ने कहा उस के बदले अल्लाह ने उन्हें बाग़ात दिए जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगें, और यह नेकोकारों की जज़ा है। **(85)**

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयात को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। **(86)**

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए: पाकीज़ा चीज़ें जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल कीं वह हराम न ठहराओ, और हद से न बढ़ो, बेशक अल्लाह नहीं पसन्द करता हद से बढ़ने वालों को। **(87)**

और जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाकीज़ा खाओ और अल्लाह से डरो वह जिस को तुम मानते हो। **(88)**

अल्लाह तुम्हारा मुआख़ज़ा नहीं करता (नहीं पकड़ता) तुम्हारी बेहूदा क़समों पर लेकिन तुम्हारा मुआख़ज़ा करता है (पकड़ता है) जिस क़सम को तुम ने मज़बूत बान्धा (पुख़ता क़सम पर), सो उस का कफ़्फ़ारा दस मोहताजों को खाना खिलाना है औसत (दरजे) का जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन्हें कपड़े पहनाना या एक गर्दन (ग़ुलाम) आज़ाद करना, पस जो यह न पाए वह तीन दिन के रोज़े रखे, यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जब तुम क़सम खाओ, और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो। **(89)**

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ

और पांसे	और बुत	और जुआ	इस के सिवा नहीं कि शराब	ईमान वालो	ऐ

رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا

इस के सिवा नहीं	90	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	सो उन से बचो	शैतान	काम	से	नापाक

يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ

शराब	में-से	और बैर	दुश्मनी	तुम्हारे दरमियान	कि डाले	शैतान	चाहता है

وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

91	बाज़ आओगे	तुम	पस क्या	और नमाज़ से	अल्लाह की याद	से	और तुम्हें रोके	और जुआ

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

सिर्फ़	तो जान लो	तुम फिर जाओगे	फिर अगर	और बचते रहो	रसूल	और इताअ़त करो	अल्लाह	और इताअ़त करो

عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अ़मल किए नेक	जो लोग ईमान लाए	पर	नहीं	92	खोल कर	पहुँचा देना	हमारा रसूल (स)	पर (ज़िम्मा)

جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अ़मल किए नेक	और वह ईमान लाए	उन्हों ने परहेज़ किया	जब	वह खा चुके	में-जो	कोई गुनाह

ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع ١٢ ٤ ٢

93	नेकोकार (जमा)	दोस्त रखता है	और अल्लाह	और उन्हों ने नेकोकारी की	वह डरे	फिर	और ईमान लाए	फिर वह डरे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَىْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ

तुम्हारे हाथ	उस तक पहुँचते हैं	शिकार	से	कुछ (किसी क़द्र)	ज़रूर तुम्हें आज़माएगा अल्लाह	ईमान वालो	ऐ

وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ

इस के बाद	ज़ियादती की	सो जो-जिस	बिन देखे	उस से डरता है	कौन	ताकि अल्लाह मालूम करले	और तुम्हारे नेज़े

فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ

और जब कि तुम	शिकार	न मारो	ईमान वालो	ऐ	94	दर्दनाक	अ़ज़ाब	सो उसके लिए

حُرُمٌ ۗ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ

मवेशी से	जो वह मारे	बराबर	तो बदला	जान बूझ कर	तुम में से	उस को मारे	और जो	हालते एहराम में

يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا ۢ بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ

खाना	या कफ़्फ़ारा	कअ़बा	पहुँचाए	नियाज़	तुम से	दो मोतबर	उस का	फ़ैसला करें

مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ۗ

पहले हो चुका	उस से जो	अल्लाह ने माफ़ किया	अपने काम (किए) की सज़ा	ताकि चखे	रोज़े	उस	या बराबर	मोहताज (जमा)

وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

95	बदला लेने वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	उस से	तो अल्लाह बदला लेगा	फिर करे	और जो

ऐ ईमान वालो! इस के सिवा नहीं कि शराब, जुआ और बुत और पांसे (फ़ाल के तीर) नापाक हैं, शैतानी काम हैं, सो उन से बचो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (90)

इस के सिवा नहीं कि शैतान चाहता है कि तुम्हारे दरमियान शराब और जुए से दुश्मनी डाले और तुम्हें रोके अल्लाह की याद से और नमाज़ से, पस क्या तुम बाज़ आओगे? (91)

और तुम इताअ़त करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और बचते रहो, फिर अगर तुम फिर जाओगे तो जान लो कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे सिर्फ़ खोल कर (वाज़ेह तौर पर) पहुँचा देना है। (92)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन पर उस में कोई गुनाह नहीं जो वह खा चुके जबकि (आइन्दाह) उन्हों ने परहेज़ किया और ईमान लाए और नेक अ़मल किए, फिर वह डरे और ईमान लाए, फिर वह डरे और उन्हों ने नेकोकारी की, और अल्लाह नेकोकारों को दोस्त रखता है। (93)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर आज़माएगा किसी क़द्र (उस) शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँचते हैं ताकि अल्लाह मालूम कर ले कौन उस से बिन देखे डरता है, सो इस के बाद जिस ने ज़ियादती की उस के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (94)

ऐ ईमान वालो! न मारो शिकार जब कि तुम हालते एहराम में हो, और तुम में से जो उस को जान बूझ कर मारे तो जो वह मारे उस के बराबर बदला है मवेशियों में से, जिस का तुम में से दो मोतबर फ़ैसला करें, ख़ाने कअ़बा नियाज़ पहुँचाए या (इस का) कफ़्फ़ारा है खाना चन्द मोहताजों का, या उस के बराबर रोज़े रखना ताकि वह अपने किए की सज़ा चखे, अल्लाह ने माफ़ किया जो पहले हो चुका और जो फिर करे तो अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है। (95)

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ

और हराम किया गया	और मूसाफ़िरों के लिए	तुम्हारे लिए	फ़ाइदा	और उस का खाना	दर्या का शिकार	तुम्हारे लिए	हलाल किया गया

عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	वह जो	अल्लाह	और डरो	हालते एहराम में	जब तक तुम हो	ख़ुश्की का शिकार	तुम पर

تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ

लोगों के लिए	क़ियाम का बाइस	एहतिराम वाला घर	कअ़बा	अल्लाह	बनाया	96	तुम जमा किए जाओगे

وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ۗ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	ताकि तुम जान लो	यह	और पट्टे पड़े हुए जानवर	और क़ुर्बानी	और हुर्मत वाले महीने

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

चीज़	हर	और यह कि अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसे मालूम है

عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और यह कि अल्लाह	अ़ज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	जान लो	97	जानने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ

जो तुम ज़ाहिर करते हो	जानता है	और अल्लाह	मगर पहुँचा देना	रसूल (स) पर- रसूल के ज़िम्मे	नहीं	98	मेहरबान

وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ

ख़ाह	और पाक	नापाक	बराबर नहीं	कह दीजिए	99	तुम छुपाते हो	और जो

اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	ऐ अ़क़्ल वालो	सो डरो अल्लाह से	नापाक	कस्रत	तुम्हें अच्छी लगे

ع ١٣ ٧ ٣ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ

जो ज़ाहिर की जाएं	चीज़ें	से- मुतअ़ल्लिक़	न पूछो	ईमान वाले	ऐ	100	फ़लाह पाओ

لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ۗ

ज़ाहिर कर दी जाएंगी तुम्हारे लिए	नाज़िल किया जा रहा है क़ुरआन	जब	उनके मुतअ़ल्लिक़	तुम पूछोगे	और अगर	तुम्हें बुरी लगें	तुम्हारे लिए

عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ

एक क़ौम	उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा	101	बुर्दबार	बख़्शने वाला	और अल्लाह	उस से	अल्लाह ने दरगुज़र की

مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ

बहीरा	अल्लाह	नहीं बनाया	102	इन्कार करने वाले (मुन्किर)	उस से	वह हो गए	फिर	तुम से क़ब्ल

وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और लेकिन	और न हाम	और न वसीला	और न साइबा

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

103	नहीं रखते अ़क़्ल	और उन के अक्सर	झूटे	अल्लाह पर	वह बुहतान बान्धते हैं

तुम्हारे लिए हलाल किया गया दर्या का शिकार और उस का खाना तुम्हारे फ़ाइदे के लिए है और मूसाफ़िरों के लिए, और तुम पर ख़ुश्की (जंगल) का शिकार हराम किया गया जब तक तुम हालते एहराम में हो, और अल्लाह से डरो जिस की तरफ़ तुम जमा किए जाओगे। (96)

अल्लाह ने बनाया कअ़बा एहतिराम वाला घर, लोगों के लिए क़ियाम का बाइस, और हुर्मत वाले महीने और क़ुर्बानी और गले में पट्टा (क़ुर्बानी की अ़लामत) पड़े हुए जानवर। यह इस लिए है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (97)

जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है और यह कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (98)

रसूल (स) के जिम्मे सिर्फ़ (पैग़ाम) पहुँचा देना है, और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (99)

कह दीजिए! बराबर नहीं नापाक और पाक, ख़ाह तुम्हें नापाक की कस्रत अच्छी लगे, सो ऐ अ़क़्ल वालो! अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (100)

ऐ ईमान वालो! न पूछो उन चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ जो तुम्हारे लिए ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें, और अगर उन के मुतअ़ल्लिक़ (ऐसे वक़्त) पूछोगे जब क़ुरआन नाज़िल किया जा रहा है तो तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएगी, अल्लाह ने उस से दरगुज़र की, और अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है। (101)

इसी क़िस्म के सवालात तुम से क़ब्ल एक क़ौम ने पूछा, फिर वह उस से मुन्किर हो गए। (102)

अल्लाह ने नहीं बनाया बहीरा और न साइबा, और न वसीला और न हाम, लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह अल्लाह पर झूट बान्धते हैं, और उन के अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते। (103)

وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡا اِلٰى مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوۡلِ قَالُوۡا

वह कहते हैं	रसूल	और तरफ़	अल्लाह ने नाज़िल किया	जो	तरफ़	आओ तुम	उन से	कहा जाए	और जब

حَسۡبُنَا مَا وَجَدۡنَا عَلَيۡهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوۡ كَانَ اٰبَآؤُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ

जानते	न	उन के बाप दादा	क्या ख़ाह हों	अपने बाप दादा	उस पर	जो हम ने पाया	हमारे लिए काफ़ी

شَيۡـئًا وَّلَا يَهۡتَدُوۡنَ ﴿١٠٤﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا عَلَيۡكُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ ۚ

अपनी जानें	तुम पर	ईमान वाले	ऐ	104	और न हिदायत याफ़्ता हों	कुछ

لَا يَضُرُّكُمۡ مَّنۡ ضَلَّ اِذَا اهۡتَدَيۡتُمۡ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرۡجِعُكُمۡ جَمِيۡعًا فَيُنَبِّئُكُمۡ

फिर वह तुम्हें जतला देगा	सब	तुम्हें लौटना है	अल्लाह की तरफ़	हिदायत पर हो	जब	गुमराह हुआ	जो	न नुक़्सान पहुँचाएगा

بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿١٠٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا شَهَادَةُ بَيۡنِكُمۡ اِذَا

जब	तुम्हारे दरमियान	गवाही	ईमान वाले	ऐ	105	तुम करते थे	जो

حَضَرَ اَحَدَكُمُ الۡمَوۡتُ حِيۡنَ الۡوَصِيَّةِ اثۡنٰنِ ذَوَا عَدۡلٍ مِّنۡكُمۡ

तुम से	इन्साफ़ वाले (मोतबर)	दो	वसीयत	वक़्त	मौत	तुम में से किसी को	आए

اَوۡ اٰخَرٰنِ مِنۡ غَيۡرِكُمۡ اِنۡ اَنۡتُمۡ ضَرَبۡتُمۡ فِى الۡاَرۡضِ فَاَصَابَتۡكُمۡ

फिर तुम्हें पहुँचे	ज़मीन में	सफ़र कर रहे हो	तुम	अगर	तुम्हारे सिवा	से	और दो	या

مُّصِيۡبَةُ الۡمَوۡتِ ؕ تَحۡبِسُوۡنَهُمَا مِنۡۢ بَعۡدِ الصَّلٰوةِ فَيُقۡسِمٰنِ بِاللّٰهِ

अल्लाह की	दोनों क़सम खाएं	नमाज़	बाद	उन दोनो को रोक लो	मौत	मुसीबत

اِنِ ارۡتَبۡتُمۡ لَا نَشۡتَرِىۡ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوۡ كَانَ ذَا قُرۡبٰى ۙ وَلَا نَكۡتُمُ

और हम नहीं छुपाते	रिशतेदार	ख़ाह हों	कोई क़ीमत	इस के इवज़	हम मोल नहीं लेते	तुम्हें शक हो	अगर

شَهَادَةَ ۙ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الۡاٰثِمِيۡنَ ﴿١٠٦﴾ فَاِنۡ عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسۡتَحَقَّاۤ

दोनों सज़ावार हुए	कि वह दोनों	उस पर	ख़बर हो जाए	फिर अगर	106	गुनाहगारों	से	उस वक़्त	बेशक हम	अल्लाह	गवाही

اِثۡمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوۡمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيۡنَ اسۡتَحَقَّ عَلَيۡهِمُ

उन पर	मुसतहिक़(जिन का हक़ मारना चाहा)	वह लोग	से	उन की जगह	खड़े हों	तो दो और	गुनाह

الۡاَوۡلَيٰنِ فَيُقۡسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنۡ شَهَادَتِهِمَا

उन दोनों की गवाही	से	ज़ियादा सही	कि हमारी गवाही	अल्लाह की	फिर वह क़सम खाएं	सब से ज़ियादा क़रीब

وَمَا اعۡتَدَيۡنَاۤ ۖ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿١٠٧﴾ ذٰلِكَ اَدۡنٰۤى اَنۡ

कि	ज़ियादा क़रीब	यह	107	ज़ालिम (जमा)	अलबत्ता-से	उस सूरत में	बेशक हम	हम ने ज़ियादती की	और नहीं

يَّاۡتُوۡا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجۡهِهَاۤ اَوۡ يَخَافُوۡۤا اَنۡ تُرَدَّ اَيۡمَانٌۢ بَعۡدَ اَيۡمَانِهِمۡ ؕ

उन की क़सम	बाद	क़सम	कि रद् कर दीजाएगी	वह डरें	या	उस का रुख़ (सही तरीक़ा)	पर	वह लाएं (अदा करें) गवाही

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسۡمَعُوۡا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِيۡنَ ﴿١٠٨﴾ ع ١٤ ٨ ٤

108	नाफ़रमान (जमा)	क़ौम	नहीं हिदायत देता	और अल्लाह	और सुनो	और डरो अल्लाह से

और जब उन से कहा जाए आओ उस की तरफ़ जो अल्लाह ने नाज़िल किया और रसूल (स) की तरफ़ (तो) वह कहते हैं हमारे लिए वह काफ़ी है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, तो क्या (उस सूरत में भी कि) उन के बाप दादा कुछ न जानते हों और न हिदायत याफ़्ता हों। (104)

ऐ ईमान वालो! तुम पर अपनी जानों (की फ़िक्र लाज़िम) है, जब तुम हिदायत पर हो तो जो गुमराह हुआ तुम्हें नुक़्सान न पहँचा सकेगा। तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। (105)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे दरमियान गवाही (का तरीक़ा यह है) कि जब तुम में से किसी को मौत आए वसीयत के वक़्त तुम में से दो मोतबर शख़्स हों या तुम्हारे सिवा दो और, अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो, फिर तुम्हें मौत की मुसीबत पहुँचे, उन दोनो को रोक लो नमाज़ के बाद, अगर तुम्हें शक हो तो दोनों अल्लाह की क़सम खाएं कि हम उस के इवज़ कोई क़ीमत मोल नहीं लेते ख़ाह रिशतेदार हों, और हम अल्लाह की गवाही नहीं छुपाते (वरना) हम बेशक गुनाहगारों में से हैं। (106)

फिर अगर उस की ख़बर हो जाए कि वह दोनों गुनाह के सज़ावार हुए हैं तो उन की जगह उन में से दो और खड़े हों जिन का हक़ मारना चाहा जो सब से ज़ियादा (मय्यत के) क़रीब हों, फिर वह अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़ियादा सही है और हम ने ज़ियादती नहीं की (वरना) उस सूरत में हम बेशक ज़ालिमों में से होंगे। (107)

यह क़रीब तर है कि वह गवाही उस के सही तरीक़े पर अदा करें या वह डरें कि (हमारी) क़सम उन की क़सम के बाद रद् कर दी जाएगी, और अल्लाह से डरो और सुनो और अल्लाह नहीं हिदायत देता नाफ़रमान क़ौम को। (108)

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ

नहीं ख़बर	वह कहेंगे	तुम्हें जवाब मिला	क्या	फिर कहेगा	रसूल (जमा)	जमा करेगा अल्लाह	दिन

لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	जब	109	छुपी बातें	जानने वाला	तू	बेशक तू	हमें

وقف لازم

اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؗ

रूहे पाक से	जब मैं ने तेरी मदद की	तेरी (अपनी) वालिदा	और पर	तुझ (आप) पर	मेरी नेमत	याद कर

تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ

किताब	तुझे सिखाई	और जब	और बड़ी उमर	पन्घोड़े में	लोग	तू बातें करता था

وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ

मिट्टी	से	तू बनाता था	और जब	और इन्जील	और तौरात	और हिक्मत

كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ

मेरे हुक्म से	उड़ने वाला	तो वह हो जाता	फिर फूंक मारता था उस में	मेरे हुक्म से	परिन्दे की सूरत

وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ

मेरे हुक्म से	मुर्दा	निकाल खड़ा करता	और जब	मेरे हुक्म से	और कोढ़ी	मादरज़ाद अन्धा	और शिफ़ा देता

وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

निशानियों के साथ	जब तू उन के पास आया	तुझ से	बनी इस्राईल	मैं ने रोका	और जब

فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾

110	खुला	जादू	मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उन से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तो कहा

وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا

उन्हों ने कहा	और मेरे रसूल (अ) पर	ईमान लाओ मुझ पर	कि	हवारी (जमा)	तरफ़	मैं ने दिल में डाल दिया	और जब

اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

हवारी (जमा)	जब कहा	111	फ़रमांबरदार	कि बेशक हम	और आप गवाह रहें	हम ईमान लाए

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ

उतारे	कि वह	तुम्हारा रब	कर सकता है	क्या	इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)

عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	अल्लाह से डरो	उस ने कहा	आस्मान	से	ख़ान	हम पर

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا

हमारे दिल	और मुत्मईन हों	उस से	हम खाएं	कि	हम चाहते हैं	उन्हों ने कहा	112	मोमिन (जमा)

الرّبع

وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾

113	गवाह (जमा)	से	उस पर	और हम रहें	तुम ने हम से सच कहा	कि	और हम जान लें

अल्लाह जिस दिन रसूलों को जमा करेगा, फिर कहेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था? वह कहेंगे हमें ख़बर नहीं, बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (109)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! मेरी नेमत अपने ऊपर और अपनी वालिदा पर याद करो जब मैं ने रूहे पाक (जिब्राईल) से तुम्हारी मदद की, तुम लोगों से पन्घोड़े में और बुढ़ापे में बातें करते थे, और जब में ने तुम्हें सिखाई किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील, और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से परिन्दे की सूरत बनाते थे, फिर उस में फूंक मारते थे तो वह हो जाता मेरे हुक्म से उड़ने वाला, और तुम मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से शिफ़ा देते थे, और जब तुम मुर्दे को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे, और जब मैं ने बनी इस्राईल को तुम से रोका जब तुम खुली निशानियों के साथ उन के पास आए तो काफ़िरों ने उन में से कहा यह सिर्फ़ खुला जादू है। (110)

और जब मैं ने हवारियों के दिल में डाल दिया कि मुझ पर और मेरे रसूल (अ) पर ईमान लाओ, उन्हों ने कहा हम ईमान लाए और आप गवाह रहें बेशक हम फ़रमांबरदार हैं। (111)

जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा इब्ने मरयम (अ)! क्या तेरा रब यह कर सकता है कि हम पर आस्मान से ख़ान उतारे? उस ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम मोमिन हो। (112)

उन्हों ने कहा हम चाहते हैं कि उस में से खाएं और हमारे दिल मुत्मईन हों और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा और हम उस पर गवाह रहें। (113)

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	ख़ान	हम पर	उतार	हमारे रब	ऐ अल्लाह	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	कहा

تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ

और तू	और हमें रोज़ी दे	तुझ से	और निशानी	और हमारे पिछले	हमारे पहलों के लिए	ईद	हमारे लिए	हो

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ

बाद	नाशुक्री करेगा	फिर जो	तुम पर	वह उतारूंगा	बेशक मैं	कहा अल्लाह ने	114	रोज़ी देने वाला	बेहतर

مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾ ع ١٥ ٥

115	जहान वाले	से	किसी को	अज़ाब दूँगा	न	उसे अज़ाब दूँगा ऐसा अज़ाब	तो मैं	तुम से

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ

मुझे ठहरा लो	लोगों से	तू ने कहा	क्या तू	इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	और जब

وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ

मैं कहूँ	कि	मेरे लिए	है	नहीं	तू पाक है	उस ने कहा	अल्लाह के सिवा	से	दो माबूद	और मेरी माँ

مَا لَيْسَ لِيْ ۤ بِحَقٍّ ۭ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۭ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وقف النبی ﷺ

मेरा दिल	में	जो	तू जानता है	तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता	मैं ने यह कहा होता	अगर	हक़	मेरे लिए	नहीं

وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ

उन्हें	मैं ने नहीं कहा	116	छुपी बातें	जानने वाला	तू	बेशक तू	तेरे दिल में	जो	और मैं नहीं जानता

اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ

उन पर	और मैं था	और तुम्हारा रब	मेरा रब	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उस का	जो तू ने मुझे हुक्म दिया	मगर

شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۭ

उन पर	निगरान	तू	तो था	तू ने मुझे उठा लिया	फिर जब	उन में	जब तक मैं रहा	ख़बरदार

وَاَنْتَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ

और अगर	तेरे बन्दे	तो बेशक वह	तू उन्हें अज़ाब दे	अगर	117	बाख़बर	हर शै	पर-से	और तू

تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ

नफ़ा देगा	दिन	यह	अल्लाह ने फ़रमाया	118	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	तो बेशक तू	उन को	तू बख़शदे

الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۭ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	उन के लिए	उन का सच	सच्चे

فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾

119	बड़ी	कामयाबी	यह	उस से	और वह राज़ी हुए	उन से	अल्लाह राज़ी हुआ	हमेशा	उन में

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۭ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾ ع ١٦ ٥ ٦

120	क़ुदरत वाला-क़ादिर	हर शै	पर	और वह	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों की	अल्लाह के लिए

ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) ने कहा ऐ अल्लाह! हमारे रब! हम पर आस्मान से ख़ान उतार कि हमारे पहलों और पिछलों के लिए ईद हो और तेरी तरफ़ से निशानी हो, और हमें रोज़ी दे, तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (114)

अल्लाह ने कहा बेशक मैं वह तुम पर उतारूंगा। फिर उस के बाद तुम में से जो नाशुक्री करेगा तो में उस को ऐसा अ़ज़ाब दूँगा जो न अ़ज़ाब दूँगा जहान वालों में से किसी को। (115)

और जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! क्या तू ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो माबूद ठहरा लो, उस ने कहा तू पाक है, मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं (ऐसी बात) कहूँ जिस का मुझे हक़ नहीं। अगर मैं ने यह कहा होता तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता, तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में है। बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (116)

मैं ने उन्हें नहीं कहा मगर सिर्फ़ वह जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है, और मैं जब तक उन में रहा उन पर ख़बरदार (बाख़बर) था। फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो उन पर तू निगरान था और तू हर शै से बाख़बर है। (117)

अगर तू उन्हें अ़ज़ाब दे तो बेशक वह तेरे बन्दे हैं, और अगर तू बख़्श दे उन को तो बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (118)

अल्लाह ने फ़रमाया यह दिन है कि सच्चों को नफ़ा देगा उन का सच, उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नेहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, अल्लाह राज़ी हुआ उन से और वह राज़ी हुए उस से, यह बड़ी कामयाबी है। (119)

अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और वह हर शै पर क़ादिर है। (120)

اٰيَاتُهَا ١٦٥ ❀ سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ (٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

रुकूआत 20 — (6) सूरतुल अनआ़म, मवेशी — आयात 165

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ

अन्धेरों	और बनाया	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

وَالنُّوْرَ ؕ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِىْ

जिस ने	वह	1	बराबर करते हैं	अपने रब के साथ	कुफ़्र किया (काफ़िर)	जिन्हों ने	फिर	और रौशनी

خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ

तुम	फिर	उस के हाँ	मुक़र्रर	और एक वक़्त	एक वक़्त	मुक़र्रर किया	फिर	मिट्टी	से	तुम्हें पैदा किया

تَمْتَرُوْنَ ﴿٢﴾ وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ

तुम्हारा बातिन	वह जानता है	ज़मीन	और में	आस्मान (जमा)	में	अल्लाह	और वह	2	शक करते हो

وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ﴿٣﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ

निशानियां	से	निशानी	से- कोई	और उन के पास नहीं आई	3	जो तुम कमाते हो	और जानता है	और तुम्हारा ज़ाहिर

رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ

उन के पास आया	जब	हक़ को	पस बेशक उन्हों ने झुटलाया	4	मुँह फेरने वाले	उस से	होते हैं वह	मगर	उन का रब

فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٥﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ

कितनी	क्या उन्हों ने नहीं देखा	5	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	जो वह थे	ख़बर (हक़ीक़त)	उन के पास आजाएगी	सो जल्द

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ

तुम्हें	नहीं जमाया	जो	ज़मीन (मुल्क) में	हम ने उन्हें जमा दिया था	उम्मतें	से	उन से क़ब्ल	से	हम ने हलाक कर दीं

وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِىْ مِنْ

से	बहती हैं	नहरें	और हम ने बनाईं	मूसलाधार	उन पर	बादल	और हम ने भेजा

تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٦﴾

6	दूसरी	उम्मतें	उन के बाद	से	और हम ने खड़ी कीं	उन के गुनाहों के सबब	फिर हम ने उन्हें हलाक किया	उन के नीचे

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِىْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ

अलबत्ता कहेंगे	अपने हाथों से	फिर उसे छू लें	काग़ज़	में	कुछ लिखा हुआ	तुम पर	और अगर हम उतारें

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ

क्यों नहीं उतारा गया	और कहते हैं	7	खुला	जादू	मगर	नहीं यह	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِىَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ﴿٨﴾

8	उन्हें मोहलत न दी जाती	फिर	काम	तो तमाम हो गया होता	फ़रिश्ता	हम उतारते	और अगर	फ़रिश्ता	उस पर

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरों और रौशनी को बनाया, फिर काफ़िर अपने रब के साथ बराबर करते हैं (औरों को बराबर ठहराते हैं)। (1)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर ज़िन्दगी की मुद्दत मुक़र्रर कि, और उस के हाँ एक वक़्त (क़ियामत का) मुक़र्रर है, फिर तुम शक करते हो। (2)

और वही है अल्लाह आस्मानों में और ज़मीन में, वह तुम्हारा बातिन और तुम्हारा ज़ाहिर जानता है और जानता है जो तुम कमाते हो (करते हो)। (3)

और उन के पास नहीं आई उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी मगर वह उस से मुँह फेर लेते हैं। (4)

पस बेशक उन्हों ने हक़ को झुटलाया जब उन के पास आया। सो जल्द ही उस की हक़ीक़त उन के सामने आजाएगी जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (5)

क्या उन्हों ने नहीं देखा? हम ने उन से क़ब्ल कितनी उम्मतें हलाक कीं? हम ने उन्हें मुल्क में जमाया था (इक़्तिदार दिया था) जितना तुम्हें नहीं जमाया (इक़्तिदार दिया) और हम ने उन पर मूसलाधार (बरस्ता) बादल भेजा, और हम ने नहरें बनाईं जो उन के नीचे बहती थें, फिर हम ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें हलाक किया और उन के बाद हम ने दूसरी उम्मतें खड़ी कीं (बदल दीं)। (6)

और अगर हम उतारें तुम पर काग़ज़ में लिखा हुआ, फिर वह उसे अपने हाथों से छू (भी) लें। अलबत्ता काफ़िर कहेंगे यह नहीं है मगर (सिर्फ़) खुला जादू। (7)

और कहते हैं उस पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम फ़रिश्ता उतारते तो काम तमाम हो गया होता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। (8)

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ

उन पर	और हम शुबा डालते	आदमी	तो हम उसे बनाते	फ़रिश्ता	हम उसे बनाते	और अगर

مَّا يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ

तो घेर लिया	आप (स) से पहले	से	रसूलों के साथ	हँसी की गई	और अल्बत्ता	9	जो वह शुबा करते हैं

بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ ع ١٠ ٧

आप कह दें	10	हँसी करते	उस पर	वह थे	जो-जिस	उन से	हँसी की	उन लोगों को जिन्हों ने

سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

11	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	देखो	फिर	ज़मीन (मुल्क) में	सैर करो

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ

अपने (नफ़्स) आप पर	लिखी है	कह दें अल्लाह के लिए	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	किस के लिए	आप पूछें

الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ

जो लोग	उस में	नहीं शक	क़ियामत का दिन	तुम्हें ज़रूर जमा करेगा	रहमत

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ

रात	में	बस्ता है	जो	और उस के लिए	12	ईमान नहीं लाएंगे	तो वही	अपने आप	ख़सारे में डाला

وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا

कारसाज़	मैं बनाऊँ	अल्लाह	क्या सिवाए	आप (स) कह दें	13	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और दिन

فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ

आप (स) कह दें	और खाता नहीं	खिलाता है	और वह	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बनाने वाला

اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ

से	और तू हरगिज़ न हो	हुक्म माना	जो-जिस	सब से पहला	मैं हो जाऊँ	कि	बेशक मुझ को हुक्म दिया गया

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ

अ़ज़ाब	अपना रब	मैं नाफ़रमानी करूँ	अगर	मैं डरता हूँ	बेशक मैं	आप (स) कह दें	14	शिर्क करने वाले

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ

उस पर रहम किया	तहक़ीक़	उस दिन	उस से	फेर दिया जाए	जो-जिस	15	बड़ा दिन

وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ

दूर करने वाला	तो नहीं	कोई सख़्ती	तुम्हें पहुँचाए अल्लाह	और अगर	16	कामयाबी खुली	और यह

لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर	तो वह	कोई भलाई	वह पहुँचाए तुम्हें	और अगर	उस के सिवा	उस का

قَدِيْرُ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

18	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	अपने बन्दे	ऊपर	ग़ालिब	और वह	17	क़ादिर

और अगर हम उसे फ़रिश्ता बनाते तो हम उसे आदमी (ही) बनाते, और हम उन पर शुबा डालते (जिस में वह अब) पड़ रहे हैं। (9)

और अल्बत्ता आप (स) से पहले रसूलों के साथ हँसी की गई, तो घेर लिया उन में से हँसी करने वालों को (उस चीज़ ने) जिस पर वह हँसी करते थे। (10)

आप (स) कह दें मुल्क में सैर करो (चल फिर कर देखो) फिर देखो झुटलाने वालों का अन्जाम कैसा हूआ? (11)

आप (स) पूछें किस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है? कह दें (सब) अल्लाह के लिए है, अल्लाह ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है (अपने ज़िम्में ले ली है), क़ियामत के दिन तुम्हें ज़रूर जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने आप को ख़सारे में डाला तो वही ईमान नहीं लाएंगे। (12)

और उस के लिए है जो बस्ता है रात में और दिन में, और वह सुनने वाला जानने वाला है। (13)

आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवाए (किसी और को) कारसाज़ बनाऊँ? (जो) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है, वह (सब को) खिलाता है और वह खुद नहीं खाता। आप (स) कह दें बेशक मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहला हो जाऊँ जिस ने हुक्म माना, और तुम हरगिज़ शिर्क करने वालों से न होना। (14)

आप (स) कह दें बेशक अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करुं तो बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (15)

उस दिन जिस से (अ़ज़ाब) फेर दिया जाए, तहक़ीक़ उस पर अल्लाह ने रहम किया और यह खुली कामयाबी है। (16)

और अगर अल्लाह तुम्हें सख़्ती पहुँचाए तो कोई दूर करने वाला नहीं उस को उस के सिवा, और अगर वह कोई भलाई पहुँचाए तुम्हें तो वह हर शै पर क़ादिर है। (17)

और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और वह हिक्मत वाला (सब की) ख़बर रखने वाला है। (18)

قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ۫ شَهِیْدٌۢ بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ ۫

और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह	आप (स) कह दें	गवाही	सब से बड़ी	चीज़	कौन सी	आप (स) कहें

وَاُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ

क्या तुम बेशक	पहुँचे	और जिस	इस से	ताकि मैं तुम्हें डराऊँ	क़ुरआन	यह	मुझ पर	और वहि किया गया

لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا

सिर्फ़	आप (स) कह दें	मैं गवाही नहीं देता	आप (स) कह दें	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के साथ	कि	तुम गवाही देते हो

هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ

हम ने दी उन्हें	वह जिन्हें	19	तुम शिर्क करते हो	उस से जो	बेज़ार	और बेशक मैं	यकता	माबूद	वह

الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ اَلَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

अपने आप	ख़सारे में डाला	वह जिन्हों ने	अपने बेटे	वह पहचानते हैं	जैसे	वह उस को पहचानते हैं	किताब

فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا

झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे	उस से जो	सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	20	ईमान नहीं लाते	सो वह

اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَیَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِیْعًا

सब	उन को जमा करेंगे	और जिस दिन	21	ज़ालिम (जमा)	फ़लाह नहीं पाते	बिला शुबा वह	उस की आयतें	या झुटलाए

ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا اَیْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِیْنَ كُنْتُمْ

तुम थे	जिन का	तुम्हारे शरीक	कहाँ	शिर्क किया (मुश्रिकों)	उन को जिन्हों ने	हम कहेंगे	फिर

تَزْعُمُوْنَ ﴿۲۲﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا

न थे हम	हमारा रब	क़सम अल्लाह की	वह कहें	कि	सिवाए	उन की शरारत	न होगी- न रही	फिर	22	दावा करते

مُشْرِكِیْنَ ﴿۲۳﴾ اُنْظُرْ كَیْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ

उन से	और खोई गईं	अपनी जानों	पर	उन्हों ने झूट बान्धा	कैसे	देखो	23	शिर्क करने वाले

مَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ یَّسْتَمِعُ اِلَیْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰی

पर	और हम ने डाल दिया	आप (स) की तरफ़	कान लगाता था	जो	और उन से	24	वह बातें बनाते थे	जो

قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَفِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ یَّرَوْا كُلَّ

तमाम	वह देखें	और अगर	बोझ	और उन के कानों में	वह (न) समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल

اٰیَةٍ لَّا یُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰۤی اِذَا جَآءُوْكَ یُجَادِلُوْنَكَ یَقُوْلُ الَّذِیْنَ

जिन लोगों ने	कहते हैं	आप (स) से झगड़ते हैं	आप (स) के पास आते हैं	जब	यहां तक कि	न ईमान लाएंगे उस पर	निशानी

كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۲۵﴾ وَهُمْ یَنْهَوْنَ عَنْهُ

उस से	रोकते हैं	और वह	25	पहले लोग (जमा)	कहानियां	मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उन्हों ने कुफ़्र किया

وَیَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ یُّهْلِكُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾

26	और वह शऊर नहीं रखते	अपने आप	मगर (सिर्फ़)	हलाक करते हैं	और नहीं	उस से	और भागते हैं

وقف لازم
وقف لازم
ع ٢ ٨

आप (स) कहें सब से बड़ी गवाही किस की? आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह है, और मुझ पर यह क़ुरआन वहि किया गया है ताकि मैं तुम्हें इस से डराऊँ और जिस तक यह पहुँचे, क्या तुम (वाक़ई) गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कोई और भी माबूद हैं! आप (स) कह दें मैं (ऐसी) गवाही नहीं देता, आप (स) कह दें सिर्फ़ वह माबूद यकता है, और मैं उस से बेज़ार हूँ जो तुम शिर्क करते हो। (19)

वह लोग जिन्हें हम ने किताब दी वह उस को पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगो ने ख़सारे में डाला अपने आप को सो वह ईमान नहीं लाते। (20)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बुहतान बन्धे या झुटलाए उस की आयतों को, बेशक ज़ालिम फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाते। (21)

और जिस दिन हम उन सब को जमा करेंगे, फिर हम कहेंगे मुश्रिकों को: कहां हैं तुम्हारे शरीक जिन का तुम दावा करते थे। (22)

फिर न होगी उन की शरारत (उन का उज़र) इस के सिवा कि वह कहेंगे: हमारे रब अल्लाह की क़सम हम मुश्रिक न थे। (23)

देखो! उन्हों ने कैसे झूट बान्धा अपनी जानों पर और वह जो बातें बनाते थे उन से खोई गईं। (24)

और उन से (बाज़) आप की तरफ़ कान लगाए रखते हैं और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह उसे न समझें और उन के कानों में बोझ है, और अगर वह देखें तमाम निशानियां (फिर भी) उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) से झगड़ते हैं, कहते हैं वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर): यह सिर्फ़ पहलों की कहानियां हैं। (25)

और वह उस से (दूसरों को) रोकते हैं और (खुद भी) उस से भागते हैं, और वह सिर्फ़ अपने आप को हलाक करते हैं और शऊर नहीं रखते। (26)

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ

और न झुटलाएं हम	वापस भेजे जाएं	ऐ काश हम	तो कहेंगे	आग	पर	जब खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)

بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا

जो	ज़ाहिर हो गया उन पर	बल्कि	27	ईमान वाले	से	और हो जाएं हम	अपना रब	आयतों को

كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ

और बेशक वह	उस से	वही रोके गए	तो फिर करने लगें	वापस भेजे जाएं	और अगर	उस से पहले	वह छुपाते थे

لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ

हम	और नहीं	दुनिया	हमारी ज़िन्दगी	मगर (सिर्फ़)	है	नहीं	और कहते हैं	28	झूटे

بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ

क्या नहीं	वह फ़रमाएगा	अपना रब	पर (सामने)	खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)	29	उठाए जाने वाले

هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا

इस लिए कि	अ़ज़ाब	पस चखो	वह फ़रमाएगा	क़सम हमारे रब की	हां	वह कहेंगे	सच	यह

كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى ع ٣ ١٠ ٩

यहां तक कि	अल्लाह से मिलना	वह लोग ज़िन्हों ने झुटलाया	घाटे में पड़े	तहक़ीक़	30	तुम कुफ़्र करते थे

اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ

इस में	जो हम ने कोताही की	पर	हाए हम पर अफ़सोस	वह कहने लगे	अचानक	क़ियामत	आ पहुँची उन पर	जब

وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾

31	जो वह उठाएंगे	बुरा	आगाह रहो	अपनी पीठ (जमा)	पर	अपने बोझ	उठाए होंगे	और वह

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ

उन के लिए	बेहतर	और आख़िरत का घर	और जी का बेहलावा	खेल	मगर (सिर्फ़)	दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं

يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ

जो वह	आप को ज़रूर रंजीदा करती है	कि वह	बेशक हम जानते हैं	32	सो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते	परहेज़गारी करते हैं

يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयतों का	ज़ालिम लोग	और लेकिन (बल्कि)	नहीं झुटलाते आप (स) को	सो वह यक़ीनन	कहते हैं

يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى

पर	पस सब्र किया उन्हों ने	आप (स) से पहले	रसूल (जमा)	और अलबत्ता झुटलाऐ गए	33	इन्कार करते हैं

مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ

और नहीं बदलने वाला	हमारी मदद	उन पर आगई	यहां तक कि	और सताए गए	जो वह झुटलाए गए

لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	रसूल (जमा)	ख़बर	से (कुछ)	आप के पास पहुँची	और अलबत्ता	अल्लाह की बातों को

और कभी तुम देखो जब वह आग (दोज़ख़) पर खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे ऐ काश! हम वापस भेजे जाएं और अपने रब की आयतों को न झुटलाएं और हो जाएं ईमान वालो में से। (27)

बल्कि वह उस से क़ब्ल जो छुपाते थे उन पर ज़ाहिर हो गया और वह अगर वापस भेजे जाएं तो फिर (वही) करने लगें जिस से वह रोके गए और बेशक वह झूटे हैं। (28)

और कहते हैं हमारी सिर्फ़ यही दुनिया की ज़िन्दगी है और हम उठाए जाने वाले नहीं (हमें फिर ज़िन्दा नहीं होना)। (29)

और कभी तुम देखो जब वह अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह फ़रमाएगा क्या यह नहीं सच, वह कहेंगे हां हमारे रब की क़सम (क्यों नहीं), वह फ़रमाएगा पस अ़ज़ाब चखो इस लिए कि तुम कुफ़्र करते थे। (30)

तहक़ीक़ वह लोग घाटे में पड़े ज़िन्हों ने अल्लाह के मिलने को झुटलाया यहां तक कि जब अचानक उन पर क़ियामत आ पहुँची कहने लगे हाए हम पर अफ़सोस! जो हम ने उस में कोताही की, और वह अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे। आगाह रहो बुरा है जो वह उठाएंगे। (31)

और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल और जी का बेहलावा है, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो परहेज़गारी करते हैं, सो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते। (32)

बेशक हम जानते हैं आप (स) को वह (बात) ज़रूर रंजीदा करती है जो वह कहते हैं, सो वह यक़ीनन आप (स) को नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। (33)

और अलबत्ता रसूल झुटलाए गए आप (स) से पहले, पस उन्हों ने सब्र किया उस पर जो वह झुटलाए गए और सताए गए यहां तक कि उन पर हमारी मदद आगई, और (कोई) बदलने वाला नहीं अल्लाह की बातों को, और अलबत्ता आप (स) के पास रसूलों की कुछ ख़बरें पहुँच चुकी हैं। (34)

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ

ढूंड लो	कि	तुम से हो सके	तो अगर	उन का मुँह फेरना	आप (स) पर	गरां	है	और अगर

نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

चाहता अल्लाह	और अगर	कोई निशानी	फिर ले आओ उन के पास	आस्मान में	कोई सीढ़ी	या	ज़मीन में	कोई सुरंग

النصف

لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ

मानते हैं	सिर्फ़ वह	35	बे ख़बर (जमा)	से	सो आप (स) न हों	हिदायत पर	तो उन्हें जमा कर देता

وقف منزل
وقف غفران

الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	वह लौटाए जाएंगे	उस की तरफ़	फिर	उन्हें उठाएगा अल्लाह	और मुर्दे	सुनते हैं	जो लोग

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ

कि	पर	क़ादिर	बेशक अल्लाह	आप (स) कह दें	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	क्यों नहीं उतारी गई	और वह कहते हैं

يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	चलने वाला	कोई	और नहीं	37	नहीं जानते	उन में अक्सर	और लेकिन	निशानी	उतारे

وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّاۤ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا

नहीं छोड़ी हम ने	तुम्हारी तरह	उम्मतें (जमाअ़तें)	मगर	अपने परों से	उड़ता है	परिन्दा	और न

فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	और वह लोग जो कि	38	जमा किए जाएंगे	अपना रब	तरफ़	फिर	चीज़	कोई	किताब में

بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ

और जिसे चाहे	उसे गुमराह कर दे	अल्लाह चाहे	जो-जिस	अन्धेरे	में	और गूंगे	बहरे	हमारी आयात

يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ

अ़ज़ाब	तुम पर आए	अगर	भला देखो	आप (स) कह दें	39	सीधा	रास्ता	पर	उसे कर दे (चला दे)

اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٠﴾

40	सच्चे	तुम हो	अगर	तुम पुकारोगे	क्या अल्लाह के सिवा	क़ियामत	या आए तुम पर	अल्लाह

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ

और तुम भूल जाते हो	वह चाहे	अगर	उस के लिए	जिसे पुकारते हो	पस खोल देता है (दूर करदेता है)	तुम पुकारते हो	उसी को	बल्कि

ع ١١/١٠

مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ

सख़्ती में	पस हम ने उन्हें पकड़ा	तुम से पहले	उम्मतें	तरफ़	और तहक़ीक़ हम ने भेजे (रसूल)	41	तुम शरीक करते हो	जो-जिस

وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَاۤ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا

वह गिड़गिड़ाए	हमारा अ़ज़ाब	आया उन पर	जब	फिर क्यों न	42	गिड़गिड़ाएं	ताकि वह	और तक्लीफ़

وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

43	वह करते थे	जो	शैतान	उन को	आरास्ता कर दिखाया	दिल उन के	सख़्त हो गए	और लेकिन

और अगर आप (स) पर गरां है उन का मुँह फेरना तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग या आस्मान में कोई सीढ़ी ढूंड निकालो फिर तुम उन के पास कोई निशानी ले आओ, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर जमा कर देता, सो आप (स) बे ख़बरों में से न हों। (35)

मानते सिर्फ़ वह हैं जो सुनते हैं, और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा (दोबारा ज़िन्दा करेगा) फिर वह उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (36)

और वह कहते हैं कि उस पर उस के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह उस पर क़ादिर है कि वह उतारे निशानी, लेकीन उन में अक्सर नहीं जानते। (37)

और ज़मीन में कोई चलने वाला (हैवान) नहीं और न कोई परिन्दा जो अपने परों से उड़ता है मगर (उन की भी) तुम्हारी तरह जमाअ़तें हैं, हम ने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी, फिर अपने रब की तरफ़ जमा किए जाएंगे। (38)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया वह बहरे और गूंगे हैं, अन्धेरों में हैं, जिस को अल्लाह चाहे गुमराह कर दे, और जिस को चाहे सीधे रास्ते पर चलादे। (39)

आप (स) कह दें भला देखो अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आय या तुम पर क़ियामत आजाए, क्या तुम अल्लाह के सिवा (किसी और को) पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो। (40)

बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, पस जिस (दुख) के लिए उसे पुकारते हो अगर वह चाहे तो वह उसे दूर कर देता है, और तुम भूल जाते हो जिस को तुम शरीक करते हो। (41)

तहक़ीक़ हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे फिर हम ने (उन की नाफ़रमानी के सबब) उन्हें पकड़ा सख़्ती और तक्लीफ़ में ताकि वह गिड़गिड़ाएं। (42)

फिर जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आया वह क्यों न गिड़गिड़ाए लेकिन उन के दिल सख़्त हो गए और जो वह करते थे शैतान ने उन को आरास्ता कर दिखाया। (43)

फिर जब वह भूल गए वह नसीहत जो उन्हें की गई तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए यहां तक कि जब वह उस से खुश हो गए जो उन्हें दी गई तो हम ने उन को अचानक पकड़ा (धर लिया) पस उस वक़्त वह मायूस हो कर रह गए। (44)

फिर ज़ालिम क़ौम की जड़ काट दी गई, और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (45)

आप (स) कह दें भला देखो, अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगादे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम को यह चीज़ें ला दे (वापस करदे), देखो हम कैसे बदल बदल कर आयतें बयान करते हैं फिर वह किनारा करते हैं। (46)

आप (स) कह दें देखो तो सही अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब अचानक या खुल्लम खुल्ला आए क्या ज़ालिम लोगों के सिवा (और कोई) हलाक होगा? (47)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर खुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले। पस जो ईमान लाया और संवर गया तो उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (48)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें अज़ाब पहुँचेगा इस लिए कि वह नाफ़रमानी करते थे। (49)

आप (स) कह दें, मैं नहीं कहता तुम से कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूँ, और न मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (सिर्फ़ उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, आप (स) कह दें क्या नाबीना और बीना बराबर हो सकते हैं? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50)

और उस से उन लोगों को डरावें जो ख़ौफ़ रखते हैं कि अपने रब के सामने जमा किए जाएंगे, उस के सिवा उन का न होगा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, ताकि वह बचते रहें। (51)

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَیْءٍؕ

हर चीज़	दरवाज़े	उन पर	तो हम ने खोल दिए	उस के साथ	जो नसीहत की गई	वह भूल गए	फिर जब

حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ

वह	पस उस वक़्त	अचानक	हम ने पकड़ा उन को	उन्हें दी गई	उस से जो	खुश हो गए	जब	यहां तक कि

مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْاؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	क़ौम	जड़	फिर काट दी गई	44	मायूस रह गए

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ

तुम्हारे कान	ले (छीन ले) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो	आप (स) कह दें	45	सारे जहानों का रब

وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖؕ اُنْظُرْ

देखो	यह	तुम को लादे	अल्लाह	सिवाए	माबूद	कौन	तुम्हारे दिल	पर	और मुहर लगा दे	और तुम्हारी आँखें

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ

अगर	तुम देखो तो सही	आप (स) कह दें	46	किनारा करते हैं	वह	फिर	आयतें	बदल बदल कर बयान करते हैं	कैसे

اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ

लोग	सिवाए	हलाक होगा	क्या	या खुल्लम खुल्ला	अचानक	अज़ाब अल्लाह का	तुम पर आए

الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ

और डर सुनाने वाले	खुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और नहीं भेजते हम	47	ज़ालिम (जमा)

فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	ग़मगीन होंगे	और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	और संवर गया	ईमान लाया	पस जो

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا

इस लिए कि	अज़ाब	उन्हें पहुँचे गा	हमारी आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	और वह लोग जो

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِیْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ

मैं जानता	और नहीं	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम से	नहीं कहता मैं	आप कह दें	49	वह करते थे नाफ़रमानी

الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّیْ مَلَكٌۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَیَّؕ

मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	मगर	मैं नहीं पैरवी करता	फ़रिश्ता	कि मैं	तुम से	और नहीं कहता मैं	ग़ैब

قُلْ هَلْ يَسْتَوِی الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٥ ٩ ١١

50	सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते	और बीना	नाबीना	बराबर है	क्या	आप कह दें

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ

नहीं	अपना रब	तरफ़ (सामने)	वह जमा किए जाएंगे	कि	ख़ौफ़ रखते हैं	वह लोग जो	उस से	और डरावें

لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِیٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾

51	बचते रहें	ताकि वह	सिफ़ारिश करने वाला	और न	कोई हिमायती	उस के सिवा	कोई	उन के लिए

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

और शाम	सुबह	अपना रब	पुकारते हैं	वह लोग जो	और दूर न करें आप

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

कुछ	उन का हिसाब	से	आप (स) पर	नहीं	उस का रुख़ (रज़ा)	वह चाहते हैं

وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ

से	तो हो जाओगे	कि तुम उन्हें दूर करोगे	कुछ	उन पर	आप (स) का हिसाब	से	और नहीं

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۤءِ

क्या यही हैं	ताकि वह कहें	बाज़ से	उन के बाज़	आज़माया हम ने	और इसी तरह	52	ज़ालिम (जमा)

مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	शुक्र गुज़ार (जमा)	खूब जानने वाला	क्या नहीं अल्लाह	हमारे दरमियान से	उन पर	अल्लाह ने फ़ज़्ल किया

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ

लिख ली	तुम पर	सलाम	तो कह दें	हमारी आयतों पर	ईमान रखते हैं	वह लोग	आप के पास आएं	और जब

رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ

नादानी से	कोई बुराई	तुम से	करे	जो	कि	रहमत	अपनी ज़ात	पर	तुम्हारा रब

ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ

और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं	54	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और नेक हो जाए	उस के बाद	तौबा कर ले	फिर

ع ٦ ٥ ١٢ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾ ع قُلْ اِنِّيْ

बेशक मैं	कह दें	55	गुनाहगार (जमा)	रास्ता - तरीक़ा	और ताकि ज़ाहिर हो जाए	आयतें

نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ

कह दें	अल्लाह के सिवा	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	कि मैं बन्दगी करूं	मुझे रोका गया है

لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

56	हिदायत पाने वाले	से	और मैं नहीं	उस सूरत में	बेशक मैं बहक जाऊँगा	तुम्हारी ख़्वाहिशात	मैं पैरवी नहीं करता

قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ مَا

जिस	नहीं मेरे पास	उस को	और तुम झुटलाते हो	अपना रब	से	रौशन दलील	पर	बेशक मैं	आप कह दें

تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ

और वह	हक़	बयान करता है	सिर्फ़ अल्लाह के लिए	हुक्म	मगर	उस की	तुम जल्दी कर रहे हो

خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ

उस की	तुम जल्दी करते हो	जो	मेरे पास	होती	अगर	कह दें	57	फ़ैसला करने वाला	बेहतर

لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	ज़ालिमों को	खूब जानने वाला	और अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	फ़ैसला	अलबत्ता हो चुका होता

और आप (स) उन लोगों को दूर न करें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं और आप (स) पर (आप (स) के ज़िम्मे) उन के हिसाब में से कुछ नहीं, और न आप (स) के हिसाब में से उन पर कुछ है। अगर उन्हें दूर करोगे तो ज़ालिमों से हो जाओगे। (52)

और इसी तरह हम ने उन में से बाज़ को बाज़ से आज़माया ताकि वह कहें क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया हम में से? क्या अल्लाह शुक्र गुज़ारों को खूब जानने वाला नहीं? (53)

और जब आप (स) के पास वह लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप (स) कह दें तुम पर सलाम है, तुम्हारे रब ने अपने आप पर रहमत लिख ली (लाज़िम कर ली) है कि तुम में जो कोई बुराई करे नादानी से फिर उस के बाद तौबा कर ले और नेक हो जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है। (54)

और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं आयतें और (यह इस लिए कि) गुनाहगारों का तरीक़ा ज़ाहिर हो जाए। (55)

आप कह दें मुझे (इस बात से) रोका गया है कि मैं उन की बन्दगी करुं जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, आप कह दें मैं तुम्हारी ख़्वाहिशात की पैरवी नहीं करता, उस सूरत में बेशक मैं बहक जाऊँगा और हिदायत पाने वालों में से न हों गा। (56)

आप (स) कह दें बेशक मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ और तुम उस को झुटलाते हो, तुम जिस (अ़ज़ाब) की जल्दी कर रहे हो मेरे पास नहीं। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह के लिए है, वह हक़ बयान करता है और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (57)

आप (स) कह दें अगर मेरे पास होती (वह चीज़) जिस की तुम जल्दी करते हो तो अलबत्ता मेरे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानने वाला है। (58)

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ

और तरी	ख़ुश्की में	जो	और जानता है	वह	सिवा	उन को जानता	नहीं	ग़ैब	कुनजियां	और उस के पास

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ

और न कोई तर	ज़मीन	अन्धेरे	में	और न कोई दाना	वह उस को जानता है	मगर	पत्ता	कोई	गिरता	और नहीं

وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰكُمْ بِالَّيْلِ

रात में	क़ब्ज़ कर लेता है तुम्हारी (रूह)	जो कि	और वह	59	रौशन	किताब	में	मगर	ख़ुश्क	और न

وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ

मुक़र्ररा	मुद्दत	ताकि पूरी हो	उस में	तुम्हें उठाता है	फिर	दिन में	जो तुम कमा चुके हो		और जानता है

ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ ع ١٣

ग़ालिब	और वही	60	तुम करते थे	जो	तुम्हें जता देगा	फिर	तुम्हारा लौटना	उस की तरफ़	फिर

فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ

तुम में से एक-किसी	आ पहुँचे	जब	यहाँ तक के	निगेहबान	तुम पर	और भेजता है	अपने बन्दे	पर

الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ़	लौटाए जाएंगें	फिर	61	नहीं करते कोताही	और वह	हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	क़ब्ज़े में लेते हैं उस को	मौत

مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۖ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ

कौन	आप कह दें	62	हिसाब लेने वाला	बहुत तेज़	और वह	हुक्म	उसी का	सुन रखो	सच्चा	उन का मौला

يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ

कि अगर	और चुपके से	गिड़गिड़ा कर	तुम पुकारते हो उस को	और दर्या	ख़ुश्की	अन्धेरे	से	बचाता है तुम्हें

اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ

तुम्हें बचाता है	अल्लाह	आप (स) कह दें	63	शुक्र अदा करने वाले	से	तो हम हों	इस	से	हमें बचा ले

مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى

पर	क़ादिर	वह	आप कह दें	64	शिर्क करते हो	तुम	फिर	हर सख़्ती	और से	उस से

اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ

तुम्हारे पाऊँ	नीचे	से	या	तुम्हारे ऊपर	से	अ़ज़ाब	तुम पर	भेजे	कि

اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ

हम फेर फेर कर बयान करते हैं	किस तरह	देखो	दूसरा	लड़ाई	तुम में से एक	और चखाए	फ़िर्क़ा - फ़िर्क़ा	या भिड़ा दे तुम्हें

الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ

आप कह दें	हक़	हालांकि वह	तुम्हारी क़ौम	उस को	और झुटलाया	65	समझ जाएं	ताकि वह	आयात

لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۙ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	तुम जान लोगे	और जल्द	एक ठिकाना	ख़बर	हर एक के लिए	66	दारोग़ा	तुम पर	मैं नहीं

और उस के पास ग़ैब की कुनजियां हैं, उन को उस के सिवा कोई नहीं जानता, वह जानता है जो ख़ुश्की और तरी में है, और नहीं गिरता कोई पत्ता मगर वह उस को जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन के अन्धेरों में, और न कोई तर न कोई ख़ुश्क, मगर सब रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। (59)

और वही तो है जो रात मे तुम्हारी (रूह) क़ब्ज़ कर लेता है और जानता है जो तुम दिन में कमा चुके हो, फिर तुम्हें उस (दिन) में उठाता है ताकि मुद्दत मुक़र्ररा पूरी हो, फिर तुम्हें उसी की तरफ़ लौटना है, फिर तुम्हें जता देगा जो तुम करते थ। (60)

और वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और तुम पर निगेहबान भेजता है यहां तक कि जब तुम में से किसी को मौत आ पहुँचे तो हमारे फ़रिश्ते उस की (रूह) क़ब्ज़े में ले लेते हैं और वह कोताही नहीं करते। (61)

फिर लौटाए जाएंगें अपने सच्चे मौला की तरफ़, सुन रखो! हुक्म उसी का है और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है। (62)

आप (स) कह दें तुम्हें ख़ुश्की और दर्या के अन्धेरों से कौन बचाता है? (उस वक़्त) तुम उस को गिड़गिड़ा कर और चुपके से पुकारते हो (और कहते हो) कि अगर हमें इस से बचाले तो हम शुक्र अदा करने वालों में से होंगे। (63)

आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उस से बचाता है और हर सख़्ती से, फिर तुम शिर्क करते हो। (64)

आप (स) कह दें वह क़ादिर है कि तुम पर भेजे अ़ज़ाब तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाऊँ के नीचे से या तुम्हें फ़िर्क़ा-फ़िर्क़ा कर के भिड़ा दे, और तुम मे से एक को चखा दे दूसरे की लड़ाई (का मज़ा), देखो हम किस तरह आयात फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह समझ जाएं। (65)

और तुम्हारी क़ौम ने उस को झुटलाया हालांकि वह हक़ है, आप (स) कह दें मैं तुम पर दारोग़ा नहीं। (66)

हर ख़बर के लिए एक ठिकाना (मक़र्ररा वक़्त) है और तुम जल्द जान लोगे। (67)

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى

यहां तक कि	उन से	तो किनारा कर ले	हमारी आयतें	में	झगड़ते हैं	वह लोग जो कि	तू देखे	और जब

يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۭ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ

तो न बैठ	शैतान	भुलादे तुझे	और अगर	उस के अ़लावा	कोई बात	में	वह मशगूल हों

بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ

परहेज़ करते हैं	वह लोग जो	पर	और नहीं	68	ज़ालिम (जमा)	क़ौम (लोग)	साथ (पास)	याद आना	बाद

مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ

और छोड़ दे	69	डरें	ताकि वह	नसीहत करना	लेकिन	चीज़	कोई	उन का हिसाब	से

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	और तमाशा	खेल	अपना दीन	उन्हों ने बना लिया	वह लोग जो

وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ڰ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

सिवाए अल्लाह	से	उस के लिए	नहीं	उस ने किया	बसबब जो	कोई	पकड़ा (न) जाए	ताकि	इस से	और नसीहत करो

وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ

यही लोग	उस से	न लिए जाएं	मुआवज़े	तमाम	बदले में दे	और अगर	कोई सिफ़ारिश करने वाला	और न	कोई हिमायती

الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ

और अ़ज़ाब	गर्म	से	पीना (पानी)	उन के लिए	जो उन्हों ने कमाया (अपना किया)	पकड़े गए	वह लोग जो

ع ٨ ١٠ ١٤
اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

जो	सिवाए अल्लाह	से	क्या हम पुकारें	कह दें	70	वह कुफ़्र करते थे	इस लिए कि	दर्दनाक

لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓي اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ

अल्लाह	जब हिदायत दी हमें	बाद	अपनी एड़ियां (उलटे पाऊँ)	पर	और हम फिर जाएं	और न नुक़्सान करे हमें	न हमें नफ़ा दे

كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۠ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ

साथी	उस के	हैरान	ज़मीन	में	शैतान	भुला दिया उस को	उस की तरह जो

يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۭ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۭ

हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	बेशक	कह दें	हमारे पास आ	हिदायत	तरफ़	बुलाते हों उस को

وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	क़ाइम करो	और यह कि	71	तमाम जहान	परवरदिगार के लिए	कि फ़रमांबरदार रहें	और हुक्म दिया गया हमें

وَاتَّقُوْهُ ۭ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ

पैदा किया	वह जो-जिस	और वही	72	तुम इकटठे किए जाओगे	उस की तरफ़	वह जिस की	और वही	और उस से डरो

الثلثة
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ

तो वह हो जाएगा	हो जा	कहेगा वह	और जिस दिन	ठीक तौर पर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं तो उन से किनारा कर ले यहां तक कि वह मशगूल हो जाएं उस के अ़लावा किसी और बात में, और अगर तुझे शैतान भुलादे तो याद आने के बाद न बैठ ज़ालिम लोगों के पास। **(68)**

और जो लोग परहेज़ करते हैं (परहेज़गार हैं) उन पर उन (झगड़ने वालों) के हिसाब में से कोई चीज़ नहीं, लेकिन नसीहत करना ताकि वह डरें (बाज़ आजाएं)। **(69)**

और उन लोगों को छोड़ दें जिन्हों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया है, और उस (कुरआन) से नसीहत करो ताकि कोई अपने किए (अपने अ़मल) से पकड़ा न जाए, उस के लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, और अगर बदले में तमाम मुआवज़े दें तो उस से न लिए जाएं (कुबूल न हों), यही वह लोग हैं जो अपने किए पर पकड़े गए, उन्हें गर्म पानी पीना है और दर्दनाक अ़ज़ाब है इस लिए कि वह कुफ़्र करते थे। **(70)**

कह दें क्या हम अल्लाह के सिवा उस को पुकारें जो हमें न नफ़ा दे सके न हमारा नुक़्सान कर सके और (क्या) हम उलटे पाऊँ फिर जाएं उस के बाद जब कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने भुला दिया ज़मीन (जंगल) में, वह हैरान हो, उस के साथी उस को हिदायत की तरफ़ बुलाते हों कि हमारे पास आ। आप (स) कह दें बेशक अल्लाह की हिदायत ही हिदायत है और हमें हुक्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के फ़रमांबरदार रहें। **(71)**

और यह कि नमाज़ क़ाइम करो और उस से डरो, और वही है जिस की तरफ़ तुम इकटठे किए जाओगे। **(72)**

और वही है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया। और जिस दिन कहेगा "हो जा" तो वह "हो जाएगा",

قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ

ग़ैब	जानने वाला	सूर	फूँका जाएगा	जिस दिन	मुल्क	और उस का	सच्ची	उस की बात

وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ

आज़र	अपने बाप को	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	73	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वही	और ज़ाहिर

اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾

74	खुली	गुमराही में	और तेरी क़ौम	तुझे देखता हूँ	बेशक मैं	माबूद	बुत (जमा)	क्या तू बनाता है

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ

और ताकि हो जाए वह	और ज़मीन	आस्मानों (जमा)	बादशाही	इब्राहीम (अ)	हम दिखाने लगे	और इसी तरह

مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا

यह	उस ने कहा	एक सितारा	उस ने देखा	रात	उस पर	अन्धेरा कर लिया	फिर जब	75	यक़ीन करने वाले	से

رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا

चमकता हुआ	चाँद	फिर जब देखा	76	ग़ाइब होने वाले	मैं दोस्त रखता	नहीं	उस ने कहा	ग़ाइब हो गया	फिर जब	मेरा रब

قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ

तो मैं हो जाऊँ	मेरा रब	न हिदायत दे मुझे	अगर	कहा	ग़ाइब होगया	फिर जब	मेरा रब	यह	बोले

مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ

मेरा रब	यह	बोले	जगमगाता हुआ	सूरज	फिर जब उस ने देखा	77	भटकने वाले	क़ौम-लोग	से

هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

78	तुम शिर्क करते हो	उस से जो	बेज़ार	बेशक मैं	ऐ मेरी क़ौम	कहा	वह ग़ाइब हो गया	फिर जब	सब से बड़ा	यह

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا

और नहीं मैं	यक रुख़ हो कर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बनाए	उस की तरफ़ जिस	अपना मुँह	मैं ने मुँह मोड़ लिया	बेशक मैं

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ

अल्लाह (के बारे) में	क्या तुम मुझ से झगड़ते हो	उस ने कहा	उस की क़ौम	और उस से झगड़ा किया	79	शिर्क करने वाले	से

وَقَدْ هَدٰىنِ ؕ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ؕ

कुछ	मेरा रब	चाहे	यह कि	मगर	उस का	जो तुम शरीक करते हो	और नहीं डरता मैं	और उस ने मुझे हिदायत दे दी है

وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ اَخَافُ

मैं डरूँ	और क्योंकर	80	सो क्या तुम नहीं सोचते	इल्म	हर चीज़	मेरा रब	अहाता कर लिया

مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ

तुम पर	उस की	नहीं उतारी	जो	अल्लाह का	शरीक करते हो	कि तुम	और तुम नहीं डरते	जो तुम शरीक करते हो (तुम्हारे शरीक)

سُلْطٰنًا ؕ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾

81	जानते हो	तुम	अगर	अम्न का	ज़ियादा हक़दार	दोनों फ़रीक़	सो कौन	कोई दलील

وقف لازم

उस की बात सच्ची है, और मुल्क उसी का है, जिस दिन सूर फूँका जाएगा, ग़ैब और ज़ाहिर का जानने वाला, और वही है हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (73)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा अपने बाप आज़र को: क्या तू बुतों को माबूद बनाता है? बेशक मैं तुझे और तेरी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ। (74)

और इस तरह हम इब्राहीम (अ) को आस्मानों और ज़मीन की बादशाही (अ़जाइबात) दिखाने लगे ताकि वह यक़ीन करने वालों में से हो जाए। (75)

फिर जब उस पर रात अन्धेरा कर लिया तो एक सितारा देखा, कहा यह मेरा रब है। फिर जब ग़ाइब हो गया तो (इब्राहीम अ) कहने लगे मैं दोस्त नहीं रखता ग़ाइब होने वालों को। (76)

फिर जब चमकता हुआ चाँद देखा तो बोले यह मेरा रब है, फिर जब वह ग़ाइब हो गया तो कहा अगर मुझे हिदायत न दे मेरा रब तो मैं भटकने वाले लोगों में से हो जाऊँ। (77)

फिर जब उस ने जगमगाता हुआ सूरज देखा तो बोले यह मेरा रब है, यह सब से बड़ा है। फिर जब वह ग़ाइब हो गया तो कहा ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो। (78)

बेशक मैं ने अपना मुँह यक रुख़ हो कर उस की तरफ़ मोड़ लिया जिस ने ज़मीन और आस्मान बनाए और मैं शिर्क करने वालों से नहीं। (79)

और उस की क़ौम ने उस से झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम मुझ से अल्लाह (के बारे) में झगड़ते हो? उस ने मुझे हिदायत दे दी है और मैं उन से नहीं डरता जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो उस का, मगर यह कि मेरा रब कुछ (तक्लीफ़) पहुँचाना चाहे, मेरे रब के इल्म ने हर चीज़ का अहाता कर लिया है, सो क्या तुम सोचते नहीं? (80)

और मैं तुम्हारे शरीक से क्योंकर डरूँ? और तुम (इस से) नहीं डरते कि अल्लाह का शरीक करते हो जिस की उस ने नहीं उतारी तुम पर कोई दलील, सो दोनों फ़रीक़ में से अम्न (दिलजमई) का कौन ज़ियादा हक़दार है? (बताओ) अगर तुम जानते हो। (81)

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ

अम्न (दिलजमई)	उन के लिए	यही लोग	ज़ुल्म से	अपना ईमान	और न मिलाया	ईमान लाए	जो लोग

٩ ع ١٣ ١٥ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ

उस की क़ौम	पर	इब्राहीम (अ)	हम ने यह दी	हमारी दलील	और यह	82	हिदायत याफ़्ता	और वही

نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا

और बख़्शा हम ने	83	जानने वाला	हिक्मत वाला	तुम्हारा रब	बेशक	हम चाहें	जो-जिस	दरजे	हम बुलन्द करते हैं

لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ

उस से क़ब्ल	हम ने हिदायत दी	और नूह (अ)	हिदायत दी हम ने	सब को	और याक़ूब (अ)	इस्हाक़ (अ)	उस को

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۭ

और हारून (अ)	और मूसा (अ)	और यूसुफ़ (अ)	और अय्यूब (अ)	और सुलेमान (अ)	दाऊद (अ)	उन की औलाद	और से

وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ۭ

और इलयास (अ)	और ईसा (अ)	और यहया (अ)	और ज़करिया (अ)	84	नेक काम करने वाले	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ۭ

और लूत (अ)	और यूनुस (अ)	और अलयसअ़ (अ)	और इस्माईल (अ)	85	नेक बन्दे	से	सब

وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ

और उन की औलाद	उन के बाप दादा	और से (कुछ)	86	तमाम जहान वाले	पर	हम ने फ़ज़ीलत दी	और सब

وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾

87	सीधा	रास्ता	तरफ़	हम ने हिदायत दी उन्हें	और हम ने चुना उन्हें	और उन के भाई

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ

अपने बन्दे	से	चाहे	जिसे	इस से	हिदायत देता है	अल्लाह की रहनुमाई	यह

وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	यह	88	वह करते थे	जो कुछ	उन से	तो ज़ाया हो जाते	वह शिर्क करते	और अगर

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ

यह लोग	इस का	इन्कार करें	पस अगर	और नबूव्वत	और शरीअ़त	किताब	हम ने दी उन्हें

فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	89	इन्कार करने वाले	इस के	वह नहीं	ऐसे लोग	इन के लिए	तो हम मुक़र्रर कर देते हैं

الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ۭ قُلْ لَّآ اَسْـَٔـلُكُمْ

नहीं मांगता मैं तुम से	आप (स) कह दें	चलो	सो उन की राह पर	अल्लाह ने हिदायत दी	वह जो

١٠ ع ٨ ١٦ عَلَيْهِ اَجْرًا ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾

90	तमाम जहान वाले	नसीहत	मगर	यह	नहीं	कोई उज्रत	इस पर

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अपने ईमान को ज़ुल्म से न मिलाया, उन्हीं लोगों के लिए दिलजमई है और वही हिदायत याफ़्ता हैं। (82)

और यह हमारी दलील है जो हम ने इब्राहीम (अ) को उन की क़ौम पर दी, हम जिस के दरजे चाहें बुलन्द करते हैं। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला। (83)

और हम ने उन (इब्राहीम अ) को बख़्शा इस्हाक़ (अ) और याक़ूब (अ), हम ने सब को हिदायत दी और नूह (अ) को हम ने हिदायत दी उस से क़ब्ल, और उन की औलाद में से दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) और अय्यूब (अ) और यूसुफ़ (अ) और मूसा (अ) और हारून (अ) को, और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला देते हैं। (84)

और ज़करिया (अ) और यहया (अ) और ईसा (अ) और इलयास (अ), सब नेक बन्दों में से हैं। (85)

और इस्माईल (अ) और अलयसअ़ (अ) और युनुस (अ) और लूत (अ), और सब को हम ने तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (86)

और कुछ उन के बाप दादा और उन की औलाद और उन के भाइयों को, और हम ने उन्हें चुना और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी। (87)

यह अल्लाह की रहनुमाई है। वह इस से हिदायत देता है अपने बन्दों में से जिसे चाहे, और अगर वह शिर्क करते तो जो कुछ वह करते थे ज़ाया हो जाता। (88)

यह वह लोग हैं जिन्हें हम ने किताब दी और शरीअ़त और नबूव्वत दी, पस अगर यह लोग इस का इन्कार करें तो हम ने इन (बातों) के लिए मुक़र्रर कर दिए हैं ऐसे लोग जो इस के इन्कार करने वाले नहीं। (89)

यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, सो उन की राह पर चलो, आप कह दें मैं उस पर तुम से कोई उज्रत नहीं मांगता, यह तो नहीं मगर नसीहत तमाम जहान वालों के लिए। (90)

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ

कोई इन्सान	पर	अल्लाह ने उतारी	नहीं	जब उन्हों ने कहा	उस की क़द्र	हक़	उन्हों ने अल्लाह की क़द्र जानी	और नहीं

مِّنْ شَىْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِىْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا

रौशनी	मूसा (अ)	लाए उस को	वह जो	किताब	उतारी	किस	आप (स) कह दें	कोई चीज़

وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ

अक्सर	और तुम छुपाते हो	तुम ज़ाहिर करते हो उस को	वरक़ वरक़	तुम ने कर दिया उस को	लोगों के लिए	और हिदायत

وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ

उन्हें छोड़ दें	फिर	अल्लाह	आप कह दें	तुम्हारे बाप दादा	और न	तुम	तुम न जानते थे	जो	और सिखाया तुम्हें

فِىْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِىْ

जो	तस्दीक़ करने वाली	बरकत वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह	91	वह खेलते रहें	अपने बेहूदा शुग़ल	में

بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

ईमान रखते हैं	और जो लोग	उस के इर्द गिर्द	और जो	अहले मक्का	और ताकि तुम डराओ	अपने से पहली (किताबें)

بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ

और कौन	92	हिफ़ाज़त करते हैं	अपनी नमाज़	पर (की)	और वह	इस पर	ईमान लाते हैं	आख़िरत पर

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِىَ اِلَىَّ وَلَمْ يُوْحَ

और नहीं वहि की गई	मेरी तरफ़	वहि की गई	कहे	या	झूट	अल्लाह पर	घड़े (बान्धे)	से-जो	बड़ा ज़ालिम

اِلَيْهِ شَىْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ

जब	तू देखे	और अगर	अल्लाह	जो नाज़िल किया	मिस्ल	मैं अभी उतारता हूँ	कहे	और जो	कुछ	उस की तरफ़

الظّٰلِمُوْنَ فِىْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا

निकालो	अपने हाथ	फैलाए हों	और फ़रिश्ते	मौत	सख़्तियों में	ज़ालिम (जमा)

اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर (के बारे में)	तुम कहते थे	बसबब	ज़िल्लत	अ़ज़ाब	आज तुम्हें बदला दिया जाएगा	अपनी जानें

غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا

तुम आगए हमारे पास	और अलबत्ता	93	तकब्बुर करते	उस की आयतें	से	और तुम थे	झूट

فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ

अपनी पीठ	पीछे	हम ने दिया था तुम्हें	जो	और तुम छोड़ आए	बार	पहली	हम ने तुम्हें पैदा किया	जैसे	एक एक (अकेले)

وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ

साझी हैं	तुम में	कि वह	तुम गुमान करते थे	वह जो	सिफ़ारिश करने वाले तुम्हारे	तुम्हारे साथ	हम देखते	और नहीं

لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ ع ١١ ١٧

94	तुम दावा करते थे	जो	तुम से	और जाते रहे	तुम्हारे दरमियान	अलबत्ता कट गया

और उन्हों ने अल्लाह की क़द्र न की (जैसे) उस की क़द्र का हक़ था जब उन्हों ने कहा कि अल्लाह ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नहीं उतारी, आप (स) कहें (वह) किताब किस ने उतारी जो मूसा (अ) ले कर आए लोगों के लिए रौशनी और हिदायत। तुम ने उसे वरक़ वरक़ कर दिया है, तुम उसे ज़ाहिर करते हो और अक्सर छुपा लेते हो, और उस ने तुम्हें सिखाया जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा, आप (स) कह दें अल्लाह (ने नाज़िल की), फिर उन्हें छोड़ दें अपने बेहूदा शुग़ल में खेलते रहें। (91)

और यह (क़ुरआन) किताब है बरकत वाली, हम ने नाज़िल की, अपने से पहली (किताबों) की तस्दीक़ करने वाली ताकि तुम डराओ अहले मक्का को और जो उस के इर्द गिर्द हैं (तमाम आस पास वाले), और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह उस पर ईमान लाते हैं और वह अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं। (92)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट (बुहतान) बान्धे, या कहे मेरी तरफ़ वहि की गई है और उसे कुछ वहि नहीं की गई, (उसी तरह वह) जो कहे मैं अभी उतारता हूँ उस के मिस्ल जो अल्लाह ने नाज़िल किया। और अगर तू देखे जब ज़ालिम मौत की सख़्तियों में हों और फ़रिश्ते अपने हाथ फैलाए हों कि अपनी जानें निकालो, आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जाएगा उस सबब से कि तुम अल्लाह के बारे में झूटी बातें कहते थे और उस की आयतों से तकब्बुर करते थे। (93)

और अलबत्ता तुम हमारे पास अकेले अकेले आगए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और जो हम ने तुम्हें (माल ओ असबाब) दिया था छोड़ आए अपनी पीठ पछि, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे वह सिफ़ारिश करने वाले नहीं देखते (जिन की निसबत) तुम गुमान करते थे कि वह तुम में (तुम्हारे) साझी हैं, अलबत्ता तुम्हारे दरमियान (रिश्ता) कट गया और तुम जो दावे करते थे सब जाते रहे। (94)

إِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ

और निकालने वाला	मुर्दा	से	ज़िन्दा	निकालता है	और गुठली	दाना	फाड़ने वाला	बेशक अल्लाह

الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ

चीर कर (चाक करके) निकालने वाला सुबह	95	तुम बहके जा रहे हो	पस कहां	यह है तुम्हारा अल्लाह	ज़िन्दा	से	मुर्दा

وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	अन्दाज़ा	यह	हिसाब	और चाँद	और सूरज	सुकून	रात	और उस ने बनाया

الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ

में	उन से	ताकि तुम रास्ता मालूम करो	सितारे	तुम्हारे लिए	बनाए	वह जिस	और वही	96	इल्म वाला

ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

97	इल्म रखते हैं	लोगों के लिए	बेशक हम ने खोल कर बयान कर दी हैं आयतें	और दर्या	ख़ुश्की	अन्धेरे

وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ

और अमानत की जगह	फिर एक ठिकाना	एक	वजूद-शख़्स	से	पैदा किया तुम्हें	वह जो-जिस	और वही

قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ

से	उतारा	वह जो-जिस	और वही	98	जो समझते हैं	लोगों के लिए	बेशक हम ने खोल कर बयान करदीं आयतें

السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا

सबज़ी	उस से	फिर हम ने निकाली	हर चीज़	उगने वाली	उस से	फिर हम ने निकाली	पानी	आस्मान

نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ ۙ

झुके हुए	ख़ोशे	गाभा	से	खजूर	और	एक पर एक चढ़ा हुआ	दाने	उस से	हम निकालते हैं

وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ

और नहीं भी मिलते	मिलते जुलते	और अनार	और ज़ैतून	अंगूर के	और बाग़ात

اُنْظُرُوْۤا اِلٰى ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ

उस	में	बेशक	और उस का पकना	फलता है	जब	उस का फल	तरफ़	देखो

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ

हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया	जिन	शरीक	अल्लाह का	और उन्हों ने ठहराया	99	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	निशानियां

١٢ ع ٦ ١٨ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۭ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100	वह बयान करते हैं	उस से जो	और बुलन्द तर	वह पाक है	इल्म के बग़ैर (जहालत से)	और बेटियां	बेटे	उस के लिए	और तराश्ते हैं

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ

उस की	जबकि नहीं	बेटा	उस का	हो सकता है	क्योंकर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	नई तरह बनाने वाला

صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

101	जानने वाला	हर चीज़	और वह	हर चीज़	और उस ने पैदा की	बीवी

बेशक अल्लाह फाड़ने वाला दाने और गुठली का, वह मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालने वाला, यह है तुम्हारा अल्लाह, पस तुम कहां बहके जा रहे हो? (95)

(रात की तारीकी) चाक कर के सुबह निकालने वाला, और उस ने रात को (ज़रीआ़) सुकून बनाया और सूरज और चाँद को (ज़रीआ़) हिसाब, यह अन्दाज़ा है ग़ालिब, इल्म वाले का। (96)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उन से ख़ुश्की और दर्या के अन्धेरों में रास्ते मालूम करो, बेशक हम ने आयतें खोल खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (97)

और वही है जिस ने तुम्हें एक वजूद से पैदा किया, फिर तुम्हारा एक ठिकाना है और अमानत रहने की जगह। बेशक हम ने आयात खोल कर बयान कर दी हैं समझ वालों के लिए। (98)

और वही है जिस ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से निकाली उगने वाली हर चीज़, फिर हम ने उस से हरे हरे केत और दरख़्त निकाले जिस से एक पर एक चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और खजूरों के गाभे से झुके हुए ख़ोशे, और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बाग़ात एक दूसरे से मिलते जुलते और नहीं भी मिलते, उस के फल की तरफ़ देखो जब वह फलता है और उस का पकना (देखो), बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (99)

और उन्हों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक ठहराया हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया है और वह उस के लिए बेटे और बेटियां तराश्ते हैं जहालत से, वह पाक है और उस से बुलन्द तर है जो वह बयान करते हैं। (100)

नई तरह (नमूने के बग़ैर) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला, उस के बेटा क्योंकर हो सकता है? जबकि उस की बीवी नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की है, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (101)

यही अल्लाह तुम्हारा रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला, सो तुम उस की इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ और निगहबान है। (102)

(मख़्लूक़ की) आँखें उस को नहीं पा सकतीं और वह आँखों को पा सकता है और वह भेद जानने वाला ख़बरदार है। (103)

तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियां आ चुकीं। तो जिस ने देख लिया सो अपने वास्ते, और जो अन्धा रहा तो (उस का वबाल) उस की जान पर, और मैं तुम पर निगहबान नहीं। (104)

और उसी तरह हम आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह कहें: तू ने (किसी से) पढ़ा है, और ताकि हम जानने वालों के लिए वाज़ेह कर दें। (105)

उस पर चलो जो वहि आए तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और मुश्रिकों से मुँह फेर लो। (106)

अगर अल्लाह चाहता तो वह शिर्क न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगहबान नहीं बनाया, और तुम उन पर दारोग़ा नहीं। (107)

और अल्लाह के सिवा वह जिन्हें पुकारते हैं तुम उन्हें गाली न दो, पस वह अल्लाह को बे समझे बूझे गुस्ताख़ी से बुरा कहेंगें, उसी तरह हम ने हर फ़िरक़े को उस का अमल भला दिखाया, फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, वह फिर उन को जता देगा जो वह करते थे। (108)

और वह ताकीद से अल्लाह की क़सम खाते हैं कि अगर उन के पास कोई निशानी आए तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे, आप (स) कह दें कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं, और तुम्हें क्या ख़बर कि जब आ भी जाएं तो यह ईमान न लाएंगे। (109)

और हम उन के दिल और उन की आँखें उलट देंगे, जैसे वह उन (निशानियों) पर पहली बार ईमान नहीं लाए, और हम उन्हें छोड़ देंगे उन की सरकशी में कि वह बहकते रहें। (110)

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ

सो तुम उस की इबादत करो	हर चीज़	पैदा करने वाला	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	तुम्हारा रब	यही अल्लाह

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ

पा सकता है	और वह	आँखें	नहीं पा सकतीं उस को	102	कारसाज़-निगहबान	हर चीज़	पर	और वह

الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ

से	निशानियां	आ चुकीं तुम्हारे पास	103	ख़बरदार	भेद जानने वाला	और वह	आँखें

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ

तुम पर	मैं	और नहीं	तो उस की जान पर	अन्धा रहा	और जो	सो अपने वास्ते	देख लिया	सो जो-जिस	तुम्हारा रब

بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ

तू ने पढ़ा है	और ताकि वह कहें	आयतें	हम फेर फेर कर बयान करते हैं	और उसी तरह	104	निगहबान

وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ

तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	जो वहि आए	तुम चलो	105	जानने वालों के लिए	और ताकि हम वाज़ेह कर दें

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

चाहता अल्लाह	और अगर	106	मुश्रिकीन	से	और मुँह फेर लो	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद

مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ

उन पर	तुम	और नहीं	निगहबान	उन पर	बनाया तुम्हें	और नहीं	न शिर्क करते वह

بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا

पस वह बुरा कहेंगें	अल्लाह के सिवा	से	वह परस्तिश करते हैं	वह जिन्हें	और तुम न गाली दो	107	दारोग़ा

اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠ ثُمَّ

फिर	उन का अमल	फ़िर्क़ा	हम ने भला दिखाया हर एक	उसी तरह	बे समझे बूझे	गुस्ताख़ी से	अल्लाह

اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا

और वह क़सम खाते थे	108	करते थे	जो वह	वह फिर उन को जता देगा	उन को लौटना	अपना रब	तरफ़

بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ

आप कह दें	उस पर	तो ज़रूर ईमान लाएंगे	कोई निशानी	उन के पास आए	अलबत्ता अगर	ताकीद से	अल्लाह की

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ

जब आएं	कि वह	ख़बर तुम्हें	और क्या	अल्लाह के पास	निशानियां	कि

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا

वह ईमान नहीं लाए	जैसे	और उन की आँखें	उन के दिल	और हम उलट देंगे	109	ईमान न लाएंगे

بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع ١٣ ١٩

110	वह बहकते रहें	उन की सरकशी	में	और हम छोड़ देंगे उन्हें	पहली बार	उस पर

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى

और अगर	हम	उतारते	उन की तरफ़	फ़रिश्ते	और उन से बातें करते	मुर्दे

وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ

और हम जमा कर देते	उन पर	हर शै	सामने	न	वह ईमान लाते	मगर	यह कि

يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

चाहे अल्लाह	और लेकिन	उन में अक्सर	जाहिल (नादान) हैं	111	और इसी तरह	हम ने बनाया	हर नबी के लिए

عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ

दुश्मन	शैतान (जमा)	इन्सान	और जिन	डालते हैं	उन के बाज़	तरफ़	बाज़

زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۭ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ

मुलम्मा की हुई	बातें	बहकाने के लिए	और अगर	चाहता	तुम्हारा रब	वह न करते	पस छोड़ दें उन्हें

وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

और जो	वह झूट घड़ते हैं	112	और ताकि माइल हो जाएं	उस की तरफ़	दिल (जमा)	वह लोग जो	ईमान नहीं रखते

بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ

आख़िरत पर	और ताकि वह उस को पसन्द करलें	और ताकि वह करते रहें	जो	वह	बुरे काम करते हैं	113	तो क्या अल्लाह के सिवा

اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۭ

मैं ढूंढूँ	कोई मुन्सिफ़	और वह	जो-जिस	नाज़िल की	तुम्हारी तरफ़	किताब	मुफ़स्सिल (वाज़ेह)

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ

और वह लोग जिन्हें	हम ने उन्हें दी	किताब	वह जानते हैं	कि यह	उतारी गई है	से	तुम्हारा रब

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

हक़ के साथ	सो तुम न होना	से	शक करने वाले	114	और पूरी है	बात	तेरा रब

صِدْقًا وَّعَدْلًا ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾

सच	और इन्साफ़	नहीं बदलने वाला	उस के कलिमात	और वह	सुनने वाला	जानने वाला	115

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ

और अगर	तू कहा माने	अक्सर	जो	ज़मीन में	वह तुझे भटका देंगे	से	अल्लाह का रास्ता

اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ

नहीं	पैरवी करते	मगर (सिर्फ़)	गुमान	और नहीं	वह	मगर	अटकल दौड़ाते हैं	116	बेशक	तेरा रब

هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

वह	खूब जानता है	जो	बहकता है	से	उस का रास्ता	और वह	खूब जानता है	हिदायत याफ़्ता लोगों को	117

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

सो तुम खाओ	उस से जो	लिया गया	अल्लाह का नाम	उस पर	अगर	तुम हो	उस की आयतों पर	ईमान वाले	118

और अगर हम उन की तरफ़ फ़रिश्ते उतारते, और उन से मुर्दे बातें करते, और हम जमा कर देते उन पर (उन के सामने) हर चीज़ तो भी वह ईमान न लाते मगर यह कि अल्लाह चाहे, और लेकिन उन में अक्सर नादान हैं। (111)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिनों के शयातीन को दुश्मन बना दिया, एक दूसरे की तरफ़ मुलम्मा की हुई बातें बहकाने के लिए इलक़ा करते रहते हैं, और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा न करते, पस उन्हें छोड़ दें (उस के साथ) जो वह झूट घड़ते हैं। (112)

और ताकि उन लोगों के दिल उस की तरफ़ माइल हो जाएं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और ताकि वह उस को पसन्द करें, और ताकि वह करते रहें जो वह बुरे काम करते हैं। (113)

क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और मुन्सिफ़ ढून्ढूँ? और वही है जिस ने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सिल (वाज़ेह) किताब नाज़िल की है, और जिन्हें हम ने किताब दी है (अहले किताब) वह जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ उतारी गई है, सो तुम शक करने वालों में से न होना। (114)

और कामिल है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ के ऐतिबार से, उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (115)

और ज़मीन में अक्सर (ऐसे हैं) अगर तू उन का कहा माने तो वह तुझे अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान की, और वह सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (116)

बेशक तेरा रब उसे खूब जानता है जो बहकता है उस के रास्ते से, और वह हिदायत याफ़्ता लोगों को खूब जानता है। (117)

सो तुम उस में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो। (118)

और तुम्हें क्या हुआ कि तुम उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है हालांकि वह तुम्हारे लिए वाज़ेह कर चुका है जो उस ने तुम पर हराम किया है मगर यह कि तुम लाचार हो जाओ, और बहुत से (लोग) अपनी ख़ाहिशात से इल्म (तहक़ीक़) के बग़ैर गुमराह करते हैं, बेशक तुम्हारा रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है। (119)

और छोड़ दो खुला गुनाह और छुपा हुआ, बेशक जो लोग गुनाह करते हैं अ़नक़रीब उस की सज़ा पालेंगे जो वह बुरे काम करते थे। (120)

और उस से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया और बेशक यह गुनाह है, और बेशक शैतान अपने दोस्तों के (दिलों मे वस्वसा) डालते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें, और अगर तुम ने उन का कहा माना तो बेशक तुम मुश्रिक होगे। (121)

क्या (वह शख़्स) जो मुर्दा था फिर हम ने उस को ज़िन्दा क्या और हम ने उस के लिए नूर बनाया, वह चलता है उस (नूर की रौशनी) से लोगों में, (क्या) उस जैसा हो जाएगा जो अन्धेरों में है? उस से निकलने वाला नहीं, इसी तरह काफ़िरों के लिए उन के अ़मल ज़ीनत दिए गए। (122)

और इसी तरह हम ने हर बस्ती में बनाए उस के बड़े मुज्रिम ताकि वह उस में मकर करें, और वह मकर नहीं करते मगर अपनी जानों पर, (अपनी ही जानों पर चालें चलते हैं), ओर वह शऊर नहीं रखते। (123)

और जब उन के पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम हरगिज़ न मानेंगे जब तक हमें उस जैसा न दिया जाए जो अल्लाह के रसूलों को दिया गया, अल्लाह खूब जानता है कि अपनी रिसालत कहां भेजे, अ़नक़रीब उन लोगों को पहुँचेगी जिन्हों ने जुर्म किया, अल्लाह के हाँ ज़िल्लत और सख़्त अ़ज़ाब, उस का बदला कि वह मक्र करते थे। (124)

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ

हालांकि वह वाज़ेह कर चुका है	उस पर	नाम अल्लाह का	लिया गया	उस से जो	कि तुम न खाओ	और क्या हुआ तुम्हें

لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا

बहुत से	और बेशक	उसकी तरफ़ (उस पर)	तुम लाचार हो जाओ	जिस	मगर	तुम पर	जो उस ने हराम किया	तुम्हारे लिए

لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

खूब जानता है	वह	तेरा रब	बेशक	इल्म के बग़ैर	अपनी ख़ाहिशात से	गुमराह करते हैं

بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	बेशक	और उस का छुपा हुआ	खुला गुनाह	और छोड़ दो	119	हद से बढ़ने वालों को

يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَاْكُلُوْا

और न खाओ	120	वह बुरे काम करते	थे	उस की जो	अ़नक़रीब सज़ा पाएंगे	गुनाह	कमाते (करते) हैं

مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	और बेशक	अलबत्ता गुनाह	और बेशक यह	उस पर	अल्लाह का नाम	नहीं लिया गया	उस से जो

لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ

तो बेशक तुम	तुम ने उन का कहा माना	और अगर	ताकि वह झगड़ा करें तुम से	अपने दोस्त	तरफ़ (में)	डालते हैं

لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾ اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا ع ١٤ ١١

नूर	उस के लिए	और हम ने बनाया	फिर हम ने उस को ज़िन्दा किया	मुर्दा था	क्या जो	121	मुश्रिक होगे

يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ

निकलने वाला	नहीं	अन्धेरे	में	उस जैसा जो	लोग	में	उस से	वह चलता है

مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	122	जो वह करते थे (अ़मल)	जो	काफ़िरों के लिए	ज़ीनत दिए गए	इसी तरह	उस से

جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَمَا

और नहीं	उस में	ताकि वह मकर करें	उस के मुज्रिम	बड़े	बस्ती	हर	में	हम ने बनाए

يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا جَآءَتْهُمْ

उन के पास आती है	और जब	123	वह शऊर रखते	और नहीं	अपनी जानों पर	मगर	वह मकर करते

اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔ وقف لازم وقف منزل

अल्लाह	रसूल (जमा)	दिया गया	उस जैसा जो	हम को दिया जाए	जब तक	हम हरगिज़ न मानेंगे	कहते हैं	कोई आयत

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا

उन्हों ने जुर्म किया	वह लोग जो	अ़नक़रीब पहुँचेगी	अपनी रिसालत	रखे (भेजे)	कहाँ	खूब जानता है	अल्लाह

صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

124	वह मक्र करते थे	उस का बदला	सख़्त	और अ़ज़ाब	अल्लाह के हाँ	ज़िल्लत

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ

इस्लाम के लिए	उस का सीना	खोल देता है	कि उसे हिदायत दे	अल्लाह चाहता है	पस जिस

وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا

गोया कि	भींचा हुआ	तंग	उस का सीना	कर देता है	उसे गुमराह करे	कि	चाहता है	और जिस

يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

जो लोग	पर	नापाकी (अ़ज़ाब)	कर देता है (डाले गा) अल्लाह	इसी तरह	आस्मानों में-आस्मान पर	ज़ोर से चढ़ता है

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا

हम ने खोल कर बयान कर दी हैं	सीधा	तुम्हारा रब	रास्ता	और यह	125	ईमान नहीं लाते

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ

उन का रब	पास-हां	सलामती का घर	उन के लिए	126	जो नसीहत पकड़ते हैं	उन लोगों के लिए	आयात

وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ

वह जमा करेगा	और जिस दिन	127	वह करते थे	उसका सिला जो	दोस्त दार-कारसाज़	और वह

جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ

और कहेंगें	इन्सान-आदमी	से	तुम ने बहुत घेर लिए (अपने ताबे कर लिए)	ऐ जिन्नात के गिरोह	सब

اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ

और हम पहुँचे	बाज़ से	हमारे बाज़	हम ने फ़ाइदा उठाया	ऐ हमारे रब	इन्सान	से	उन के दोस्त

اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहोगे	तुम्हारा ठिकाना	आग	फ़रमाएगा	हमारे लिए	तू ने मुक़र्रर की थी	जो	मीआ़द

فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	128	जानने वाला	हिक्मत वाला	तुम्हारा रब	बेशक	अल्लाह चाहे	जिसे	मगर	उस मे

ع ١٥ ٨ ٢ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًاۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع

129	जो वह करते थे (उन के आमाल)	उसके सबब	बाज़ पर	ज़ालिम (जमा)	बाज़	हम मुसल्लत कर देते हैं

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

तुम में से	रसूल (जमा)	क्या नहीं आए तुम्हारे पास	और इन्सान	जिन्नात	ऐ गिरोह

يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

तुम्हारा दिन	मुलाक़ात (देखना)	और तुम्हें डराते थे	मेरी आयात	तुम पर	सुनाते थे (बयान करते थे)

هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	अपनी जानें	पर (ख़िलाफ़)	वह कहेंगे हम गवाही देते हैं	इस

وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾

130	कुफ़्र करने वाले थे	कि वह	अपनी जाने (अपने)	पर (ख़िलाफ़)	और उन्हों ने गवाही दी

पस अल्लाह जिस को हिदायत देना चाहता है, उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिस को चाहता है कि उसे गुमराह करे, उस का सीना तंग भींचा हुआ (निहायत तंग) कर देता है। गोया कि वह ज़ोर से (बमुश्किल) आस्मान पर चढ़ रहा है, इसी तरह अल्लाह उन लोगों पर अ़ज़ाब डालेगा जो ईमान नहीं लाते। (125)

यह रास्ता है तुम्हारे रब का सीधा, हम ने आयात खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो नसीहत पकड़ते हैं, (126)

उन के लिए उन के रब के पास सलामती का घर है और वह उन का कारसाज़ है उस के सिले में जो वह करते थे। (127)

और जिस दिन वह जमा करेगा उन सब को (फ़रमाएगा) ऐ गिरोह जिन्नात! तुम ने बहुत से आदमी अपने ताबे कर लिए, और इन्सानों में से उन के दोस्त कहेंगे ऐ हमारे रब! हमारे बाज़ ने बाज़ (एक दूसरे) से फ़ाइदा उठाया और हम उस मीआ़द (घड़ी) को पहुँच गए जो तू ने मुक़र्रर की थी। फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है, उस में हमेशा रहोगे मगर जिसे अल्लाह चाहे, बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला है। (128)

और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ पर (एक दूसरे पर) मुसल्लत कर देते हैं उन के आमाल के सबब। (129)

ऐ गिरोहे जिन्नात ओ इन्सान! क्या तुम्हारे पास तुम में से हमारे रसूल नहीं आए? वह तुम पर हमारे अहकाम बयान करते थे और तुम्हें डराते थे यह दिन देखने से। वह कहेंगे हम अपनी जानों के ख़िलाफ़ (अपने ख़िलाफ़) गवाही देते हैं, और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया और उन्हों ने अपने ख़िलाफ़ गवाही दी कि वह काफ़िर थे। (130)

यह इस लिए है कि तेरा रब ज़ुल्म की सज़ा में बस्तियों को हलाक करने वाला नहीं जब कि उन के लोग बेख़बर हों। (131)

और हर एक के लिए उन के आमाल के दरजे हैं और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (132)

और तुम्हारा रब बेनियाज़ है, रहमत वाला, अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए (हलाक कर दे) और जिस को चाहे तुम्हारे बाद जांनशीन कर दे, जैसे उस ने तुम्हें उठाया औलाद से एक दूसरी क़ौम की। (133)

बेशक जिस का तुम से वादा किया जाता है वह ज़रूर आने वाली है और तुम आ़जिज़ करने वाले नहीं। (134)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो, मैं भी काम कर रहा हूँ, पस तुम अ़नक़रीब जान लोगे किस के लिए है आ़क़िबत का घर। बेशक ज़ालिम (दो जहान की) कामयाबी नहीं पाते । (135)

और (अल्लाह ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं उस से उन्हों ने ठहराया है अल्लाह के लिए एक हिस्सा, पस उन्हों ने अपने ख़याल में कहा यह अल्लाह के लिए है और यह हमारे शरीकों के लिए है, पस जो उन के शरीकों के लिए है तो वह नहीं पहुँचता अल्लाह को। और जो अल्लाह के लिए है वह उन के शरीकों को पहुँच जाता है, बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (136)

और इसी तरह बहुत से मुश्रिकों के लिए उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल अरास्ता कर दिया है ताकि वह उन्हें हलाक कर दें, और उन पर उन का दीन गुड मड कर दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वह (ऐसा) न करते, सो तुम उन्हें छोड़ो और वह जो झूट बान्धते हैं (वह जानें और उन का झूट)। (137)

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا

जब कि उन के लोग	ज़ुल्म से	बस्तियां	हलाक कर डालने वाला	तेरा रब	नहीं है	इस लिए कि	यह

غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ

तुम्हारा रब	और नहीं	उन्हों ने किया (उन के आमाल)	उस से जो	दरजे	और हर एक के लिए	131	बेख़बर हों

بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾ وَرَبُّكَ الْغَنِىُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ

रहमत वाला	बेनियाज़	और तुम्हारा रब	132	वह करते हैं	उस से जो	बेख़बर

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ

जैसे	जिस को चाहे	तुम्हारे बाद	और जांनशीन बनादे	तुम्हें ले जाए	वह चाहे	अगर

اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ ؕ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ

तुम से वादा किया जाता है	जिस	बेशक	133	दूसरी	क़ौम	औलाद	से	उस ने तुम्हें उठाया

لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى

पर	काम करते रहो	ऐ क़ौम	फ़रमा दें	134	आ़जिज़ करने वाले	तुम	और नहीं	ज़रूर आने वाली है

مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ

उस का	होता है	किस	तुम जान लोगे	पस जल्द	काम कर रहा हूँ	मैं	अपनी जगह

عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

और उन्हों ने ठहराया अल्लाह के लिए	135	ज़ालिम	फ़लाह नहीं पाते	बेशक	घर	आख़िरत

مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا

पस उन्हों ने कहा	एक हिस्सा	और मवेशी	खेती से	उस ने पैदा किए	उस से जो

هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ

है	पस जो	हमारे शरीकों के लिए	और यह	उन के झूटे ख़याल के मूताबिक़	यह अल्लाह के लिए

لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ

तो वह	अल्लाह के लिए	है	और जो	अल्लाह	तरफ़ को	पहुँचता	तो नहीं	उन के शरीकों के लिए

يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	136	जो वह फ़ैसला करते हैं	बुरा है	उन के शरीक	तरफ़ (को)	पहुँचता है

زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ

उन की औलाद	क़त्ल	मुश्रिक (जमा)	से	अकसर के लिए	अरास्ता कर दिया है

شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ

उन का दीन	उन पर	और गुड मड कर दें	ताकि वह उन्हें हलाक करदें	उन के शरीक

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾

137	वह झूट बान्धते हैं	और जो	सो तुम उन्हें छोड़ दो	वह न करते	अल्लाह	और अगर चाहता

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ

जिस को	मगर	उसे न खाए	ममनूअ़ (मना किए हुए)	और खेती	मवेशी	यह	और उन्हों ने कहा

نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ

और कुछ मवेशी	उन की पीठ (जमा)	हराम की गई	और कुछ मवेशी	उन के ग़लत ख़याल के मुताबिक़	हम चाहें

لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ

हम जल्द उन्हें सज़ा देंगे	उस पर	झूट बान्धते हैं	उस पर	नाम अल्लाह का	वह नहीं लेते

بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ

मवेशी (जमा)	इन	पेट में	जो	और उन्हों ने कहा	138	झूट बान्धते थे	उस की जो

خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓي اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ

हो	और अगर	हमारी औ़रतें	पर	और हराम	हमारे मर्दों के लिए	ख़ालिस

مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ

हिक्मत वाला	बेशक वह	उन का बातें बनाना	वह जल्द उन को सज़ा देगा	शरीक	उस में	तो वह सब	मुर्दा

عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا

बेवकूफ़ी से	अपनी औलाद	उन्हों ने क़त्ल किया	वह लोग जिन्हों ने	अल्बत्ता घाटे में पड़े	139	जानने वाला

بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۭ

अल्लाह पर	झूट बान्धते हुए	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और हराम ठहराया	बेख़बरी (नादानी से)

الربع ع ١٦ ١١ ٣ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ

पैदा किए	जिस ने	और वह	140	हिदायत पाने वाले	और वह न थे	यक़ीनन वह गुमराह हुए

جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ

और खेती	और खजूर	और न चढ़ाए हुए	चढ़ाए हुए	बाग़ात

مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ

और ग़ैर मुशाबह (जुदा जुदा)	मुशाबह (मिलते जुलते)	और अनार	और ज़ैतून	उस के फल	मुख़्तलिफ़

كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ

उस के काटने के दिन	उस का हक़	और अदा करो	वह फल लाए	जब	उस के फल	से	खाओ

وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾ وَمِنَ

और से	141	बेजा ख़र्च करने वाले	पसन्द नहीं करता	बेशक वह	और बेजा ख़र्च न करो

الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ

अल्लाह ने तुम्हें दिया	उस से जो	खाओ	और ज़मीन से लगे हुए	बार बरदार (बड़े बड़े)	चौपाए

وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾

142	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह	शैतान	क़दम (जमा)	और न पैरवी करो

और उन्हों ने कहा यह मवेशी और खेती ममनूअ़ है, उसे कोई न खाए मगर जिस को हम चाहें उन के (झूटे) ख़याल के मुताबिक़ और कुछ मवेशी हैं कि उन की पीठ पर (सवारी) हराम की है और कुछ मवेशी हैं (ज़ुब्ह करते वक़्त) उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, (यह) झूट बान्धना है उस (अल्लाह) पर, हम जल्द उन्हें उस की सज़ा देंगे जो वह झूट बान्धते थे। (138)

और उन्हों ने कहा जो उन मवेशियों के पेट में है वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औ़रतों पर हराम है, और अगर मुर्दा हो तो सब उस में शरीक हैं, वह जल्द उन्हें उन के बातें बनाने की सज़ा देगा, वह बेशक हिक्मत वाला जानने वाला है। (139)

अलबत्ता वह लोग घाटे में पड़े जिन्हों ने बेवकूफ़ी, नादानी से अपनी औलाद को क़त्ल किया और जो अल्लाह ने उन्हें दिया वह हराम ठहरा लिया झूट बान्धते हुए अल्लाह पर, यक़ीनन वह गुमराह हुए, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (140)

और वही (ख़ालिक़) है जिस ने बाग़ात पैदा किए (छतरियों पर) चढ़ाए हुए (जैसे अंगूर) और (छतरियों पर) न चढ़ाए हुए, और खजूर और खेती, उस के फल मुख़्तलिफ़ (क़िस्म के) और ज़ैतून और अनार मिलते जुलते और जुदा जुदा, जब वह फल लाए तो उस के फल खाओ, और उस के काटने के दिन उस का हक़ (उश्र) अदा कर दो, और बेजा ख़र्च न करो, बेशक अल्लाह बेजा ख़र्च करने वालों को पसन्द नहीं करता। (141)

और चौपायों में से (पैदा किए) बार बरदार (बड़े बड़े) और ज़मीन पर लगे हुए (छोटे छोटे), जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से खाओ और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (142)

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ

दो (2)	बकरी	और से	दो (2)	भेड़	से	जोड़े	आठ (8)

قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ

उस पर	लिपट रहा हो	या जो	या दोनों मादा	हराम किए	क्या दोनों नर	पूछें

اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِىْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾

143	सच्चे	तुम	अगर	किसी इल्म से	मुझे बताओ	दोनों मादा	रहम (जमा)

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ

क्या दोनों नर	आप पूछें	दो (2)	गाय	और से	दो (2)	ऊँट	और से

حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ

दोनों मादा	रहम (जमा)	उस पर	लिपट रहा हो	या जो	दोनों मादा	या	उस ने हराम किए

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

उस से जो	बड़ा ज़ालिम	पस कौन	इस का	अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया	जब	मौजूद	तुम थे	क्या

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	इल्म	बग़ैर	लोग	ताकि गुमराह करे	झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٤﴾ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِىْ مَآ اُوْحِىَ اِلَىَّ ع ١٧ ٤

मुझे	जो वहि की गई	में	मैं नहीं पाता	फ़रमा दीजिए	144	जुल्म करने वाले	लोग	हिदायत नहीं देता

مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا

या खून	मुर्दार	यह कि हो	मगर	इस को खाए	कोई खाने वाला	पर	हराम

مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا

या गुनाह की चीज़	नापाक	पस वह	सुव्वर	या गोश्त	बहता हुआ	

اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ

तो बेशक	और न सरकश	न नाफ़रमानी करने वाला	लाचार हो जाए	पस जो	उस पर	ग़ैर अल्लाह का नाम	पुकारा गया

رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا

हम ने हराम कर दिया	यहूदी हुए	वह जो कि	और पर	145	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	तेरा रब

كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ

उन की चरबियां	उन पर	हम ने हराम कर दिया	और बकरी	और गाय से	नाखुन वाला जानवर	हर एक

اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ

जो मिली हो	या	या अंतड़ियां	उन की पीठ (जमा)	जो उठाती हो (लगी हो)	सिवाए

بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿١٤٦﴾

146	सच्चे हैं	और बेशक हम	उनकी सरकशी का	हम ने उन को बदला दिया	यह	हड्डी से

आठ जोड़े (नर और मादा पैदा किए) दो भेड़ से दो बकरी से, आप पूछें क्या (अल्लाह ने) दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या वह जो दोनों मादा के रहम में लिपटा हुआ (अभी पेट में) हो? मुझे किसी इल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो। (143)

और दो ऊँट से और दो गाए से (पैदा किए), आप (स) पूछें क्या अल्लाह ने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या जो दोनों के रहमों में लिपटा हुआ हो (अभी पेट में हो)? क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें उस का हुक्म दिया था? पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर बुहतान बान्धे झूट ताकि लोगों को इल्म के बग़ैर (जहालत से) गुमराह करे, बेशक अल्लाह जुल्म करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता। (144)

आप (स) फ़रमा दीजिए, जो वहि मुझे दी गई है उस में किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम नहीं पाता मगर यह कि वह मुर्दार हो या बहता हुआ खून या सुव्वर का गोश्त, पस वह नापाक है, या गुनाह का (नाजाइज़ ज़बीहा) जिस पर ग़ैर अल्लाह का नाम पुकारा गया हो, पस जो लाचार हो जाए, न नाफ़रमानी करने वाला हो और न सरकश हो तो बेशक तेरा रब बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (145)

और उन लोगों पर जो यहूदी हुए, हम ने हराम कर दिया हर नाखुन वाला जानवर, और हम ने गाए और बकरी की चरबी उन पर हराम कर दी, सिवाए उस के जो उन की पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या हड्डीयों के साथ मिली हो, यह हम ने उन को बदला दिया उन की सरकशी का, और बेशक हम सच्चे हैं। (146)

فَـاِنْ كَـذَّبُـوْكَ فَـقُـلْ رَّبُّـكُـمْ ذُوْ رَحْـمَـةٍ وَّاسِـعَـةٍ ۚ وَلَا يُـرَدُّ

और टाला नहीं जाता	वसीअ़	रहमत वाला	तुम्हारा रब	तो आप(स) कह दें	आप को झुटलाएं	पस अगर

بَـاْسُـهٗ عَـنِ الْـقَـوْمِ الْـمُـجْـرِمِـيْـنَ ﴿١٤٧﴾ سَـيَـقُـوْلُ الَّـذِيْـنَ اَشْـرَكُـوْا

जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	जल्द कहेंगे	147	मुजरिमों की क़ौम	से	उस का अ़ज़ाब

لَـوْ شَـآءَ اللّٰهُ مَـآ اَشْـرَكْـنَـا وَلَآ اٰبَـآؤُنَـا وَلَا حَـرَّمْـنَـا مِـنْ شَـيْءٍ ؕ

कोई चीज़	हम हराम ठहराते	और न	हमारे बाप दादा	और न	हम शिर्क न करते	चाहता अल्लाह	अगर

كَـذٰلِـكَ كَـذَّبَ الَّـذِيْـنَ مِـنْ قَـبْـلِـهِـمْ حَـتّٰـى ذَاقُـوْا بَـاْسَـنَـا ؕ

हमारा अ़ज़ाब	उन्हों ने चखा	यहां तक कि	इन से पहले	जो लोग	झुटलाया	इसी तरह

قُـلْ هَـلْ عِـنْـدَكُـمْ مِّـنْ عِـلْـمٍ فَـتُـخْـرِجُـوْهُ لَـنَـا ؕ اِنْ تَـتَّـبِـعُـوْنَ

तुम पीछे चलते हो	नहीं	तो उस को निकालो (ज़ाहिर करो) हमारे लिए	कोई इल्म (यक़ीनी बात)	तुम्हारे पास	क्या	फ़रमा दीजिए

اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْـتُـمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿١٤٨﴾ قُـلْ فَلِلّٰهِ الْـحُجَّةُ الْـبَالِغَةُ ۚ

पूरी	हुज्जत	अल्लाह ही के लिए	फ़रमा दें	148	अटकल चलाते हो	सिर्फ़	तुम	और अगर (नहीं)	मगर (सिर्फ़) गुमान

فَـلَـوْ شَـآءَ لَـهَـدٰىـكُـمْ اَجْـمَـعِـيْـنَ ﴿١٤٩﴾ قُـلْ هَـلُـمَّ شُـهَـدَآءَكُـمُ

अपने गवाह	लाओ	फ़रमा दें	149	सब को	तो तुम्हें हिदायत देता	पस अगर वह चाहता

الَّـذِيْـنَ يَـشْـهَـدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَـرَّمَ هٰـذَا ۚ فَـاِنْ شَـهِـدُوْا

वह गवाही दें	फिर अगर	यह	हराम किया	कि अल्लाह	गवाही दें	जो

فَـلَا تَـشْـهَـدْ مَـعَـهُـمْ ۚ وَلَا تَـتَّـبِـعْ اَهْـوَآءَ الَّـذِيْـنَ كَـذَّبُـوْا

झुटलाया	जो लोग	ख़्वाहिशात	और न पैरवी करना	उन के साथ	तो तुम गवाही न देना

بِـاٰيٰـتِـنَـا وَالَّـذِيْـنَ لَا يُـؤْمِـنُـوْنَ بِـالْاٰخِـرَةِ وَهُـمْ بِـرَبِّـهِـمْ

अपने रब के	और वह	आख़िरत पर	ईमान लाते हैं	नहीं	और जो लोग	हमारी आयतों को

ع ١٨ ٦ ٥ يَـعْـدِلُـوْنَ ﴿١٥٠﴾ قُـلْ تَـعَـالَـوْا اَتْـلُ مَـا حَـرَّمَ رَبُّـكُـمْ عَـلَـيْـكُـمْ

तुम पर	तुम्हारा रब	जो हराम किया	मैं पढ़ कर सुनाऊँ	आओ	फ़रमा दें	150	बराबर ठहराते हैं

اَلَّا تُـشْـرِكُـوْا بِـهٖ شَـيْـئًـا وَّبِـالْـوَالِـدَيْـنِ اِحْـسَـانًـا ۚ وَلَا تَـقْـتُـلُـوْٓا

और न क़त्ल करो	नेक सुलूक	और वालिदैन के साथ	कुछ-कोई	उस के साथ	कि न शरीक ठहराओ

اَوْلَادَكُـمْ مِّـنْ اِمْـلَاقٍ ؕ نَـحْـنُ نَـرْزُقُـكُـمْ وَاِيَّـاهُـمْ ۚ وَلَا تَـقْـرَبُـوا

और क़रीब न जाओ	और उन को	तुम्हें रिज़्क़ देते हैं	हम	मुफ़लिसी	से	अपनी औलाद

الْـفَـوَاحِـشَ مَـا ظَـهَـرَ مِنْهَا وَمَـا بَـطَـنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّـفْـسَ الَّـتِـيْ

जो-जिस	जान	और न क़त्ल करो	छुपी हो	और जो	जो ज़ाहिर हो उस से (उन में)	बेहयाई (जमा)

حَـرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِـالْـحَـقِّ ؕ ذٰلِـكُـمْ وَصّٰـكُـمْ بِـهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٥١﴾

151	अ़क़्ल से काम लो (समझो)	ताकि तुम	इस का	तुम्हें हुक्म दिया है	यह	मगर हक़ पर	अल्लाह ने हुर्मत दी

पस अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कहदें तुम्हारा रब वसीअ़ रहमत वाला है, और उस का अ़ज़ाब मुजरिमों की क़ौम से टाला नहीं जाता। (147)

मुश्रिक जल्द कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा, और न हम कोई चीज़ हराम ठहराते, इसी तरह (उन लोगों ने) झुटलाया जो उन से पहले थे यहां तक कि उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब चखा, आप (स) फ़रमा दीजिए क्या तुम्हारे पास कोई यक़ीनी बात है? तो उस को हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हो और तुम सिर्फ़ अटकल चलाते हो। (148)

आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही की हुज्जत पूरी (ग़ालिब) है, अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (149)

आप (स) फ़रमा दें: लाओ अपने गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने यह हराम किया है, फिर अगर वह गवाही दे दें तो भी तुम उन के साथ गवाही न देना, और उन की ख़्वाहिशात की पैरवी न करना जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और वह (माबूदाने बातिल को) अपने रब के बराबर ठहराते हैं। (150)

आप (स) फ़रमा दें आओ मैं पढ़ कर सुनाऊँ जो हराम किया है तुम पर तुम्हारे रब ने कि उस के साथ शरीक न ठहराओ और वालिदैन के साथ नेक सुलूक करो, और क़त्ल न करो अपनी औलाद को मुफ़लिसी (के डर) से, हम तुम्हें रिज़्क़ देते हैं और उन को (भी), और बेहयाइयों के क़रीब न जाओ जो उन में खुली हो और जो छुपी हो, और जिस जान को अल्लाह ने हुर्मत दी है उसे क़त्ल न करो मगर हक़ पर, यह तुम्हें इस का हुक्म दिया है ताकि तुम समझो। (151)

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى

यहां तक कि	बेहतरीन	वह	ऐसे जो	मगर	यतीम	माल	और क़रीब न जाओ

يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ

हम तक्लीफ़ नहीं देते	इन्साफ़ के साथ	और तोल	माप	और पूरा करो	अपनी जवानी	पहुँच जाए

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ

रिश्तेदार	ख़्वाह हो	तो इन्साफ़ करो	तुम बात करो	और जब	उस की वुस्अ़त (मक्दूर)	मगर	किसी को

وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ١٥٢ۙ

152	नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	इस का	उस ने तुम्हें हुक्म दिया	यह	पूरा करो	और अल्लाह का अ़हद

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ

रास्ते	और न चलो	पस उस पर चलो	सीधा	मेरा रास्ता	यह	और यह कि

فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ١٥٣

153	परहेज़गारी इख़्तियार करो	ताकि तुम	तुम्हें हुक्म दिया इस का	यह	उस का रास्ता	से	तुम्हें	पस जुदा कर दें

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا

और तफ़सील	नेकोकार है	जो	पर	नेमत पूरी करने को	किताब	मूसा (अ)	फिर हम ने दी

لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ١٥٤ۧ ع ١٩ ٦

154	ईमान लाएं	अपना रब	मुलाक़ात पर	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	हर चीज़ की

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम पर	और परहेज़गारी इख़्तियार करो	पस उसकी पैरवी करो	बरकत वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह

تُرْحَمُوْنَ ١٥٥ۙ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰي طَاۗىِٕفَتَيْنِ

दो गिरोह	पर	किताब	उतारी गई थी	इस के सिवा नहीं	तुम कहो	कि	155	रहम किया जाए

مِنْ قَبْلِنَا ۠ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ١٥٦ۙ اَوْ تَقُوْلُوْا

या तुम कहो	156	बेख़बर	उन के पढ़ने पढ़ाने	से	और यह कि हम थे	हम से पहले

لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاۗءَكُمْ

पस आ गई तुम्हारे पास	उन से	ज़ियादा हिदायत पर	अलबत्ता हम होते	किताब	हम पर	उतारी जाती	अगर हम

بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ

बड़ा ज़ालिम	पस कौन	और रहमत	और हिदायत	तुम्हारा रब	से	रौशन दलील

مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۭ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ

उन लोगों को जो	हम जल्द सज़ा देंगे	उस से	और कतराए	अल्लाह की आयतों को	झुटलादे	उस से जो

يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْۗءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ١٥٧

157	वह कतराते थे	उस के बदले	अ़ज़ाब	बुरा	हमारी आयतें	से	कतराते हैं

और यतीम के माल के क़रीब न जाओ मगर इस तरह कि वह बेहतरीन हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए, और इन्साफ़ के साथ माप तोल पूरा करो, हम किसी को तकलीफ़ नहीं देते (बोझ नहीं डालते) मगर उस के मक्दूर के मुताबिक़, और जब बात करो तो इन्साफ़ की करो, ख़्वाह रिश्तेदार (का मामला) हो। और अल्लाह का अ़हद पूरा करो, उस ने तुम्हें यह हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (152)

और यह मेरा रास्ता सीधा है, पस उस पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वह तुम्हें इस रास्ते से जुदा कर देंगे, उस ने तुम्हें इस का हुक्म दिया ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो। (153)

फिर हम ने मूसा (अ) को किताब दी, उस पर अपनी नेमत पूरी करने को जो नेकोकार है, और हर चीज़ की तफ़सील के लिए, और हिदायत ओ रहमत के लिए, ताकि वह अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान ले आएं। (154)

और हम ने यह किताब उतारी है बरकत वाली, पस इस की पैरवी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (155)

कि (कहें) तुम कहो कि हम से पहले दो गिरोहों पर किताब उतारी गई, और यह कि हम उन के पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। (156)

या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम ज़ियादा हिदायत पर होते उन से, सो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील और हिदायत और रहमत आ गई, पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह की आयतों को झुटलादे और उन से कतराए, हम उन लोगों को जल्द सज़ा देंगे जो कतराते हैं हमारी आयतों से, बुरा अ़ज़ाब उस के बदले कि वह कतराते थे। (157)

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ

या आए	तुम्हारा रब	या आए	फ़रिश्ते	उन के पास आएं	यह	मगर	क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं

بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا

किसी को	न काम आएगा	तुम्हारा रब	निशानी	कोई	आई	जिस दिन	तुम्हारा रब	निशानियां	कुछ

اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۭ قُلِ

फ़रमा दें	कोई भलाई	अपने ईमान में	कमाई	या	उस से पहले	ईमान लाया	न था	उस का ईमान

انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ١٥٨ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا

गिरोह दर गिरोह	और हो गए	अपना दीन	तफ़रक़ा डाला	वह लोग जिन्हों ने	बेशक	158	मुन्तज़िर हैं	हम	इन्तिज़ार करो तुम

لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ۭ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا

वह जो	वह जतला देगा उन्हें	फिर	अल्लाह के हवाले	उन का मामला	फ़क़त	किसी चीज़ में (कोई तअल्लुक़)	उन से	नहीं आप (स)

كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ١٥٩ مَنْ جَاۗءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ

और जो	उस के बराबर	दस	तो उस के लिए	लाए कोई नेकी	जो	159	करते थे

جَاۗءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ١٦٠ قُلْ اِنَّنِيْ

बेशक मुझे	कह दीजिए	160	न ज़ुल्म किए जाएंगे	और वह	मगर उस के बराबर	तो न बदला पाएगा	कोई बुराई लाए

هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ڬ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	मिल्लत	दुरुस्त	दीन	सीधा	रास्ता	तरफ़	मेरा रब	राह दिखाई

حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ١٦١ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ

मेरी क़ुरबानी	मेरी नमाज़	बेशक	आप कह दें	161	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे	एक का हो कर रहने वाला

وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ١٦٢ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ

मुझे हुक्म दिया गया	और उसी का	उस का	नहीं कोई शरीक	162	सारे जहान का	रब	अल्लाह के लिए	और मेरा मरना	और मेरा जीना

وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ١٦٣ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۭ

हर शै	रब	और वह	कोई रब	मैं ढूनडूँ	क्या सिवाए अल्लाह	आप कह दें	163	मुसलमान (फ़रमांबरदार)	सब से पहला	और मैं

وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى

तरफ़	फिर	बोझ दूसरा	उठाएगा कोई उठाने वाला	और न	उस के ज़िम्मे	मगर (सिर्फ़)	हर शख़्स	और न कमाएगा

رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ١٦٤ وَهُوَ الَّذِيْ

जिस ने	और वह	164	तुम इख़्तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	वह जो	पस वह तुम्हें जतला देगा	तुम्हारा लौटना	तुम्हारा (अपना) रब

جَعَلَكُمْ خَلٰۗىِٕفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ

ताकि तुम्हें आज़माए	दरजे	बाज़	पर-ऊपर	तुम में से बाज़	और बुलन्द किए	ज़मीन	नाइब	तुम्हें बनाया

ع ٢٠ / ١١ النصف فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ڮ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٦٥

165	निहायत मेहरबान	यक़ीनन बख़्शने वाला	और बेशक वह	सज़ा देने वाला	तेज़	तुम्हारा रब	बेशक	जो उस ने तुम्हें दिया	में

क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर
यह कि उन के पास फ़रिश्ते आएं
या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे
रब की बाज़ निशानी आए, जिस
दिन आएगी तुम्हारे रब की बाज़
निशानी, किसी के काम न आएगा
उस का ईमान लाना जो पहले से
ईमान न लाया था या अपने ईमान
में कोई भलाई न कमाई थी,
आप (स) फ़रमा दें इन्तिज़ार करो
हम (भी) मुन्तज़िर हैं। (158)
बेशक जिन लोगों ने तफ़रक़ा डाला अपने
दीन में और गिरोह दर गिरोह हो गए,
आप (स) का उन से कोई तअल्लुक़
नहीं, उन का मामला फ़क़त अल्लाह
के हवाले है, फिर वह उन्हें जतला
देगा वह जो कुछ करते थे। (159)
जो शख़्स कोई नेकी लाए तो उस के
लिए उस का दस बराबर (दस गुना
अजर) है, और जो कोई बुराई लाए
तो वह बदला न पाएगा मगर उस के
बराबर (सिर्फ़ उस के बराबर), और
वह ज़ुल्म न किए जाएंगे। (160)
आप (स) कह दीजिए बेशक मुझे
मेरे रब ने सीधे रास्ते की तरफ़
राह दिखाई है, दुरुस्त दीन, इब्राहीम
(अ) की मिल्लत, जो एक (अल्लाह)
के हो रहने वाले थे, और वह
मुश्रिकों में से न थे। (161)
आप (स) कह दें बेशक मेरी नमाज़
और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना
और मेरा मरना अल्लाह के लिए है
जो सारे जहानों का रब है। (162)
उस का कोई शरीक नहीं, मुझे
उसी का हुक्म दिया गया है,
और मैं सब से पहला मुसलमान
(फ़रमांबरदार) हूँ। (163)
आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के
सिवा कोई और रब ढूनडूँ? और वही
है हर शै का रब, हर शख़्स जो कुछ
कमाएगा (उस का गुनाह) सिर्फ़ उस
के ज़िम्मे (होगा), कोई उठाने वाला
किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा,
फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना
है, पस वह तुम्हें जतला देगा जिस में
तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (164)
और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन
में नाइब बनाया, और बुलन्द किए
तुम में से बाज़ के दरजे बाज़ पर,
ताकि वह तुम्हें उस में आज़माए जो
उस ने तुम्हें दिया, बेशक तुम्हारा
रब जल्द सज़ा देने वाला है, और
वह बेशक यक़ीनन बख़्शने वाला,
निहायत मेहरबान है। (165)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम-सॉद (1)

यह किताब तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तो इस से तुम्हारे सीने में कोई तंगी न हो ताकि तुम उस (के ज़रीए) से डराओ, और ईमान वालों के लिए नसीहत है। (2)

उस की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और पीछे न लगो उस के सिवा (और) रफ़ीक़ों के, बहुत कम तुम नसीहत कुबूल करते हो। (3)

और हम ने कितनी ही बस्तियां हलाक कीं, पस उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को सोते में आया या दोपहर को आराम करते। (4)

पस उन की पुकार (इस के सिवा) न थी जब उन पर आया हमारा अ़ज़ाब, तो उन्हों ने कहा कि बेशक ज़ालिम हम ही थे। (5)

सो हम उन से ज़रूर पूछेंगे जिन की तरफ़ रसूल भेजे गए और हम रसूलों से (भी) ज़रूर पूछेंगे। (6)

अलबत्ता हम उन को अपने इल्म से अहवाल सुना देंगे और हम ग़ाइब न थे। (7)

और उस दिन (आमाल का) वज़न होना बरहक़ है, तो जिन की नेकियों के वज़न भारी हुए, वही फ़लाह (नजात) पाने वाले हैं। (8)

और जिन के (नेकियों के) वज़न हलके हुए तो वही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों का नुक़्सान किया, क्यों कि वह हमारी आयतों से ना इनसाफ़ी करते थे। (9)

और बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया और हम ने उस में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी के सामान बनाए, बहुत कम हैं जो शुक्र करते हैं। (10)

और अलबत्ता हम ने तुम्हें पैदा किया और फिर हम ने तुम्हारी शक्ल ओ सूरत बनाई, फिर हम ने फ़रिश्तों को कहा आदम (अ) को सिज्दा करो तो उन्हों ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह सिज्दा करने वालों में से न था। (11)

آيَاتُهَا ٢٠٦ ❀ سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ (٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

रुकूआत 24 | (7) सूरतुल आराफ़ बुलन्दियां | आयात 206

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ

कोई तंगी	तुम्हारे सीने में	सो न हो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल की गई	किताब	1	अलिफ़-लाम-मीम-साद

مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ

जो नाज़िल किया गया	पैरवी करो	2	ईमान वालों के लिए	और नसीहत	इस से	ताकि तुम डराओ	इस से

اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ قَلِيْلًا مَّا

जो	बहुत कम	रफ़ीक़ (जमा)	उस के सिवा	से	और पीछे न लगो	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا

रात में सोते	हमारा अ़ज़ाब	पस उन पर आया	हम ने हलाक कीं	बस्तियां	से	और कितनी ही	3	नसीहत कुबूल करते हो

اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ

मगर यह कि (तो)	हमारा अ़ज़ाब	उन पर आया	जब	उन का कहना (उन की पुकार)	पस न था	4	क़ैलूला करते (दोपहर को आराम करते)	या वह

قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْئَلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	भेजे गए (रसूल)	उन से जो	सो हम ज़रूर पूछेंगे	5	ज़ालिम (जमा)	बेशक हम थे	उन्हों ने कहा

وَلَنَسْئَلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا

और हम न थे	इल्म से	उन को	अलबत्ता हम अहवाल सुना देंगे	6	रसूल (जमा)	और हम ज़रूर पूछेंगे

غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ اِلْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ

मीज़ान (नेकियों के वज़न)	भारी हुए	तो जिस	बरहक़	उस दिन	और वज़न	7	ग़ाइब

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ

तो वही लोग	वज़न	हलके हुए	और जिस	8	फ़लाह पाने वाले	वह	तो वही

الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ

और बेशक	9	ना इनसाफ़ी करते	हमारी आयतों से	क्यों कि थे	अपनी जानें	नुक़्सान किया	वह जिन्हों ने

مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ قَلِيْلًا

बहुत कम	ज़िन्दगी के सामान	उस में	तुम्हारे लिए	और हम ने बनाए	ज़मीन में	हम ने तुम्हें ठिकाना दिया

مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ ع ١ ٨

फ़रिश्तों को	फिर हम ने कहा	हम ने तुम्हारी शक्ल ओ सूरत बनाई	फिर	हम ने तुम्हें पैदा किया	और अलबत्ता	10	जो तुम शुक्र करते हो

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

11	सिजदा करने वाले	से	वह न था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिजदा किया	आदम को	सिजदा करो

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ط قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ج خَلَقْتَنِيْ

तू ने मुझे पैदा किया	उस से	बेहतर	मैं	वह बोला	जब मैं ने तुझे हुक्म दिया	कि तू सिज्दा न करे	किस ने तुझे मना किया	उस ने फ़रमाया

مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ

तेरे लिए	है	तो नहीं	इस (यहां) से	पस तू उतर जा	फ़रमाया	12	मिट्टी	से	और तू ने उसे पैदा किया	आग	से

اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ

मुझे मोहलत दे	वह बोला	13	ज़लील (जमा)	से	बेशक तू	पस निकल जा	इस में (यहां)	तू तकब्बुर करे	कि

اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ

तू ने मुझे गुमराह किया	तो जैसे	वह बोला	15	मोहलत मिलने वाले	से	बेशक तू	फ़रमाया	14	उठाए जाएंगे	उस दिन तक

لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

उन के सामने	से	मैं ज़रूर उन तक आऊंगा	फिर	16	सीधा	तेरा रास्ता	उन के लिए	मैं ज़रूर बैठूंगा

وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ط وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ

उन के अक्सर	और तू न पाएगा	उन के बाएं	और से	उन के दाएं	और से	और पीछे से उन के

شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ط لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

उन से	तेरे पीछे लगा	अलबत्ता जो	मर्दूद हो कर	ज़लील	यहां से	निकल जा	फ़रमाया	17	शुक्र करने वाले

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ

जन्नत	और तेरी बीवी	तू	रहो	और ऐ आदम (अ)	18	सब	तुम से	जहन्नम	ज़रूर भर दूंगा

فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ

से	पस हो जाओगे	दरख़्त	उस	और क़रीब न जाना	तुम चाहो	जहां से	तुम दोनों खाओ

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَاوٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ

से	उन से	जो पोशीदा थीं	उन के लिए	ताकि ज़ाहिर कर दे	शैतान	उन के लिए	पस वस्वसा डाला	19	ज़ालिम (जमा)

سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا

तुम हो जाओ	इस लिए कि	मगर	दरख़्त	उस	से	तुम्हारा रब	तुम्हें मना किया	नहीं	और वह बोला	उन की सत्र की चीज़ें

مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ

अलबत्ता- से	तुम्हारे लिए	मैं बेशक	और उन से क़सम खागया	20	हमेशा रहेने वाले	से	या हो जाओ	फ़रिश्ते

النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ج فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا

उन की सत्र की चीज़ें	उन के लिए	खुल गईं	दरख़्त	उन दोनों ने चखा	पस जब	धोके से	पस उन को माइल कर लिया	21	ख़ैर ख़ाह (जमा)

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ط وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا

क्या तुम्हें मना न किया था	उन का रब	और उन्हें पुकारा	जन्नत	पत्ते	से	अपने ऊपर	जोड़ जोड़ कर रखने	और लगे

عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾

22	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	शैतान	बेशक	तुम से	और कहा	दरख़्त	उस से मुतअ़ल्लिक़

उस ने फ़रमाया जब मैं ने तुझे
हुक्म दिया तो तुझे किस ने मना
किया कि तू सिज्दा न करे? वह
बोला मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने
मुझे आग से पैदा किया और उसे
मिट्टी से पैदा किया। (12)
फ़रमाया पस तू यहां से उतर जा,
तेरे लिए (लाइक़) नहीं कि तू गुरूर
ओ तकब्बुर करे यहां, पस निकल जा,
बेशक तू ज़लीलों में से है। (13)
वह बोला मुझे उस दिन तक मोहलत
दे (जिस दिन मुर्दे) उठाए जाएंगे। (14)
फ़रमाया बेशक तू मोहलत मिलने वालों
में से है (तुझे मोहलत दी गई) (15)
वह बोला जैसे तू ने मेरे गुमराह
(होने का फ़ैसला) किया है। मैं ज़रूर
बैठूँगा उन के लिए (गुमराह करने
के लिए) तेरे सीधे रास्ते पर। (16)
फिर मैं उन तक ज़रूर आऊँगा उन
के सामने से और उन के पीछे से,
और उन के दाएं से और उन के बाएं
से, और तू उन में से अक्सर को
शुक्र करने वाले न पाएगा। (17)
फ़रमाया यहां से निकल जा ज़लील
मर्दूद हो कर। उन में से जो तेरे पीछे
लगा, अलबत्ता मैं ज़रूर जहन्नम
को भर दूंगा तुम सब से। (18)
ऐ आदम (अ)! तुम और तुम्हारी बीवी
(हव्वा) जन्नत में रहो, पस खाओ
जहां से तुम चाहो और उस दरख़्त के
क़रीब न जाना, (अगर ऐसा करोगे)
तो ज़ालिमों में से हो जाओगे। (19)
पस वस्वसा डाला शैतान ने उन
के लिए (उन के दिल में) ताकि
उन के सत्र की चीज़े जो उन से
पोशीदा थीं उन के लिए ज़ाहिर
कर दे, और बोला तुम्हारे रब ने
तुम्हें उस दरख़्त से मना नहीं किया
मगर इस लिए कि (कहीं) तुम
फ़रिश्ते हो जाओ या हो जाओ
हमेशा रहने वालों में से। (20)
और उन से क़सम खागया कि मैं बेशक
तुम्हारे लिए ख़ैर ख़ाहों से हूँ। (21)
पस उस ने उन को माइल
कर लिया धोके से, पस जब उन्हों
ने दरख़्त चखा तो उन के लिए उन
की सत्र की चीज़े खुल गईं और
वह अपने ऊपर जोड़ जोड़ कर
रखने लगे (सत्र छुपाने के लिए)
जन्नत के पत्ते, और उन के रब
ने उन्हें पुकारा क्या मैं ने तुम्हें उस
दरख़्त से मना नहीं किया था? और
कहा था तुम्हें कि बेशक शैतान
तुम्हारा खुला दुश्मन है। (22)

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۖ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

से	हम ज़रूर हो जाएंगे	और हम पर रहम (न) किया	न बख़्शा तू ने हमें	और अगर	अपने ऊपर	हम ने ज़ुल्म किया	ऐ हमारे रब	उन दोनों ने कहा

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	और तुम्हारे लिए	दुश्मन	बाज़	तुम में से बाज़	उतरो	फ़रमाया	23	ख़सारा पाने वाले

مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا

और उस में	तुम जियोगे	उस में	फ़रमाया	24	एक वक़्त तक	और सामान	ठिकाना

ع ٢ ١٥ ٩

تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا

लिबास	तुम पर	हम ने उतारा	ऐ औलादे आदम (अ)	25	तुम निकाले जाओगे	और उस से	तुम मरोगे

يُّوَارِىْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۭ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۭ ذٰلِكَ مِنْ

से	यह	बेहतर	यह	परहेज़गारी	और लिबास	और ज़ीनत	तुम्हारे सत्र	ढांके

اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ

शैतान	न बहका दे तुम्हें	ऐ औलादे आदम (अ)	26	वह ग़ौर करें	ताकि वह	अल्लाह की निशानियां

كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ

उन के सत्र	ताकि ज़ाहिर कर दे	उन के लिबास	उन से	उतरवा दिए	जन्नत	से	तुम्हारे माँ बाप	उस ने निकाला	जैसे

اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	बेशक हम ने बनाया	तुम उन्हें नहीं देखते	जहां	से	और उस का क़बीला	वह	तुम्हें देखता है वह	बेशक

اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا

हम ने पाया	कहें	कोई बेहयाई	वह करें	और जब	27	ईमान नहीं लाते	उन लोगों के लिए	दोस्त-रफ़ीक़

عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۭ

बेहयाई का	हुक्म नहीं देता	बेशक अल्लाह	फ़रमा दें	उस का	हमें हुक्म दिया	और अल्लाह	अपने बाप दादा	इस पर

اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّىْ بِالْقِسْطِ ۡ

इन्साफ़ का	मेरा रब	हुक्म दिया	फ़रमा दें	28	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	क्या तुम कहते हो (लगाते हो)

وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ

ख़ालिस हो कर	और पुकारो	हर मस्जिद (नमाज़)	नज़दीक (वक़्त)	अपने चहरे	और क़ाइम करो (सीधे करो)

لَهُ الدِّيْنَ ۭ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَرِيْقًا هَدٰى

उस ने हिदायत दी	एक फ़रीक़	29	दोबारा (पैदा) होगे	तुम्हारी इब्तिदा की (पैदा किया)	जैसे	दीन (हुक्म)	उस के लिए

وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۭ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	उन्हों ने बना लिया	बेशक वह	गुमराही	उन पर	साबित हो गई	और एक फ़रीक़

اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

30	हिदायत पर हैं	कि वह बेशक	और समझते हैं	अल्लाह के सिवा	से	रफ़ीक़

उन दोनों ने कहा ऐ हमारे रब! हम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, और अगर तू ने हमें न बख़्शा और हम पर रहम न किया तो हम ज़रूर ख़सारा पाने वालों में से हो जाएंगे। (23)

फ़रमाया तुम उतरो, तुम में से बाज़ बाज़ के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त (मुऐयन) तक ठिकाना और सामाने ज़ीस्त है। (24)

फ़रमाया उस में तुम जियोगे और उस में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (25)

ऐ औलादे आदम (अ)! हम ने तुम पर उतारा लिबास जो ढांके तुम्हारे सत्र और (मौजिबे) ज़ीनत हो, और परहेज़गारी का लिबास सब से बेहतर है, यह (लिबास) अल्लाह की निशानियों में से है ताकि वह ग़ौर करें। (26)

ऐ औलादे आदम (अ)! कहीं शैतान तुम्हें बहका न दे, जैसे उस ने निकाला तुम्हारे माँ बाप (आदम ओ हव्वा) को जन्नत से, उन के लिबास उतरवा दिए ताकि उन के सत्र ज़ाहिर कर दे, बेशक तुम्हें देखता है वह और उस का क़बीला उस जगह से जहां तुम उन्हें नहीं देखते, बेशक हम ने शैतानों को उन लोगों का रफ़ीक़ बना दिया जो ईमान नहीं लाते। (27)

और जब वह बेहयाई करें तो कहें हम ने अपने बाप दादा को उस पर पाया है और अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है उस का, आप (स) फ़रमा दें, बेशक अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर (वह बात) लगाते हो जो तुम नहीं जानते। (28)

आप (स) फ़रमा दें मेरे रब ने मुझे इन्साफ़ का हुक्म दिया है, और अपने चहरे हर नमाज़ के वक़्त सीधे करो, और उसे पुकारो ख़ालिस उस के हुक्म के फ़रमांबरदार हो कर, जैसे तुम्हें (पहले) पैदा किया तुम दोबारा भी (पैदा किए जाओगे)। (29)

एक फ़रीक़ को हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुमराही साबित हो गई, बेशक उन्हों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया है और समझते हैं कि वह बेशक हिदायत पर हैं। (30)

ع ٣ ٦ ١٠

يٰبَنِيۡۤ اٰدَمَ خُذُوۡا زِيۡنَتَكُمۡ عِنۡدَ كُلِّ مَسۡجِدٍ وَّكُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا

और पियो	और खाओ	हर मस्जिद (नमाज़)	क़रीब (वक़्त)	अपनी ज़ीनत	लेलो (इख़्तियार करलो)	ऐ औलादे आदम

وَلَا تُسۡرِفُوۡا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ﴿۳۱﴾ قُلۡ مَنۡ حَرَّمَ زِيۡنَةَ اللّٰهِ

अल्लाह की ज़ीनत	हराम किया	किस	फ़रमा दें	31	फ़ुज़ूल ख़र्च करने वाले	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	और बेजा ख़र्च न करो

الَّتِيۡۤ اَخۡرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزۡقِ ؕ قُلۡ هِيَ لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	यह	फ़रमा दें	रिज़्क़	से	और पाक	अपने बन्दों के लिए	उस ने निकाली	जो कि

فِي الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا خَالِصَةً يَّوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ

गिरोह के लिए	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	इसी तरह	क़ियामत के दिन	ख़ालिस तौर पर	दुनिया	ज़िन्दगी में

يَّعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۲﴾ قُلۡ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الۡفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنۡهَا وَمَا بَطَنَ

पोशीदा	और जो	उन से	ज़ाहिर हैं	जो	बेहयाई	मेरा रब	हराम किया	सिर्फ़ (तो)	फ़रमा दें	32	वह जानते हैं

وَالۡاِثۡمَ وَالۡبَغۡيَ بِغَيۡرِ الۡحَقِّ وَاَنۡ تُشۡرِكُوۡا بِاللّٰهِ مَا لَمۡ يُنَزِّلۡ بِهٖ سُلۡطٰنًا

कोई सनद	उस की	नहीं नाज़िल की	जो-जिस	अल्लाह के साथ	तुम शरीक करो	और यह कि	नाहक़ को	और सरकशी	और गुनाह

وَّاَنۡ تَقُوۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۳﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ

आएगा	पस जब	एक मुद्दत मुक़र्रर	और हर उम्मत के लिए	33	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	तुम कहो (लगाओ)	और यह कि

اَجَلُهُمۡ لَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ سَاعَةً وَّلَا يَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ﴿۳۴﴾ يٰبَنِيۡۤ اٰدَمَ اِمَّا

अगर	ऐ औलादे आदम	34	आगे बढ़ सकेंगे	और न	एक घड़ी	न वह पीछे हो सकेंगे	उन का मुक़र्ररा वक़्त

يَاۡتِيَنَّكُمۡ رُسُلٌ مِّنۡكُمۡ يَقُصُّوۡنَ عَلَيۡكُمۡ اٰيٰتِيۡ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصۡلَحَ

और इस्लाह कर ली	डरा	तो जो	मेरी आयात	तुम पर (तुम्हें)	बयान करें (सुनाएं)	तुम में से	रसूल	तुम्हारे पास आएं

فَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۳۵﴾ وَالَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا

हमारी आयात को	झुटलाया	और वह लोग जो	35	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़ नहीं

وَاسۡتَكۡبَرُوۡا عَنۡهَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۳۶﴾ فَمَنۡ

पस कौन	36	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	यही लोग	उन से	और तकब्बुर किया

اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوۡ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	उस की आयतों को	या झुटलाया	झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम

يَنَالُهُمۡ نَصِيۡبُهُمۡ مِّنَ الۡكِتٰبِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُنَا

हमारे भेजे हुए	उन के पास आएंगे	जब	यहां तक कि	किताब (लिखा हुआ)	से	उन का नसीब (हिस्सा)	उन्हें पहुँचेगा

يَتَوَفَّوۡنَهُمۡ ۙ قَالُوۡۤا اَيۡنَ مَا كُنۡتُمۡ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के सिवा	से	पुकारते	तुम थे	कहां जो	वह कहेंगे	उन की जान निकालने

قَالُوۡا ضَلُّوۡا عَنَّا وَشَهِدُوۡا عَلٰۤى اَنۡفُسِهِمۡ اَنَّهُمۡ كَانُوۡا كٰفِرِيۡنَ ﴿۳۷﴾

37	काफ़िर थे	कि वह	अपनी जानें	पर	और गवाही देंगे	हम से	वह गुम हो गए	वह कहेंगे

ऐ औलादे आदम (अ)! अपनी ज़ीनत
हर नमाज़ के वक़्त इख़्तियार करो
और खाओ और पियो और बेजा ख़र्च न
करो, बेशक अल्लाह फ़ुज़ूल ख़र्च करने
वालों को दोस्त नहीं रखता। (31)
आप (स) फ़रमा दें किस ने हराम की
है अल्लाह की (वह) ज़ीनत जो उस ने
अपने बन्दों के लिए निकाली (पैदा) की
है, और पाक रिज़्क़, आप (स) फ़रमा
दें यह दुनिया की ज़िन्दगी में उन
लोगों के लिए है जो ईमान लाए और
ख़ालिस तौर पर क़ियामत के दिन
(उन्हीं का हिस्सा है), इसी तरह हम
आयतें खोल कर बयान करते हैं उस
गिरोह के लिए जो जानते हैं। (32)
आप फ़रमा दें मेरे रब ने तो हराम
क़रार दिया है बेहयाइयों को, उन
में जो ज़ाहिर हैं और जो पोशीदा
हैं, और गुनाह और सरकशी नाहक़
को, और यह कि तुम अल्लाह के
साथ शरीक करो जिस की उस ने
कोई सनद नहीं उतारी और यह कि
तुम अल्लाह पर लगाओ (वह बात)
जो तुम नहीं जानते। (33)
और हर उम्मत के लिए एक
मुद्दत मुक़र्रर है, पस जब उन का
मुक़र्ररा वक़्त आजाएगा तो न वह
पीछे हो सकेंगे एक घड़ी और न
आगे बढ़ सकेंगे। (34)
ऐ औलादे आदम (अ)! अगर तुम्हारे
पास तुम ही से मेरे रसूल आएं,
सुनाएं तुम्हें मेरी आयात तो जो
डरा और उस ने इस्लाह कर ली,
उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न
वह ग़मगीन होंगे। (35)
और जिन लोगों ने हमारी आयात
को झुटलाया और उन से तकब्बुर
किया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह
उस में हमेशा रहेंगे। (36)
पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस
ने अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धा
या उस की आयतों को झुटलाया,
यही वह लोग हैं जिन्हें उन का
हिस्सा किताब (लौहे महफ़ूज़) में
लिखा हुआ पहुँचेगा, यहां तक जब
हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उन के
पास उन की जान निकालने आएंगे
वह कहेंगे कहां हैं वह जिन को तुम
अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह
(जवाब में) कहेंगे वह हम से गुम
हो गए, और वह अपनी जानों पर
(अपने ख़िलाफ़) गवाही देंगे कि वह
काफ़िर थे। (37)

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ

फ़रमाएगा	तुम दाख़िल हो जाओ	उम्मतों में (हमराह)	गुज़र चुकीं	तुम से क़ब्ल	से	जिन्नात	और इन्सान

فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا

आग (दोज़ख़) में	जब भी	दाख़िल होगी	कोई उम्मत	लानत करेगी	अपनी साथी	यहां तक	जब	मिल जाएंगे	उस में

جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ

सब	कहेगी	उन की पिछली क़ौम	अपने पहलों के बारे में	ऐ हमारे रब	यह हैं	उन्हों ने हमें गुमराह किया	पस दे उन को

عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ڛ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۳۸

अ़ज़ाब	दो गुना	आग का	फ़रमाएगा	हर एक के लिए	दो गुना	और लेकिन	नहीं	तुम जानते	38

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ

और कहेंगे	उन के पहले	अपने पिछलों को	पस नहीं	है तुम्हें	हम पर	कोई बड़ाई

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۳۹ ع اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا ع ۸ ۱۱

चखो	अ़ज़ाब	उस का बदला	तुम कमाते थे (करते थे)	39	बेशक	वह लोग जो	झुटलाया

بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَاۗءِ وَلَا

हमारी आयतों को	और तकब्बुर किया उन्हों ने	उन से	न खोले जाएंगे	उन के लिए	दरवाज़े	आस्मान	और न

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰي يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ وَكَذٰلِكَ

दाख़िल होंगे	जन्नत	यहां तक (जब तक)	दाख़िल होजाए	ऊँट	में	नाका	सुई	और इसी तरह

نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ۴۰ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۭ

हम बदला देते हैं	मुज्रिम (जमा)	40	उन के लिए	जहन्नम का	बिछौना	और से	उन के ऊपर	ओढ़ना

وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۴۱ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और इसी तरह	हम बदला देते हैं	ज़ालिम (जमा)	41	और जो लोग	ईमान लाए	और उन्हों ने अ़मल किए	अच्छे

لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا

हम बोझ नहीं डालते	किसी पर	मगर	उस की वुस्अ़त	यही लोग	जन्नत वाले	वह	उस में

خٰلِدُوْنَ ۴۲ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ

हमेशा रहेंगे	42	और खींच लिए हम ने	जो	में	उन के सीने	कीने	बहती हैं	से

تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا

उन के नीचे	नहरें	और वह कहेंगे	तमाम तारीफ़ें	अल्लाह के लिए	जिस ने	हमारी रहनुमाई की	इस की तरफ़	और न	हम थे

لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ

कि हम हिदायत पाते	अगर न	कि हमें हिदायत देता	अल्लाह	अलबत्ता	आए	रसूल	हमारा रब	हक़ के साथ

وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۴۳ الثلثة

और उन्हें निदा दी जाएगी	कि	यह कि तुम	जन्नत	तुम उस के वारिस होगे	सिले में	तुम थे	करते थे	43

(अल्लाह) फ़रमाएगा तुम दाख़िल हो जाओ जहन्नम में उन उम्मतों के हमराह जो गुज़र चुकीं तुम से क़ब्ल, जिन्नों और इन्सानों में से, जब कोई उम्मत दाख़िल होगी वह अपनी साथी (पहली उम्मत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस मे दाख़िल हो जाएंगें तो उन के पिछले अपने पहलों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब! यह हैं जिन्हों ने हम को गुमराह किया, पस उन्हें आग का दो गुना अ़ज़ाब दे। (अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा हर एक के लिए दो गुना है, लेकिन तुम जानते नहीं। (38)

और उन के पहले अपने पिछलों को कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई बड़ाई नहीं, लिहाज़ा चखो अ़ज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (39)

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन से तकब्बुर किया, उन के लिए आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक ऊँट दाख़िल (न) हो जाए सुई के नाके में (जो मुमकिन नहीं), इसी तरह हम मुज्रिमों को बदला देते हैं। (40)

उन के लिए जहन्नम का बिछौना है ओर उन के ऊपर से (जहन्नम ही का) ओढ़ना है, इसी तरह हम ज़ालिमों को बदला देते हैं। (41)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, हम किसी पर बोझ नहीं डालते मगर उस की बिसात के मुताबिक़, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (42)

और हम ने उन के सीनों से कीने खींच लिए, उन (जन्नतों) के नीचे नहरें बहती हैं, और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की तरफ़ रहनुमाई की, और अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता (रहनुमाई न फ़रमाता) तो हम हिदायत पाने वाले न थे। अलबत्ता हमारे रब के रसूल हक़ के साथ आए, और उन्हें निदा दी जाएगी कि तुम इस जन्नत के वारिस बनाए गए (उन आमाल के) सिले में जो तुम करते थे। (43)

وَنَادٰۤى اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ اَصۡحٰبَ النَّارِ اَنۡ قَدۡ وَجَدۡنَا مَا وَعَدَنَا

हम से वादा किया	जो	तहक़ीक़ हम ने पा लिया	कि	दोज़ख़ वालों को	जन्नत वाले	और पुकारेंगे

رَبُّنَا حَقًّا فَهَلۡ وَجَدۡتُّمۡ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمۡ حَقًّا ؕ قَالُوۡا نَعَمۡ ۚ فَاَذَّنَ

तो पुकारेगा	हाँ	वह कहेंगे	सच्चा	तुम्हारा रब	जो वादा किया	तुम ने पाया	तो क्या	सच्चा	हमारा रब

مُؤَذِّنٌۢ بَيۡنَهُمۡ اَنۡ لَّعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيۡنَ ۙ﴿۴۴﴾ الَّذِيۡنَ يَصُدُّوۡنَ

रोकते थे	जो लोग	44	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की लानत	कि	उन के दरमियान	एक पुकारने वाला

وقف لازم
عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَيَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ كٰفِرُوۡنَ ﴿ؗ۴۵﴾

45	काफ़िर (जमा)	आख़िरत के	और वह	कजी	और उस में तलाश करते थे	अल्लाह का रास्ता	से

وَبَيۡنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الۡاَعۡرَافِ رِجَالٌ يَّعۡرِفُوۡنَ كُلًّاۢ بِسِيۡمٰٮهُمۡ ۚ وَنَادَوۡا

और पुकारेंगे	उन की पेशानी से	हर एक	पहचान लेंगे	कुछ आदमी	आराफ़	और पर	एक हिजाब	और उन के दरमियान

اَصۡحٰبَ الۡجَنَّةِ اَنۡ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ ۣ لَمۡ يَدۡخُلُوۡهَا وَهُمۡ يَطۡمَعُوۡنَ ﴿۴۶﴾

46	उम्मीदवार हैं	और वह	वह उस में दाख़िल नहीं हुए	तुम पर	सलाम	कि	जन्नत वाले

وَاِذَا صُرِفَتۡ اَبۡصَارُهُمۡ تِلۡقَآءَ اَصۡحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوۡا رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا

हमें न कर	ऐ हमारे रब	कहेंगे	दोज़ख़ वाले	तरफ़	उन की निगाहें	फिरेंगी	और जब

ع ٨ / ٥ / ١٢
مَعَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿ؑ۴۷﴾ وَنَادٰۤى اَصۡحٰبُ الۡاَعۡرَافِ رِجَالًا يَّعۡرِفُوۡنَهُمۡ

वह उन्हें पहचान लेंगे	कुछ आदमी	आराफ़ वाले	और पुकारेंगे	47	ज़ालिम (जमा)	लोग	साथ

بِسِيۡمٰٮهُمۡ قَالُوۡا مَاۤ اَغۡنٰى عَنۡكُمۡ جَمۡعُكُمۡ وَمَا كُنۡتُمۡ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۴۸﴾

48	तुम तकब्बुर करते थे	और जो	तुम्हारा जत्था	तुम्हें	न फ़ाइदा दिया	वह कहेंगे	उन की पेशानी से

اَهٰٓؤُلَاۤءِ الَّذِيۡنَ اَقۡسَمۡتُمۡ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحۡمَةٍ ؕ

अपनी कोई रहमत	अल्लाह	उन्हें न पहुँचाएगा	तुम क़सम खाते थे	वह जो कि	क्या अब यह वही

اُدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡكُمۡ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ تَحۡزَنُوۡنَ ﴿۴۹﴾ وَنَادٰۤى

और पुकारेंगे	49	ग़मगीन होगे	तुम	और न	तुम पर	कोई ख़ौफ़	न	जन्नत	तुम दाख़िल हो जाओ

اَصۡحٰبُ النَّارِ اَصۡحٰبَ الۡجَنَّةِ اَنۡ اَفِيۡضُوۡا عَلَيۡنَا مِنَ الۡمَآءِ اَوۡ مِمَّا

उस से जो	या	पानी	से	हम पर	बहाओ (पहुँचाओ)	कि	जन्नत वाले	दोज़ख़ वाले

رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوۡۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ۙ﴿۵۰﴾ الَّذِيۡنَ

वह लोग जो	50	काफ़िर (जमा)	पर	उसे हराम कर दिया	बेशक अल्लाह	वह कहेंगे	अल्लाह	तुम्हें दिया

اتَّخَذُوۡا دِيۡنَهُمۡ لَهۡوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتۡهُمُ الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا ۚ فَالۡيَوۡمَ

पस आज	दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	और कूद	खेल	अपना दीन	उन्हों ने बना लिया

نَنۡسٰٮهُمۡ كَمَا نَسُوۡا لِقَآءَ يَوۡمِهِمۡ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوۡا بِاٰيٰتِنَا يَجۡحَدُوۡنَ ﴿۵۱﴾

51	इन्कार करते	हमारी आयतों से	और जैसे-थे	यह-इस	उन का दिन	मिलना	जैसे उन्हों ने भुलाया	हम उन्हें भुलादेंगे

और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि तहक़ीक़ हम ने पालिया जो हम से वादा किया था हमारे रब ने सच्चा, तुम से तुम्हारे रब ने जो वादा किया था क्या तुम ने भी पालिया सच्चा? वह कहेंगे हाँ! तो एक पुकारने वाला पुकारेगा उन के दरमियान कि (उन) ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत। (44)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में कजी तलाश करते थे, और वह आख़िरत के काफ़िर (मुन्किर) थे। (45)

और उन के दरमियान एक हिजाब (पर्दा) है, आराफ़ पर कुछ आदमी होंगे, वह हर एक को उस की पेशानी से पहचान लेंगे, और जन्नत वालों को पुकारेंगे कि सलाम हो तुम पर, वह (आराफ़ वाले) जन्नत में दाख़िल नहीं हुए, और वह उम्मीदवार हैं। (46)

और जब उन की निगाहें फिरेंगी दोज़ख़ वालों की तरफ़ तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिमों के साथ न कर। (47)

और पुकारेंगे आराफ़ वाले कुछ आदमियों को कि उन्हें उन की पेशानी से पहचान लेंगे, वह कहेंगे तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया तुम्हारे जत्थे ने और जिन पर तुम तकब्बुर करते थे। (48)

क्या अब यह वही लोग नहीं हैं कि तुम क़सम खाया करते थे कि अल्लाह उन्हें अपनी कोई रहमत न पहुँचाएगा, आज उन्हें से कहा गया कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, न तुम पर कोई ख़ौफ़ है न तुम ग़मगीन होगे। (49)

और दोज़ख़ वाले पुकारेंगे जन्नत वालों को कि हम पर (थोड़ा) पानी बहाओ (पहुँचाओ) या उस में से (कुछ) जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, वह कहेंगे बेशक अल्लाह ने यह काफ़िरों पर हराम कर दिया है। (50)

जिन्हों ने अपने दीन को खेल कूद बना लिया और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया, पस आज हम उन्हें भुलादेंगे जैसे उन्हों ने (आज के) इस दिन का मिलना फ़रामोश कर दिया था, और जैसे हमारी आयतों से इन्कार करते थे। (51)

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً

और रहमत	हिदायत	इल्म	पर	हम ने उसे तफ़सील से बयान किया	एक किताब	और अलबत्ता हम लाए उन के पास

لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِىْ

आएगा	जिस दिन	उस का कहना पूरा हो जाए	मगर (यही कि)	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	क्या	52	जो ईमान लाए हैं	लोगों के लिए

تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ

रसूल (जमा)	बेशक लाए	पहले से	उन्हों ने भुला दिया	वह लोग जो	कहेंगे	उस का कहा हुआ

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ

सो हम करें	या हम लौटाए जाएं	हमारी	कि सिफ़ारिश करें	सिफ़ारिश करने वाले	कोई	हमारे लिए	तो क्या हैं	हक़	हमारा रब

غَيْرَ الَّذِىْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا

जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानें	बेशक नुक़्सान किया उन्हों ने	हम करते थे	उस के ख़िलाफ़ जो

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ ع ٦ ١٣

आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जो-जिस	अल्लाह	तुम्हारा रब	बेशक	53	वह इफ़्तिरा करते (झूट घड़ते) थे

وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۘ يُغْشِى الَّيْلَ

रात	ढांकता है	अर्श	पर	क़रार फ़रमाया	फिर	दिन	छः (6)	में	और ज़मीन

النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ

मुसख़्ख़र	और सितारे	और चाँद	और सूरज	दौड़ता हुआ	उस के पीछे आता है	दिन

بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اُدْعُوْا

पुकारो	54	तमाम जहान	रब	बरकत वाला है अल्लाह	और हुक्म देना	पैदा करना	उस के लिए	याद रखो	उस का हुक्म

رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾ ۚ وَلَا تُفْسِدُوْا

और न फ़साद मचाओ	55	हद से गुज़रने वाले	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	और आहिस्ता	गिड़ गिड़ा कर	अपने रब को

فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ

अल्लाह की रहमत	बेशक	और उम्मीद रखते	डरते	और उसे पुकारो	उस की इस्लाह	बाद	ज़मीन में

قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ

हवाएं	भेजता है	जो-जिस	और वह	56	एहसान (नेकी) करने वाले	से	क़रीब

بُشْرًا ۢ بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا

भारी	बादल	उठा लाएं	जब	यहां तक कि	अपनी रहमत (बारिश)	आगे	बतौरे ख़ुशख़बरी

سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ

से	उस से	फिर हम ने निकाला	पानी	उस से	फिर हम ने उतारा	मुर्दा	किसी शहर की तरफ़	हम ने उन्हें हांक दिया

كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	ग़ौर करो	ताकि तुम	मुर्दे	हम निकालेंगे	इसी तरह	हर फल

और हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने तफ़सील से बयान किया इल्म (की बुन्याद) पर ईमान लाने वाले लोगों के लिए हिदायत और रहमत। (52)

क्या वह यही इन्तिज़ार कर रहे हैं कि उस का कहा हुआ पूरा हो जाए, जिस दिन उस का कहा हुआ हो जाएगा, तो वह लोग जिन्हों ने उसे पहले भुला दिया था वह कहेंगे, बेशक हमारे रब के रसूल हक़ बात लाए थे, तो क्या हमारे लिए कोई सिफ़ारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें, या हम (दुनिया) में लौटाए जाएं कि हम उस के ख़िलाफ़ अ़मल करें जो हम (पहले) करते थे, बेशक उन्हों ने अपनी जानों का (अपना) नुक़्सान किया, और उन से गुम हो गया जो वह झूट घड़ते थे। (53)

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मानो और ज़मीन छः दिन में बनाए, और फिर क़रार फ़रमाया अ़र्श पर, रात को दिन पर ढांक देता है, उस के पीछे (दिन) दौड़ता हुआ आता है, और सूरज और चाँद और सितारे उस के हुक्म से मुसख़्ख़र हैं, याद रखो उसी के लिए है पैदा करना और हुक्म देना, अल्लाह बरकत वाला है सारे जहानों का रब। (54)

अपने रब को पुकारो गिड़ गिड़ा कर और आहिस्ता से, बेशक वह हद से गुज़रने वालों को दोस्त नहीं रखता। (55)

और फ़साद न मचाओ ज़मीन में उस की इस्लाह के बाद, और उसे पुकारो डरते और उम्मीद रखते हुए, बेशक अल्लाह की रहमत क़रीब है नेकी करने वालों के। (56)

और वही है जो अपनी रहमत (बारिश) से पहले हवाएं बतौरे ख़ुशख़बरी भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी बादल उठा लाएं तो हम ने उन्हें किसी मुर्दा शहर की तरफ़ हांक दिया, फिर उस से पानी उतारा (बरसाया) फिर हम ने निकाले उस से हर क़िस्म के फल, इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम ग़ौर करो। (57)

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِىْ خَبُثَ

ना पाकीज़ा (ख़राब)	और वह जो	उस का रब	हुक्म से	उस का सबज़ह	निकलता है	पाकीज़ा	और ज़मीन

ع ٥ ١٤

لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	वह शुक्र अदा करते हैं	लोगों के लिए	आयतें	फेर फेर कर बयान करते हैं	इसी तरह	नाक़िस	मगर	नहीं निकलता

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	उस की क़ौम	तरफ़	नूह (अ)	अलबत्ता हम ने भेजा

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّىْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥٩﴾

59	एक बड़ा दिन	अज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	बेशक मैं	उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ

उस ने कहा	60	खुली	गुमराही	में	अलबत्ता तुझे देखते हैं	बेशक हम	उस की क़ौम	से	सरदार	बोले

يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾

61	सारे जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कुछ भी गुमराही	मेरे अन्दर	नहीं	ऐ मेरी क़ौम

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّىْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

62	तुम जानते	जो नहीं	अल्लाह (की तरफ़) से	और जानता हूँ	तुम्हें	और नसीहत करता हूँ	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ

तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि	क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ

لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ

तो हम ने उसे बचा लिया	पस उन्हों ने उसे झुटलाया	63	रहम किया जाए	और ताकि तुम पर	और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो	ताकि वह डराए तुम्हें

وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ

हमारी आयतें	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो	और हम ने ग़र्क़ कर दिया	कश्ती में	उस के साथ	और जो लोग

٨ ع ٦ ١٥

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ

उस ने कहा	हूद (अ)	उन के भाई	आद	और तरफ़	64	अन्धे	लोग	थे	बेशक वह

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

65	तो क्या तुम नहीं डरते	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ

में	अलबत्ता हम तुझे देखते हैं	उस की क़ौम	से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	सरदार	बोले

سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يٰقَوْمِ

ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	66	झूटे	से	और हम बेशक तुझे गुमान करते हैं	बेवक़ूफ़ी

لَيْسَ بِىْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

67	तमाम जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कोई बेवक़ूफ़ी	मुझ में	नहीं

और पाकीज़ा ज़मीन से उस का सबज़ह उस के रब के हुक्म से (पाकीज़ा ही) निकलता है, और जो ख़राब है उस से नहीं निकलता मगर नाक़िस, उसी तरह हम शुक्र गुज़ार लोगों के लिए आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं। (58)

अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, बेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से। (59)

उस की क़ौम के सरदार बोलेः हम तुझे खुली गुमराही में देखते हैं। (60)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! मेरे अन्दर कुछ भी गुमराही (की बात) नहीं लेकिन मैं भेजा हुआ (रसूल) हूँ सारे जहानों के रब की तरफ़ से। (61)

मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हें नसीहत करता हूँ और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (62)

क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर आई ताकि वह तुम्हें डराए, और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो, और ताकि तुम पर रहम किया जाए। (63)

पस उन्हों ने उसे झुटलाया तो हम ने उसे और उन लोगों को जो कश्ती में उस के साथ थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें हम ने ग़र्क़ कर दिया, बेशक वह लोग (हक़ शनासी से) अन्धे थे। (64)

और आद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई हूद (अ) को, और उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (65)

उस की क़ौम के काफ़िर सरदार बोले अलबत्ता हम तुझे देखते हैं बेवक़ूफ़ी में और हम बेशक तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (66)

उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! मुझ में बेवक़ूफ़ी (की कोई बात) नहीं, लेकिन मैं तमाम जहानों के रब का भेजा हुआ (रसूल) हूँ। (67)

मैं तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह, अमीन हूँ। (68)

क्या तुम्हें तअ़ज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास आई तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर ताकि वह तुम्हें डराए, और तुम याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे नूह (अ) के बाद जांनशीन बनाया, और तुम्हें ज़ियादा दिया जिस्म में फैलाओ (डेल डोल), सो अल्लाह की नेमतें याद करो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी) पाओ। (69)

वह बोले, क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हम अल्लाह वाहिद की इबादत करें और छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप दादा पूजते थे, तो ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू सच्चे लोगों में से है। (70)

उस ने कहा अलबत्ता तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से पड़ गया अ़ज़ाब और ग़ज़ब, क्या तुम मुझ से उन नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, नहीं नाज़िल की अल्लाह ने उस के लिए कोई सनद, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (71)

तो हम ने उस को बचा लियो और उन को जो उस के साथ थे अपनी रहमत स, और हम ने उन लोगों की जड़ काट दी जिन्हें ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह न थे ईमान लाने वाले। (72)

और समूद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई सालेह (अ) को, उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हरा उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी आ चुकी है, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, सो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए, और उसे बुराई से हाथ न लगाओ वरना तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब पकड़ लेगा। (73)

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾ اَوَعَجِبْتُمْ

क्या तुम्हें तअ़ज्जुब हुआ	68	अमीन	ख़ैर ख़्वाह	तुम्हारा	और मैं	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं तुम्हें पहुँचाता हूँ

اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ط

ताकि वह तुम्हें डराए	तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ

और तुम्हें ज़ियादा दिया	क़ौमे नूह	बाद	जांनशीन	उस ने तुम्हें बनाया	जब	और तुम याद करो

فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	फ़लाह (कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	अल्लाह की नेमतें	सो याद करो	फैलाओ	ख़ल्क़त (जिस्म)	में

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ

पूजते थे	जो-जिस	और हम छोड़ दें	वाहिद (अकेले)	अल्लाह	कि हम इबादत करें	क्या तू हमारे पास आया	वह बोले

اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

70	सच्चे लोग	से	तू है	अगर	जिस का हम से वादा करता है	तो ले आ हम पर	हमारे बाप दादा

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ط

और ग़ज़ब	अ़ज़ाब	तुम्हारा रब	से	तुम पर	अलबत्ता पड़ गया	उस ने कहा

اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا

नहीं	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तुम ने उन के रख लिए हैं	नाम (जमा)	में	क्या तुम झगड़ते हो मुझ से

نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ط فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ

से	तुम्हारे साथ	बेशक मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	सनद	कोई	उस के लिए	अल्लाह ने नाज़िल की

الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا

अपनी	रहमत से	उस के साथ थे	और वह लोग जो	तो हम ने उसे नजात दी (बचा लिया)	71	इन्तिज़ार करने वाले

وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾ ع ٩ ٨ ١٦

72	ईमान लाने वाले	और न थे	हमारी आयात	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो	जड़	और हम ने काट दी

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وقف لازم

तुम अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद	और तरफ़

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ط قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ط

तुम्हारा रब	से	निशानी	तहक़ीक़ आ चुकी तुम्हारे पास	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं

هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ

में	कि खाए	सो उसे छोड़ दो	एक निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊँटनी	यह

اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

73	दर्दनाक	अ़ज़ाब	वरना पकड़ लेगा तुम्हें	बुराई से	उसे हाथ लगाओ	और न	अल्लाह की ज़मीन

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ

और तुम याद करो	जब	तुम्हें बनाया उस ने	जांनशीन	बाद	आ़द	और तुम्हें ठिकाना दिया

فِى الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ

में	ज़मीन	बनाते हो	से	उस की नर्म जगह	महल (जमा)	और तराशते हो

الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ

पहाड़	मकानात	सो याद करो	अल्लाह की नेमतें	और न फिरो	ज़मीन (मुल्क) में

مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ

फ़साद करने वाले (फ़साद करते)	74	बोले	सरदार	वह जिन्हों ने	तकब्बुर किया (मुतकब्बिर)	से	उस की क़ौम

لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا

उन लोगों से	ज़ईफ़ (कमज़ोर) बनाए गए	उन से जो	ईमान लाए	उन से	क्या तुम जानते हो	कि	सालेह (अ)

مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾

भेजा हुआ	से	अपना रब	उन्हों ने कहा	बेशक हम	उस पर जो	उस के साथ भेजा गया	ईमान रखते हैं	75

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ

बोले	वह जिन्हों ने	तकब्बुर किया	हम	वह जिस पर	तुम ईमान लाए उस पर

كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ

कुफ़्र करने वाले (मुन्किर)	76	उन्हों ने कूचें काट दीं	ऊँटनी	और सरकशी की	से	हुक्म	अपना रब

وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ

और बोले	ऐ सालेह (अ)	ले आ	जिस का तू हम से वादा करता है	अगर	तू है	से

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ

रसूल (जमा)	77	पस उन्हें आ पकड़ा	ज़ल्ज़ला	तो रह गए	में	अपने घर

جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ

औन्धे	78	फिर मुँह फेरा	उन से	और कहा	ऐ मेरी क़ौम	तहक़ीक़ मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया

رِسَالَةَ رَبِّىْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

पैग़ाम	अपना रब	और ख़ैर ख़ाही की	तुम्हारी	और लेकिन	तुम पसन्द नहीं करते	ख़ैर ख़ाह (जमा)	79

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ

और लूत (अ)	जब	कहा	अपनी क़ौम से	क्या आते हो बेहयाई के पास (बेहयाई करते हो)	जो तुम से पहले नहीं की

بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

ऐसी	किसी ने	से	सारे जहान	80	बेशक तुम	जाते हो	मर्द (जमा)

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

शहवत से	अ़लावा (छोड़ कर)	औरतें	बल्कि	तुम	लोग	हद से गुज़र जाने वाले	81

और याद करो जब तुम्हें आ़द के बाद जांनशीन बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, बनाते हो उस की नर्म जगह में महल और तराशते हो पहाड़ों के मकानात, सो अल्लाह की नेमतें याद करो, और मुल्क में फ़साद मचाते न फिरो। (74)

सरदार बोले उन की क़ौम के जो मुतकब्बिर थे, उन ग़रीब लोगों से जो उन में से ईमान ला चुके थे: क्या तुम जानते हो कि सालेह (अ) अपने रब की तरफ़ से भेजा हुआ है (रसूल है), उन्हों ने कहा बेशक वह जो कुछ दे कर भेजा गया है हम उस पर ईमान रखते हैं। (75)

वह जिन्हों ने तकब्बुर किया (सरदार) बोले तुम जिस पर ईमान लाए हो हम उस के मुन्किर हैं। (76)

उन्हों ने ऊँटनी की कूचें काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह (अ)! ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू रसूलों में से है। (77)

पस ज़ल्ज़ले ने उन्हें आ पकड़ा तो अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (78)

फिर (सालहे (अ) ने उन से मुँह फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैं ने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाया और तुम्हारी ख़ैर ख़ाही की, लेकिन तुम ख़ैर ख़ाहों को पसन्द नहीं करते। (79)

लूत (अ) (को भेजा) जब उस ने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम वह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले सारे जहान में किसी ने नहीं की। (80)

बेशक तुम मर्दों के पास शहवत से जाते हो औ़रतों को छोड़ कर, बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। (81)

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ

उन्हें निकाल दो	उन्हों ने कहा	यह कि	मगर	उस की क़ौम	जवाब	था	और न

مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

हम ने नजात दी उस को	82	पाकीज़गी चाहते हैं	यह लोग	बेशक	अपनी बस्ती	से

وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاَمْطَرْنَا

और हम ने बारिश बरसाई	83	पीछे रहने वाले	से	वह थी	उस की बीवी	मगर	और उस के घर वाले

عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ ع ١٠ ١٢ ١٧

84	मुजरिमीन	अन्जाम	हुआ	कैसा हुआ	पस देखो	एक बारिश	उन पर

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	शुऐब (अ)	उन के भाई	मदयन	और तरफ़

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ

से	एक दलील	तहक़ीक़ पहुँच चुकी तुम्हारे पास	उस के सिवा	कोई माबूद	से	नहीं तुम्हारा

رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

लोग	और न घटाओ	और तोल	नाप	पस पूरा करो	तुम्हारा रब

اَشْيَاۗءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ۭ

उस की इस्लाह	बाद	ज़मीन (मुल्क) में	फ़साद मचाओ	और न	उन की अशिया

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ ۚ وَلَا تَقْعُدُوْا

बैठो	और न	85	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह

بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	और तुम रोको	तुम डराओ	रास्ता	हर

مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ

तुम थे	जब	और याद करो	कजी	और ढूँडो उस में	उस पर	ईमान लाया	जो

قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۡ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

अन्जाम	हुआ	कैसा	और देखो	तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया	थोड़े

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَاۗىِٕفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا

ईमान लाया	तुम से	एक गिरोह	है	और अगर	86	फ़साद करने वाले

بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَاۗىِٕفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا

तुम सब्र कर लो	ईमान नहीं लाया	और एक गिरोह	जिस के साथ	मैं भेजा गया	उस पर जो

حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

87	फ़ैसला करने वाला	बेहतर	और वह	हमारे दरमियान	फ़ैसला कर दे अल्लाह	यहां तक कि

और उस की क़ौम का जवाब न था मगर यह कि उन्हों ने कहाः उन्हें (लूत (अ) को) अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग पाकीज़गी चाहते हैं। (82)

सो हम ने नजात दी उस को और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीवी के जो पीछे रह जाने वालों में से थी। (83)

और हम ने उन पर (पत्थरों की) एक बारिश बरसाई, पस देखो मुजरिमों का कैसा अन्जाम हुआ? (84)

और हम नें मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (को भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास एक दलील पहुँच चुकी है तुम्हारे रब (की तरफ़) से, पस नाप और तोल पूरा करो और लोगों की अशिया न घटाओ, (घटा कर न दो) और मुल्क में इस्लाह के बाद फ़साद न (मचाओ), तुम्हारे लिए यह बेहतर है अगर तुम ईमान वाले हो। (85)

और हर रास्ते पर न बैठो कि तुम (राहगीरों को) डराओ और उसे अल्लाह के रास्ते से रोको जो उस पर ईमान लाया, और उस में कजी ढूँडो, और याद करो जब तुम थोड़े थे तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया, और देखो! फ़साद करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? (86)

और अगर तुम में एक गिरोह है जो उस पर ईमान लाया जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह (है जो) ईमान नहीं लाया तो तुम सब्र करो यहां तक कि फ़ैसला कर दे अल्लाह हमारे दरमियान, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (87)

الجزء ٩

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ

हम तुझे ज़रूर निकाल देंगे	उस की क़ौम	से	तकब्बुर करते थे (बड़े बनते थे)	वह जो कि	सरदार	बोले

يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ

हमारे दीन	में	या यह कि तुम लौट आओ	हमारी बस्ती	से	तेरे साथ	ईमान लाए	और वह जो	ऐ शुऐब (अ)

قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا

हम लौट आएं	अगर	झूटा	अल्लाह पर	अलबत्ता हम ने बुहतान बान्धा (बान्धेंगे)	88	नापसन्द करते हों	हम हों	क्या ख़ाह	उस ने कहा

فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ

उस में	कि हम लौट आएं	हमारे लिए	और नहीं है	उस से	हम को बचा लिया अल्लाह	जब	बाद	तुम्हारा दीन	में

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	इल्म में	हर शै	हमारा रब	अहाता कर लिया है	हमारा रब	अल्लाह	यह कि चाहे	मगर

تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ

बेहतर	और तू	हक़ के साथ	हमारी क़ौम	और दरमियान	हमारे दरमियान	फ़ैसला कर दे	हमारा रब	हम ने भरोसा किया

الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ

तुम ने पैरवी की	अगर	उस की क़ौम	से	कुफ़्र किया	वह जिन्हों ने	सरदार	और बोले	89	फ़ैसला करने वाला

شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا

सुब्ह के वक़्त रह गए	ज़ल्ज़ला	तो उन्हें आ लिया	90	ख़सारे में होंगे	उस सूरत में	तो तुम ज़रूर	शुऐब (अ)

ع ٤ مع ١٢ عند المتقدمين

فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا

न बस्ते थे	गोया	शुऐब (अ)	झुटलाया	वह जिन्हों ने	91	औन्धे पड़े	अपने घर	में

فِيْهَا ۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى

फिर मुहँ फेरा	92	ख़सारा पाने वाले	वही	वह हुए	शुऐब	झुटलाया	वह जिन्हों ने	उस में वहां

عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ

तुम्हारी	और ख़ैर ख़ाही की	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं ने पहुँचा दिए तुम्हें	अलबत्ता	ऐ मेरी क़ौम	और कहा	उन से

ع ١١ ١

فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ

नबी	कोई	किसी बस्ती	में	और न भेजा हम ने	93	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	ग़म खाऊँ	तो कैसे

اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾

94	आजिज़ी करें	ताकि वह	और तक्लीफ़	सख़्ती में	वहां के लोग	हम ने पकड़ा	मगर

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ

पहुँच चुकी है	और कहने लगे	वह बढ़ गए	यहां तक कि	भलाई	बुराई	जगह	हम ने बदली	फिर

اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾

95	बेख़बर थे	और वह	अचानक	पस हम ने उन्हें पकड़ा	और ख़ुशी	तक्लीफ़	हमारे बाप दादा

उस की क़ौम के वह सरदार जो बड़े बनते थे बोले ऐ शुऐब (अ)! हम ज़रूर निकाल देंगे तुझे और उन्हें जो तेरे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से या यह कि तुम हमारे दीन में लौट आओ, फ़रमाया ख़ाह हम नापसन्द करते हों (फिर भी?)। (88)

अलबत्ता हम अल्लाह पर झूटा बुहतान बान्धेंगे अगर हम उस के बाद तुम्हारे दीन में लौट आएं जबकि अल्लाह ने हमें उस से बचा लिया है और हमारा काम नहीं कि हम उस में लौट आएं मगर यह कि अल्लाह हमारा रब चाहे, हमारे रब ने अपने इल्म में हर शै का अहाता कर लिया है, हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! फ़ैसला कर दे हमारे दरमियान और हमारी क़ौम के दरमियान हक़ के साथ और तू बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (89)

और वह सरदार बोले जिन्हों ने कुफ़्र किया उस की क़ौम के, अगर तुम ने शुऐब (अ) की पैरवी की तो उस सूरत में तुम ख़ुद ख़सारे में होगे। (90)

तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया, पस वह सुब्ह के वक़्त अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (91)

जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया (वह ऐसे मिटे) गोया (कभी) बस्ते न थे वहां। जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया वही ख़सारा पाने वाले हुए। (92)

फिर उन से उस ने मुहँ फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचा दिए और तुम्हारी ख़ैर ख़ाही कर चुका तो (अब) काफ़िर क़ौम पर कैसे ग़म खाऊँ? (93)

और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर हम ने वहां के लोगों को सख़्ती में पकड़ा और तक्लीफ़ में ताकि वह आजिज़ी करें। (94)

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई से बदली यहां तक कि वह बढ़ गए और कहने लगे तक्लीफ़ और ख़ुशी हमारे बाप दादा को पहुँच चुकी है, पस हम ने उन्हें अचानक पकड़ा और वह बेख़बर थे। (95)

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ

बरकतें	उन पर	तो अलबत्ता हम खोल देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	बस्तियों वाले	यह होता कि	और अगर

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا

उस के नतीजे में	तो हम ने उन्हें पकड़ा	उन्हों ने झुटलाया	और लेकिन	और ज़मीन	आस्मान	से

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ

उन पर आए	कि	बस्तियों वाले	क्या बेख़ौफ़ हैं	96	जो वह करते थे

بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ

कि	बस्तियों वाले	क्या बेख़ौफ़ हैं	97	सोए हुए हों	और वह	रातों रात	हमारा अ़ज़ाब

يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह की तदबीर	क्या वह बेख़ौफ़ हो गए	98	खेल कूद रहे हों	और वह	दिन चढ़े	हमारा अ़ज़ाब	उन पर आ जाए

ع ١٢ ٦ ٢ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ

हिदायत मिली	क्या न	99	ख़सारा उठाने वाले	लोग	मगर	अल्लाह की तदबीर	बेख़ौफ़ नहीं होते

لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ

अगर हम चाहते	कि	वहां के रहने वाले	बाद	ज़मीन	वारिस हुए	वह लोग जो

اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100	नहीं सुनते हैं	सो वह	उन के दिल	पर	और हम मुहर लगाते हैं	उन के गुनाहों के सबब	तो हम उन पर मुसीबत डालते

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ

आए उन के पास	और अलबत्ता	उन की कुछ ख़बरें	से	तुम पर	हम बयान करते हैं	बस्तियां	यह

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ

उस से पहले	उन्हों ने झुटलाया	क्योंकि	वह ईमान लाते	सो न	निशानियां ले कर	उन के रसूल

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا

हम ने पाया	और न	101	काफ़िर (जमा)	दिल (जमा)	पर	मुहर लगाता है अल्लाह	इसी तरह

لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102	नाफ़रमान-बद किर्दार	उन में अक्सर	हम ने पाए	और दरहक़ीक़त	अ़हद का पास	उन के अक्सर में

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

और उसके सरदार	तरफ़ फ़िरऔन	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर

فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

103	फ़साद करने वाले	अन्जाम	हुआ	क्या	सो तुम देखो	उन का	तो उन्हों ने ज़ुल्म (इन्कार) किया

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

104	तमाम जहान	रब	से	रसूल	बेशक मैं	ऐ फ़िरऔन	मूसा	और कहा

और अगर बस्तियों वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी इख़्तियार करते तो अलबत्ता हम उन पर बरकतें खोल देते ज़मीन और आस्मान से, लेकिन उन्हों ने झुटलाया तो हम ने उन्हें पकड़ा उस के नतीजे में जो वह करते थे। (96)

क्या अब बे ख़ौफ़ हैं बस्तियों वाले कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रातों रात आ जाए और वह सोए हुए हों। (97)

क्या बस्तियों वाले उस से बे ख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन चढ़े आ जाए और वह खेल कूद रहे हों। (98)

क्या वह अल्लाह की तदबीर से बे ख़ौफ़ हो गए? सो बे ख़ौफ़ नहीं होते अल्लाह की तदबीर से मगर ख़सारा उठाने वाले। (99)

क्या उन लोगों को हिदायत न मिली जो ज़मीन के वारिस हुए वहां के रहने वालों के बाद, अगर हम चाहते तो उन के गुनाहों के सबब उन पर मुसीबत डालते, और हम उन के दिलों पर मुहर लगाते हैं, सो वह सुनते नहीं। (100)

यह बस्तियां हैं जिन की ख़बरें हम तुम पर बयान करते हैं, और अलबत्ता उन के पास आए उन के रसूल निशानियां ले कर, सो वह ईमान न लाए क्योंकि उस से पहले उन्हों ने झुटलाया था, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता है। (101)

और हम ने उन के अक्सर में अ़हद का कोई पास न पाया और दरहक़ीक़त हम ने उन में अक्सर नाफ़रमान बद किर्दार पाए। (102)

फिर हम ने उन के बाद मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन की तरफ़ और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्हों ने उन (निशानियों का) इन्कार किया, सो तुम देखो फ़साद करने वालों का अन्जाम क्या हुआ? (103)

और कहा मूसा (अ) ने, ऐ फ़िरऔन! बेशक मैं तमाम जहानों के रब की तरफ़ से रसूल हूँ। (104)

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ

तहक़ीक़ तुम्हारे पास लाया हूँ निशानियां	मगर हक़	अल्लाह पर	मैं न कहूँ	कि	पर	शायां

مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ

तू	अगर	बोला	105	बनी इस्राईल	मेरे साथ	पस भेज दे	तुम्हारा रब	से

جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ

अपना असा	पस उस ने डाला	106	सच्चे	से	अगर तू है	तो वह ले आ	लाया है कोई निशानी

فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ

नूरानी	पस नागाह वह	अपना हाथ	और निकाला	107	सरीह (साफ़)	अज़दहा	पस वह अचानक

١٣ ع ٩ ٣ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ

यह जादूगर	बेशक	फ़िरऔन	क़ौम	से	सरदार	बोले	108	नाज़िरीन के लिए

عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾

110	कहते हो	तो अब क्या	तुम्हारी सरज़मीन	से	तुम्हें निकाल दे	कि	चाहता है	109	इल्म वाला (माहिर)

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾ يَاْتُوْكَ

तेरे पास ले आएं	111	इकटठा करने वाले (नक़ीब)	शहरों में	और भेज	और उस का भाई	रोक ले	वह बोले

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا

कोई अजर (इन्आम)	हमारे लिए	यक़ीनन	वह बोले	फ़िरऔन	जादूगर (जमा)	और आए	112	इल्म वाला (माहिर)	जादूगर	हर

اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿١١٤﴾

114	मुक़र्रबीन	अलबत्ता-से	और तुम बेशक	हाँ	उस ने कहा	113	ग़ालिब (जमा)	हम	हुए	अगर

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿١١٥﴾

115	डालने वाले	हम	हों	यह कि	और या (वरना)	तू डाल	यह कि	या	ऐ मूसा (अ)	वह बोले

قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ

और उन्हें डराया	लोग	आँखें	सिहर कर दिया	उन्हों ने डाला	पस जब	तुम डालो	कहा

وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ

अपना असा	डालो	कि	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी	116	बड़ा	और वह लाए जादू

فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا

जो	और बातिल हो गया	हक़	पस साबित हो गया	117	जो उन्हों ने ढकोस्ला बनाया था	निगलने लगा	वह	तो नागाह

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

119	ज़लील	और लौटे	वहीं	पस मग़लूब हो गए	118	वह करते थे

وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢١﴾

121	तमाम जहान (जमा)	रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	120	सिज्दा करने वाले	जादूगर	और गिर गए

शायां है कि मैं न कहूँ अल्लाह पर मगर हक़, तहक़ीक़ मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियां लाया हूँ, पस मेरे साथ बनी इस्राईल को भेज दे। (105)

बोला अगर तू कोई निशानी लाया है तो वह ले आ, अगर तू सच्चों में से है। (106)

पस उस (मूसा अ) ने डाला अपना असा, पस अचानक वह साफ़ अज़दहा हो गया। (107)

और अपना हाथ (गरेबान) से निकाला तो नागाह वह नाज़िरीन के लिए नूरानी हो गया। (108)

फ़िरऔन की क़ौम के सरदार बोले बेशक यह तो माहिर जादूगर है। (109)

चाहता है कि तुम्हें निकाल दे तुम्हारी सरज़मीन से, तो अब क्या कहते हो (क्या मश्वरा है)? (110)

वह बोले उस को और उस के भाई को रोक ले और शहरों में भेज दे नक़ीब। (111)

तेरे पास हर माहिर जादूगर ले आएं। (112)

और जादूगर फ़िरऔन के पास आए, वह बोले यक़ीनन हमारे लिए कोई इन्आम हो गा अगर हम ग़ालिब हुए। (113)

उस ने कहा हाँ! तुम बेशक (मेरे) मुक़र्रबीन में से होगे। (114)

वह बोले, ऐ मूसा (अ)! या तू डाल वरना हम डालने वाले हैं। (115)

(मूसा अ) ने कहा तुम डालो, पस जब उन्हों ने डाला लोगों की आँखों पर सिहर कर दिया और उन्हें डराया और वह बड़ा जादू लाए थे। (116)

और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि अपना असा डालो, नागाह वह निगलने लगा जो ढकोस्ला उन्हों ने बनाया था। (117)

पस हक़ साबित हो गया और वह जो करते थे बातिल हो गया। (118)

पस वह वहीं मग़लूब हो गए और लौटे ज़लील हो कर। (119)

और जादूगर सिज्दे में गिर गए, (120)

वह बोले कि हम तमाम जहानों के रब पर ईमान ले आए। (121)

(यानी) मूसा (अ) और हारून (अ) के रब पर। (122)

फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान ले आए इस से क़ब्ल कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? बेशक यह एक चाल है कि शहर में तुम ने चली है ताकि उस के रहने वालों को यहां से निकाल दो, तुम जल्द (उस का नतीजा) मालूम कर लोगे। (123)

मैं ज़रूर काट डालूँगा तुम्हारे (एक तरफ़ के) हाथ और दूसरी तरफ़ के पाऊँ, फिर मैं तुम सब को ज़रूर सूली दूँगा। (124)

वह बोले बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। (125)

और तुझ को हम से दुश्मनी नहीं मगर सिर्फ़ यह कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वह हमारे पास आ गईं, ऐ हमारे रब! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें मौत दे (उस हाल में कि हम) मुसलमान हों। (126)

और सरदार बोले फ़िरऔन की क़ौम के, क्या तू मूसा (अ) और उस की क़ौम को छोड़ रहा है कि वह ज़मीन में फ़साद करें और वह (मूसा अ) तुझे छोड़ दे और तेरे माबूदों को, उस ने कहा हम अनक़रीब उन के बेटों को क़त्ल कर डालेंगे और बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देंगे, और हम उन पर ज़ोर आवर हैं। (127)

मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो, बेशक ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिस को चाहता है उस का वारिस बना देता है, और अन्जाम कार परहेज़गारों के लिए है। (128)

वह बोले हम अज़ीयत दिए गए इस से क़ब्ल कि आप हम में आए और उस के बाद कि आप हम में आए, (मूसा (अ) ने) कहा क़रीब है तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (नाइब) बना दे, फिर देखेगा तुम कैसे काम करते हो। (129)

और अलबत्ता हम ने पकड़ा फ़िरऔन वालों को क़हतों में और फलों के नुक़सान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (130)

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ

कि	पहले	उस पर	क्या तुम ईमान लाए	फ़िरऔन	बोला	122	और हारून	मूसा (अ)	रब

اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ

यहां से	ताकि निकाल दो	शहर	में	जो तुम ने चली	एक चाल है	यह	बेशक	मैं इजाज़त दूँ तुम्हें

اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

और तुम्हारे पाऊँ	तुम्हारे हाथ	मैं ज़रूर काट डालूँगा	123	तुम मालूम कर लोगे	पस जल्द	उस के रहने वाले

مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا

अपना रब	तरफ़	बेशक हम	वह बोले	124	सब को	मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	फिर	दूसरी तरफ़	से

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا

जब	अपना रब	निशानियां	हम ईमान लाए	यह कि	मगर	हम से	तुझ को दुश्मनी	और नहीं	125	लौटने वाले

جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ ع ١٤ ١٨ ٤

और बोले	126	मुसलमान (जमा)	और हमें मौत दे	सब्र	हम पर	दहाने खोल दे	हमारा रब	वह हमारे पास आए

الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا

ताकि वह फ़साद करें	और उस की क़ौम	मूसा	क्या तू छोड़ रहा है	फ़िरऔन	क़ौम	से (के)	सरदार

فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

उन के बेटे	हम अनक़रीब क़त्ल कर देंगे	उस ने कहा	और तेरे माबूद	और वह छोड़ दे तुझे	ज़मीन	में

وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوْسٰى

मूसा (अ)	कहा	127	ज़ोर आवर (जमा)	उन पर	और हम	उन की औरतें (बेटियां)	और ज़िन्दा छोड़ देंगे

لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ قف

अल्लाह की	ज़मीन	बेशक	और सब्र करो	अल्लाह से	तुम मदद मांगो	अपनी क़ौम से

يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

128	परहेज़गारों के लिए	और अन्जाम कार	अपने बन्दे	से	चाहता है	जिस	वह उस का वारिस बनाता है

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ

आप आए हम में	और बाद	आप (अ) हम में आते	कि	क़ब्ल	से	हम अज़ीयत दिए गए	वह बोले

قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى

में	और तुम्हें ख़लीफ़ा बना दे	तुम्हारा दुश्मन	हलाक कर दे	कि	तुम्हारा रब	क़रीब है	उस ने कहा

الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ ع ١٥ ٣ ٥

हम ने पकड़ा	और अलबत्ता	129	तुम काम करते हो	कैसे	फिर देखेगा	ज़मीन

اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

130	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	फल (जमा)	से (में)	और नुक़सान	क़हतों में	फ़िरऔन वाले

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ

कोई बुराई	पहुँचती	और अगर	यह	हमारे लिए	वह कहने लगे	भलाई	आई उन के पास	फिर जब

يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۭ اَلَآ اِنَّمَا طٰۗىِٕرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ

अल्लाह के पास	उन की बदनसीबी	इस के सिवा नहीं	याद रखो	और जो उन के साथ (साथी)	मूसा से	बदशगूनी लेते

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ١٣١ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ

हम पर तू लाएगा	जो कुछ	और वह कहने लगे	131	नहीं जानते	उन के अक्सर	और लेकिन

مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ١٣٢ فَاَرْسَلْنَا

फिर हम ने भेजे	132	ईमान लाने वाले	तुझ पर	हम	तो नहीं	उस से	कि हम पर जादू करे	कैसी भी निशानी

عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ

निशानियां	और खून	और मेंडक	और जुएं-चच्ड़ी	और टिड्डी	तूफ़ान	उन पर

مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ١٣٣ وَلَمَّا

और जब	133	मुजरिम (जमा)	एक क़ौम (लोग)	और वह थे	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	जुदा जुदा

وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ

अ़हद	सबब-जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	ऐ मूसा	कहने लगे	अ़ज़ाब	उन पर	वाक़े हुआ

عِنْدَكَ ۚ لَىِٕنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ

और हम ज़रूर भेज देंगे	तुझ पर	हम ज़रूर ईमान लाएंगे	अ़ज़ाब	हम से	तू ने खोल दिया (उठा लिया)	अगर	तेरे पास

مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ١٣٤ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ

अ़ज़ाब	उन से	हम ने खोल दिया (उठा लिया)	फिर जब	134	बनी इस्राईल	तेरे साथ

اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ١٣٥ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ

उन से	फिर हम ने इन्तिक़ाम लिया	135	अ़हद तोड़ देते	वह	उसी वक़्त	उस तक पहुँचना था	उन्हें	एक मुद्दत तक

فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا

उन से	और वह थे	हमारी आयतों को	झुटलाया	क्योंकि उन्हों	दर्या में	पस उन्हें ग़र्क़ कर दिया

غٰفِلِيْنَ ١٣٦ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ

कमज़ोर समझे जाते	थे	वह जो	क़ौम	और हम ने वारिस किया	136	ग़ाफ़िल (जमा)

مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ

वादा	और पूरा हो गया	उस में	हम ने बरकत रखी	वह जिस	और उस के मग़रिब (जमा)	ज़मीन	मशरिक़ (जमा)

رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰي بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ۭ وَدَمَّرْنَا

और हम ने बरबाद कर दिया	उन्हों ने सब्र किया	बदले में	बनी इस्राईल	पर	अच्छा	तेरा रब

مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ١٣٧

137	वह ऊँचा फैलाते थे	और जो	और उस की क़ौम	फ़िरऔन	बनाते थे (बनाया था)	जो

जब उन के पास आई भलाई तो वह कहने लगे यह हमारे लिए है, और कोई बुराई पहुँचती तो मूसा (अ) और उन के साथियों से बदशगूनी (बद नसीबी) लेते, याद रखो! इस के सिवा नहीं कि उन की बदनसीबी अल्लाह के पास है, लेकिन उन के अक्सर नहीं जानते। (131)

और वह कहने लगे तू हम पर कैसी भी निशानी लाएगा कि उस से हम पर जादू करे तो (भी) हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। (132)

फिर हम ने उन पर भेजे तूफ़ान, और टिड्डी, और जुएं, और मेंडक, और खून, जुदा जुदा निशानीयां, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह मुजरिम क़ौम के लोग थे। (133)

और जब उन पर अ़ज़ाब वाक़े हुआ तो कहने लगे कि ऐ मूसा (अ)ः तू हमारे लिए दुआ कर अपने रब से (अल्लाह के) उस अ़हद के सबब जो तेरे पास है, अगर तू ने हम से अ़ज़ाब उठा लिया तो हम ज़रूर तुझ पर ईमान ले आएंगे और बनी इस्राईल को तेरे साथ ज़रूर भेज देंगे। (134)

फिर जब हम ने उन से अ़ज़ाब उठा लिया एक मुद्दत तक (जिसे आख़िर कार) उन्हें पहुँचना था, उसी वक़्त वह अ़हद तोड़ देते। (135)

फिर हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और उन्हें दर्या में ग़र्क़ कर दिया क्योंकि उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह उन से ग़ाफ़िल थे। (136)

और हम ने उस क़ौम को वारिस कर दिया जो कमज़ोर समझे जाते थे, (उस) ज़मीन के मशरिक़ ओ मग़रिब का जिस में हम ने बरकत रखी है (सर ज़मीने फ़लसतीन ओ शाम), और बनी इस्राईल पर तेरे रब का वादा पूरा हो गया उस के बदले में कि उन्हों ने सब्र किया, और हम ने बरबाद कर दिया जो फ़िरऔन और उस की क़ौम ने बनाया था और जो वह ऊँचा फैलाते थे (उन के बुलन्द ओ बाला महल्लात)। (137)

ع

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ

जमे बैठे थे	एक क़ौम	पर (पास)	पस वह आए	बहरे (कुलज़ुम)	बनी इस्राईल को	और हम ने पार उतारा

عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ

उन के लिए	जैसे	बुत	हमारे लिए	बना दे	ऐ मूसा (अ)	वह बोले	अपने	सनम (जमा) बुत	पर

اٰلِهَةٌ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ١٣٨ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ

वह	जो	तबाह होने वाली है	यह लोग	बेशक	138	जहल करते हो	तुम लोग	बेशक तुम	उस ने कहा	माबूद (जमा) बुत

فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ١٣٩ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ

तलाश करूँ तुम्हारे लिए	क्या अल्लाह के सिवा	उस ने कहा	139	वह कर रहे हैं	जो	और बातिल	उस में

اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ١٤٠ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ

से	हम ने तुम्हें नजात दी	और जब	140	सारे जहान	पर	फ़ज़ीलत दी तुम्हें	हालांकि वह	कोई माबूद

اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ

तुम्हारे बेटे	मार डालते थे	अज़ाब	बुरा	तुम्हें तक्लीफ़ देते थे	फ़िरऔन वाले

ع ١٦ ١٢ ٦

وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ١٤١ ع

141	बड़ा-बड़ी	तुम्हारा रब	से	आज़माइश	और उस में तुम्हारे लिए	तुम्हारी औरतें (बेटियां)	और जीता छोड़ देते थे

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ

तो पूरी हुई	दस (10) से	और उस को हम ने पूरा किया	रात	तीस (30)	मूसा (अ)	और हम ने वादा किया

مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ

अपने भाई से	मूसा	और कहा	रात	चालीस (40)	उस का रब	मुद्दत

هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ

रास्ता	और न पैरवी करना	और इस्लाह करना	मेरी क़ौम में	मेरा ख़लीफ़ा (नाइब) रह	हारून (अ)

الْمُفْسِدِيْنَ ١٤٢ وَلَمَّا جَاۗءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ

उस ने कहा	अपना रब	और उस ने कलाम किया	हमारी वादा गाह पर	मूसा (अ)	आया	और जब	142	मुफ़्सिद (जमा)

رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۭ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى

तरफ़	तू देख	और लेकिन (अलबत्ता)	तू मुझे हरगिज़ न देखेगा	उस ने कहा	तेरी तरफ़	मैं देखूँ	मुझे दिखा	ऐ मेरे रब

الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى

तजल्ली की	पस जब	तू मुझे देख लेगा	तो तभी	अपनी जगह	वह ठहरा रहा	पस अगर	पहाड़

رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ

होश आया	फिर जब	बेहोश	मूसा (अ)	और गिरा	रेज़ा रेज़ा	उसको कर दिया	पहाड़ की तरफ़	उस का रब

قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ١٤٣

143	ईमान लाने वाले	सब से पहला	और मैं	तेरी तरफ़	मैं ने तौबा की	तू पाक है	उस ने कहा

और हम ने उतारा बनी इस्राईल को बहरे (कुलज़ुम) के पार, पस वह एक ऐसी क़ौम के पास आए जो अपने बुतों (की पूजा) पर जमे बैठे थे, वह बोले ऐ मूसा (अ)! हमारे लिए ऐसे बुत बना दे जैसे उन के हैं, (मूसा अ) ने कहा बेशक तुम लोग जहल (नादानी) करते हो। (138)

बेशक यह लोग जिस (बुत परस्ती) में लगे हुए हैं वह तबाह होने वाली है और बातिल है वह जो यह कर रहे हैं। (139)

मूसा (अ) ने कहाः किया अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद तलाश करूँ? हालांकि उस ने तुम्हें सारे जहान पर फ़ज़ीलत दी। (140)

और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात दी, वह तुम्हें बुरे अ़ज़ाब से तक्लीफ़ देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी बेटियों को जीता छोड़ देते थे। और उस में तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (141)

और हम ने मूसा (अ) से वादा किया तीस (30) रातों का और उस को दस (10) (और बढ़ा कर) पूरा किया तो उस के रब की मुद्दत चालीस (40) रात पूरी हुई, और मूसा (अ) ने अपने भाई हारून (अ) से कहा मेरे नाइब रहो मेरी क़ौम में और इस्लाह करना और मुफ़्सिदों के रास्ते की पैरवी न करना। (142)

और जब मूसा (अ) आए हमारी वादा गाह पर और अपने रब से कलाम किया, मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि मैं तुझे देखूँ, अल्लाह ने कहा तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देख, पस अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा तो तभी मुझे देख लेगा, पस जब उस के रब ने तजल्ली की पहाड़ की तरफ़ (तो) उस को रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा (अ) बेहोश हो कर गिर पड़े, फिर जब होश आया तो उस ने कहा, तू पाक है, मैं ने तौबा की तेरी तरफ़ और मैं ईमान लाने वालों में सब से पहला हूँ। (143)

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ

अपने पैग़ामात से	लोग	पर	मैं ने तुझे चुन लिया	बेशक मैं	ऐ मूसा	कहा

وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾ وَكَتَبْنَا

और हम ने लिख दी	144	शुक्र गुज़ार (जमा)	से	और रहो	जो मैं ने तुझे दिया	पस पकड़ ले	और अपने कलाम से

لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ

हर चीज़ की	और तफ़सील	नसीहत	हर चीज़	से	तख़्तियां	में	उस के लिए

فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۗ

उस की अच्छी बातें	वह पकड़ें (इख़्तियार करें)	और हुक्म दे अपनी क़ौम	क़ुव्वत से	पस तू उसे पकड़ ले

سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	अपनी आयात	से	मैं अ़नक़रीब फेर दूंगा	145	नाफ़रमानों का घर	अ़नक़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा

يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ

हर निशानी	वह देख लें	और अगर	नाहक़	ज़मीन में	तकब्बुर करते हैं

لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ

रास्ता	न पकड़ें (इख़्तियार करें)	हिदायत	रास्ता	देख लें	और अगर	न ईमान लाएं उस पर

وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

इस लिए कि उन्हों ने	यह	रास्ता	इख़्तियार कर लें उसे	गुमराही	रास्ता	देख लें	और अगर

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

झुटलाया	और जो लोग	146	ग़ाफ़िल (जमा)	उस से	और थे	हमारी आयात	झुटलाया

بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۗ هَلْ يُجْزَوْنَ

वह बदला पाएंगे	क्या	उन के अ़मल	ज़ाया हो गए	आख़िरत	और मुलाक़ात	हमारी आयात को

ع ١٧ ٦ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ

उस के बाद	मूसा	क़ौम	और बनाया	147	वह करते थे	जो	मगर

مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۗ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ

नहीं कलाम करता उन से	कि वह	क्या न देखा उन्हों ने	गाय की आवाज़	उस में	एक धड़	एक बछड़ा	अपने ज़ेवर	से

وقف لازم وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا

और जब	148	और वह ज़ालिम थे	उन्हों ने बना लिया	रास्ता	और नहीं दिखाता उन्हें

سُقِطَ فِىْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ

अगर	वह कहने लगे	तहक़ीक़ गुमराह हो गए	कि वह	और देखा उन्हों ने	गिरे अपने हाथों में (नादिम हुए)

لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

149	ख़सारा पाने वाले	से	ज़रूर हो जाएंगे हम	और (न) बख़्श दिया	हमारा रब	रहम न किया हम पर

अल्लाह ने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक मैं ने तुझे लोगों पर चुन लिया अपने पैग़ामों और अपने कलाम से, पस जो मैं ने तुझे दिया है (क़ुव्वत से) पकड़ ले और शुक्र गुज़ारों में से रहो। **(144)**

और हम ने उस के लिए लिख दी तख़्तियों में हर चीज़ की नसीहत, हर चीज़ की तफ़सील, पस तू उसे क़ुव्वत से पकड़ ले और हुक्म दे अपनी क़ौम को कि वह उस के बेहतर मफ़हूम की पैरवी करें, अ़नक़रीब मैं तुझे नाफ़रमानों का घर (अन्जाम) दिखाऊंगा। **(145)**

मैं अ़नक़रीब फेर दूँगा उन लोगों को अपनी आयतों से जो ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते हैं, और अगर वह हर निशानी देख लें (फिर भी) उस पर ईमान न लाएं, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो भी उस रास्ते को इख़्तियार न करें, और अगर देख लें गुमराही का रास्ता तो इख़्तियार कर लें, यह इस लिए कि उन्हों ने हमारी आयात को झुटलाया और वह उस से ग़ाफ़िल थे। **(146)**

और जिन लोगों ने झुटलाया हमारी आयात को और आख़िरत की मुलाक़ात को, उन के अ़मल ज़ाया हो गए, वह क्या बदला पाएंगे मगर (वही) जो वह करते थे। **(147)**

और मूसा (अ) की क़ौम ने उस के बाद बनाया अपने ज़ेवर से एक बछड़ा, (महज़) एक धड़ जिस में गाय की आवाज़ थी, क्या उन्हों ने न देखा कि न वह उन से कलाम करता है न उन्हें दिखाता है रास्ता? उन्हों ने उसे (माबूद) बना लिया और वह ज़ालिम थे। **(148)**

और जब वह नादिम हुए और उन्हों ने देखा कि वह गुमराह हो गए तो कहने लगे अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्श दिया तो हम ज़रूर हो जाएंगे ख़सारा पाने वालों में से। **(149)**

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا

क्या बुरी	उस ने कहा	रंजीदा	गुस्से में भरा हुआ	अपनी क़ौम की तरफ़	मूसा (अ)	लौटा	और जब

خَلَفْتُمُوْنِىْ مِنْۢ بَعْدِىْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ

तख़्तियाँ	डाल दें	अपना परवरदिगार	हुक्म	क्या जल्दी की तुम ने	मेरे बाद	तुम ने मेरी जांनशीनी की

وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۭ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ

क़ौम-लोग	बेशक	ऐ मेरे माँ जाए	वह बोला	अपनी तरफ़	उसे खींचने लगा	अपना भाई	सर	और पकड़ा

اسْتَضْعَفُوْنِىْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِىْ ۡ فَلَا تُشْمِتْ بِىَ الْاَعْدَاۗءَ

दुश्मन (जमा)	मुझ पर	पस ख़ुश न कर	मुझे क़त्ल कर डालें	और क़रीब थे	कमज़ोर समझा मुझे

وَلَا تَجْعَلْنِىْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ١٥٠ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَلِاَخِىْ

और मेरा भाई	मुझे बख़्श दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	150	ज़ालिम (जमा)	क़ौम (लोग)	साथ	और मुझे न बना (शामिल न कर)

وَاَدْخِلْنَا فِىْ رَحْمَتِكَ ۡ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ١٥١ ع اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا ١٨ ٨

उन्हों ने बना लिया	वह लोग जो	बेशक	151	सब से ज़ियादा रहम करने वाला	और तू	अपनी रहमत में	और हमें दाख़िल कर

الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ

दुनिया	ज़िन्दगी	में	और ज़िल्लत	उन के रब का	ग़ज़ब	अनक़रीब उन्हें पहुँचेगा	बछड़ा

وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُفْتَرِيْنَ ١٥٢ وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا

तौबा की	फिर	बुरे	अमल किए	और जिन लोगों ने	152	बुहतान बान्धने वाले	हम सज़ा देते हैं	और इसी तरह

مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٥٣

153	मेहरबान	बख़्शने वाला	उस के बाद	तुम्हारा रब	बेशक	और ईमान लाए	उस के बाद

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖ وَفِىْ نُسْخَتِهَا

और उन की तहरीर में	तख़्तियाँ	लिया-उठा लिया	गुस्सा	मूसा (अ)	से-का	ठहरा (फ़रू हुआ)	और जब

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ١٥٤ وَاخْتَارَ مُوْسٰى

मूसा	और चुन लिए	154	डरते हैं	अपने रब से	वह	उन लोगों के लिए जो	और रहमत	हिदायत

قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	ज़लज़ला	उन्हें पकड़ा (आ लिया)	फिर जब	हमारे वादे के वक़्त के लिए	मर्द	सत्तर (70)	अपनी क़ौम

لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّاىَ ۭ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاۗءُ

बेवकूफ़ (जमा)	किया	उस पर जो	क्या तू हमें हलाक करेगा	और मुझे	इस से पहले	इन्हें हलाक कर देता	अगर तू चाहता

مِنَّا ۚ اِنْ هِىَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۭ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَاۗءُ وَتَهْدِىْ مَنْ

जो-जिस	और तू हिदायत दे	तू चाहे	जिस	उस से	तू गुमराह करे	तेरी आज़माइश	मगर	यह नहीं	हम में से

تَشَاۗءُ ۭ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ١٥٥

155	बख़्शने वाला	बेहतरीन	और तू	और हम पर रहम फ़रमा	सो हमें बख़्श दे	हमारा कारसाज़	तू	तू चाहे

और जब मूसा (अ) लौटा अपनी क़ौम की तरफ़ गुस्से में भरा हुआ, रंजीदा, उस ने कहा किस क़द्र बुरी मेरी जांनशीनी की तुम ने मेरे बाद! क्या तुम ने अपने परवरदिगार के हुक्म से जल्दी की? और उस (मूसा अ) ने तख़्तियाँ डाल दीं और सर (बालों से) पकड़ा अपने भाई का और उसे अपनी तरफ़ खींचने लगा, वह (हारून अ) बोला ऐ मेरे माँ जाए! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर डाले, पस मुझ पर दुश्मनों को ख़ुश न कर और मुझे ज़ालिम लोगों के साथ शामिल न कर। (150)

उस ने (मूसा अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर, और तू सब से ज़ियादा रहम करने वाला है। (151)

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को (माबूद) बना लिया, अनक़रीब उन्हें उन के रब का ग़ज़ब पहुँचेगा और ज़िल्लत दुनिया की ज़िन्दगी में, और इसी तरह हम बुहतान बान्धने वालों को सज़ा देते हैं। (152)

और जिन लोगों ने बुरे अमल किए फिर उस के बाद तौबा की और वह ईमान ले आए, बेशक तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद बख़्शने वाला, मेहरबान है। (153)

और जब मूसा (अ) का ग़ुस्सा फ़रू हुआ, उस ने तख़्तियों को उठा लिया, और उन की तहरीर में हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। (154)

और मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से हमारे वादे के लिए सत्तर (70) आदमी चुन लिए, फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया, उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू अगर चाहता तो इस से पहले इन्हें और मुझे हलाक कर देता, क्या तू हमें उस पर हलाक कर देगा जो हम में से बेवकूफ़ों ने किया! यह नहीं मगर (सिर्फ़) तेरी आज़माइश है, तू उस से जिस को चाहे गुमराह करे और तू जिस को चाहे हिदायत दे, तू हमारा कारसाज़ है, सो हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू बहतरीन बख़्शने वाला है। (155)

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا

बेशक हम	और आख़िरत में	भलाई	दुनिया	इस	में	हमारे लिए	और लिख दे

هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ

और मेरी रहमत	मैं चाहूँ	जिस	उस को	मैं पहुँचाता हूँ (दूँ)	अपना अ़ज़ाब	उस ने फ़रमाया	तेरी तरफ़	हम ने रुजूअ़ किया

وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ

और देते हैं	डरते हैं	उन के लिए जो	सो मैं अ़नक़रीब वह लिख दूँगा	हर शै	वसीअ़ है

الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٦﴾ اَلَّذِيْنَ

वह लोग जो	156	ईमान रखते हैं	हमारी आयात पर	वह	और वह जो	ज़कात

يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا

लिखा हुआ	उसे पाते हैं	वह जो-जिस	उम्मी	नबी	रसूल	पैरवी करते हैं

عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۡ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ

भलाई	वह हुक्म देता है उन्हें	और इंजील	तौरेत	में	अपने पास

وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ

उन पर	और हराम करता है	पाकीज़ा चीज़ें	उन के लिए	और हलाल करता है	बुराई	से	और रोकता है उन्हें

الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ

थे	जो	और तौक़	उन के बोझ	उन से	और उतारता है	नापाक चीज़ें

عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ

और उस की मदद की	और उस की रफ़ाक़त (हिमायत) की	ईमान लाए उस पर	पस जो लोग	उन पर

١٩ ع ٦ ٩ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾

157	फ़लाह पाने वाले	वह	वही लोग	उस के साथ	उतारा गया	जो	नूर	और पैरवी की

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا

सब	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल	बेशक मैं	लोगो	ऐ	कह दे

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ

ज़िन्दा करता है	वह	मगर	माबूद	नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	उस की	वह जो

وَيُمِيْتُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ

वह जो	उम्मी	नबी	और उस का रसूल	अल्लाह पर	सो तुम ईमान लाओ	और मारता है

يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾

158	हिदायत पाओ	ताकि तुम	और उस की पैरवी करो	और उस के सब कलाम	अल्लाह पर	ईमान रखता है

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

159	इन्साफ़ करते हैं	और उस के मुताबिक़	हक़ की	हिदायत देता है	एक गिरोह	क़ौमे मूसा	और से (में)

और हमारे लिए इस दुनिया में और आख़िरत में भलाई लिख दे, बेशक हम ने तेरी तरफ़ रुजूअ़ किया, उस ने फ़रमाया मैं अपना अ़ज़ाब जिस को चाहूँ दूँ, और मेरी रहमत हर शै पर वसीअ़ है, सो मैं वह अ़नक़रीब लिख दूँगा उन के लिए जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और हमारी आयात पर ईमान रखते हैं। (156)

वह लोग जो पैरवी करते हैं (हमारे) रसूल (मुहम्मद स) नबी उम्मी की, जिसे वह लिखा हुआ पाते हैं अपने पास तौरेत में और इंजील में, वह उन्हें हुक्म देता है भलाई का और उन्हें रोकता है बुराई से, और उन के लिए हलाल करता है पाकीज़ा चीज़ें और उन पर हराम करता है नापाक चीज़ें, और उतारता है उन (के सरों) से बोझ और (उन की गर्दनों से) तौक़ जो उन पर थे, पस जो लोग उस पर ईमान लाए और उन्हों ने उस की हिमायत की और उस की मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उस के साथ उतारा गया है, वही फ़लाह पाने वाले हैं। (157)

आप कह दें, ऐ लोगो! बेशक मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, वह जिस की बादशाहत है आस्मानों पर और ज़मीन में, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, सो तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल नबी उम्मी (मुहम्मद स) पर, वह जो ईमान रखता है अल्लाह पर और उस के सब कलामों पर, और उस की पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। (158)

और मूसा (अ) की क़ौम में एक गिरोह है जो हक़ की हिदायत देता है और वह उसी के मुताबिक़ इन्साफ़ करते हैं, (159)

और हम ने उन्हें जुदा कर दिया (तक़्सीम कर दिया) बारह क़बीले (गिरोह गिरोह की सूरत में) और जब उस की क़ौम ने उस से पानी मांगा, हम ने मूसा की तरफ़ वहि भेजी कि मारो अपनी लाठी उस पत्थर पर, तो उस से बारह चश्मे फूट निकले, हर शख़्स ने पहचान लिया अपना घाट, और हम ने उन पर अब्र का साया किया और उन पर मन्न (एक क़िस्म का गोंद) और सलवा (बटेर जैसा परिन्दा) उतारा, तुम खाओ पाकीज़ा चीज़ें में से जो हम ने तुम्हें दीं और उन्हों ने हमारा कुछ न बिगाड़ा लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। **(160)**

और जब उन से कहा गया तुम इस शहर में रहो और इस से खाओ जैसे तुम चाहो और "हित्ततुन" (बख़्श दे) कहो और दरवाज़े (में) सिज्दा करते हुए दाख़िल हो, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, हम अनक़रीब नेकी करने वालों को ज़ियादा देंगे। **(161)**

पस बदल डाला उन में से ज़ालिमों ने उस के सिवा लफ़्ज़ जो उन्हें कहा गया था, सो हम ने उन पर अज़ाब भेजा आस्मान से क्योंकि वह ज़ुल्म करते थे। **(162)**

और उन से उस बस्ती के बारे में पूछो जो दर्या के किनारे पर थी, जब वह "सब्त" (हफ़्ता) के हुक्म के बारे में हद से बढ़ने लगे, उन के सब्त (हफ़्ते) के दिन मछलियां उन के सामने आजातीं और जिस दिन "सब्त" न होता न आतीं, इसी तरह हम उन्हें आज़माते क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। **(163)**

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰی

तरफ़	और वहि भेजी हम ने	गिरोह गिरोह	बाप दादा की औलाद (क़बीले)	बारह (12)	और हम ने जुदा कर दिया उन्हें

مُوْسٰۤی اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ

पत्थर	अपनी लाठी	मारो	कि	उसकी क़ौम	उस ने पानी मांगा	जब	मूसा

فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ

शख़्स	हर	जान लिया (पहचान लिया)	चश्मे	बारह (12)	उस से	तो फूट निकले

مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ

उन पर	और हम ने उतारा	अब्र	उन पर	और हम ने साया किया	अपना घाट

الْمَنَّ وَالسَّلْوٰی ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ

जो हम ने तुम्हें दीं	पाकीज़ा	से	तुम खाओ	और सलवा	मन्न

وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَاِذْ قِيْلَ

कहा गया	और जब	**160**	ज़ुल्म करते	अपनी जानों पर	वह थे	और लेकिन	और हमारा कुछ न बिगाड़ा उन्हों ने

لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ

जैसे	इस से	और खाओ	शहर	इस	तुम रहो	उन से

شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ

हम बख़्श देंगे तुम्हें	सिजदा करते हुए	दरवाज़ा	और दाख़िल हो	हित्ता (बख़्श दे)	और कहो	तुम चाहो

خَطِيْٓئٰتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ

वह जिन्हों ने	पस बदल डाला	**161**	नेकी करने वाले	अनक़रीब हम ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं

ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ

उन्हें	कहा गया	वह जो	सिवा	लफ़्ज़	उन से	ज़ुल्म किया (ज़ालिम)

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا

क्योंकि	आस्मान	से	अज़ाब	उन पर	सो हम ने भेजा

كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾ وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ

थी	वह जो कि	बस्ती	से (बारे में)	और पूछो उन से	**162**	वह ज़ुल्म करते थे

ع ٢٠ ٥ ١٠

حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ

وقف لازم

उन के सामने आजातीं	जब	हफ़्ते में	हद से बढ़ने लगे	जब	दर्या	सामने (किनारे)

حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ

सब्त न होता	और जिस दिन	खुल्लम खुल्ला (सामने)	उन का सब्त	दिन	मछलियां उन की

لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾

النصف معانقة ٦ عند المتاخرين ١٢

163	वह नाफ़रमानी करते थे	क्योंकि	हम उन्हें आज़माते थे	इसी तरह	वह न आती थीं

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ

या	उन्हें हलाक करने वाला	अल्लाह	ऐसी क़ौम	क्यों नसीहत करते हो	उन में से	एक गिरोह	कहा	और जब

مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ

और शायद कि वह	तुम्हारा रब	तरफ़	माज़िरत	वह बोले	सख़्त	अज़ाब	उन्हें अज़ाब देने वाला

يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ

मना करते थे	वह जो कि	हम ने बचा लिया	उन्हें समझाई गई थी	जो	वह भूल गए	फिर जब	164	डरें

عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٕيْسٍۢ بِمَا

क्योंकि	बुरा	अज़ाब में	ज़ुल्म किया	वह लोग जिन्हों ने	और हम ने पकड़ लिया	बुराई से

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا

उन को हो जाओ	हम ने हुक्म दिया	उस से	जिस से मना किए गए थे	से	सरकशी करने लगे	फिर जब	165	नाफ़रमानी करते थे

قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى

तक	उन पर	अलबत्ता ज़रूर भेजता रहेगा	तुम्हारा रब	ख़बर दी	और जब	166	ज़लील ओ ख़ार	बन्दर

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	बेशक	बुरा अज़ाब	तक्लीफ़ दे उन्हें	जो	रोज़े क़ियामत

لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ

गिरोह दर गिरोह	ज़मीन में	और परागन्दा कर दिया हम ने उन्हें	167	मेहरबान	बख़्शने वाला	और बेशक वह	जल्द अज़ाब देने वाला

مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ

अच्छाइयों में	और आज़माया हम ने उन्हें	उस	सिवा	और उन से	नेकोकार	उन से

وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا

वह वारिस हुए	नाख़लफ़	उन के बाद	पीछे आए	168	रुजूअ करें	ताकि वह	और बुराइयों में

الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ

अब हमें बख़्श दिया जाएगा	और कहते हैं	इस अदना ज़िन्दगी	मताअ़ (असबाब)	वह लेते हैं	किताब

وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ

अ़हद	उन पर (उन से)	क्या नहीं लिया गया	उस को ले लें	उस जैसा	माल ओ असबाब	आए उन के पास	और अगर

الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ

और घर	जो उस में	और उन्हों ने पढ़ा	सच	मगर	अल्लाह पर (के बारे में)	वह न कहें	कि	किताब

الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ

मज़बूत पकड़े हुए हैं	और जो लोग	169	क्या तुम समझते नहीं	परहेज़गार	उन के लिए जो	बेहतर	आख़िरत

بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾

170	नेकोकार (जमा)	अजर	ज़ाया नहीं करते	बेशक हम	नमाज़	और क़ाइम रखते हैं	किताब को

और जब उन में से एक गिरोह ने कहा तुम ऐसी क़ौम को क्यों नसीहत करते हो जिसे अल्लाह हलाक करने वाला है या अ़ज़ाब देने वाला है सख़्त अ़ज़ाब, वह बोले तुम्हारे रब के पास माज़िरत पेश करने के लिए और (इस उम्मीद पर) कि शायद वह डरें। (164)

फिर जब वह भूल गए जो उन्हें समझाई गई थी, जो बुराई से रोकते थे हम ने उन्हें बचा लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया हम ने उन्हें बुरे अ़ज़ाब में पकड़ लिया क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (165)

फिर जब वह उस से सरकशी करने लगे जिस से मना किए गए थे तो हम ने हुक्म दिया उन को ज़लील ओ ख़ार बन्दर हो जाओ। (166)

और जब तुम्हारे रब ने ख़बर दी कि अलबत्ता वह इन (यहूद) पर ज़रूर भेजता रहेगा रोज़े क़ियामत तक (ऐसे अफ़्राद) जो उन्हें बुरे अ़ज़ाब से तक्लीफ़ दें, बेशक तुम्हारा रब सज़ा देने में तेज़ है, और बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (167)

फिर हम ने उन्हें ज़मीन में परागन्दा कर दिया गिरोह दर गिरोह, उन में से (कुछ) नेकोकार हैं और उन में से (कुछ) उस के सिवा हैं, और हम ने उन्हें आज़माया अच्छाइयों और बुराइयों में ताकि वह रुजूअ़ करें। (168)

पीछे आए उन के बाद नाख़लफ़ जो किताब के वारिस हुए, वह इस अदना ज़िन्दगी का असबाब लेते हैं और कहते हैं अब हमें बख़्श दिया जाएगा, और अगर उन के पास उस जैसा माल ओ असबाब (फिर) आए तो उस को ले लें, क्या नहीं लिया गया उन से अ़हद (जो) किताब (तौरेत) में है कि वह अल्लाह के बारे में न कहें मगर सच और उन्हों ने पढ़ा है जो उस (तौरेत) में है, और आख़िरत का घर बेहतर है उन के लिए जो परहेज़गार हैं, क्या तुम समझते नहीं? (169)

और जो लोग मज़बूत पकड़ते हैं किताब को और नमाज़ क़ाइम करते हैं, बेशक हम नेकोकारों का अजर ज़ाया नहीं करते। (170)

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ

उन पर	गिरने वाला	कि वह	और उन्हों ने गुमान किया	साइबान	गोया कि वह	उन के ऊपर	पहाड़	उठाया हम ने	और जब

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۧ ١٧١ ع ٢١ ٩ ١١

171	परहेज़गार बन जाओ	ताकि तुम	जो उस में	और याद करो	मज़बूती से	दिया हम ने तुम्हें	जो	तुम पकड़ो

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ

उन की औलाद	उन की पुश्त	से	बनी आदम	से (की)	तुम्हारा रब	लिया (निकाली)	और जब

وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰي ۚ شَهِدْنَا ۚ اَنْ معانقة ٧ عند المتأخرين ١٢

कि (कभी)	हम गवाह हैं	हां, क्यों नहीं	वह बोले	तुम्हारा रब	क्या नहीं हूँ मैं	उन की जानें	पर	और गवाह बनाया उन को

تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ١٧٢ ۙ اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ

इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	तुम कहो	या	172	ग़ाफ़िल (जमा)	उस	से	थे	बेशक हम	क़ियामत के दिन	तुम कहो

اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا

सो क्या तू हमें हलाक करता है	उन के बाद	औलाद	और थे हम	उस से क़ब्ल	हमारे बाप दादा	शिर्क किया

بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ١٧٣ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ

और ताकि वह	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	और इसी तरह	173	अहले बातिल (ग़लत कार)	किया	उस पर जो

يَرْجِعُوْنَ ١٧٤ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ

तो साफ़ निकल गया	हमारी आयतें	हम ने उस को दी	वह जो कि	ख़बर	उन पर (उन्हें)	और पढ़ (सुनाओ)	174	रुजूअ करें

مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ١٧٥ وَلَوْ شِئْنَا

हम चाहते	और अगर	175	गुमराह (जमा)	से	सो हो गया	शैतान	तो उस के पीछे लगा	उस से

لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ

तो उस का हाल	अपनी ख़ाहिशात	और उस ने पैरवी की	ज़मीन की तरफ़	गिर पड़ा (माइल होगया)	और लेकिन वह	उन के ज़रीए	उसे बुलन्द करते

كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ

हांपे	या उसे छोड़ दे	वह हांपे	उस पर	तू हमला करे	अगर	कुत्ता	मानिंद - जैसा

ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ

पस बयान कर दो	हमारी आयात	उन्हों ने झुटलाया	वह जो कि	लोग	मिसाल	यह

الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ١٧٦ سَاۗءَ مَثَلَاۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ

वह जो	लोग	मिसाल	बुरी	176	ग़ौर करें	ताकि वह	अहवाल (क़िस्से)

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ١٧٧ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ

अल्लाह हिदायत दे	जो - जिस	177	ज़ुल्म करते	वह थे	और अपनी जानें	हमारी आयात	उन्हों ने झुटलाया

فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ١٧٨

178	घाटा पाने वाले	वह	सो वही लोग	गुमराह कर दे	और जिस	हिदायत याफ़्ता	तो वही

और (याद करो) जब हम ने उठाया पहाड़ उन के ऊपर गोया कि वह साइबान है और उन्हों ने गुमान किया गोया कि वह उन के ऊपर गिरने वाला है, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो और जो उस में है याद करो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (171)

और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने निकाली आदम की पुश्त से उन की औलाद, और उन्हें उन की जानों पर (उन पर) गवाह बनाया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? वह बोले क्यों नहीं! हम गवाह हैं, कभी तुम क़ियामत के दिन कहो बेशक हम इस से ग़ाफ़िल (बेख़बर) थे। (172)

या तुम कहो शिर्क तो इस से क़ब्ल हमारे बाप दादा ने किया और उन के बाद हम (उन की) औलाद हुए, सो क्या तू हमें हलाक करता है उस पर जो ग़लत कारों ने किया। (173)

और इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं ताकि वह रुजूअ करें (लौट आएं)। (174)

और उन्हें उस शख़्स की ख़बर सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वह उस से साफ़ निकल गया तो शैतान उस के पीछे लग गया, सो वह हो गया गुमराहों में से। (175)

और अगर हम चाहते तो उसे उन (आयतों) के ज़रीए बुलन्द करते, लेकिन वह ज़मीन की तरफ़ माइल हो गया, और उस ने पैरवी की अपनी ख़ाहिशात की, तो उस का हाल कुत्ते जैसा है, अगर तू उस पर हमला करे तो हांपे या उसे छोड़ दे तो (फिर भी) हांपे, यह मिसाल उन लोगों की है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, सो (यह) अहवाल बयान कर दो ताकि वह ग़ौर करें। (176)

बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (177)

अल्लाह जिस को हिदायत दे वही हिदायत याफ़्ता है, और जिस को गुमराह कर दे सो वही लोग घाटा पाने वाले हैं। (178)

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ

दिल	उन के	और इन्सान	जिन	से	बहुत से	जहन्नम के लिए	और हम ने पैदा किए

لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ

नहीं सुनते	कान	और उन के लिए	उन से	नहीं देखते	आँखें	और उन के लिए	उन से	समझते नहीं

بِهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ١٧٩

179	ग़ाफ़िल (जमा)	वह	यही लोग	बदतरीन गुमराह	वह	बल्कि	चौपायों के मानिंद	यही लोग	उन से

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۠ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ

कज रवी करते हैं	वह लोग जो	और छोड़ दो	उन से	पस उस को पुकारो	अच्छे	और अल्लाह के लिए नाम (जमा)

فِيْٓ اَسْمَاۗىِٕهٖ ۭ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ١٨٠ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ

एक उम्मत (गिरोह)	हम ने पैदा किया	और से - जो	180	वह करते थे	जो	अनक़रीब वह बदला पाएंगे	उस के नाम	में

ع ١٠ ٢٢ ١٢

يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ١٨١ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

हमारी आयात को	उन्हों ने झुटलाया	और वह लोग जो	181	फ़ैसला करते हैं	और उस के मुताबिक़	हक़ के साथ (ठीक)	वह बतलाते हैं

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ١٨٢ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ

मेरी ख़ुफ़िया तदबीर	बेशक	उन के लिए	और मैं ढील दूँगा	182	वह न जानेंगे (ख़बर न होगी)	इस तरह	आहिस्ता आहिस्ता उन को पकड़ेंगे

مَتِيْنٌ ١٨٣ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ

डराने वाले	मगर	वह	नहीं	जुनून	से	नहीं उन के साहिब को	क्या वह ग़ौर नहीं करते	183	पुख़्ता

مُّبِيْنٌ ١٨٤ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ

पैदा किया	और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	में	क्या वह नहीं देखते	184	साफ़

اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓي اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ

तो किस	उनकी अजल (मौत)	क़रीब आगई हो	हो	कि	शायद	और यह कि	कोई चीज़	अल्लाह

حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ١٨٥ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ

उस को	हिदायत देने वाला	तो नहीं	गुमराह करे अल्लाह	जिस	185	वह ईमान लाएंगे	इस के बाद	बात

وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ١٨٦ يَسْـَٔــلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ

उस का क़ाइम होना	कब है	घड़ी (क़ियामत)	से (बारे में)	वह आप (स) से पूछते हैं	186	बहकते हैं	उन की सरकशी	में	वह छोड़ देता है उन्हें

وقف لازم

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ڤ ثَقُلَتْ

भारी है	वह (अल्लाह)	सिवा	उस के वक़्त पर	उस को ज़ाहिर न करेगा	मेरा रब	पास	उस का इल्म	सिर्फ़	कह दें

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْـَٔــلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ

मुतलाशी	गोया कि आप	आप (स) से पूछते हैं	अचानक	मगर	आएगी तुम पर	न	और ज़मीन	आस्मानों	में

عَنْهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ١٨٧

187	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	अल्लाह के पास	उस का इल्म	सिर्फ़	कह दें	उस के

और हम ने जहन्नम के लिए बहुत से जिन और इन्सान पैदा किए, उन के दिल हैं उन से समझते नहीं, और उन की आँखें हैं उन से वह देखते नहीं, और उन के कान हैं वह सुनते नहीं उन से, यही लोग चौपायों की मानिंद हैं बल्कि (उन से भी) बदतरीन गुमराह हैं, यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (179)

और अल्लाह के लिए हैं अच्छे नाम, सो तुम उस को उन (ही) से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों में कज रवी करते हैं, जो वह करते थे अनक़रीब वह उस का बदला पाएंगे। (180)

और जो लोग हम ने पैदा किए (उन में) एक गिरोह है जो ठीक राह बतलाते हैं और उस के मुताबिक़ फ़ैसला करते हैं। (181)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया, आहिस्ता आहिस्ता हम उन को पकड़ेंगे कि उन्हें ख़बर भी न होगी। (182)

और मैं उन के लिए ढील दूँगा, बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर पुख़्ता है। (183)

क्या वह ग़ौर नहीं करते? कि उन के साहिब (मुहम्मद स) को कुछ जुनून नहीं, वह नहीं मगर साफ़ साफ़ डराने वाले। (184)

क्या वह नहीं देखते? बादशाहत आस्मानों और ज़मीन की और जो अल्लाह ने कोई चीज़ (भी) पैदा की है, और यह कि शायद क़रीब आगई हो उन की अजल (मौत की घड़ी), तो इस के बाद किस बात पर वह ईमान लाएंगे? (185)

जिस को अल्लाह गुमराह करे तो कोई हिदायत देने वाला नहीं उस को। और वह उन्हें उन की सरकशी में बहकते छोड़ देता है। (186)

वह आप (स) से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि कब है उस के क़ाइम होने (का वक़्त)? आप (स) कह दें उस का इल्म सिर्फ़ मेरे रब के पास है, उस को उस के वक़्त पर अल्लाह के सिवा कोई ज़ाहिर न करेगा। भारी है आस्मानों और ज़मीन में, और तुम पर न आएगी (वाक़े होगी) मगर अचानक, आप (स) से (यूँ) पूछते हैं गोया कि आप (स) उस के मुतलाशी हैं, आप (स) कह दें: इस का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (187)

आप (स) कह दें: मैं मालिक नहीं अपनी ज़ात के लिए नफ़ा का न नुक़्सान का मगर जो अल्लाह चाहे, और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो मैं बहुत भलाई जमा कर लेता, और मुझे कोई बुराई न पहुँचती, मैं बस डराने वाला ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए (जो) ईमान रखते हैं। **(188)**

वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, उस से बनाया उस का जोड़ा ताकि उस के पास सुकून हासिल करे, फिर जब मर्द ने उसे ढांप लिया तो उसे हलका सा हमल रहा, फिर वह उस को लिए फिरी, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने अपने रब अल्लाह को पुकारा, अगर तू ने हमें सालेह बच्चा दिया तो हम ज़रूर तेरे शुक्र करने वालों में से होंगे। **(189)**

फिर जब अल्लाह ने उन्हें सालेह बच्चा दिया तो जो अल्लाह ने उन्हें दिया था उन्हों ने उस में शरीक ठहराए, सो अल्लाह उस से बरतर है जो वह शरीक ठहराते हैं। **(190)**

क्या वह उन्हें शरीक ठहराते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह पैदा किए जाते हैं (ख़ालिक़ नहीं, मख़्लूक़ हैं)। **(191)**

और वह उन की मदद की क़ुदरत नहीं रखते और न ख़ुद अपनी मदद कर सकते हैं। **(192)**

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वह तुम्हारी पैरवी न करें, तुम्हारे लिए बराबर है ख़्वाह तुम उन्हें बुलाओ या ख़ामोश रहो। **(193)**

बेशक तुम जिन्हें पुकारते हो अल्लाह के सिवा, वह तुम्हारे जैसे बन्दे हैं, फिर उन्हें पुकारो तो चाहिए था कि वह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। **(194)**

क्या उन के पाऊँ हैं जिन से वह चलते हैं, या उन के हाथ हैं जिन से वह पकड़ते हैं, या उन की आँखें हैं जिन से वह देखते हैं, या उन के कान हैं जिन से वह सुनते हैं, कह दें, पुकारो अपने शरीकों को, फिर मुझ पर दाओ चलो, पस मुझे मोहलत न दो। **(195)**

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ

और अगर	अल्लाह चाहे	जो	मगर	नुक़्सान	और न	नफ़ा	अपनी ज़ात के लिए	मैं मालिक नहीं	कह दें

كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِىَ

पहुँचती मुझे	और न	बहुत भलाई	से	मैं अलबत्ता जमा कर लेता	ग़ैब	जानता	मैं होता

السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۱۸۸ ع هُوَ الَّذِىْ

जो-जिस	वह	188	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला	डराने वाला	मगर (सिर्फ़)	मैं	बस (फ़क़त)	कोई बुराई

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ

उस की तरफ़ (पास)	ताकि वह सुकून हासिल करे	उस का जोड़ा	उस से	और बनाया	एक	जान	से	पैदा किया तुम्हें

فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ

बोझल हो गई	फिर जब	उस के साथ (उसको)	फिर वह लिए फिरी	हलका सा	हमल	उसे हमल रहा	मर्द ने उस को ढांप लिया	फिर जब

دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۱۸۹

189	शुक्र करने वाले	से	हम ज़रूर होंगे	सालेह	तू ने हमें दिया	अगर	दोनों का (अपना) रब	दोनों ने पुकारा अल्लाह को

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ

सो अल्लाह बरतर	उन्हें दिया	उस में जो	शरीक	उस के	उन दोनों ने ठहराए	सालेह बच्चा	उस ने दिया उन्हें	फिर जब

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۱۹۰ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۱۹۱ ع

191	पैदा किए जाते हैं	और वह	कुछ भी	नहीं पैदा करते	जो	क्या वह शरीक ठहराते हैं	190	वह शरीक करते हैं	उस से जो

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۱۹۲ وَاِنْ

और अगर	192	मदद करते हैं	ख़ुद अपनी	और न	मदद	उन की	वह कुदरत नहीं रखते

تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ

ख़्वाह तुम उन्हें बुलाओ	तुम पर (तुम्हारे लिए)	बराबर	न पैरवी करें तुम्हारी	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ

اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ۱۹۳ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

सिवाए अल्लाह	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	बेशक	193	ख़ामोश रहो	या तुम

عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	तुम्हें	फिर चाहिए कि वह जवाब दें	पस पुकारो उन्हें	तुम्हारे जैसे	बन्दे

صٰدِقِيْنَ ۱۹۴ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ

वह पकड़ते हैं	उन के हाथ	या	उन से	वह चलते हैं	क्या उन के पाऊँ	194	सच्चे

بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ

सुनते हैं	कान	या उन के	उन से	देखते हैं	आँखें	उन की	या	उन से

بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ۱۹۵

195	पस न दो मुझे मोहलत	मुझ पर दाओ चलो	फिर	अपने शरीक	पुकारो	कह दें	उन से

ع ٢٣ معانقة ٨ عند المتأخرين ١٢

إِنَّ وَلِـيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾

196	नेक बन्दे	हिमायत करता है	और वह	किताब	नाज़िल कि	वह जिस	अल्लाह	मेरा कारसाज़	बेशक

وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ

और न	तुम्हारी मदद	कुदरत रखते वह	नहीं	उस के सिवा	पुकारते हैं	और जो लोग

اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٧﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ۭ

न सुनें वह	हिदायत	तरफ़	तुम पुकारो उन्हें	और अगर	197	वह मदद करें	खुद अपनी

وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٩٨﴾ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ

और हुक्म दें	दरगुज़र	पकड़ें (करें)	198	नहीं देखते हैं	हालांकि	तेरी तरफ़	वह तकते हैं	और तू उन्हें देखता है

بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿١٩٩﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ

से	तुझे उभारे	और अगर	199	जाहिल (जमा)	से	और मुँह फेर लें	भलाई का

الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	बेशक	200	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक वह	अल्लाह की	तो पनाह में आजा	कोई छेड़	शैतान

اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰۗىِٕفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ

वह	तो फ़ौरन	वह याद करते हैं	शैतान	से	कोई गुज़रने वाला (वस्वसा)	उन्हें छूता है (पहुँचता है)	जब	डरते हैं

مُّبْصِرُوْنَ ﴿٢٠١﴾ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

202	वह कमी नहीं करते	फिर	गुमराही	में	वह उन्हें खींचते हैं	और उन के भाई	201	देख लेते हैं

وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۭ قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ

मैं पैरवी करता हूँ	सिर्फ़	कह दें	उसे घड़ लिया	क्यों नहीं	कहते हैं	कोई आयत	तुम न लाओ उन के पास	और जब

مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ ۚ هٰذَا بَصَاۗىِٕرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى

और हिदायत	तुम्हारा रब	से	सूझ की बातें	यह	मेरा रब	से	मेरी तरफ़	जो वहि की जाती है

وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠٣﴾ وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا

तो सुनो	कुरआन	पढ़ा जाए	और जब	203	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	और रहमत

لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٢٠٤﴾ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ

अपना दिल	में	अपना रब	और याद करो	204	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	और चुप रहो	उस को

تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ

सुबह	आवाज़	से	बुलन्द	और बग़ैर	और डरते हुए	आजिज़ी से

وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٢٠٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ

तेरा रब	नज़दीक	जो लोग	बेशक	205	बेख़बर (जमा)	से	और न हो	और शाम

ع ٢٤ ٨ ١٤ السجدة الثالثة

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۩ ﴿٢٠٦﴾

206	सिजदा करते हैं	और उसी को	और उस की तसबीह करते हैं	उस की इबादत	से	तकब्बुर नहीं करते

बेशक मेरा कारसाज़ अल्लाह है, जिस ने किताब नाज़िल की और वह नेक बन्दों की हिमायत करता है। (196)

और उस (अल्लाह) के सिवा जिन को तुम पुकारते हो, वह कुदरत नहीं रखते तुम्हारी मदद की और न खुद अपनी मदद ही करने के क़ाबिल हैं। (197)

और अगर तुम उन्हें पुकारो हिदायत की तरफ़ तो वह (कुछ) न सुनें और तू उन्हें देखता है कि वह तेरी तरफ़ तकते हैं हालांकि वह (कुछ) नहीं देखते। (198)

आप (स) दरगुज़र करें और भलाई का हुक्म दें और जाहिलों से मुँह फेर लें। (199)

और अगर तुझे उभारे शैतान की तरफ़ से कोई छेड़ तो अल्लाह की पनाह में आजा, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (200)

बेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उन्हें पहुँचता है शैतान (की तरफ़ से) कोई वस्वसा, वह (अल्लाह को) याद करते हैं तो वह फ़ौरन (राहे सवाब) देख लेते हैं। (201)

और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचते हैं, फिर वह कमी नहीं करते। (202)

और जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो वह कहते हैं: तू क्यों नहीं (खुद) घड़ लेता, आप (स) कह दें मैं तो सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मेरी तरफ़ वहि की जाती है, यह (कुरआन) सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, और हिदायत ओ रहमत उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (203)

और जब कुरआन पढ़ा जाए तो (पूरी तवज्जुह) से सुनो उस को और चुप रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (204)

और अपने रब को याद करो अपने दिल में आजिज़ी से और डरते हुए और बुलन्द आवाज़ के बग़ैर सुबह ओ शाम, और बेख़बरों से न हो। (205)

बेशक जो लोग तेरे रब के नज़दीक हैं, वह उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की तसबीह करते हैं और उसी को सिजदा करते हैं। (206)

آيَاتُهَا ٧٥ ❀ (٨) سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकुआत 10 | (8) सूरतुल अंफ़ाल (ग़नाइम) | आयात 75

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا

पस डरो	और रसूल	अल्लाह के लिए	ग़नीमत	कह दें	ग़नीमत	से (बारे में)	आप (स) से पूछते हैं

اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	और उस का रसूल	और अल्लाह की इताअ़त करो	आपस में	अपने तईं	और दुरुस्त करो	अल्लाह

مُّؤْمِنِيْنَ ۝١ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ

डर जाएं	ज़िक्र किया जाए अल्लाह का	जब	वह लोग	मोमिन (जमा)	दरहक़ीक़त	1	मोमिन (जमा)

قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا

ईमान	वह ज़ियादा करें	उस की आयात	उन पर	पढ़ी जाएं	और जब	उन के दिल

وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا

और उस से जो	नमाज़	क़ाइम करते हैं	वह लोग जो	2	भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ

उन के लिए	सच्चे	मोमिन (जमा)	वह	यही लोग	3	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤ كَمَاۤ

जैसा कि	4	इज़्ज़त वाला	और रिज़्क़	और बख़्शिश	उन का रब	पास	दरजे

اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

अहले ईमान	से (का)	एक जमाअ़त	और बेशक	हक़ के साथ	आप का घर	से	आप का रब	आप (स) को निकाला

لَكٰرِهُوْنَ ۝٥ يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ

हांके जा रहे हैं	गोया कि वह	वह ज़ाहिर हो चुका	जबकि	बाद	हक़	में	वह आप (स) से झगड़ते थे	5	नाख़ुश

اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٦ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى

एक का	अल्लाह	तुम्हें वादा देता था	और जब	6	देख रहे हैं	और वह	मौत	तरफ़

الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ

बग़ैर कांटे वाला	कि	और चाहते थे	तुम्हारे लिए	कि वह	दो गिरोह

تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ

जड़	और काट दे	अपने कलिमात से	हक़	साबित कर दे	कि	और चाहता था अल्लाह	तुम्हारे लिए	हो

الْكٰفِرِيْنَ ۝٧ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨

8	मुजरिम (जमा)	नापसन्द करें	ख़ाह	बातिल	और बातिल साबित करदे	हक़	ताकि हक़ साबित करदे	7	काफ़िर (जमा)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

आप (स) से ग़नीमत के बारे में पूछते हैं, कह दें ग़नीमत अल्लाह और रसूल (स) के लिए है, पस अल्लाह से डरो और दुरुस्त करो आपस में (तअ़ल्लुक़ात) और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो अगर तुम मोमिन हो। (1)

दरहक़ीक़त मोमिन वह लोग हैं जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उन के दिल डर जाएं और उन पर (उन के सामने) उस की आयतें पढ़ी जाएं तो वह (आयात) उन का ईमान ज़ियादा करें, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2)

वह लोग जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और जो हम ने दिया उस में से ख़र्च करते हैं। (3)

यही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए उन के रब के पास दरजे हैं और बख़्शिश और रिज़्क़ इज़्ज़त वाला। (4)

जैसा कि आप (स) को आप (स) के रब ने आप (स) के घर से हक़ (दुरुस्त तदबीर) के साथ निकाला, और बेशक अहले ईमान की एक जमाअ़त नाख़ुश थी। (5)

वह आप (स) से हक़ के मामले में झगड़ते थे जबकि वह ज़ाहिर हो चुका, गोया कि वह हांके जा रहे हैं मौत की तरफ़, और वह (उसे) देख रहे हैं। (6)

और (याद करो) अल्लाह तुम्हें वादा देता था कि (अबू जहल और अबू सुफ़ियान के) दो गिरोहों में से एक तुम्हारे लिए और तुम चाहते थे कि (जिस में) कांटा न लगे तुम्हारे लिए हो, और अल्लाह चाहता था कि साबित कर दे हक़ अपने कलिमात से, और काफ़िरों की जड़ काट दे। (7)

ताकि हक़ को हक़ साबित कर दे और बातिल को बातिल, ख़ाह मुजरिम नापसन्द करें। (8)

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ

एक हज़ार	मदद करूँगा तुम्हारी	कि मैं	तुम्हारी	तो उस ने क़ुबूल करली	अपना रब	तुम फ़र्याद करते थे	जब

مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ

और ताकि मुत्मइन हों	ख़ुशख़बरी	मगर	अल्लाह ने बनाया उसे	और नहीं	9	एक दूसरे के पीछे (लगातार)	फ़रिश्ते	से

بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ

ग़ालिब	बेशक अल्लाह	अल्लाह के पास	से	मगर	मदद	और नहीं	तुम्हारे दिल	उस से

ع ١ ١٥ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ

तुम पर	और उतारा उस ने	उस से	तस्कीन	ऊँघ	तुम्हें ढांप लिया (तारी कर दी)	जब	10	हिक्मत वाला

مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ

पलीदी (नापाकी)	तुम से	और दूर कर दे	उस से	ताकि पाक कर दे तुम्हें	पानी	आस्मान	से

الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾

11	क़दम	उस से	और जमा दे	तुम्हारे दिल	पर	और ताकि बान्ध दे (मज़बूत करदे)	शैतान

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ

ईमान लाए (मोमिन)	जो लोग	तुम साबित रखो	तुम्हारे साथ	कि मैं	फ़रिश्ते	तरफ़ (को)	तेरा रब	जब वहि भेजी

سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ

ऊपर	सो तुम ज़र्ब लगाओ	रुअ़ब	कुफ़्र किया (काफ़िर)	जिन लोगों ने	दिल (जमा)	में	अ़नक़रीब डाल दूँगा

الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

कि वह	यह इस लिए	12	पूर	हर	उन से (उन की)	और ज़र्ब लगाओ	गर्दनें

شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ

तो बेशक	और उस का रसूल	अल्लाह	मुख़ालिफ़ होगा	और जो	और उस का रसूल	अल्लाह	मुख़ालिफ़ हुए

اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों के लिए	और यक़ीनन	पस चखो	तो तुम	13	अ़ज़ाब (मार)	सख़्त	अल्लाह

عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ

उन लोगों से	तुम्हारी मुडभेड़ हो	जब	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	14	दोज़ख़	अ़ज़ाब

كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	उन से फेरे	और जो कोई	15	पीठ (जमा)	तो उन से न फेरो	(मैदाने जंग में) लड़ने को	कुफ़्र किया

دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ

पस वह लौटा	अपनी जमाअ़त	तरफ़	या जा मिलने को	जंग के लिए	घात लगाता हुआ	सिवाए	अपनी पीठ

بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾

16	पलटने की जगह (ठिकाना)	और बुरी	जहन्नम	और उस का ठिकाना	अल्लाह	से	ग़ज़ब के साथ

(याद करो) जब तुम अपने रब से फ़र्याद करते थे तो उस ने तुम्हारी (दुआ़) क़ुबूल कर ली कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा एक हज़ार लगातार आने वाले फ़रिश्तों से। (9)

और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर ख़ुशख़बरी, और ताकि उस से मुत्मइन हों तुम्हारे दिल, और मदद नहीं है मगर अल्लाह के पास से, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (10)

(याद करो) जब उस ने तुम पर ऊँघ तारी कर दी, यह उस (अल्लाह) की तरफ़ से तस्कीन (थी) और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ताकि तुम्हें पाक कर दे उस से, और तुम से शैतान की डाली हुई नापाकी दूर कर दे, और ताकि तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे, और उस से जमा दे (तुम्हारे) क़दम। (11)

(याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों को वहि भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम साबित रखो मोमिनों के (दिल), मैं अ़नक़रीब काफ़िरों के दिलों में रुअ़ब डाल दूँगा, तुम उन की गर्दनों के ऊपर ज़र्ब लगाओ और उन के एक एक पूर पर ज़र्ब लगाओ। (12)

यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह और उस के रसूल के मुख़ालिफ़ हुए और जो अल्लाह और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ होगा (वह याद रखे) बेशक अल्लाह की मार सख़्त है। (13)

तो तुम यह चखो और यक़ीनन काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है। (14)

ऐ ईमान वालो, जब उन से तुम्हारी मुडभेड़ हो जिन्हों ने कुफ़्र किया मैदाने जंग में तो उन से पीठ न फेरो। (15)

और जो कोई उस दिन उन से अपनी पीठ फेरे सिवाए उस के कि घात लगाता हो जंग के लिए या अपनी जमाअ़त की तरफ़ जा मिलने को, पस वह लौटा अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उस का ठिकाना जहन्नम है, और यह बुरा ठिकाना है। (16)

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ

आप ने फेंकी	जब	और आप (स) ने न फेंकी थी	उन्हें क़त्ल किया	अल्लाह	बल्कि	सो तुम ने नहीं क़त्ल किया उन्हें

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	अच्छा	आज़माइश	अपनी तरफ़ से	मोमिन (जमा)	और ताकि आज़माए	फेंकी	अल्लाह	बल्कि

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾ اِنْ

अगर	18	काफ़िर (जमा)	मक्र-दाओ	सुस्त करने वाला	और यह कि अल्लाह	यह तो हुआ	17	जानने वाला	सुनने वाला

تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ

तुम्हारे लिए	बेहतर	तो वह	तुम बाज़ आजाओ	और अगर	फ़ैसला	आगया तुम्हारे पास	तो अलबत्ता	तुम फ़ैसला चाहते हो

وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ

और ख़ाह कसरत हो	कुछ	तुम्हारा जत्था	तुम्हारे	काम आएगा	और हरगिज़ न	हम फिर करेंगे	फिर करोगे	और अगर

وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا ع ٢ ٩ ١٦

हुक्म मानो	ईमान लाए	वह लाग जो	ऐ	19	मोमिन (जमा)	साथ	और बेशक अल्लाह

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

और न हो जाओ	20	सुनते हो	जबकि तुम	उस से	और मत फिरो	अल्लाह और उस का रसूल

كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾ ۚ اِنَّ

बेशक	21	वह नहीं सुनते	हालांकि	हम ने सुना	उन्हों ने कहा	उन लोगों की तरह जो

شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ

जो कि	गूंगे	बहरे	अल्लाह के नज़दीक	जानवर (जमा)	बदतरीन

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ

और अगर	तो ज़रूर सुना देता उन को	कोई भलाई	उन में	जानता अल्लाह	और अगर	22	समझते नहीं

اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	23	मुँह फेरने वाले	और वह	वह ज़रूर फिर जाएं	उन्हें सुना दे

اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ

उस के लिए जो ज़िन्दगी बख़्शे तुम्हें	वह बुलाएं तुम्हें	जब	और उसके रसूल का	अल्लाह का	क़ुबूल कर लो

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	और यह कि	और उस का दिल	आदमी	दरमियान	हाइल हो जाता है	कि अल्लाह	और जान लो

تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन्हों ने ज़ुल्म किया	वह लोग जो	न पहुँचेगा	वह फ़ित्ना	और डरो	24	तुम उठाए जाओगे

مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

25	अज़ाब	शदीद	कि अल्लाह	और जान लो	ख़ास तौर पर	तुम में से

सो तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया, और आप (स) ने (मुटठी भर ख़ाक) नहीं फेंकी जब आप (स) ने फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी, और ताकि मोमिनों को एक बेहतरीन आज़माइश से कामयाबी के साथ गुज़ार दे। बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (17)

यह तो हुआ, और यह कि अल्लाह काफ़िरों का दाओ सुस्त करने वाला है। (18)

(काफ़िरो!) अगर तुम फ़ैसला चाहते हो तो अलबत्ता तुम्हारे पास फ़ैसला (इस्लाम की फ़त्ह की सूरत में) आगया है, और अगर तुम बाज़ आजाओ तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर फिर (यही) करोगे तो हम (भी) फिर करेंगे और तुम्हारा जत्था हरगिज़ तुम्हारे काम न आएगा ख़ाह उस की कसरत हो और बेशक अल्लाह मोमिनों के साथ है। (19)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो, और उस से न फिरो जबकि तुम सुनते हो। (20)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्हों ने कहा हम ने सुना, हालांकि वह सुनते नहीं। (21)

बेशक जानवरों से बदतरीन अल्लाह के नज़दीक (वह हैं जो) बहरे गूंगे हैं, जो समझते नहीं। (22)

और अगर अल्लाह उन में कोई भलाई जानता तो उन्हें ज़रूर सुना देता, और अगर अल्लाह उन्हें सुना दे तो ज़रूर फिर जाएं, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल (की दावत) क़ुबूल करो जब वह तुम्हें उस के लिए बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शे और जान लो कि अल्लाह हाइल हो जाता है आदमी और उस के दिल के दरमियान, और यह कि तुम उसी की तरफ़ (रोज़े हश्र) उठाए जाओगे। (24)

और उस फ़ित्ने से डरो जो न पहुँचेगा तुम में से ख़ास तौर पर उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया, और जान लो कि अल्लाह शदीद अज़ाब देने वाला है। (25)

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ

तुम डरते थे	ज़मीन	में	ज़ईफ़ (कमज़ोर) समझे जाते थे	थोड़े	तुम	जब	और याद करो

اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ

और तुम्हें रिज़्क़ दिया	अपनी मदद से	और तुम्हें कुव्वत दी	पस ठिकाना दिया उस ने तुम्हें	लोग	उचक ले जाएं तुम्हें	कि

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	26	शुक्र गुज़ार हो जाओ	ताकि तुम	पाकीज़ा चीज़ें	से

لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

27	जानते हो	जब कि तुम	अपनी अमानतें	और न ख़ियानत करो	और रसूल	अल्लाह	ख़ियानत न करो

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि अल्लाह	बड़ी आज़माइश	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	दरहक़ीक़त	और जान लो

ع ٩/٣ ١٧

عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ

तुम अल्लाह से डरोगे	अगर	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	28	बड़ा	अजर	पास

يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ

और बख़्श देगा तुम्हें	तुम्हारी बुराइयां	तुम से	और दूर कर देगा	फ़ुरक़ान	तुम्हारे लिए	वह बना देगा

وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह लोग जिन्हों ने	ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे	और जब	29	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह

لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ

और ख़ुफ़िया तदबीर करता है अल्लाह	और वह ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे	या निकाल दें तुम्हें	या क़त्ल कर दें तुम्हें	तुम्हें क़ैद कर लें

وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا

वह कहते हैं	हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	30	तदबीर करने वाला	बेहतरीन	और अल्लाह

قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاۗءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उस	मिस्ल	कि हम कह लें	अगर हम चाहें	अलबत्ता हम ने सुन लिया

اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا

यह	है	अगर	ऐ अल्लाह	वह कहने लगे	और जब	31	पहले (अगले)	क़िस्से कहानियां

هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاۗءِ

आस्मान	से	पत्थर	हम पर	तो बरसा	तेरी तरफ़	से	हक़	वह

اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ

जबकि आप (स)	कि उन्हें अज़ाब दे	अल्लाह	और नहीं है	32	दर्दनाक	अज़ाब	या ले आ हम पर

فِيْهِمْ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٣﴾

33	बख़्शिश मांगते हों	जबकि वह	उन्हें अज़ाब देने वाला	अल्लाह	है	और नहीं	उन में

और याद करो जब तुम ज़मीन में थोड़े थे, कमज़ोर समझे जाते थे, तुम डरते थे कि तुम्हें उचक ले जाएंगे लोग, पस उस ने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद से कुव्वत दी और पाकीज़ा चीज़ों से तुम्हें रिज़्क़ दिया ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ। (26)

ऐ ईमान वालो! ख़ियानत न करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में जब कि तुम जानते हो (दीदा ओ दानिस्ता)। (27)

और जान लो कि दरहक़ीक़त तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद बड़ी आज़माइश हैं, और यह कि अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (28)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए बना देगा (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) फ़ुरक़ान और तुम से तुम्हारी बुराइयां दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29)

और (याद करो) जब काफ़िर आप (स) के बारे में ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे कि आप (स) को क़ैद कर लें या क़त्ल कर दें या (मक्के से) निकाल दें, और वह ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे और अल्लाह (भी) ख़ुफ़िया तदबीर करता है, और अल्लाह बेहतरीन तदबीर करने वाला है। (30)

और जब उन पर पढ़ी जाती हैं हमारी आयात तो वह कहते हैं अलबत्ता हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इस जैसी (आयात) कह लें, यह तो सिर्फ़ क़िस्से कहानियां हैं अगलों की। (31)

और जब वह कहने लगे ऐ अल्लाह! अगर तेरी तरफ़ से यही हक़ है तो बरसा हम पर आस्मान से पत्थर या हम पर दर्दनाक अज़ाब ले आ। (32)

और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि उन्हें अज़ाब दे जबकि आप (स) उन में हैं, और अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाला नहीं जबकि वह बख़्शिश मांग रहे हों। (33)

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

मस्जिदे हराम	से	रोकते हैं	जबकि वह	अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब दे	कि न	उन के लिए (उन में)	और क्या

وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

मुत्तक़ी (जमा)	मगर (सिर्फ़)	उस के मुतवल्ली	नहीं	उस के मुतवल्ली	वह हैं	और नहीं

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ

उन की नमाज़	थी	और नहीं	34	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन

عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ

अ़ज़ाब	पस चखो	और तालियां	सीटियां	मगर	ख़ाने कअ़बा	नज़्दीक

بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ

ख़र्च करते हैं	कुफ़्र किया (काफ़िर)	जिन लोगों ने	बेशक	35	तुम कुफ़्र करते थे	उस के बदले जो

اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ

फिर	सो अब ख़र्च करेंगे	रास्ता अल्लाह का	से	ताकि रोकें	अपने माल

تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

कुफ़्र किया (काफ़िर)	और जिन लोगों ने	वह मग़लूब होंगे	फिर	हस्रत	उन पर	होगा

اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ

पाक	से	गन्दा	ताकि अल्लाह जुदा करदे	36	इकट्ठे किए जाएंगे	जहन्नम	तरफ़

وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا

सब	फिर ढेर कर दे	दूसरे	पर	उस के एक	गन्दा	और रखे

فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ ع ٩ ١٨

उन से जो	कहदें	37	ख़सारा पाने वाले	वह	यही लोग	जहन्नम	में	फिर डाल दे उस को

كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا

फिर वही करें	और अगर	गुज़र चुका	जो	उन्हें	माफ़ कर दिया जाए	वह बाज़ आजाएं	अगर	उन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى

यहां तक कि	और उन से जंग करो	38	पहले लोग	सुन्नत (रविश)	गुज़र चुकी है	तो तहक़ीक़

لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا

वह बाज़ आजाएं	फिर अगर	अल्लाह का	सब	दीन	और हो जाए	कोई फ़ित्ना	न रहे

فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا

तो जान लो	वह मुँह मोड़ लें	और अगर	39	देखने वाला	वह करते हैं	जो वह	तो बेशक अल्लाह

اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤٠﴾

40	मददगार	और खूब	साथी	खूब	तुम्हारा साथी	कि अल्लाह

और उन में क्या है? कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न दे जबकि वह मस्जिदे हराम से रोकते हैं, और वह नहीं हैं उस के मुतवल्ली। उस के मुतवल्ली तो सिर्फ़ मुत्तक़ी हैं, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (34)

और ख़ाने कअ़बा के नज़्दीक उन की नमाज़ क्या होती है मगर सिर्फ़ सीटियां और तालियां, पस अ़ज़ाब चखो उस के बदले जो तुम कुफ़्र करते थे। (35)

बेशक काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं ताकि रोकें अल्लाह के रास्ते से, सो अब वह ख़र्च करेंगे, फिर उन पर हस्रत होगी, फिर वह मग़लूब होंगे, और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ इकटठे किए जाएंगे। (36)

ताकि अल्लाह गन्दे को पाक से जुदा कर दे और गन्दे को एक दूसरे पर रखे, फिर सब को एक ढेर कर दे, फिर उस को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारा पाने वाले। (37)

काफ़िरों से कह दें अगर वह बाज़ आजाएं तो उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा जो गुज़र चुका, और अगर वह फिर वही करें तो तहक़ीक़ पहलों की रविश गुज़र चुकी है। (38)

और उन से जंग करो यहां तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह का हो जाए, फिर अगर वह बाज़ आजाएं तो बेशक अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (39)

और अगर वह मुँह मोड़ लें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा साथी है, क्या खूब साथी और क्या खूब मददगार है! (40)

الجزء ١٠

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ

उस का पांचवा हिस्सा	अल्लाह के वास्ते	सो	किसी चीज़	से	तुम ग़नीमत लो	जो कुछ	और तुम जान लो

وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ

और मुसाफ़िरों	और मिस्कीनों	और यतीमों	और क़राबतदारों के लिए	और रसूल के लिए

اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ

फ़ैसले के दिन	अपना बन्दा	पर	हम ने नाज़िल किया	और जो	अल्लाह पर	ईमान रखते	तुम हो	अगर

يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾

41	क़ुदरत वाला	हर चीज़	पर	और अल्लाह	दोनों फ़ौजें भिड़ गईं	जिस दिन

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى

परला	किनारे पर	और वह	इधर वाला	किनारे पर	तुम	जब

وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ

वादे में	अलबत्ता तुम इख़्तिलाफ़ करते	तुम बाहम वादा करते	और अगर	तुम से	नीचे	और क़ाफ़िला

وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۬ۙ لِّيَهْلِكَ

ताकि हलाक हो	हो कर रहने वाला	था	जो काम	अल्लाह	ताकि पूरा कर दे	और लेकिन

مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ

और बेशक	दलील	से	ज़िन्दा रहना है	जिस	और ज़िन्दा रहे	दलील	से	हलाक हो	जो

اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ ۙ اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ

थोड़ा	तुम्हारी ख़्वाब	में	अल्लाह	तुम्हें दिखाया उन्हें	जब	42	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह

وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ

मामले में	और तुम झगड़ते	तो तुम बुज़दिली करते	बहुत ज़ियादा	तुम्हें दिखाता उन्हें	और अगर

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾

43	दिलों की बात	जानने वाला	बेशक वह	बचा लिया	अल्लाह	और लेकिन

وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ

और तुम्हें थोड़े करके दिखलाए	थोड़ा	तुम्हारी आँखें	में	तुम आमने सामने हुए	जब-तो	वह तुम्हें दिखलाए	और जब

فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

और अल्लाह की तरफ़	हो कर रहने वाला	था	काम	ताकि पूरा कर दे अल्लाह	उन की आँखें	में

ع ٥/٧ ١

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً

कोई जमाअ़त	तुम्हारा आमना सामना हो	जब	ईमान वाले	ऐ	44	काम (जमा)	लौटना (बाज़गश्त)

فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	बकसरत	और अल्लाह को याद करो	तो साबित क़दम रहो

और जान लो कि तुम जो कुछ किसी चीज़ से ग़नीमत हासिल किया है उस का पांचवा हिस्सा अल्लाह के लिए और रसूल के लिए, और (उन के) क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और जो हम ने अपने बन्दे पर फ़ैसला (बद्र) के दिन नाज़िल किया। जिस दिन (कुफ़्र ओ इस्लाम की) दोनों फ़ौजें भिड़ गईं, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। (41)

जब तुम इधर वाले किनारे पर थे और वह परले किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे (तराई में) था, अगर (तुम और काफ़िर) बाहम वादा करते तो अलबत्ता तुम वादे में इख़्तिलाफ़ करते (वक़्त पर न पहुँचते) लेकिन (अल्लाह ने जमा किया) ताकि पूरा कर दे अल्लाह वह काम जो हो कर रहने वाला था, ताकि जो हलाक हो वह दलील से हलाक हो और जिस को ज़िन्दा रहना है वह ज़िन्दा रहे दलील से, और बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (42)

और जब अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी ख़्वाब में उन (काफ़िरों) को दिखाया थोड़ा, और अगर तुम्हें उन (की तादाद) को बहुत दिखाता तो तुम बुज़दिली करते, और (जंग के) मामले में झगड़ते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया, बेशक वह दिलों की बात जानने वाला है। (43)

और जब तुम आमने सामने हुए तो वह (अल्लाह) तुम्हें दिखलाए तुम्हारी आँखों में (दुश्मन को) थोड़े, और तुम्हें उन की आँखों में दिखलाया थोड़ा ताकि अल्लाह पूरा कर दे वह काम जो हो कर रहने वाला था, और तमाम कामों की बाज़गश्त अल्लाह की तरफ़ है। (44)

ऐ ईमान वालो! जब किसी जमाअ़त (कुफ़्फ़ार) से तुम्हारा आमना सामना हो तो साबित क़दम रहो और अल्लाह को बकसरत याद करो ताकि तुम फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाओ। (45)

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ

और जाती रहेगी	पस बुज़दिल हो जाओगे	और आपस में झगड़ा न करो	और उस का रसूल	अल्लाह	और इताअ़त करो

رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۚ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

और न हो जाना	46	सब्र करने वाले	साथ	बेशक अल्लाह	और सब्र करो	तुम्हारी हवा

كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ

लोग	और दिखावा	इतराते	अपने घर	से	निकले	उन की तरह जो

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾

47	अहाता किए हुए	वह करते हैं	से-जो	और अल्लाह	अल्लाह का रास्ता	से	और रोकते

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ

तुम्हारे लिए (तुम पर)	कोई ग़ालिब नहीं	और कहा	उन के काम	शैतान	उन के लिए	खुशनुमा कर दिया	और जब

الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ

दोनों लशकर	आमने सामने हुए	फिर जब	तुम्हारा	रफ़ीक़	और बेशक मैं	लोग	से	आज

نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا

नहीं	जो	देखता हूँ	मैं बेशक	तुम से	जुदा, ला तअ़ल्लुक़	बेशक मैं	और बोला	अपनी एड़ियां	पर	उलटा फिर गया

تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۧ ﴿٤٨﴾ اِذْ يَقُوْلُ ع ٦ ٢

कहने लगे	जब	48	अ़ज़ाब	सख़्त	और अल्लाह	अल्लाह से डरता हूँ	मैं बेशक	तुम देखते

الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ

उन का दीन	उन्हें	धोका दे दिया	मरज़	उन के दिलों में	और वह जो कि	मुनाफ़िक़ (जमा)

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾

49	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तो बेशक अल्लाह	अल्लाह पर	भरोसा करे	और जो

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ

मारते हैं	फ़रिश्ते	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	जान निकालते हैं	जब	तू देखे	और अगर

وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ

यह	50	भड़कता हुआ (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	और चखो	और उन की पीठ (जमा)	उन के चहरे

بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾ ۙ

51	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ	आगे भेजे	बदला जो

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयतों का	उन्हों ने इन्कार किया	उन से पहले	और जो लोग	फ़िरऔन वाले	जैसा कि दस्तूर

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

52	अ़ज़ाब	सख़्त	कुव्वत वाला	बेशक अल्लाह	उनके गुनाहों पर	तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा

और इताअ़त करो अल्लाह की और उस के रसूल (स) की, और आपस में झगड़ा न करो कि बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा जाती रहेगी (उखड़ जाएगी) और सब्र करो, बेशक अल्लाह साथ है सब्र करने वालों के। **(46)**

और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से निकले इतराते और लोगों के दिखावे को, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हुए, और वह जो करते हैं अल्लाह अहाता किए हुए है। **(47)**

और जब शैतान ने उन के काम खुशनुमा कर के दिखाए, और कहा आज लोगों में से तुम पर कोई ग़ालिब (आने वाला) नहीं, और मैं तुम्हारा रफ़ीक़ (हिमायती) हूँ, फिर जब दोनों लशकर आमने सामने हुए तो अपनी एड़ियों पर उलटा फिर गया और बोला मैं तुम से ला तअ़ल्लुक़ हूँ, मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ (कि मुझे हलाक न कर दे) और अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। **(48)**

जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में मरज़ था कहने लगे कि उन्हें (मुसलमानों को) उन के दीन ने ख़ब्त में मुब्तला कर रखा है, और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। **(49)**

और अगर तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं, मारते (जाते) हैं उन के चहरों और उन की पीठों पर और (कहते जाते हैं) दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखो। **(50)**

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने (आमाल) आगे भेजे हैं और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। **(51)**

जैसा कि फ़िरऔन वालों का और उन से पहले लोगों का दस्तूर था, उन्हों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, और अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, बेशक अल्लाह कुव्वत वाला सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। **(52)**

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى

जब तक	किसी क़ौम को	उसे दी	कोई नेमत	बदलने वाला	नहीं है	इस लिए कि अल्लाह	यह

يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾ ۙ كَدَاْبِ

जैसा कि दस्तूर	53	जानने वाला	सुनने वाला	और यह कि अल्लाह	उन के दिलों में	जो	वह बदलें

اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

तो हम ने उन्हें हलाक कर दिया	अपना रब	आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	उन से पहले	और वह लोग जो	फ़िरऔन वाले

بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

54	ज़ालिम	थे	और सब	फ़िरऔन वाले	और हम ने ग़र्क़ कर दिया	उन के गुनाहों के सबब

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾

55	ईमान नहीं लाते	सो वह	कुफ़्र किया	वह जिन्हों ने	अल्लाह के नज़दीक	जानवर (जमा)	बदतरीन	बेशक

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ

हर बार	में	अपना मुआहदा	तोड़ देते हैं	फिर	उन से	तुम ने मुआहदा किया	वह लोग जो

وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ

उन के ज़रीए	तो भगा दो	जंग में	तुम उन्हें पाओ	पस अगर	56	डरते नहीं	और वह

مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ

किसी क़ौम	से	तुम्हें ख़ौफ़ हो	और अगर	57	इब्रत पकड़ें	अजब नहीं कि वह	उन के पीछे	जो

ع ١٠ ٣
خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	दग़ाबाज़ (जमा)	पसन्द नहीं करता	बेशक अल्लाह	बराबरी	पर	उन की तरफ़	तो फेंक दो	ख़ियानत (दग़ाबाज़ी)

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	वह आजिज़ न कर सकेंगे	बेशक वह	बाज़ी ले गए	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और हरगिज़ ख़याल न करें

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ

पले हुए घोड़े	और से	कुव्वत	से	तुम से हो सके	जो	उन के लिए	और तैयार रखो

تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ

उन के सिवा	से	और दूसरे	और तुम्हारे (अपने) दुश्मन	अल्लाह के दुश्मन	उस से	धाक बिठाओ

لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	कुछ	तुम ख़र्च करोगे	और जो	अल्लाह जानता है उन्हें	तुम उन्हें नहीं जानते

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ

सुलह की तरफ़	वह झुकें	और अगर	60	तुम्हारा नुक़्सान न किया जाएगा	और तुम	तुम्हें	पूरा पूरा दिया जाएगा

فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾

61	जानने वाला	सुनने वाला	वह	बेशक	अल्लाह पर	और भरोसा रखो	उस की तरफ़	तो सुलह कर लो

यह इस लिए है कि अल्लाह (कभी) उस नेमत को बदलने वाला नहीं जो उस ने किसी क़ौम को दी जब तक वह (न) बदल डालें जो उन के दिलों में है (अपना अक़ीदा ओ अहवाल) और यह कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (53)

जैसा कि दस्तूर था फ़िरऔन वालों का और उन लोगों का जो उन से पहले थे, उन्हों ने अपने रब की आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फ़िरऔन वालों को ग़र्क़ कर दिया, और वह सब ज़ालिम थे। (54)

बेशक अल्लाह के नज़दीक सब जानवरों से बदतर वह लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया, सो वह ईमान नहीं लाते। (55)

वह लोग जिन से तुम ने मुआहदा किया, फिर वह अपना मुआहदा तोड़ देते हैं हर बार, और वह डरते नहीं। (56)

पस अगर तुम उन्हें जंग में पाओ तो (उन्हें ऐसी सज़ा दो कि) उन के ज़रीए भगा दो उन को जो उन के पीछे हैं, अजब नहीं कि वह इब्रत पकड़ें। (57)

अगर तुम्हें किसी क़ौम से दग़ा बाज़ी का डर हो तो (उन का मुआहदा) फेंक दो उन की तरफ़ बराबरी पर (बराबरी का जवाब दो), बेशक अल्लाह दग़ाबाज़ों को पसन्द नहीं करता। (58)

और काफ़िर हरगिज़ ख़याल न करें कि वह बाज़ी ले गए, बेशक वह आजिज़ न कर सकेंगे। (59)

और उन के (मुक़ाबले के) लिए तैयार रखो कुव्वत जो तुम से हो सके और पले हुए घोड़े, उस से धाक बिठाओ अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर, और दूसरों पर उन के सिवा जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जानता है, और तुम जो कुछ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा नुक़्सान न किया जाएगा। (60)

और अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो (तुम भी) उस (सुलह) की तरफ़ झुको, और अल्लाह पर भरोसा रखो, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (61)

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ

जिस ने	वह	तुम्हारे लिए काफ़ी है अल्लाह	तो बेशक	तुम्हें धोका दें	कि	वह चाहें	और अगर

اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ

तुम ख़र्च करते	अगर	उन के दिल	दरमियान (में)	और उल्फ़त डाल दी	62	और मुसलमानों से	अपनी मदद से	तुम्हें ज़ोर दिया

مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह	और लेकिन	उन के दिल	में	उल्फ़त डाल सकते	न	सब कुछ	ज़मीन	में	जो

اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ

अल्लाह	काफ़ी है तुम्हें	नबी (स)	ऐ	63	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक वह	उन के दरमियान	उल्फ़त डाल दी

وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ع ٨ ٦ ٢

मोमिन (जमा)	तरग़ीब दो	नबी (स)	ऐ	64	मोमिन (जमा)	से	तुम्हारे पैरू हैं	और जो

عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا

ग़ालिब आएंगे	सब्र वाले	बीस (20)	तुम में से	हों	अगर	क़िताल (जिहाद)	पर

مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ

से	एक हज़ार (1000)	वह ग़ालिब आएंगे	एक सो (100)	तुम में से	हों	और अगर	दो सो (200)

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ

तुम से	अल्लाह ने तख़फ़ीफ़ कर दी	अब	65	समझ नहीं रखते	लोग	इस लिए कि वह	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا

वह ग़ालिब आएंगे	सब्र वाले	एक सो (100)	तुम में से	पस अगर हों	कमज़ोरी	तुम में	कि	और मालूम कर लिया

مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के हुक्म से	दो हज़ार (2000)	वह ग़ालिब रहेंगे	एक हज़ार (1000)	तुम में से	हों	और अगर	दो सो (200)

وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى

जब तक	क़ैदी	उस के	हों	कि	किसी नबी के लिए	नहीं है	66	सब्र वाले	साथ	और अल्लाह

يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ

चाहता है	और अल्लाह	दुनिया	माल	तुम चाहते हो	ज़मीन	में	ख़ूनरेज़ी कर ले

الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ

पहले ही	अल्लाह से	लिखा हुआ	अगर न	67	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	आख़िरत

لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ

तुम्हें ग़नीमत में मिला	उस से जो	पस खाओ	68	बड़ा	अज़ाब	तुम ने लिया	उस में जो	तुम्हें पहुँचता

حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ ع ٩ ٥ ٥

69	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	पाक	हलाल

और अगर वह तुम्हें धोका देना चाहें तो बेशक तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है, वह जिस ने तुम्हें अपनी मदद से और मुसलमानों से ज़ोर दिया। (62)

और उल्फ़त डाल दी उन के दिलों में, अगर तुम सब कुछ ख़र्च कर देते जो ज़मीन में है उन के दिलों में उल्फ़त न डाल सकते थे लेकिन अल्लाह ने उन के दरमियान उल्फ़त डाल दी, बेशक वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (63)

ऐ नबी (स)! अल्लाह काफ़ी है तुम्हें और तुम्हारे पैरू मोमिनों के लिए। (64)

ऐ नबी (स)! मोमिनों को जिहाद पर तरग़ीब दो, अगर तुम में से बीस (20) सब्र वाले (साबित क़दम) होंगे तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, और अगर तुम में से एक सो (100) हों तो वह एक हज़ार (1000) काफ़िरों पर ग़ालिब आएंगे, इस लिए कि वह लोग (काफ़िर) समझ नहीं रखते। (65)

अब अल्लाह ने तुम से तख़फ़ीफ़ कर दी, और मालूम कर लिया कि तुम में कमज़ोरी है, पस अगर तुम में से एक सो (100) सब्र वाले हों तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, अगर तुम में से एक हज़ार (1000) हों तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार (2000) पर ग़ालिब रहेंगे और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (66)

किसी नबी के लिए (लाइक़) नहीं कि उस के (क़ब्ज़े में) क़ैदी हूँ जब तक वह ज़मीन में दुश्मनों को अच्छी तरह कुचल न दे, तुम दुनिया का माल चाहते हो, और अल्लाह आख़िरत चाहता है, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (67)

अगर अल्लाह (की तरफ़) से पहले ही लिखा हआ न होता तो उस (फ़िदया) के लेने की वजह से तुम्हें पहुँचता बड़ा अ़ज़ाब। (68)

पस उस में से खाओ जो तुम्हें ग़नीमत में हलाल पाक मिला, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (69)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ

में	मालूम कर लेगा अल्लाह	अगर	क़ैदी	से	तुम्हारे हाथ	में	उन से जो	कह दें	नबी	ऐ

قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हें	और बख़्शदेगा	तुम से	लिया गया	उस से जो	तुम्हें देगा बेहतर	कोई भलाई	तुम्हारे दिल

رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ

इस से क़ब्ल	तो उन्हों ने ख़ियानत की अल्लाह से	आप (स) से ख़ियानत का	वह इरादा करेंगे	और अगर	70	निहायत मेहरबान

فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا

और उन्हों ने हिज्रत की	ईमान लाए	जो लोग	बेशक	71	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	उन से (उन्हें)	तो क़ब्ज़े में दे दिया

وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا

ठिकाना दिया	और वह लोग जो	अल्लाह का रास्ता	में	और अपनी जानें	अपने मालों से	और जिहाद किया

وَّنَصَرُوْٓا اُولٰۗىِٕكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	और वह लोग जो	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक़	उन के बाज़	वही लोग	और मदद की

وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ

वह हिज्रत करें	यहां तक कि	कुछ शै (सरोकार)	उन की रफ़ाक़त	से	तुम्हें नहीं	और उन्हों ने हिज्रत न की

وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰي قَوْمٍ

वह क़ौम	पर (ख़िलाफ़)	मगर	मदद	तो तुम पर (लाज़िम है)	दीन में	वह तुम से मदद मांगें	और अगर

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ

और वह लोग	72	देखने वाला	तुम करते हो	जो	और अल्लाह	मुआहदा	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान

كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۭ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	फ़ित्ना	होगा	अगर तुम ऐसा न करोगे	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक़	उन के बाज़	जिन्हों ने कुफ़्र किया

وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ

में	और जिहाद किया उन्हों ने	और उन्हों ने हिज्रत की	ईमान लाए	और वह लोग जो	73	बड़ा	और फ़साद

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ

मोमिन (जमा)	वह	वही लोग	और मदद की	ठिकाना दिया	और वह लोग जो	अल्लाह का रास्ता

حَقًّا ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ

उस के बाद	ईमान लाए	और वह लोग जो	74	इज़्ज़त	और रोज़ी	बख़्शिश	उन के लिए	सच्चे

وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ مِنْكُمْ ۭ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ

और क़राबतदार	तुम में से	पस वही लोग	तुम्हारे साथ	और उन्हों ने जिहाद किया	और उन्हों ने हिज्रत की

بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾

75	जानने वाला	हर चीज़	बेशक अल्लाह	अल्लाह का हुक्म	में (रू से)	बाज़ (दूसरे) के	क़रीब (ज़ियादा हक़ दार)	उन के बाज़

ع ١٠ ٦ الربع

ऐ नबी (स)! आप (स) के हाथ (क़ब्ज़े) में जो क़ैदी हैं, उन से कह दें कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई मालूम कर लेगा तो तुम्हें उस से बेहतर देगा जो तुम से लिया गया और वह तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (70)

और अगर आप (स) से ख़ियानत का इरादा करेंगे तो उन्हों ने उस से क़ब्ल अल्लाह से ख़ियानत की तो अल्लाह ने उन्हें (तुम्हारे) क़ब्ज़े में दे दिया, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (71)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोगे ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत न की, तुम्हें नहीं है कुछ सरोकार उन की रफ़ाक़त से, यहां तक कि वह हिज्रत करें, और अगर वह तुम से दीन में मदद मांगें तो तुम पर मदद लाज़िम है, मगर उस क़ौम के ख़िलाफ़ नहीं जिस के और तुम्हारे दरमियान मुआहदा हो, और जो तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (72)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, अगर तुम ऐसा न करोगे तो फ़ित्ना होगा ज़मीन में और बड़ा फ़साद (होगा)। (73)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और जिहाद किया अल्लाह के रास्ते में, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (74)

और जो लोग उस के बाद ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और तुम्हारे साथ (मिल कर) जिहाद किया पस वही तुम में से हैं, और क़राबतदार (आपस में) एक दूसरे के ज़ियादा हक़ दार हैं अल्लाह के हुक्म से, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (75)

آيَاتُهَا ١٢٩ ❀ (٩) سُوْرَةُ التَّوْبَـةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

रुकुआत 16 (9) सूरतुत तौबा आयात 129

بَـرَآءَةٌ مِّـنَ اللّٰهِ وَرَسُـوْلِـهٖٓ اِلَـى الَّـذِيْـنَ عٰهَدْتُّمْ مِّـنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١﴾

1	मुश्रिकीन	से	तुम से अ़हद किया	वह लोग जिन्हों ने	तरफ़	और उस का रसूल (स)	अल्लाह	से	एलान-ए-बरात

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ

अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले	नहीं	कि तुम	और जान लो	महीने	चार	ज़मीन में	पस चल फिर लो

وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى

तरफ़ (लिए)	और उस का रसूल	अल्लाह से	और एलान	2	काफ़िर (जमा)	रुस्वा करने वाला	और यह कि अल्लाह

النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِىْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ

मुश्रिक (जमा)	से	क़तअ़ तअ़ल्लुक़	कि अल्लाह	हज-ए-अक्बर	दिन	लोग

وَرَسُوْلُهٗ ۭ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ

कि तुम	तो जान लो	तुम ने मुँह फेर लिया	और अगर	तुम्हारे लिए बेहतर	तो यह	तुम तौबा करो	पस अगर	और उस का रसूल

غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۭ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ﴿٣﴾ اِلَّا

सिवाए	3	दर्दनाक	अ़ज़ाब से	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	और ख़ुशख़बरी दो (आगाह कर दो)	अल्लाह	आ़जिज़ करने वाले	न

الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ

और न	कुछ भी	उन्हों ने तुम से कमी न की	फिर	मुश्रिक (जमा)	से	तुम ने अ़हद किया था	वह लोग जो

يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ

उन की मुद्दत	तक	उन का अ़हद	उन से	तो पूरा करो	किसी की	तुम्हारे ख़िलाफ़	उन्हों ने मदद की

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٤﴾ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا

तो क़त्ल करो	हुर्मत वाले	महीने	गुज़र जाएं	फिर जब	4	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह

الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ

और उन्हें घेर लो	और उन्हें पकड़ो	तुम उन्हें पाओ	जहां	मुश्रिक (जमा)

وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	और क़ाइम करें	वह तौबा कर लें	फिर अगर	हर घात	उन के लिए	और बैठो

وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۭ ﴿٥﴾ وَاِنْ

और अगर	5	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन का रास्ता	तो छोड़ दो	और ज़कात अदा करें

اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ

अल्लाह का कलाम	वह सुन ले	यहां तक कि	तो उसे पनाह दे दो	आप से पनाह मांगे	मुश्रिकीन	से	कोई

ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾ ع ١ ٦ ٧

6	इल्म नहीं रखते	लोग	इस लिए कि वह	यह	उस की अम्न की जगह	उसे पहुँचा दें	फिर

अल्लाह और उस के रसूल (स) (की तरफ़) से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ है उन मुश्रिकों से जिन्हों ने तुम से अ़हद किया हुआ था। (1)

पस (मुश्रिको) ज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले नहीं, और यह कि अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है। (2)

और अल्लाह और उस के रसूल (की तरफ़) से हज-ए-अक्बर के दिन लोगों के लिए एलान है कि अल्लाह और उस के रसूल का मुश्रिकों से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ है, पस अगर तुम तौबा कर लो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम ने मुँह फेर लिया तो जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले नहीं, और आगाह कर दो उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया अ़ज़ाब दर्दनाक से। (3)

सिवाए उन मुश्रिक लोगों के जिन से तुम ने अ़हद किया था, फिर उन्हों ने तुम से (अ़हद में) कुछ भी कमी न की और न उन्हों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की, तो उन से उन का अ़हद उन की (मुक़र्ररा) मुद्दत तक पूरा करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (4)

फिर जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो मुश्रिकों को क़त्ल करो जहां तुम उन्हें पाओ, और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेर लो, और उन के लिए हर घात में बैठो, फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें तो उन का रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (5)

और अगर मुश्रिकीन हि से कोई आप (स) से पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दें यहां तक कि वह सुन ले अल्लाह का कलाम, फिर उसे उस की अम्न की जगह पहुँचा दें, यह इस लिए है कि वह इल्म नहीं रखते (नादान हैं)। (6)

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ

और उस के रसूल के पास	अल्लाह के पास	अ़हद	मुश्‌रिकों के लिए	हो	क्यों कर

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا

वह क़ाइम रहें	सो जब तक	मस्जिदे हराम	पास	तुम ने अ़हद किया	वह लोग जो	सिवाए

لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧﴾ كَيْفَ وَاِنْ

और अगर	कैसे	7	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	उन के लिए	तो तुम क़ाइम रहो	तुम्हारे लिए

يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ

वह तुम्हें राज़ी कर देते हैं	और न अ़हद	क़राबत	तुम्हारी	न लिहाज़ करें	तुम पर	वह ग़ालिब आजाएं

بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨﴾ ۚ

8	नाफ़रमान	और उन के अक्सर	उन के दिल	लेकिन नहीं मानते	अपने मुहँ (जमा) से

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ

उस का रास्ता	से	फिर उन्हों ने रोका	थोड़ी	क़ीमत	अल्लाह की आयात से	उन्हों ने ख़रीद ली

اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا

क़राबत	किसी मोमिन	(बारे) में	लिहाज़ नहीं करते	9	वह करते हैं	जो	बुरा	बेशक वह

وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ﴿١٠﴾ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا

और क़ाइम करें	तौबा कर लें	फिर अगर वह	10	हद से बढ़ने वाले	वह	और वही लोग	अ़हद	और न

الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ

और खोल कर बयान करते हैं	दीन	में	तो तुम्हारे भाई	और अदा करें ज़कात	नमाज़

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾ وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ

अपनी क़स्में	वह तोड़ दें	और अगर	11	इल्म रखते हैं	लोगों के लिए	आयात

مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا

तो जंग करो	तुम्हारा दीन	में	और ऐब निकालें	अपना अ़हद	के बाद से

اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ

शायद वह	उन की	नहीं क़स्म	बेशक वह	कुफ़्र के सरदार

يَنْتَهُوْنَ ﴿١٢﴾ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ

अपना अ़हद	उन्हों ने तोड़ डाला	ऐसी क़ौम	क्या तुम न लड़ोगे?	12	बाज़ आजाएं

وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ

पहली बार	तुम से पहल की	और वह	रसूल (स)	निकालने का	और इरादा किया

اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾

13	ईमान वाले	अगर तुम हो	तुम उस से डरो	कि	ज़ियादा हक़दार	तो अल्लाह	क्या तुम उन से डरते हो?

क्यों कर हो मुश्‌रिकों के लिए अल्लाह के पास और उस के रसूल (स) के पास कोई अ़हद सिवाए उन लोगों के जिन से तुम ने अ़हद किया मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) के पास, सो जब तक वह तुम्हारे लिए (अ़हद पर) क़ाइम रहें तुम (भी) उन के लिए क़ाइम रहो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (7)

कैसे (सुलह हो जब हाल यह है कि) अगर वह तुम पर ग़ालिब आजाएं तो न लिहाज़ करें तुम्हारी क़राबत का और न अ़हद का, वह तुम्हें अपने मुहँ से (महेज़ ज़बानी) राज़ी कर देते हैं, लेकिन उन के दिल नहीं मानते, और उन में अक्सर नाफ़रमान हैं। (8)

उन्हों ने अल्लाह की आयात से थोड़ी क़ीमत ख़रीद ली, फिर उन्हों ने उस के रास्ते से रोका, बेशक बुरा है जो वह करते हैं। (9)

वह किसी मोमिन के बारे में न क़राबत का लिहाज़ करते हैं न अ़हद का, और वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (10)

फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें तो तुम्हारे भाई हैं दीन में, और हम आयात खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (11)

और अगर वह अपनी क़स्में तोड़ दें अपने अ़हद के बाद और तुम्हारे दीन में ऐब निकालें, तो कुफ़्र के सरदारों से जंग करो, बेशक उन की क़स्में कुछ नहीं, शायद वह (ताक़त के ज़ोर ही से) बाज़ आजाएं। (12)

क्या तुम ऐसी क़ौम से न लड़ोगे? जिन्हों ने अपना अ़हद तोड़ डाला और उन्हों ने रसूल (स) को निकालने (जिला वतन करने) का इरादा किया और उन्हों ने तुम से पहल की, क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह ज़ियादा हक़ रखता है कि तुम उस से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (13)

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ

उन पर	और तुम्हें ग़ालिब करे	और उन्हें रुस्वा करे	तुम्हारे हाथों से	उन्हें अ़ज़ाब दे अल्लाह	तुम उन से लड़ो

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۙ﴿۱۴﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ

उन के दिल (जमा)	गुस्सा	और दूर कर दे	14	मोमिनीन	लोग	सीने (दिल)	और शिफ़ा बख़्शे (ठन्डे करे)

وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۵﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ

कि	क्या तुम समझते हो	15	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह	जिसे चाहे	पर	और अल्लाह तौबा कुबूल करता है

تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا

और उन्हों ने नहीं बनाया	तुम में से	उन्हों ने जिहाद किया	वह लोग जो	मालूम किया अल्लाह	और अभी नहीं	तुम छोड़ दिए जाओगे

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ

बाख़बर	और अल्लाह	राज़दार	और न मोमिनीन	और न उस का रसूल (स)	अल्लाह	सिवा

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ ع ۲ ۱۰ ۸

अल्लाह की मस्जिदें	वह आबाद करें	कि	मुश्रिकों के लिए	नहीं है	16	उस से जो तुम करते हो

شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ

उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	कुफ़्र को	अपनी जानें (अपने ऊपर)	पर	तसलीम करते हों

وَفِى النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ईमान लाया	जो	अल्लाह की मस्जिदें	वह आबाद करता है	सिर्फ़	17	हमेशा रहेंगे	वह	और जहन्नम में

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ ۫

अल्लाह	सिवाए	और वह न डरा	और ज़कात अदा की	और उस ने नमाज़ क़ाइम की	और आख़िरत का दिन

فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۸﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ

पानी पिलाना	क्या तुम ने बनाया (ठहराया)	18	हिदायत पाने वाले	से	हों	कि	वही लोग	सो उम्मीद है

الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान लाया	उस के मानिंद	मस्जिदे हराम	और आबाद करना	हाजी (जमा)

وَجٰهَدَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के नज़दीक	वह बराबर नहीं	अल्लाह की राह	में	और उस ने जिहाद किया

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وقف لازم

ईमान लाए	जो लोग	19	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह

وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ

और अपनी जानें	अपने मालों से	अल्लाह का रास्ता	में	और जिहाद किया	और उन्हों ने हिज्रत की

اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾

20	मुराद को पहुँचने वाले	वह	और वही लोग	अल्लाह के हां	दरजे	बहुत बड़े

तुम उन से लड़ो (ताकि) अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब दे तुम्हारे हाथों से और उन्हें रुस्वा करे और तुम्हें उन पर ग़ालिब करे, और दिल ठन्डे करे मोमिन लोगों के, **(14)**

और उन के दिलों से गुस्सा दूर करे, और अल्लाह जिस की चाहे तौबा कुबूल करता है, और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है। **(15)**

क्या तुम गुमान करते हो कि तुम छोड़ दिए जाओगे? (जबकि) अल्लाह ने अभी उन को मालूम नहीं किया तुम में से जिन्हों ने जिहाद किया, और उन्हों ने नहीं बनाया अल्लाह के सिवा और उस के रसूल (स) और मोमिनों (के सिवा) राज़दार। और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। **(16)**

मुश्रिकों का (काम) नहीं कि वह आबाद करें अल्लाह की मस्जिदें (जबकि) अपने ऊपर कुफ़्र को तसलीम करते हों, वही लोग हैं जिन के अ़मल अकारत गए, और वह हमेशा जहन्नम में रहेंगे। **(17)**

अल्लाह की मस्जिदें सिर्फ़ वही आबाद करता है जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया, और उस ने नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा, सो उम्मीद है कि वही लोग हिदायत पाने वालों में से हों। **(18)**

क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिद हराम (ख़ाना कअ़बा) की मुजावरी करने को ठहराया है उस के मानिंद जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया और उस ने अल्लाह की राह में जिहाद किया, वह बराबर नहीं हैं अल्लाह के नज़दीक, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। **(19)**

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया (उन के) दरजे अल्लाह के हां बहुत बड़े हैं, और वही लोग मुराद को पहुँचने वाले हैं। **(20)**

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا

उन में	उन के लिए	और बाग़ात	और ख़ुशनूदी	अपनी तरफ़ से	रहमत की	उन का रब	उन्हें ख़ुशख़बरी देता है

نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ

उस के हां	बेशक अल्लाह	हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	21	दाइमी	नेमत

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ

अपने बाप दादा	तुम न बनाओ	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	22	अज़ीम	अजर

وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ

और जो	ईमान पर (ईमान के मुक़ाबिल)	कुफ़्र	अगर वह पसन्द करें	रफ़ीक़	और अपने भाई

يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَ

हों	अगर	कहे दें	23	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग	तुम में से	दोस्ती करेगा उन से

اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ

और तुम्हारे कुंबे	और तुम्हारी बीवियां	और तुम्हारे भाई	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप दादा

وَاَمْوَالُ ِۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا

उस का नुक़्सान	तुम डरते हो	और तिजारत	जो तुम ने कमाए	और माल

وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल	अल्लाह से	तुम्हारे लिए (तुम्हें)	ज़ियादा प्यारे	जो तुम पसन्द करते हो	और घर

وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	उस का हुक्म	ले आए अल्लाह	यहां तक कि	इन्तिज़ार करो	उस की राह में	और जिहाद

ع ٣ ٨ ٩ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ

में	अल्लाह ने तुम्हारी मदद की	अलबत्ता	24	नाफ़रमान	लोग	हिदायत नहीं देता

مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ

अपनी कस्रत	तुम ख़ुश हुए (इतरा गए)	जब	और हुनैन के दिन	बहुत से	मैदान (जमा)

فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ

फ़राख़ी के बावजूद	ज़मीन	तुम पर	और तंग हो गई	कुछ	तुम्हें	तो न फ़ाइदा दिया

ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

अपनी तस्कीन	अल्लाह ने नाज़िल की	फिर	25	पीठ दे कर	तुम फिर गए	फिर

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ

वह तुम ने न देखे	लशकर	और उतारे उस ने	मोमिनीन	और पर	अपने रसूल (स)	पर

وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

26	काफ़िर (जमा)	सज़ा	और यही	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और अज़ाब दिया

उन का रब उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत और ख़ुशनूदी और बाग़ात की ख़ुशख़बरी देता है, उन में उन के लिए दाइमी नेमत है। (21)

वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, बेशक अल्लाह के (हां) अजरे अ़ज़ीम है। (22)

ऐ ईमान वालो! अपने बाप दादा को और अपने भाइयों को रफ़ीक़ न बनाओ अगर वह लोग ईमान के ख़िलाफ़ कुफ़्र को पसन्द करें, और तुम में से जो उन से दोस्ती करेगा तो वही लोग ज़ालिम हैं। (23)

कह दें, अगर तुम्हारे बाप दादा, तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी बीवियां, और तुम्हारे कुंबे, और माल जो तुम ने कमाए, और तिजारत जिस के नुक़्सान से तुम डरते हो, और घर जिन को तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह से और उस के रसूल से और उस की राह में जिहाद से ज़ियादा प्यारे हों तो इन्तिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आजाए, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (24)

अलबत्ता अल्लाह ने तुम्हारी मदद की बहुत से मैदानों में, और हुनैन के दिन, जब तुम अपनी कस्रत पर इतरागए तो उस (कस्रत) ने तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया, और तुम पर ज़मीन फ़राख़ी के बावजूद तंग हो गई, फिर तुम पीठ दे कर फिरगए। (25)

फिर अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तस्कीन नाज़िल की, और उस ने लशकर उतारे जो तुम ने न देखे और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया, और यही सज़ा है काफ़िरों की। (26)

ثُمَّ يَتُوبُ اللّٰهُ مِنۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	जिस की चाहे	पर	इस	बाद	तौबा क़ुबूल करेगा अल्लाह	फिर

غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِنَّمَا الۡمُشۡرِكُوۡنَ

मुश्रिक (जमा)	इस के सिवा नहीं	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	27	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला

نَجَسٌ فَلَا يَقۡرَبُوا الۡمَسۡجِدَ الۡحَرَامَ بَعۡدَ عَامِهِمۡ هٰذَا ۚ

इस	साल	बाद	मस्जिदे हराम	लिहाज़ा वह क़रीब न जाएं	पलीद

وَاِنۡ خِفۡتُمۡ عَيۡلَةً فَسَوۡفَ يُغۡنِيۡكُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖۤ اِنۡ شَآءَ ؕ

अगर वह चाहे	अपना फ़ज़्ल	से	तुम्हें ग़नी कर देगा अल्लाह	तो जल्द	मोहताजी	तुम्हें डर हो	और अगर

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ईमान नहीं लाए	वह लोग जो	तुम लड़ो	28	हिक्मत वाला	जानने वाला	बेशक अल्लाह

وَلَا بِالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوۡنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ

जो हराम ठहराया अल्लाह ने	और न हराम जानते हैं	यौमे आख़िरत पर	और न

وَرَسُوۡلُهٗ وَلَا يَدِيۡنُوۡنَ دِيۡنَ الۡحَقِّ مِنَ الَّذِيۡنَ

वह लोग जो	से	दीने हक़	और न क़ुबूल करते हैं	और उस का रसूल (स)

اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ حَتّٰى يُعۡطُوا الۡجِزۡيَةَ عَنۡ يَّدٍ وَّهُمۡ

और वह	हाथ	से	जिज़या	दें	यहां तक	किताब दिए गए (अहले किताब)

ع ٤ ٥ ١٠

صٰغِرُوۡنَ ﴿٢٩﴾ ع وَقَالَتِ الۡيَهُوۡدُ عُزَيۡرُ ۨ ابۡنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ

और कहा	अल्लाह का बेटा	ऊज़ैर	यहूद	और कहा	29	ज़लील हो कर

النَّصٰرَى الۡمَسِيۡحُ ابۡنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوۡلُهُمۡ بِاَفۡوَاهِهِمۡ ۚ

उन के मुँह की	उन की बातें	यह	अल्लाह का बेटा	मसीह (अ)	नसारा

يُضَاهِـُٔوۡنَ قَوۡلَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ قَبۡلُ ؕ

पहले	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	बात	वह रीस करते हैं

قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤۡفَكُوۡنَ ﴿٣٠﴾ اِتَّخَذُوۡۤا اَحۡبَارَهُمۡ

अपने एहबार (उल्मा)	उन्हों ने बना लिया	30	बहके जाते हैं	कहां	हलाक करे उन्हें अल्लाह

وَرُهۡبَانَهُمۡ اَرۡبَابًا مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَالۡمَسِيۡحَ

और मसीह (अ)	अल्लाह के सिवा	से	रब (जमा)	और अपने राहेब (दर्वेश)

ابۡنَ مَرۡيَمَ ۚ وَمَاۤ اُمِرُوۡۤا اِلَّا لِيَعۡبُدُوۡۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ

माबूदे वाहिद	यह कि वह इबादत करें	मगर	उन्हें हुक्म दिया गया	और नहीं	इब्ने मरयम

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبۡحٰنَهٗ عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿٣١﴾

31	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	वह पाक है	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद

फिर उस के बाद अल्लाह जिस की चाहे तौबा क़ुबूल करेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (27)

ऐ मोमिनों! इस के सिवा नहीं कि मुश्रिक पलीद हैं, लिहाज़ा वह क़रीब न जाएं उस साल के बाद मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) के। और अगर तुम्हें मोहताजी का डर हो तो अल्लाह तुम्हें जल्द ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (28)

तुम उन लोगों से लड़ो जो ईमान नहीं लाए अल्लाह पर और न यौमे आख़िरत पर, और न हराम जानते हैं वह जो अल्लाह और उस के रसूल (स) ने हराम ठहराया है, और न दीने हक़ को क़ुबूल करते हैं उन लोगों में से जो अहले किताब हैं, यहां तक कि वह जिज़या दें अपने हाथ से ज़लील हो कर। (29)

यहूद ने कहा ऊज़ैर (अ) अल्लाह का बेटा है और कहा नसारा ने मसीह (अ) अल्लाह का बेटा है, यह बातें है उन के मुँह की, वह रीस करते हैं पहले काफ़िरों की बात की। अल्लाह उन्हें हलाक करे, कहां बहके जा रहे हैं? (30)

उन्हों ने बना लिया अपने उल्मा और अपने दर्वेशों को रब अल्लाह के सिवा, और मसीह (अ) इब्ने मरयम को (भी), और उन्हें हुक्म नहीं दिया गया मगर यह कि वह माबूदे वाहिद की इबादत करें, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (31)

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ

और न मानेगा अल्लाह	अपने मुँह से (जमा)	अल्लाह का नूर	वह बुझा दें	कि	वह चाहते हैं

اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ٣٢ هُوَ

वह	32	काफ़िर (जमा)	पसन्द न करें	ख़ाह	अपना नूर	पूरा करे	यह कि	मगर

الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ

ताकि उसे ग़लबा दे	और दीने हक़	हिदायत के साथ	अपना रसूल	भेजा	वह जिस ने

النصف

عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ٣٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

वह लोग जो	ऐ	33	मुश्रिक (जमा)	पसन्द न करें	ख़ाह	तमाम पर	दीन	पर

اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ

खाते हैं	और राहेब (दर्वेश)	उलमा	से	बहुत	बेशक	ईमान लाए

اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह का रास्ता	से	और रोकते हैं	नाहक़ तौर पर	लोग (जमा)	माल (जमा)

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ

में	और वह उसे ख़र्च नहीं करते	और चाँदी	सोना	जमा कर के रखते हैं	और वह लोग जो

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ٣٤ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا

उस पर	दहकाएंगे	जिस दिन	34	दर्दनाक	अज़ाब	सो उन्हें ख़ुशख़बरी दो	अल्लाह की राह

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ

और उन की पीठ (जमा)	और उनके पहलू (जमा)	उन की पेशानी	उस से	फिर दाग़ा जाएगा	जहन्नम की आग	में

هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ٣٥

35	जो तुम जमा कर के रखते थे	जो	पस मज़ा चखो	अपने लिए	तुम ने जमा कर के रखा	जो	यह है

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ

में	महीने	बारह (12)	अल्लाह के नज़दीक	महीनें	तादाद	बेशक

كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ

उन से (उन में)	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	जिस दिन	अल्लाह का हुक्म

اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڏ فَلَا تَظْلِمُوْا

फिर न ज़ुल्म करो	सीधा (दुरुस्त) दीन	यह	हुर्मत वाले	चार (4)

فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَاۗفَّةً كَمَا

जैसे	सब के सब	मुश्रिकों	और लड़ो	अपने ऊपर	उन में

يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَاۗفَّةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ٣٦

36	परहेज़गार (जमा)	साथ	कि अल्लाह	और जान लो	सब के सब	वह तुम से लड़ते हैं

वह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह (की फूंकों) से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर यह कि अपने नूर को पूरा करे, ख़ाह काफ़िर पसन्द न करें। (32)

वह जिस ने अपना रसूल (स) भेजा हिदायत के साथ और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़लबा दे, ख़ाह मुश्रिक पसन्द न करें। (33)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनों)! बेशक बहुत से उल्मा और दर्वेश लोगों के माल नाहक़ तौर पर खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और वह लोग जो सोना चाँदी जमा कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दो (आगाह कर दो)। (34)

जिस दिन हम उसे दहकाएंगे जहन्नम की आग में, फिर उस से उन की पेशानियें और उन के पहलूओं और उन की पीठों को दाग़ा जाएगा कि यह है वह जो तुम ने अपने लिए जमा कर के रखा था, पस मज़ा चखो जो तुम जमा कर के रखते थे। (35)

बेशक महिनों की तादाद अल्लाह के नज़दीक अल्लाह की किताब में बारह महीने हैं जब से उस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, उन में चार हुर्मत वाले (अदब के) महीने हैं, यही है दुरुस्त दीन, पस तुम उन में अपने ऊपर ज़ुल्म न करो, और तुम सब के सब मुश्रिकों से लड़ो जैसे वह सब के सब तुम से लड़ते हैं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (36)

यह जो महीने का हटा कर (आगे पीछे करना) कुफ़्र में इज़ाफ़ा है, इस से काफ़िर गुमराह होते हैं, वह उसे (उस महीने को) एक साल हलाल कर लेते हैं और दूसरे साल उसे हराम कर लेते हैं ताकि वह गिनती पूरी कर ले उस की जो अल्लाह ने हराम किए। सो वह हलाल करते हैं जो अल्लाह ने हराम किया है, उन के बुरे अ़मल उन्हें मुज़ैयन कर दिए गए हैं और अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं देता। (37)

ऐ मोमिनों! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह की राह में कूच करो तो तुम गिरे जाते हो ज़मीन पर, क्या तुम ने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया? सो (कुछ भी) नहीं है दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबले में मगर थोड़ा। (38)

अगर तुम (राहे ख़ुदा) में न निकलोगे तो (अल्लाह) तुम्हें अ़ज़ाब देगा दर्दनाक, और तुम्हारे सिवा कोई और क़ौम बदले में ले आएगा, और तुम उस का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (39)

अगर तुम उस (नबी पाक (स) की मदद न करोगे तो अलबत्ता अल्लाह ने मदद की है जब काफ़िरों ने उन्हें निकाला था, वह दूसरे थे दोनों में, जब वह दोनों ग़ारे (सूर) में थे, जब वह अपने साथी (अबू बक्र सिद्दीक़) से कहते थे, घबराओ नहीं, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है, तो उस ने उन पर तस्कीन नाज़िल की और ऐसे लशकरों से उन की मदद की जो तुम ने नहीं देखे और काफ़िरों की बात पस्त कर दी, और अल्लाह का कलिमा (बोल) बाला है, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (40)

तुम निकलो हलके हो या भारी, और अपने मालों से जिहाद करो और अपनी जानों से अल्लाह की राह में, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (41)

اِنَّمَا النَّسِیۡٓءُ زِیَادَةٌ فِی الۡکُفۡرِ یُضَلُّ بِهِ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا							
वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	इस से	गुमराह होते हैं	कुफ़्र में	इज़ाफ़ा	महीने का हटा देना	यह जो	
یُحِلُّوۡنَهٗ عَامًا وَّیُحَرِّمُوۡنَهٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوۡا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ							
हराम किया	जो	गिनती	ताकि वह पूरी कर लें	एक साल	और उस को हराम कर लेते हैं	एक साल	वह उस को हलाल करते हैं
اللّٰهُ فَیُحِلُّوۡا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُیِّنَ لَهُمۡ سُوۡٓءُ اَعۡمَالِهِمۡ ؕ وَاللّٰهُ							
और अल्लाह	उन के आमाल	बुरे	उन्हें	मुज़ैयन करदिए गए	अल्लाह ने हराम किया	जो	तो वह हलाल करते हैं	अल्लाह
لَا یَهۡدِی الۡقَوۡمَ الۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۳۷﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مَا لَکُمۡ							
तुम्हें किया हुआ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	37	काफ़िर (जमा)	क़ौम	हिदायत नहीं देता	
اِذَا قِیۡلَ لَکُمُ انۡفِرُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ اثَّاقَلۡتُمۡ اِلَی الۡاَرۡضِ ؕ							
ज़मीन	तरफ़ (पर)	तुम गिरे जाते हो	अल्लाह की राह	में	कूच करो	तुम्हें	कहा जाता है	जब
اَرَضِیۡتُمۡ بِالۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا مِنَ الۡاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا								
दुनिया	ज़िन्दगी	सामान	सो नहीं	आख़िरत	से (मुक़ाबला)	दुनिया	ज़िन्दगी को	क्या तुम ने पसन्द कर लिया
فِی الۡاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِیۡلٌ ﴿۳۸﴾ اِلَّا تَنۡفِرُوۡا یُعَذِّبۡکُمۡ عَذَابًا اَلِیۡمًا ۙ								
दर्दनाक	अ़ज़ाब	तुम्हें अ़ज़ाब देगा	अगर न निकलोगे	38	थोड़ा	मगर	आख़िरत	में
وَّیَسۡتَبۡدِلۡ قَوۡمًا غَیۡرَکُمۡ وَلَا تَضُرُّوۡهُ شَیۡـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی							
पर	और अल्लाह	कुछ भी	और न बिगाड़ सकोगे उस का	तुम्हारे सिवा	और क़ौम	और बदले में ले आएगा	
کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۳۹﴾ اِلَّا تَنۡصُرُوۡهُ فَقَدۡ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذۡ اَخۡرَجَهُ							
उस को निकाला	जब	तो अलबत्ता अल्लाह ने उस की मदद की है	अगर तुम मदद न करोगे उस की	39	क़ुदरत रखने वाला	हर चीज़	
الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا ثَانِیَ اثۡنَیۡنِ اِذۡ هُمَا فِی الۡغَارِ اِذۡ یَقُوۡلُ							
वह कहते थे	जब	ग़ार	में	जब वह दोनों	दो में	दूसरा	जो काफ़िर हुए (काफ़िर)	वह लोग
لِصَاحِبِهٖ لَا تَحۡزَنۡ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنۡزَلَ اللّٰهُ سَکِیۡنَتَهٗ						
अपनी तस्कीन	तो अल्लाह ने नाज़िल की	हमारे साथ	यक़ीनन अल्लाह	घबराओ नहीं	अपने साथी से
عَلَیۡهِ وَاَیَّدَهٗ بِجُنُوۡدٍ لَّمۡ تَرَوۡهَا وَجَعَلَ کَلِمَةَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوا							
उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	बात	और कर दी	जो तुम ने नहीं देखे	ऐसे लशकरों से	और उस की मदद की	उस पर
السُّفۡلٰی ؕ وَکَلِمَةُ اللّٰهِ هِیَ الۡعُلۡیَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِیۡزٌ حَکِیۡمٌ ﴿۴۰﴾							
40	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	बाला	वह	और अल्लाह का कलिमा (बोल)	पस्त (नीची)
اِنۡفِرُوۡا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوۡا بِاَمۡوَالِکُمۡ وَاَنۡفُسِکُمۡ						
और अपनी जानों	अपने मालों से	और जिहाद करो	और भारी	हलका-हलके	तुम निकलो
فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِکُمۡ خَیۡرٌ لَّکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۱﴾							
41	जानते हो	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह तुम्हारे लिए	अल्लाह की राह	में

ع ٥ ٨ ١١

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ

तो आप (स) के पीछे हो लेते	आसान	और सफ़र	क़रीब	माल (ग़नीमत)	होता	अगर

وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह की	और अब क़समें खाएंगे	रास्ता	उन पर	दूर नज़र आया	और लेकिन

لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ

अपने आप	वह हलाक कर रहे हैं	तुम्हारे साथ	हम ज़रूर निकलते	अगर हम से हो सकता

٦ ع ٥ ١٢ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ

क्यों	तुम्हें	माफ़ करे अल्लाह	42	यक़ीनन झूटे हैं	कि वह	जानता है	और अल्लाह

اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ

और आप जान लेते	सच्चे	वह लोग जो	आप पर	ज़ाहिर हो जाए	यहां तक कि	उन्हें	तुम ने इजाज़त दी

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	जो ईमान रखते हैं	वह लोग	नहीं मांगते आप से रुख़सत	43	झूटे

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ

और अपनी जान (जमा)	अपने मालों से	वह जिहाद करें	कि	और यौमे आख़िरत पर

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	आप से रुख़सत मांगते हैं	वही सिर्फ़	44	मुत्तक़ियों को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ

उन के दिल	और शक में पड़े हैं	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान नहीं रखते

فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ

निकलने का	वह इरादा करते	और अगर	45	भटक रहे हैं	अपने शक	में	सो वह

لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ

उन का उठना	अल्लाह ने नापसन्द किया	और लेकिन	कुछ सामान	उस के लिए	ज़रूर तैयार करते

فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

46	बैठने वाले	साथ	बैठ जाओ	और कहा गया	सो उन को रोक दिया

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا

ख़राबी	मगर (सिवाए)	तुम्हें बढ़ाते	न	तुम में	वह निकलते	अगर

وَّلَاْ اَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ

बिगाड़	तुम्हारे लिए चाहते हैं	तुम्हारे दरमियान	और दौड़े फिरते

وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

47	ज़ालिमों को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	उन के	सुनने वाले	और तुम में

अगर माले ग़नीमत क़रीब और सफ़र आसान होता तो वह आप (स) के पीछे हो लेते, लेकिन दूर नज़र आया उन्हें रास्ता, और अब अल्लाह की क़समें खाएंगे कि अगर हम से हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते, वह अपने आप को हलाक कर रहें हैं, और अल्लाह जानता है कि वह यक़ीनन झूटे हैं। (42)

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, आप (स) ने (उस से पेशतर) उन्हें क्यों इजाज़त दे दी, यहां तक कि आप पर ज़ाहिर हो जाते वह लोग जो सच्चे हैं और आप (स) जान लेते झूटों को। (43)

आप (स) से वह लोग रुख़सत नहीं मांगते जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं कि वह जिहाद करें अपने मालों से अपनी जानों से, और अल्लाह मुत्तक़ियों (डरने वाले, परहेज़गारों) को ख़ूब जानता है। (44)

आप (स) से सिर्फ़ वह लोग रुख़सत मांगते हैं जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और उन के दिल शक में पड़े हैं, सो वह अपने शक में भटक रहे हैं। (45)

और अगर वह निकलने का इरादा करते तो उस के लिए ज़रूर तैयार करते कुछ सामान, लेकिन अल्लाह ने उन का उठना नापसन्द किया, सो उन को रोक दिया और कह दिया गया (माज़ूर) बैठने वालों के साथ बैठ जाओ। (46)

और अगर वह तुम में (तुम्हारे साथ) निकलते तो तुम्हारे लिए ख़राबी के सिवा कुछ न बढ़ाते, और तुम्हारे दरमियान दौड़े फिरते, चाहते हुए तुम्हारे लिए बिगाड़, और तुम में उन की बातें सुनने वाले मौजोद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (47)

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ

तद्बीरें	तुम्हारे लिए	उन्हों ने उलट पलट कीं	इस से क़ब्ल	बिगाड़	अलबत्ता चाहा था उन्हों ने

حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	पसन्द न करने वाले	और वह	अम्रे इलाही	और ग़ालिब आगया	हक़	आगया	यहां तक कि

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي

में	याद रखो	और न डाले मुझे आज़माइश में	मुझे	इजाज़त दें	कहता है	जो कोई	और उन में से

الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

49	काफ़िरों को	घेरे हुए	जहन्नम	और बेशक	वह पड़ चुके हैं	आज़माइश

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ

कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँचे	और अगर	उन्हें बुरी लगे	कोई भलाई	तुम्हें पहुँचे	अगर

يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ

और वह	और वह लौट जाते हैं	इस से पहले	अपना काम	हम ने पकड़ लिया (संभाल लिया) था	तो वह कहें

فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ

हमारे लिए	अल्लाह ने लिख दिया	जो	मगर	हरगिज़ न पहुँचेगा हमें	आप कह दें	50	वह ख़ुशियां मनाते

هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

51	मोमिन (जमा)	भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	हमारा मौला	वही

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ

दो ख़ूबियों	एक का	मगर	हम पर	क्या तुम इन्तिज़ार करते हो	आप (स) कह दें

وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ

उस के पास	से	कोई अ़ज़ाब	अल्लाह	तुम्हें पहुँचे	कि	तुम्हारे लिए	और हम इन्तिज़ार करते हैं

اَوْ بِاَيْدِيْنَا ؕ فَتَرَبَّصُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	इन्तिज़ार करने वाले	तुम्हारे साथ	हम	सो तुम इन्तिज़ार करो	हमारे हाथों से	या

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ

तुम हो	बेशक तुम	तुम से	हरगिज़ न क़ुबूल किया जाएगा	नाख़ुशी से	या	ख़ुशी से	तुम ख़र्च करो	आप (स) कह दें

قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ

मगर	उन का ख़र्च	उन से	क़ुबूल किया जाए	कि	उन के लिए रुकावट बना	और न	53	फ़ासिक़ (जमा)	क़ौम

اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ

नमाज़	और वह नहीं आते	और उस के रसूल के	अल्लाह के	मुन्किर हुए	यह कि वह

اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

54	नाख़ुशी से	और वह	मगर	और वह ख़र्च नहीं करते	सुस्त	और वह	मगर

अलबत्ता उन्हों ने चाहा था इस से क़ब्ल भी बिगाड़, और उन्हों ने तुम्हारे लिए तद्बीरें उलट पलट कीं यहां तक कि हक़ आगया, और ग़ालिब आगया अम्रे इलाही और वह पसन्द न करने वाले (ना ख़ुश) रहे। (48)

और उन में से कोई कहता है मुझे इजाज़त दें और मुझे आज़माइश में न डालें, याद रखो वह आज़माइश में पड़ चुके हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (49)

अगर तुम्हें पहुँचे कोई भलाई तो उन्हें बुरी लगे, और तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम ने अपना काम पहले ही संभाल लिया था और वह ख़ुशियां मनाते लौट जाते हैं। (50)

आप (स) कह दें हमें हरगिज़ न पहुँचेगा मगर (वही) जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है, वही हमारा मौला है। और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (51)

आप (स) कह दें: किया तुम दो ख़ूबियों में से हम पर एक का इन्तिज़ार करते हो, और हम तुम्हारे लिए इन्तिज़ार कर रहे हैं कि तुम्हें पहुँचे अल्लाह के पास से कोई अ़ज़ाब या हमारे हाथों से, सो तुम इन्तिज़ार करो, हम (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। (52)

आप (स) कह दें: तुम ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से, हरगिज़ तुम से क़ुबूल न किया जाएगा, बेशक तुम हो क़ौमे-फ़ासिक़ीन (नाफ़रमानों की क़ौम)। (53)

और उन के ख़र्च क़ुबूल न होने की कोई वजह इस के सिवा नहीं कि उन्हों ने अल्लाह और रसूल से कुफ़्र किया है, और वह नमाज़ को नहीं आते मगर सुस्ती से और वह ख़र्च नहीं करते मगर नाख़ुशी से। (54)

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ

कि अ़ज़ाब दे उन्हें	चाहता है अल्लाह	यही	उन की औलाद	और न	उन के माल	सो तुम्हें तअ़ज्जुब न हो

بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾

55	काफ़िर हों	और वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया की ज़िन्दगी	में	उस से

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ

लोग	और लेकिन वह	तुम में से	वह	हालांकि नहीं	अलबत्ता तुम में से	बेशक वह	अल्लाह की	और क़स्में खाते हैं

يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا

घुसने की जगह	या	ग़ार (जमा)	या	पनाह की जगह	वह पाएं	अगर	56	डरते हैं

لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ

तअ़न करते हैं आप पर	जो (बाज़)	और उन में से	57	रस्सियां तुड़ाते हैं	और वह	उस की तरफ़	तो वह फिर जाएं

فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا

उन्हें न दिया जाए	और अगर	वह राज़ी हो जाएं	उस से	उन्हें दे दिया जाए	सो अगर	सदक़ात	में

مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ

अल्लाह	उन्हें दिया	जो	राज़ी हो जाते	अगर वह	क्या अच्छा होता	58	नाराज़ हो जाते हैं	वह	उसी वक़्त	उस से

وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ

अपना फ़ज़्ल	से	अल्लाह	अब हमें देगा	हमें काफ़ी है अल्लाह	और वह कहते	और उस का रसूल

ع ١٧ ١٣ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ

मुफ़लिस (जमा)	ज़कात	सिर्फ़	59	रग़बत रखते हैं	अल्लाह की तरफ़	बेशक हम	और उस का रसूल

وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى

और में	उन के दिल	और उल्फ़त दी जाए	उस पर	और काम करने वाले	मिस्कीन (जमा) मोहताज

الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً

फ़रीज़ा (ठहराया हुआ)	और मुसाफ़िर	अल्लाह की राह	और में	तावान भरने वाले, क़र्ज़दार	गर्दनों (के छुड़ाने)

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ

ईज़ा देते (सताते) हैं	जो लोग	और उन में से	60	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह	अल्लाह	से

النَّبِىَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ

वह ईमान लाते हैं	भलाई तुम्हारे लिए	कान	आप कह दें	कान	वह (यह)	और कहते हैं	नबी

بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ

तुम में	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	और रहमत	मोमिनों पर	और यक़ीन रखते हैं	अल्लाह पर

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾

61	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	अल्लाह का रसूल	सताते हैं	और जो लोग

सो तुम्हें तअ़ज्जुब न हो उन के मालों पर और न उन की औलाद पर, अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया की ज़िन्दगी में अ़ज़ाब दे, और उन की जानें निकलें तो (उस वक़्त) भी वह काफ़िर हों। (55)

और वह अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि बेशक वह तुम में से हैं, हालांकि वह तुम में से नहीं, लेकिन वह लोग डरते हैं। (56)

अगर वह पाएं कोई पनाह की जगह, या ग़ार या घुसने (सर समाने) की जगह तो वह उस की तरफ़ फिर जाएं रस्सियां तुड़ाते हुए। (57)

और उन में से बाज़ आप (स) पर सदक़ात (की तक़्सीम में) तअ़न करते हैं, सो अगर उन में से उन्हें दे दिया जाए तो वह राज़ी हो जाएं और अगर उन्हें उस से न दिया जाए तो वह उसी वक़्त नाराज़ हो जाते हैं। (58)

क्या अच्छा होता अगर वह (उस पर) राज़ी हो जाते जो अल्लाह ने और उस के रसूल (स) ने उन्हें दिया, और वह कहते हमें अल्लाह काफ़ी है, अब हमें देगा अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और उस का रसूल, बेशक हम अल्लाह की तरफ़ रग़बत रखते हैं। (59)

ज़कात (हक़ है) सिर्फ़ मुफ़लिसों का, और मोहताजों का, और उस पर काम करने वाले (कारकुनों का), और (उन लोगों का) जिन्हें (इस्लाम की) उल्फ़त दी जाए, और गर्दनों के छुड़ाने (आज़ाद कराने) में और क़र्ज़दारों (का क़र्ज़ अदा करने में), और अल्लाह की राह में, और मुसाफ़िरों का, (यह) अल्लाह की तरफ़ से ठहराया हुआ फ़रीज़ा है, और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (60)

और उन में से बाज़ लोग नबी को सताते हैं और कहते हैं यह तो कान है (कानों का कच्चा है), कह दें कि तुम्हारी भलाई के लिए आप (स) ऐसे हैं, वह अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों पर यक़ीन रखते हैं और उन लोगों के लिए रहमत हैं जो तुम में से ईमान लाए, और जो लोग अल्लाह के रसूल (स) को सताते हैं उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (61)

वह तुम्हारे लिए (तुम्हारे सामने) अल्लाह की क़स्में खाते हैं ताकि तुम्हें ख़ुश करें, और अल्लाह और उस के रसूल (स) का ज़ियादा हक़ है कि वह उन्हें ख़ुश करें अगर वह ईमान वाले हैं। (62)

क्या वह नहीं जानते? कि जो मुक़ाबला करेगा अल्लाह का और उस के रसूल (स) का तो बेशक उस के लिए दोज़ख़ की आग है वह उस में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी रुसवाई है। (63)

मुनाफ़िक़ीन डरते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरत नाज़िल (न) हो जाए जो उन्हें (मुसलमानों को) जता दे जो उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में है, आप (स) कह दें: तुम ठठे (हँसी मज़ाक़) करते रहो, बेशक तुम जिस से डरते हो अल्लाह उसे खोलने वाला है (खोल कर रहेगा)। (64)

और अगर तुम उन से पूछो तो वह ज़रूर कहेंगे: हम तो सिर्फ़ दिल्लगी और खेल करते हैं, आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह से, और उस की आयात से, और उस के रसूल (स) से हँसी करते थे? (65)

बहाने न बनाओ, तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए, और हम तुम में से एक गिरोह को माफ़ कर दें तो दूसरे गिरोह को अज़ाब देंगे, इस लिए कि वह मुजरिम हैं। (66)

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के हम जिन्स) हैं, बुराई का हुक्म देते हैं और नेकी से रोकते हैं, और अपने हाथ (मुठियां ख़र्च करने से) बन्द रखते हैं, वह अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ नाफ़रमान हैं। (67)

अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों, और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा दिया है, उस में हमेशा रहेंगे, वही उन के लिए काफ़ी है, और उन पर अल्लाह की लानत है, और उन के लिए हमेशा रहने वाला अज़ाब है। (68)

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ

और उस का रसूल	और अल्लाह	ताकि तुम्हें ख़ुश करें	तुम्हारे लिए	अल्लाह की	वह क़स्में खाते हैं

الثلثة

اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا

क्या वह नहीं जानते	62	वह ईमान वाले हैं	अगर	वह उन को ख़ुश करें	कि	ज़ियादा हक़

اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ

दोज़ख़ की आग	उस के लिए	तो बेशक	और उस के रसूल	अल्लाह	मुक़ाबला करेगा	जो	कि वह

خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ

मुनाफ़िक़ (जमा)	डरते हैं	63	बड़ी	रुसवाई	यह	उस में	हमेशा रहेंगे

اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ

उन के दिल (जमा)	में	वह जो	उन्हें जता दे	सूरत	उन (मुसलमानों) पर	कि नाज़िल हो

قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَىِٕنْ

और अगर	64	जिस से तुम डरते हो	खोलने वाला	बेशक अल्लाह	ठठे करते रहो	आप कह दें

سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ۭ قُلْ اَبِاللّٰهِ

क्या अल्लाह के	आप (स) कह दें	और खेल करते	दिल्लगी करते	हम थे	कुछ नहीं (सिर्फ़)	तो वह ज़रूर कहेंगे	तुम उन से पूछो

وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ

तुम काफ़िर हो गए हो	न बनाओ बहाने	65	हँसी करते	तुम थे	और उस के रसूल	और उस की आयात

بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ

तुम में से	एक गिरोह	से (को)	हम माफ़ कर दें	अगर	तुम्हारा (अपना) ईमान	बाद

نُعَذِّبْ طَاۗىِٕفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْمُنٰفِقُوْنَ

ع ٧ / ١٤

मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)	66	मुजरिम (जमा)	थे	इस लिए कि वह	एक (दूसरा) गिरोह	हम अज़ाब दें

وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ

وقف لازم

बुराई का	वह हुक्म देते हैं	बाज़ के	से	उन में से बाज़	और मुनाफ़िक़ औरतें

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا

वह भूल बैठे	अपने हाथ	और बन्द रखते हैं	नेकी	से	और मना करते हैं

اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ

अल्लाह ने वादा किया	67	नाफ़रमान (जमा)	वह (ही)	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक	तो उस ने उन्हें भुला दिया	अल्लाह

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

उस में	हमेशा रहेंगे	जहन्नम की आग	और काफ़िर (जमा)	और मुनाफ़िक़ औरतें	मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)

هِىَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ۙ

68	हमेशा रहने वाला	अज़ाब	और उन के लिए	और अल्लाह ने उन पर लानत की	उन के लिए काफ़ी	वही

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ

और ज़ियादा	कुव्वत	तुम से	बहुत ज़ोर वाले	वह थे	तुम से क़ब्ल	जिस तरह वह लोग जो

اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ

सो तुम फ़ाइदा उठा लो	अपने हिस्से से	सो उन्हों ने फ़ाइदा उठाया	और औलाद	माल में

بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ

अपने हिस्से से	तुम से पहले	वह लोग जो	फ़ाइदा उठाया	जैसे	अपने हिस्से से

وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا

दुनिया में	उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	घुसे	जैसे वह	और तुम घुसे (बुरी बातों में)

وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ

क्या इन तक न आई	69	ख़सारा उठाने वाले	वह	और वही लोग	और आख़िरत

نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ڏ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ

और क़ौमे इब्राहीम (अ)	और समूद	और आ़द	क़ौमे नूह	इन से पहले	वह लोग जो	ख़बर

وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ

वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ	उन के रसूल (जमा)	उन के पास आए	और उलटी हुई बस्तियां	और मदयन वाले

فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपने ऊपर	वह थे	लेकिन	कि वह उन पर ज़ुल्म करता	अल्लाह	था	सो नहीं

يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ

रफ़ीक़ (जमा)	उन में से बाज़	और मोमिन औ़रतें	और मोमिन मर्द (जमा)	70	ज़ुल्म करते

بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

وقف لازم

बुराई	से	और रोकते हैं	भलाई का	वह हुक्म देते हैं	बाज़

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ

अल्लाह	और इताअ़त करते हैं	ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	और वह क़ाइम करते हैं

وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

71	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	कि उन पर अल्लाह रहम करेगा	वही लोग	और उस का रसूल

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	जारी हैं	जन्नतें	और मोमिन औ़रतों	मोमिन मर्द (जमा)	वादा किया अल्लाह

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ

हमेशा रहने के बाग़ात	में	पाकीज़ा	और मकानात	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें

ع ٩ ١٥ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

72	बड़ी	कामयाबी	वह	यह	सब से बड़ी	अल्लाह	से	और ख़ुशनूदी

जिस तरह वह लोग जो तुम से क़ब्ल थे, वह तुम से बहुत ज़ोर वाले थे कुव्वत में और ज़ियादा थे माल में और औलाद में, सो उन्हों ने अपने हिस्से से फ़ाइदा उठाया, सो तुम अपने हिस्से से फ़ाइदा उठा लो जैसे उन्हों ने अपने हिस्से से फ़ाइदा उठाया जो तुम से पहले थे, और तुम (बुरी बातों में) घुसे जैसे वह घुसे थे, वही लोग हैं जिन के अ़मल दुनिया और आख़िरत में अकारत गए, और वही लोग हैं ख़सारा उठाने वाले। (69)

क्या इन तक उन लोगों की ख़बर न आई (न पहुँची) जो इन से पहले थे, क़ौमे नूह और आ़द और समूद, और क़ौमे इब्राहीम (अ) और मदयन वाले, और वह बस्तियां जो उलट दी गईं, उन के पास उन के रसूल आए वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ, सो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (70)

और मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के) रफ़ीक़ हैं, वह भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और वह नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करते हैं, वही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (71)

अल्लाह ने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों से जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उन में हमेशा रहेंगे, और सदा बहार बाग़ात में पाकीज़ा मकानात, और अल्लाह की ख़ुशनूदी सब से बड़ी बात है, यह बड़ी कामयाबी है। (72)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ

उन पर	और सख़्ती करें	और मुनाफ़िक़ीन	काफ़िर (जमा)	जिहाद करें	नबी (स)	ऐ

وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ

नहीं उन्हों ने कहा	अल्लाह की	वह क़समें खाते हैं	73	पलटने की जगह	और बुरी	जहन्नम	और उन का ठिकाना

وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا

और क़सद किया उन्हों ने	उन का (अपना) इस्लाम	बाद	और उन्हों ने कुफ़्र किया	कुफ़्र का	कलिमा	हालांकि ज़रूर उन्हों ने कहा

بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

और उस का रसूल	उन्हें ग़नी कर दिया अल्लाह	यह कि	मगर	और उन्हों ने बदला न दिया	उन्हें न मिली	उस का जो

مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا

वह फिर जाएं	और अगर	उन के लिए	बेहतर	होगा	वह तौबा कर लें	सो अगर	अपना फ़ज़्ल	से

يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	दर्दनाक	अ़ज़ाब	अ़ज़ाब देगा उन्हें अल्लाह

فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ

अलबत्ता-अगर	अ़हद किया अल्लाह से	जो	और उन से	74	कोई मददगार	और न	हिमायती	कोई	ज़मीन में

اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

75	सालिहीन	से	और हम ज़रूर हो जाएंगे	ज़रूर सदक़ा दें हम	अपना फ़ज़्ल	से	हमें दे वह

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

76	रूगर्दानी करने वाले हैं	और वह	और फिर गए	उस में	उन्हों ने बुख़्ल किया	अपना फ़ज़्ल	से	उस ने दिया उन्हें	फिर जब

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا

उन्हों ने ख़िलाफ़ किया	क्यों कि	वह उस से मिलेंगे	उस रोज़	तक	उन के दिल	में	निफ़ाक़	तो उस ने उन का अन्जाम कार किया

اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا

वह जानते	क्या नहीं	77	वह झूट बोलते थे	और क्यों कि	उस से उन्हों ने वादा किया	जो	अल्लाह

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ

ख़ूब जानने वाला	और यह कि अल्लाह	और उन की सरगोशियां	उन के भेद	जानता है	कि अल्लाह

الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिन (जमा)	से (जो)	ख़ुशी से करते हैं	ऐब लगाते हैं	वह लोग जो	78	ग़ैब की बातें

فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ

अपनी मेहनत	मगर	जो वह नहीं पाते	और वह लोग जो	और सदक़ा (जमा) ख़ैरात	में

فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾

79	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए	उन से	अल्लाह ने मज़ाक़ (का जवाब) दिया	उन से	वह मज़ाक़ करते हैं

ऐ नबी (स)! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करें और उन पर सख़्ती करें, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह पलटने की बुरी जगह है। (73)

वह अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि उन्हों ने नहीं कहा, हालांकि उन्हों ने ज़रूर कुफ़्र का कलिमा कहा, और अपने इस्लाम (लाने के) बाद उन्हों ने कुफ़्र किया, और उन्हों ने वह कुछ करने का इरादा किया जिसे कर न सके, और उन्हों ने बदला न दिया मगर (सिर्फ़ उस बात का) कि अल्लाह और उस के रसूल (स) ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया, सो अगर वह तौबा कर लें तो उन के लिए बेहतर होगा, और अगर वह फिर जाएं तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा दुनिया में और आख़िरत में, और उन के लिए न होगा ज़मीन में कोई हिमायती और न मददगार। (74)

और उन में से (बाज़ वह हैं) जिन्हों ने अल्लाह से अ़हद किया कि अगर वह हमें अपने फ़ज़्ल से दे तो हम ज़रूर सदक़ा देंगे और हम ज़रूर हो जाएंगे सालिहीन (नेकोकारों) में से। (75)

फिर जब उस ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया तो उन्हों ने उस में बुख़्ल किया और वह फिर गए, वह रूगर्दानी करने वाले हैं। (76)

तो (अल्लाह ने) उस का अन्जाम कार उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया रोज़े (क़ियामत) तक कि वह उस से मिलेंगे, क्यों कि उन्हों ने जो अल्लाह से वादा किया था उस के ख़िलाफ़ किया और क्यों कि वह झुट बोलते थे। (77)

क्या वह नहीं जानते? कि अल्लाह उन के भेद और उन की सरगोशियों को जानता है, और यह कि अल्लाह ग़ैब की बातों को ख़ूब जानने वाला है। (78)

वह लोग जो उन मोमिनो पर ऐब लगाते हैं जो ख़ुशी से ख़ैरात करते हैं, और वह लोग जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत (का सिला), वह (मुनाफ़िक़) उन से मज़ाक़ करते हैं, अल्लाह ने उन के मज़ाक़ (का जवाब) दिया। और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (79)

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۭ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً

बार	सत्तर (70)	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	अगर	उन के लिए	बख़्शिश न मांग	या	उन के लिए	तू बख़्शिश मांग

فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ

और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्हों ने कुफ़्र किया	क्योंकि वह	यह	उन को	बख़्शेगा अल्लाह	तो हरगिज़ न

ع ٨ ١٠ ١٦
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٨٠ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ

अपने बैठ रहने से	पीछे रहने वाले	खुश हुए	80	नाफ़रमान (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह

خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ

और अपनी जानें	अपने मालों से	वह जिहाद करें	कि	और उन्हों ने नापसन्द किया	अल्लाह का रसूल	पीछे

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۭ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ

सब से ज़ियादा	जहन्नम की आग	आप कह दें	गर्मी	में	ना कूच करो	और उन्हों ने कहा	अल्लाह की राह	में

حَرًّا ۭ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝٨١ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ

ज़ियादा	और रोएं	थोड़ा	चाहिए वह हसें	81	वह समझ रखते	काश	गर्मी में

جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨٢ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَاۗىِٕفَةٍ

किसी गिरोह	तरफ़	अल्लाह आप को वापस ले जाए	फिर अगर	82	वह कमाते थे	उस का जो	बदला

مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا

कभी भी	मेरे साथ	तुम हरगिज़ न निकलोगे	तो आप कह दें	निकलने के लिए	फिर वह आप (स) से इजाज़त मांगें	उन से

وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ

बार	पहली	बैठ रहने को	तुम ने पसन्द किया	बेशक तुम	दुश्मन	मेरे साथ	और हरगिज़ न लड़ोगे

فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ۝٨٣ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓي اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ

मर गया	उन से	कोई	पर	और न पढ़ना नमाज़	83	पीछे रह जाने वाले	साथ	सो तुम बैठो

اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰي قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا

और वह मरे	और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्हों ने कुफ़्र किया	बेशक वह	उस की क़ब्र	पर	और न खड़े होना	कभी

وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٨٤ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ

चाहता है	सिर्फ़	और उन की औलाद	उन के माल	और आप (स) को तअ़ज्जुब में न डालें	84	नाफ़रमान	जब कि वह

اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٨٥

85	काफ़िर हों	जब कि वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया में	उस से	उन्हें अ़ज़ाब दे	कि	अल्लाह

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ

उस का रसूल	साथ	और जिहाद करो	अल्लाह पर	ईमान लाओ	कि	कोई सूरत	नाज़िल की जाती है	और जब

اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝٨٦

86	बैठ रह जाने वाले	साथ	हम हो जाएं	छोड़ दे हमें	और कहते हैं	उन से	मक़्दूर वाले (मालदार)	आप से इजाज़त चाहते हैं

आप (स) उन के लिए बख़्शिश मांगें या उन के लिए बख़्शिश न मांगें (बराबर है), अगर आप (स) उन के लिए सत्तर (70) बार (भी) बख़्शिश मांगें तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़्र किया, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। **(80)**

पीछे रह जाने वाले अपने बैठ रहने से खुश हुए, रसूल (स) (तबूक के लिए निकलने) के बाद, और उन्हों ने नापसन्द किया कि वह जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से अल्लाह कि राह में, और उन्हों ने कहा गर्मी में कूच न करो, आप (स) कह दें जहन्नम की आग गर्मी में सब से ज़ियादा है, काश वह समझ सकते। **(81)**

चाहिए कि वह हसें थोड़ा और रोएं ज़ियादा, यह उस का बदला है जो वह कमाते थे। **(82)**

फिर अगर अल्लाह आप को किसी गिरोह कि तरफ़ वापस ले जाए उन में से, फिर वह आप (स) से (जिहाद के लिए) निकलने की इजाज़त मांगें तो आप (स) कह दें: तुम मेरे साथ कहीं भी हरगिज़ न निकलोगे, और हरगिज़ न लड़ोगे दुश्मन से मेरे साथ (मिल कर), बेशक तुम ने पहली बार बैठ रहने को पसन्द किया, सो तुम पीछे रहजाने वालों के साथ बैठो। **(83)**

उन में से कोई मर जाए तो कभी उस पर नमाज़े (जनाज़ा) न पढ़ना और न उस कि क़ब्र पर खड़े होना, बेशक उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़्र किया और वह (उस हाल में) मरे जब कि वह नाफ़रमान थे। **(84)**

और आप (स) को तअ़ज्जुब में न डालें उन के माल और उन की औलाद, अल्लाह तो सिर्फ़ यह चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया में अ़ज़ाब दे और (उस हाल में) उन की जानें निकलें जब कि वह काफ़िर हों। **(85)**

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल (स) के साथ (मिल कर) जिहाद करो तो उन में से मक़्दूर वाले आप से इजाज़त चाहते हैं, और कहते हैं हमें छोड़ दे कि हम बैठ रह जाने वालों के साथ हो जाएं। **(86)**

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

उन के दिल	पर	और मुहर लग गई	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ	हो जाएं	कि वह	वह राज़ी हुए

فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

उस के साथ	ईमान लाए	और वह लोग जो	रसूल	लेकिन	87	समझते नहीं	सो वह

جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۫

भलाइयां	उन के लिए	और यही लोग	और अपनी जानें	अपने मालों से	उन्हों ने जिहाद किया

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

जारी हैं	बाग़ात	उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया	88	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग

ع ١١ ٩ ١٧

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾

89	बड़ी	कामयाबी	यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	बैठ रहे	उन को	कि रुख़सत दी जाए	देहाती (जमा)	से	बहाना बनाने वाले	और आए

كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ

उन से	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	अ़नक़रीब पहुँचेगा	और उस का रसूल	अल्लाह	झूट बोला

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا

और न	मरीज़ (जमा)	पर	और न	ज़ईफ़ (जमा)	पर	नहीं	90	दर्दनाक	अ़ज़ाब

عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	वह ख़ैर ख़ाह हों	जब	कोई हर्ज	वह ख़र्च करें	जो	नहीं पाते	वह लोग जो	पर

وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾

91	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	कोई राह (इल्ज़ाम)	नेकी करने वाले	पर	नहीं	और उस के रसूल

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ

मैं नहीं पाता	आप ने कहा	ता कि आप (स) उन्हें सवारी दें	आप के पास आए	जब	वह लोग जो	पर	और न

مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۖ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ

आँसू (जमा)	से	बह रहे थे	और उन की आँखें	वह लौटे	उस पर	तुम्हें सवार करूं

حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पर	रास्ता (इल्ज़ाम)	इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	92	वह ख़र्च करें	जो	कि वह नहीं पाते	ग़म से

يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا

वह हो जाएं	कि	वह खुश हुए	ग़नी (जमा)	और वह	आप (स) से इजाज़त चाहते हैं

مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

93	नहीं जानते	सो वह	उन के दिल	पर	और अल्लाह ने मुहर लगादी	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ

वह राज़ी हुए कि पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ हो जाएं, और मुहर लग गई उन के दिलों पर, सो वह समझते नहीं। (87)

लेकिन रसूल (स) और वह लोग जो उन के साथ ईमान लाए उन्हों ने अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं लोगों के लिए भलाइयां हैं, और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (88)

अल्लाह ने उन के लिए बाग़ात तैयार किए हैं, उन के नीचे नहरे जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (89)

और देहातियों में से बहाना बनाने वाले आए कि उन को रुख़सत दी जाए, और वह लोग बैठ रहे जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से झूट बोला, अ़नक़रीब पहुँचेगा उन लोगों को दर्दनाक अ़ज़ाब जिन्हों ने कुफ़्र किया। (90)

नहीं कोई हर्ज ज़ईफ़ो पर और न मरीज़ों पर, न उन लोगों पर जो नहीं पाते कि वह ख़र्च करें, जब कि वह ख़ैर ख़ाह हों अल्लाह और उस के रसूल के, नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (91)

और न उन लोगों पर (कोई हर्ज है) कि जब आप (स) के पास आए कि आप उन्हें सवारी दें, तो आप (स) ने कहा कि (कोई सवारी) नहीं कि उस पर तुम्हें सवार करूं, तो वह (उस हाल में) लौटे और ग़म से उन की आँखों से आंसू बह रहे थे कि वह कुछ नहीं पाते जो वह ख़र्च कर सकें। (92)

इल्ज़ाम सिर्फ़ उन लोगों पर है जो आप (स) से इजाज़त चाहते हैं और वह ग़नी (माल दार) हैं, वह उस से खुश हुए कि वह रह जाएं पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ, और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, सो वह कुछ नहीं जानते। (93)